प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी—
ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
गिरगाव-बम्बई।



मुद्रक—
एम्. एन्. कुलकर्णी,
कर्नाटक प्रेस,
नं० ४३४ ठाकुरद्वार, बम्बई।

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीजका १० वाँ ग्रन्थ ।

आत्मोद्धार ।

डा० बुकर टी वाशिंगटनका आत्मचरित ।

" दैवायत्त कुले जन्म मदायत्त तु पौरुषम् । "

—वेणीसंहार



अनुवादक—

श्रीयुत प० लक्ष्मण नारायण गर्दे, काशी ।



प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, गिरगांव—बम्बई ।

द्वितीयावृत्ति । } माघ, १९७१ वि० । जनवरी, १९१९ ई० { मूल्य १) पक्की जिल्दका १।=

"स्त्रियाँ, बालक और शूद्र राष्ट्रवृक्षके मूल हैं। इन सबकी शिक्षा और पालन पोषणकी ओर भारतवर्षमें कोई ध्यान नहीं देता। जो उच्चश्रेणीके लोग हैं वे बहुत हुआ तो इस राष्ट्र-वृक्षके फल कहे जा सकते हैं।

वृक्षपर फल लदे हुए रखनेमें ही सब समय नष्ट करना ठीक नहीं। जड़ोंको देखो और उनमें भरपूर खाद और पानी दो। गरीब लोग, स्त्रियाँ और बालक ही सत्यका डंका पीटेंगे। यथार्थ राष्ट्रोद्धार राष्ट्रकी गरीब (दुर्बल) जड़ोंसे ही हुआ करता है।"

(२)

" सब दानोंमे विद्यादान श्रेष्ठ है। यदि किसीको आप एक रोज भोजन देंगे तो दूसरे रोज उसे फिर भूख लगेगी। परन्तु उसीको यदि आप कोई हुनर सिखा देंगे तो सारे जन्मके लिए उसके दानापानी-का प्रबन्ध हो जायगा। वह हुनर, कला या विद्या ऐसी होनी चाहिए कि उसका जीवन सफल हो जाय। सभ्य भिक्षुक बने रहनेकी अपेक्षा जूते बनानेकासा कोई रोजगार कर लेना अधिक अच्छा है।"

(३)

"जहाँ उद्योगकी प्रतिष्ठा नहीं वहाँ अवनति और विनाश वास करते हैं। वहाँ कलाकौशलकी भी मट्टी पलीद होती है। पर जहाँ उद्योगकी प्रतिष्ठा होती है वहाँ जीवन (चैतन्य) और ज्ञान वास करते है, वहाँ कलाकौशलकी वृद्धि होती है।

देशके भूखों मरनेवाले नारायणों और मेहनत मजदूरी करनेवाले विष्णुओंको पूजो! निर्धन हिन्दू विद्यार्थियोंको कलाकौशल प्राप्त करनेके लिए अमेरिका भेजो। वे वहाँसे सीखकर जब भारतवर्षमें आवेंगे तो लोगोंको अपने बल पर खडे होनेकी शिक्षा देंगे और उससे सैकडों, नहीं, हजारों रोटीके मोहताजोंकी जानें बच जायँगी।"

(४)

"अपने गाँवकी चमारिनों—भगिनोंको पढानेमें क्या तुम्हें लज्जा आती है या डर लगता है? अगर ऐसा ही है तो धिक्कार है तुम्हारी रीति-रस्मो पर और नीतिमत्ता पर!"

—स्वामी रामतीर्थ।



प्रस्तावना।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

—गीता।

भारतवर्षमें इस आत्मावलम्बन और आत्मोद्धारकी अमोघ शिक्षाका प्रचार होनेकी इस समय अत्यन्त आवश्यकता है। नैराश्य और अज्ञानके घोर अन्धकारमें उन्नतिके साधन टटोलनेवाले भारतवर्षको इस समय आत्मावलम्बन और आत्मोद्धारकी शिक्षाका कोई ज्वलन्त दृष्टान्त जितना उपयोगी होगा उतना उपयोगी कोई तात्त्विक विवेचन अथवा कोई कपोलकल्पित वर्णन नहीं हो सकता। इस लिए आत्मोद्धारकी प्रत्यक्ष प्रतिमा बुकर टी वाशिंगटनका उन्हींके शब्दोंमें लिखा हुआ 'आत्मचरित' आज हम अपने ३३ करोड भाइयोंको बडी प्रीति, प्रसन्नता और आशासे भेंट करते हैं।

इस आत्मोद्धारके मननसे मालूम होगा कि क्योंकर दासत्वके पंकमें धँसी हुई एक निर्धन और निस्सहाय जाति संसारमें अपना सिर ऊपर उठा सकती है, क्यों कर कोई अन्धकारमें छिपा हुआ अनाथ और अबल मनुष्य यश और पुरुषार्थ लाभ कर सकता है, और क्यों कर कोई जाति कुसंस्कार, वर्णाभिमान और विजाति विद्वेषके अति दुर्गम पर्वतोंको लाँघकर आत्मोद्धारके वैकुंठ धाममें पहुँच सकती है। जब आपको मालूम होगा कि एक टूटीफूटी झोपडीमें पैदा हुआ एक गुलाम बालक आज उस टस्केजी विद्यालयका मुख्य प्रिन्सिपल है जो अमेरिकामें एक आदर्श विद्यालय है और जिसे देखनेके लिए जाना अमेरिकाके प्रेसिडेंट भी अपना कर्तव्य समझते हैं, जब आपको मालूम होगा कि जिस समय गुलामीसे छुटकारा पाने पर नीग्रो जाति 'कर्तव्यविमूढ' हो रही थी

और उसे कोई मार्ग नहीं दिखाई देता था उस समय उसी होनहार बालकने अ
पनी जातिके मुख्य मुख्य प्रश्नोंको अपने आचरणसे हल कर दिया, जब आपको
मालूम होगा कि उसी अदने बालकने नीग्रो जातिके विषयमें गोरे अमेरिकनोंके
कुसंस्कार हटाकर अपनी जातिकी प्रतिष्ठा बढाई है, जब आपको मालूम होग
कि उसी असहाय बालकने अपने गुरुकी आज्ञापालनका व्रत निबाह कर अपने
रोटीके मोहताज भाइयोंके दानापानीका और उनमें धर्म और नीतिके प्रचारक
पूरा प्रबन्ध कर दिया है, तब क्या आप लोग भी उन्हीं तत्वों पर अपने दे
शकी परिस्थितिके अनुसार आत्मोद्धारके लिए कटिबद्ध न होंगे ?

इस समय हमारे देशकी बडी ही अनिश्चित अवस्था है । हमारे साम
कितने ही वर्षोंसे राजजाति और प्रजाजाति, हिन्दू और मुसलमान, श्रेष्ठ व
और अन्त्यज जाति आदिके बडे विकट प्रश्न हल करनेके लिए पडे हुए हैं । इ
आत्मोद्धारमें, हमारा विश्वास है कि हम लोगोंको इन प्रश्नोंके सुलझानेमें बडी भा
सहायता मिलेगी । महात्मा बुकर टी वाशिंगटनने अमेरिकामें नीग्र
जाति और अमेरिकन गोरोंकी जातिका प्रश्न सुलझाया है, इसलिए उ
नके चरित्रसे हमारे देशवासियोंको भी अवश्य शिक्षा प्राप्त होगी । वाशिंगट
अपनी भीतरी अवस्थाको सुधारकर योग्य बननेको ही देशोन्नतिका मूल (Firs
observe and then desire) समझते हैं । हम लोगोंको भी इस सम
इसी तत्त्वका अवलम्बन करना है । अभीतक हम लोग अपनी शिक्षाप्रणाली नि
श्चित नहीं कर सके हैं । शिक्षातत्त्वका 'श्रीगणेश' भी हम लोगोंको सीखना है
हमारे जितने आन्दोलन होते हैं वे प्राय अनिश्चित उद्देशसे हुआ करते है
आत्मोद्धारसे यह शिक्षा मिलती है कि पहले अपनी आवश्यकताओंको देखो अ
बालकोंको ऐसी शिक्षा दो कि उन आवश्यकताओंकी पूर्ति हो । इसीको स्वाभ
विक शिक्षा कहते हैं । यही शिक्षा फलवती होती है । आन्दोलन भी स्वाभ
विक होने चाहिए । दूसरोंकी देखादेखी अथवा अपना हौसला मिटानेके लि
कोई आन्दोलन करना या सभा सोसायटी कायम करना बिलकुल अस्वाभावि
और निरर्थक है । देशके अभावोंको जानकर उनकी स्वाभाविक उपायसे पू
करना ही आन्दोलनका मूल होना चाहिए । महात्मा वाशिंगटनका व्यक्ति
और सार्वजनिक जीवन इसी प्रकार स्वाभाविक होनेसे संसारके लिए कल्याणक
हुआ है । उस जीवनसे हम लोग शिक्षा ग्रहण करें तो हमारे देशमें भी
अनेक वाशिंगटन उत्पन्न हो सकते हैं ।

*महात्मा वाशिंगटनने अपना जीवनचरित आप ही लिखा है जिससे उनके आचारविचारोंके परिचयके साथ साथ उनके शब्दोंका भी आनन्द मिलता है। अँगरेजीमें उस आत्मचरितका नाम है, 'दासत्वसे उत्थान Up From Slavery'। हमने इसके मराठी अनुवादसे यह हिन्दी अनुवाद किया है। मराठी अनुवाद 'आत्मोद्धार' के नामसे प्रसिद्ध है और 'मनोरंजन कार्यालय' बम्बईसे प्रकाशित हुआ है। लेखक श्रीयुत नागेश वासुदेव गुणाजी बी ए एल एल बी ने वाशिंगटन महाशय तथा तत्रस्थ अन्य सज्जनोंसे पत्रव्यवहार करके उनके चरितसम्बन्धी बहुतसी बातें मगट की हैं और इसलिए हमने अपने पाठकोंको उनके परिश्रमोंके परिपक्व फलका ही यह हिन्दी आस्वाद कराना उचित समझा। भूमिका, उपोद्घात और परिशिष्ट भी गुणाजी महाशयके लेखोंके अनुवाद हैं और इन सबके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। 'मनोरंजन कार्यालय' के स्वामी और सुलेखक श्रीयुत काशीनाथ रघुनाथ मित्रको भी अनेक धन्यवाद हैं जिन्होंने मराठी 'आत्मोद्धार'को प्रकाशित कर उसे हिन्दीमें प्रकाशित करनेका मार्ग विशेष सुगम कर दिया।

जब हम इस पुस्तकको लिखने बैठे तब हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि यह आत्मचरित अपनी ओरसे वाशिंगटनका एक जीवनचरित बनाकर लिखा जाय या ज्योंका त्यों ही आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित किया जाय। बहुत सोचने विचारने पर हमें आत्मचरित आत्मचरितके ही रूपमें पाठकोंको भेंट करना उचित मालूम हुआ और ऐसा ही किया गया।

अन्तमें हम हिन्दीग्रन्थरत्नाकर-कार्यालयके सुयोग्य संचालक श्रीयुत महाशय नाथूरामजी प्रेमीको हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं जिनकी कृपासे हम इस चरितको लिखनेका सौभाग्य प्राप्त कर सके हैं। पुस्तक बहुत शीघ्रतासे

---

* वाशिंगटनसे उनके कई मित्र निरन्तर ही आग्रह किया करते थे कि आप अपना जीवनचरित लिखें, पर इस पर वे यही उत्तर दिया करते थे कि मैंने ऐसा कोनसा कार्य किया है जो अपना जीवनचरित लिखूँ। अन्तमें जब उनकी कन्या पोर्शियाने बार बार प्रार्थना की और जब वह उनसे लिखनेके लिए प्रतिदिन आग्रह करने लगी तब उन्होंने अपने परिवारकी जानकारीके लिए यह आत्मचरित लिखा। परन्तु इससे लाभ सबका हुआ है।

लिखी गई है, इसलिए कापी प्रेसमें भेजनेसे पहले प्रेमीजीको उसमें वारवा
संशोधन करने पड़े हैं और यह कार्य इतनी योग्यताके साथ हुआ है कि यहं
हमसे यह बात प्रकट किये बिना नहीं रहा जाता कि अनुवादकी उत्तमताक
सारा यश प्रेमीजीको है ।

अब अपने पाठकोंसे यह प्रार्थना करनी है कि पुस्तकको वे हस क्षीर-न्याय
पढ़ें और गुणोंको ग्रहण कर दोष मेरे जिम्मे करें ।

काशी, पौषकृष्णा सप्तमी संवत् १९७१ । } विनीत—
लक्ष्मण नारायण गर्दे ।

भूमिका।



'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'

—गीता।

इस संसारमें ज्ञानके सदृश पवित्र और कोई वस्तु नहीं। जिस देशमें ज्ञान और शिक्षा अच्छे ढंगसे और परमार्थबुद्धिसे दी जाती है, उस देशके ऐश्वर्यमें कभी किसी बातकी कमी नहीं पड़ती। प्राचीन समयमें शिक्षा और ज्ञानदानके कार्यमें भारतवर्ष बहुत ही प्रसिद्ध था। अध्ययन और अध्यापन ब्राह्मणोंका—द्विजमात्रका—प्रधान कर्तव्य था और इस पवित्र कर्तव्यके पालनमें ब्राह्मणोंने अपना जीवन अर्पण कर दिया था। विद्यार्थी गुरुगृहों अथवा आश्रमोंमें रहकर विद्यार्जन किया करते थे और गुरु उन्हें निःस्वार्थ भावसे और मन लगाकर पढ़ाते थे। ये गुरु बड़े बड़े मुनि होते थे और 'कुलपति' नामसे पुकारे जाते थे। गुरुके परिवारका तथा विद्यार्थियोंका सब खर्च राजामहाराजाओं तथा धनवान् वैश्योंके दिये हुए दानोंसे चलता था। बड़े बड़े मुनियोंके आश्रम उस समयके विश्वविद्यालय या विद्यापीठ ही थे। उदाहरणार्थ, यजुर्वेद शतपथब्राह्मण और तदन्तर्गत बृहदारण्यकोपनिषदसे मालूम होता है कि जनकराजाके गुरु महर्षि याज्ञवल्क्यका एक महान् विद्यापीठ था और उसमें अनेक विद्यार्थी पढ़ते थे। इसे संसारका एक बड़ा भारी सौभाग्य ही समझना चाहिए जो अध्ययन अध्यापनका पवित्र कर्तव्य पालन करनेवाले याज्ञवल्क्य जैसे ज्ञानी पुरुष इस पृथ्वी-तल पर कभी कभी अवतीर्ण हो जाते हैं। इस समय नये जगतमें या अमेरिकामें ज्ञानार्जन और ज्ञानदानके कार्यमें याज्ञवल्क्यके समान, बल्कि उनसे भी कुछ बढ़कर एक महात्मा जीवित हैं। उनका नाम है डाक्टर बुकर टी वाशिंगटन।

वाशिंगटन! वाशिंगटनका नाम लेते ही हमारे हृदयमें बड़ी बड़ी उदार आशायें लहराने लगती हैं। कुछ पाठक प्रश्न करेंगे कि क्या ये वे ही वाशिंगटन

स्वतन्त्रताके कारण जो नई सृष्टि बन गई थी उसका सामना करनेकी सामर्थ्य इन परिवारोंमें नहीं थी। उनके गुलामाबादकी झोपडियाँ जाती रहीं, गुलामाबाद उजाड हो गये, और उनके लिए कोई मामूली काम भी न रह गया। ऐसे विकट समयमें जनरल आर्मस्ट्रागने अपनी रोटी कमानेमें भी असमर्थ हुई नीग्रो जातिको ऊपर उठानेका संकल्प किया, और अमेरिकन मिशनरी-सोसायटियोंके सहायतासे हेम्पटनमें एक शिल्पशाला खोल दी। इसमें आरंभमें केवल दो सहकारी शिक्षक और कुल पन्द्रह विद्यार्थी थे। किन्तु अब इस समय (१९१३ में) उस विद्यालयमें १६०० के ऊपर विद्यार्थी और २०० शिक्षक तथा दूसरे कर्मचारी हैं। संस्थाकी १४० इमारतें और ११ एकड भूमिकी सम्पत्ति है विद्यालयके कार्यके विषयमें जे डब्ल्यू चर्च नामक एक सज्जन लिखते हैं कि "हेम्पटनमें कोई काम अधूरा नहीं होता है। जब इस विद्यालयमें कोई नीग्रो युवक भरती होता है तब वह भली भाँति जानता है कि यहाँ लगातार चार साल परिश्रम करना होगा। निस्सन्देह इस बातकी सब प्रकारसे चेष्टा की जाती है कि इस परिश्रमका भार विद्यार्थियोंको भारी न मालूम हो, बल्कि, वे उसे आनन्दसे झेल लें। इसके साथ ही इस बातकी भी पूरी चेष्टा की जाती है कि विद्यार्थी परिश्रम और पवित्र आचरणका महत्त्व भली भाँति समझ जायँ।" नीग्रो जातिमें आलस्य और अज्ञान ये दो महादुर्गुण वंशपरंपरासे चले आते हैं। हेम्पटन विद्यालयने नीग्रोजातिको इन दुर्गुणोंसे मुक्त करनेका बड़ा प्रयत्न किया है और इस प्रयत्नमें उसने सफलता भी पाई है।

कार्यप्रणाली और सिद्धान्त।

यहाँ यह बतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि हेम्पटनने इस कार्यमें किस प्रणाली और किन सिद्धान्तोंका अवलंबन किया है। क्योंकि वाशिंगटनने भी उसीकी प्रणाली और सिद्धान्तोंका अवलंबन किया है और उनका वर्णन आगे आनेवाला है। यहाँ इतना ही बतला देना काफी होगा कि इस संस्थाने पिछड़ी हुई नीग्रो जातिके बालकोंमें जो नवीन गुणोंके बीज बोनेका यत्न किया है उसमें सामाजिक संस्थाओंके मूलभूत सिद्धान्तों और अत्यन्त स्वाभाविक उपायोंका ही अवलंबन किया गया है।

वाशिंगटनकी परिस्थिति।

जिस समय वाशिंगटन टस्केजीमें पाठशाला खोलनेके लिए गये उस समय पाठशालाके लिए कोई भवन नहीं था, पर वहाँ ऐसे युवा और वृद्ध नीग्रो अनेक

थे जो शिक्षा प्राप्त करनेके लिए तरस रहे थे। इसकेजीमे शिक्षाके लिए कई प्रबन्ध थे, परन्तु उनसे नीग्रोजातिको कोई लाभ न होता था। सन्तोषकी बात केवल यही थी कि वहाँके गोरों और नीग्रोलोगोंमें मेल था और इनके अतिरिक्त अल्बामा राज्यकी प्रबन्धकारिणी सभाने नीग्रो-विद्यालयके लिए वार्षिक दो हजार डालर देना स्वीकार कर लिया था। पर इसमें भी यह शर्त थी कि यह रकम सिवा अध्यापकोंको वेतन देनेके और किसी काममें खर्च न की जाय। नीग्रो लोगोंमें उस समय बड़ा उत्साह था और उससे वाशिंगटनने पूरा लाभ उठाया।

नीग्रो लोगोंकी तत्कालीन अवस्था।

जिस देश या समाजमें काम करना होता है उस देश या समाजका रत्ती रत्ती हाल जानना ही सफलताका मूलमन्त्र है। इसी लिए वाशिंगटनने स्वयं भ्रमण करके अपना कार्यक्षेत्र देख डाला और अपने भावी विद्यार्थियोंकी दशा अपनी आँखों देख ली। आसपासके गाँव खेड़ोंकी यह दशा थी कि लोग एक ही कोठरीवाली पुरानी झोपड़ीमें रहा करते थे। उनमें स्वच्छता तो नाम-मात्रके लिए भी न थी। ऐसे गन्दे लोग थे कि रोज दाँत साफ करना भी न जानते थे। स्नान तो कभी दश पाँच दिनमें एकाध बार कर लिया करते थे। अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न देकर पियानो और घड़ी जैसी विलासवस्तुओंको मोल लिया करते थे। और मजा यह कि इन वस्तुओंका अच्छी तरह उपयोग करना भी वे जानते न थे। ऐसी जमीन बहुत होने पर भी कि जहाँ सब प्रकारके अन्न पैदा हो सकते हैं, वे सिर्फ कपासकी ही खेती करते और उसीसे बड़ी जिल्लतके साथ अपना गुजारा करते थे। खेतीके नये नये ढंग उन्हें मालूम न थे। घरगिरस्तीका ढंग भी वे नहीं जानते थे। जो लोग थोड़ासा लिख पढ़ लेते थे वे बड़ी बड़ी नोकरियाँ पानेकी चेष्टा करते थे। काहिल और बदचलन लोग बेखटके यह मान लेते थे कि ईश्वरने हमें प्रेरणा की है और फिर धर्मोपदेशका काम प्रारंभ कर दिया करते थे।

प्रारम्भ।

यह सब दशा देखकर वाशिंगटनको बड़ी दया आई और उन्होंने मेथाडिस्ट सम्प्रदायके एक गिरजेके समीप एक झोपड़ीमें पाठशाला खोल दी। इसमें

स्वतंत्रताके कारण जो नई सृष्टि बन गई थी उसका सामना करनेकी सामर्थ्य इन परिवारोंमें नहीं थी। उनके गुलामाबादकी झोपडियाँ जाती रहीं, गुलामाबाद उजाड हो गये, और उनके लिए कोई मामूली काम भी न रह गया। ऐसे विकट समयमें जनरल आर्मस्ट्राँगने अपनी रोटी कमानेमें भी असमर्थ हुई नीग्रो जातिको ऊपर उठानेका संकल्प किया, और अमेरिकन मिशनरी-सोसायटियोंकी सहायतासे हैम्पटनमें एक शिल्पशाला खोल दी। इसमें आरंभमें केवल दो सहकारी शिक्षक और कुल पद्रह विद्यार्थी थे। किन्तु अब इस समय (१९१३ में) उस विद्यालयमें १६०० के ऊपर विद्यार्थी और २०० शिक्षक तथा दूसरे कर्मचारी हैं। संस्थाकी १४० इमारतें और ११ एकड भूमिकी सम्पत्ति है। विद्यालयके कार्यके विषयमें जे डब्ल्यू चर्च नामक एक सज्जन लिखते हैं कि "हम्पटनमें कोई काम अधूरा नहीं होता है। जब इस विद्यालयमें कोई नीग्रो युवक भरती होता है तब वह भली भाँति जानता है कि यहाँ लगातार चार साल परिश्रम करना होगा। निस्सन्देह इस बातकी सब प्रकारसे चेष्टा की जाती है कि इस परिश्रमका भार विद्यार्थियोंको भारी न मालूम हो, बल्कि, वे उसे आनन्दसे झेल लें। इसके साथ ही इस बातकी भी पूरी चेष्टा की जाती है कि विद्यार्थी परिश्रम और पवित्र आचरणका महत्त्व भली भाँति समझ जायँ।" नीग्रो जातिमें आलस्य और अज्ञान ये दो महादुर्गुण वंशपरंपरासे चले आते हैं। हैम्पटन विद्यालयने नीग्रोजातिको इन दुर्गुणोंसे मुक्त करनेका बडा प्रयत्न किया है और इस प्रयत्नमें उसने सफलता भी पाई है।

कार्यप्रणाली और सिद्धान्त।

यहाँ यह बतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि हैम्पटनने इस कार्यमें किस प्रणाली और किन सिद्धान्तोंका अवलम्बन किया है। क्योंकि वाशिंगटनने भी उसीकी प्रणाली और सिद्धान्तोंका अवलम्बन किया है और उनका वर्णन आगे आनेवाला है। यहाँ इतना ही बतला देना काफी होगा कि इस संस्थाने पिछडी हुई नीग्रो जातिके बालकोंमें जो नवीन गुणोंके बीज बोनेका यत्न किया है उसमें सामाजिक संस्थाओंके मूलभूत सिद्धान्तों और अत्यन्त स्वाभाविक उपायोंका ही अवलम्बन किया गया है।

वाशिंगटनकी परिस्थिति।

जिस समय वाशिंगटन टस्केजीमें पाठशाला खोलनेके लिए गये उस समय पाठशालाके लिए कोई भवन नहीं था, पर वहाँ ऐसे युवा और वृद्ध नीग्रो अनेक

थे जो शिक्षा प्राप्त करनेके लिए तरस रहे थे । टस्केजीमें शिक्षाके लिए कई प्रबन्ध थे, परन्तु उनसे नीग्रोजातिको कोई लाभ न होता था । सन्तोषकी बात केवल यही थी कि वहाँके गोरों और नीग्रोलोगोंमें मेल था और इनके अतिरिक्त अलबामा राज्यकी प्रबन्धकारिणी सभाने नीग्रो-विद्यालयके लिए वार्षिक दो हजार डालर देना स्वीकार कर लिया था । पर इसमें भी यह शर्त थी कि यह रकम सिवा अध्यापकोंको वेतन देनेके और किसी काममें खर्च न की जाय । नीग्रो लोगोंमें उस समय बड़ा उत्साह था और उससे वाशिंगटनने पूरा लाभ उठाया ।

नीग्रो लोगोंकी तत्कालीन अवस्था ।

जिस देश या समाजमें काम करना होता है उस देश या समाजका रत्ती रत्ती हाल जानना ही सफलताका मूलमन्त्र है । इसी लिए वाशिंगटनने स्वयं भ्रमण करके अपना कार्यक्षेत्र डेरा डाला और अपने भावी विद्यार्थियोंकी दशा अपनी आँखों देख ली । आसपासके गाँव खेड़ोंकी यह दशा थी कि लोग एक ही कोठरीवाली पुरानी झोपड़ीमें रहा करते थे । उनमें स्वच्छता तो नाम-मात्रके लिए भी न था । ऐसे गन्दे लोग थे कि रोज दाँत साफ करना भी न जानते थे । स्नान तो कभी दस पाँच दिनमें एकाध बार कर लिया करते थे। अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न देकर पियानो और घड़ा जैसी विलासव-स्तुओंको मोल लिया करते थे । और मजा यह कि इन वस्तुओंका अच्छी तरह उपयोग करना भी वे जानते न थे। ऐसी जमीन बहुत होने पर भी कि जहाँ सब प्रकारके अन्न पैदा हो सकते हैं, वे सिर्फ कपासकी ही खेती करते और उसीमें बड़ी दिक्कतके साथ अपना गुजारा करते थे । खेतीके नये नये ढंग उन्हें मालूम न थे । घरगिरस्तीका ढंग भी वे नहीं जानते थे। जो लोग थोड़ासा लिख पढ़ लेते थे वे बड़ी बड़ी नौकरियाँ पानेकी चेष्टा करते थे । काहिल और बदचलन लोग बेखटके यह मान लेते थे कि ईश्वरने हमें प्रेरणा की है और फिर धर्मोपदेशका काम आरंभ कर दिया करते थे।

प्रारम्भ ।

यह सब दशा देखकर वाशिंगटनको बड़ी दया आई और उन्होंने मेथाडिस्ट सम्प्रदायके एक गिरजेके समीप एक झोपड़ीमें पाठशाला खोल दी । इसमें

अकेले वाशिंगटन ही अध्यापक थे और पंद्रह बालक तथा पंद्रह बालिकायें मिलाकर तीस विद्यार्थी थे। इन विद्यार्थियोंको गणितके सिद्धान्त और व्याकरणके नियम कंठ थे, पर इनसे क्या काम लिया जाता है यह किसीको मालूम न था। शारीरिक परिश्रम करना वे अपनी शानके खिलाफ समझते थे।

वाशिंगटनकी सहधर्मिणियोंका सहधर्म।

पाठशाला आरम्भ होने पर डेढ महीनेके भीतर ही वाशिंगटनकी सहायताके लिए मिस डेविड्सन आगई। वाशिंगटनकी प्रथम पत्नीका देहान्त होने पर इन का वाशिंगटनसे विवाह हो गया। वाशिंगटनके कुल तीन विवाह हुए, और तीनों सहधर्मिणियोंने विद्यालयकी उन्नति करनेमें वाशिंगटनके हाथ बटाये। यह एक ध्यानमें रखनेकी बात है कि जो नीग्रो जाति बहुत पिछडी हुई है उसके पास भी, किसी समय उन्नतिके धुराधारी होनेका अभिमान रखनेवाले भारतवासियोंसे, कहीं अधिक साधन हैं। सामाजिक तथा शिक्षाविषयक बातोंमें उन्होंने जो जो काम उठाये हैं उनमें उनकी स्त्रियाँ भी योग देती हैं। हम लोग इस संयोगसे अबतक वञ्चित हैं। वाशिंगटनको, आगे चलकर अनेक सहायक मिले और उनका विद्यालय इस समय केवल नीग्रो अध्यापक और अध्यापिकाओं द्वारा ही चल रहा है।

शिक्षाविषयक सिद्धान्त।

उस समय दक्षिणके राज्योंमें फी सदी ८५ नीग्रो खेती पर ही अपनी जीविका चलाते थे। इस लिए वाशिंगटनने पहला सिद्धान्त यह निश्चित किया कि शिक्षाका ऐसा फल न हो कि विद्यार्थी खेतीसे प्रेम करना छोड दें। दूसरी बात यह थी कि प्रत्येक विद्यार्थी कोई न कोई कला या हुनर जान जाय और वह उद्योग, मितव्यय तथा सुव्यवस्थाका प्रेमी बन जाय, अर्थात् उसमें इतनी योग्यता आ जाय कि विद्यालयसे निकलनेपर वह सुखसे अपना उदर निर्वाह कर सके। तीसरी बात यह थी कि विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा मिले कि खेती बारीके काममें वे एक नवीन जीवन डाल दें और जिन लोगोंके साथ उन्हें जीवन व्यतीत करना है उनकी मानसिक, नैतिक और धार्मिक उन्नति भी कर सकें।

आरम्भ कैसे किया गया?

कोई उद्देश निश्चित करना एक बात है, और उस पर अमल करना बिलकुल दूसरी बात है। आरंभमें, अपने उद्देश्यको कार्यमें परिणत करनेके लिए वाशिंग-

इनके पास कोई साधन नहीं था। जमीनका एक टुकड़ा भी इनके पल्ले नहीं था। परन्तु परमात्माने उन्हें मौका दिया और उस मौके पर उन्होंने अपने प्रयत्नमें कोई कसर नहीं की। टस्केजीसे एक मील फासलेपर एक पुरानी और उजाड़ जगह मिलनेको हुई। वह जगह खरीदनेके लिए हैम्पटन विद्यालयके कोषाध्यक्षने वाशिंगटनको कीमतकी आधी रकम २५० डालर कर्ज दी। इसी जगहकी एक पुरानी कोठरी, अस्तबल और मुर्गीखानेमें पाठशाला आरंभ की गई। विद्यार्थियोंने लाचार होकर वहाँकी मरम्मतका काम किया। खेतीके लिए जगह तैयार करते वक्त भी विद्यार्थी राजी नहीं थे। अभी उन्होंने शारीरिक परिश्रमका महत्त्व नहीं जाना था। पर जब हमारे चरित्तनायक स्वयं कुदाली लेकर जमीन खोदने लगे तब विद्यार्थी भी उनकी मदद करनेके लिए आ पहुँचे। शायद उन विद्यार्थियोंको यह मालूम नहीं था कि एक कमरेमें झाड़ देकर ही वाशिंगटन हैम्पटन विद्यालयमें भरती हुए थे और इसीलिए उन्हें परिश्रमके महत्त्वका पाठ उनसे लेना पड़ा।

हम लोगोंकी पशु अवस्था।

हम लोगोंको परिश्रमके महत्त्वका यह अमूल्य पाठ अभी लेना ही है। हम लोगोंने न जाने कहाँसे यह समझ रक्खा है कि परिश्रम करना महज छोटी जातवालोंका काम है। इसी कारण हम लोगोंमेंसे हिलने डोलनेके सामर्थ्यका लोप हो गया है। बिना नौकरके हमारा काम नहीं चलता। अगर कहीं नौकर न हो तो ऐसा जान पड़ता है कि हम जंगलमें लाकर छोड़ दिये गये हैं--हमारी बड़ी फजीहत होती है। हमारे यहाँकी एक ऐसी पाठशालामें कि जिसका मुख्य उद्देश्य ही विद्यार्थियोंको स्वावलंबी बनाना था, धोतियाँ धोनेके लिए एक धोबी रक्खा गया था। विद्यार्थी नहानेके लिए नदी पर जाते और नहाकर धोती बिना धोये ही ले आया करते थे। अनुसन्धान करनेपर मालूम हुआ कि विद्यार्थियोंके मातापिता और अभिभावक नहीं चाहते थे कि हमारे बालक विद्यालयमें रहते हुए कोई काम करें और इसीलिए यह तमाशा हुआ करता था। वे यही चाहते थे कि हमारे बालकोंके दिमाग (मस्तक) तो ज्ञानसे भर दिये जायँ, पर शरीरके और सब अंग, काम कराकर मजबूत न बनाये जायँ। वे नहीं जानते थे कि यदि शरीरके और सब पुर्जे दुरुस्त न हुए--मददगार न हुए तो अकेला दिमाग बेचारा क्या कर सकता है?

हम लोगोंकी प्राचीन शिक्षाप्रणाली।

प्राचीन समयमें हम लोगोंकी शिक्षाप्रणाली ऐसी नहीं थी। गुरुकुलमें जब विद्यार्थी पढ़ने जाते थे तब हाथमें समिधा (होमकी लकड़ी) लेकर जाया करते थे और गुरु जो जो काम बतलाते थे उन्हें करनेके लिए तैयार रहते थे। इसी प्रकारके नम्रभावसे राजपुत्र तक—श्रीकृष्णभगवान् तक—विद्याभ्यासके लिए गुरुके समीप जाते थे। छान्दोग्य उपनिषदमें एक कथा आती है कि जब सत्यकाम जाबाल गुरुके आश्रममें पढ़ने गया तब गुरुजीने उसे कुछ गौएँ दीं और कहा कि जबतक इनकी एक हजार गौएँ न हो जायँ तबतक जंगलमें ही रहो–मेरे पास न आओ। सत्यकाम कई वर्ष जंगलमें रहा और वहाँ उसने प्रकृतिसे बहुतसी बातें सीखीं। गौओंकी संख्या जब एक सहस्रसे अधिक हो गई तब वायुने वृषभरूप धारण करके उससे कहा कि, "अब तुम गुरुके पास जाओ।" गुरुकुलमें आते ही गुरुजी उससे बोले, "बेटा, तू अब ब्रह्मज्ञानी प्रतीत होता है, यह ज्ञान तुझे किसने बतलाया?" सत्यकामने उत्तर दिया, "मुझे यह शिक्षा मनुष्यकोटिसे भिन्न प्राणियोंने दी है। पर, महाराज, अब मुझ पर आप अनुग्रह कीजिए और मुझे शिक्षा देकर पूर्ण कीजिए।" तब गुरुने उस पर अनुग्रह करके उसे पूर्ण ज्ञानी बना दिया। परिश्रमकी महत्ता और निसर्ग या प्रकृतिकी शिक्षा, यथार्थ शिक्षाके ये दो मुख्य अंग है। इंग्लेंडमें भी इसी ढगकी शिक्षा दी जाती है। वहाँ बड़े बड़े सरदारों और अमीर उमराओंके बालकोंको केवल अपने ही लिए नहीं, बल्कि दूसरोंके लिए भी विद्यालयमें काम करना पड़ता है। उनके घरोंमें नौकर चाकरोंकी कमी नहीं, पर विद्यालयमें उन्हें अकेले ही आना पड़ता है और छात्रावासमें सबके समान रहना पड़ता है। अमेरिकामें गरीब विद्यार्थियोंको अपनी पढ़ाई और भोजनका खर्च चला सकनेके लिए कुछ छोटे मोटे काम करनेको दे दिये जाते हैं। इन कामोंसे उन्हें जो धन मिलता है उससे वे अपना सब खर्च चला लेते हैं। अस्तु। यहाँ हम लोगोंने कुछ ऐसी दशा उत्पन्न कर ली है कि अमीरोंके लड़के शारीरिक परिश्रम नहीं चाहते और साधारण श्रेणीके लोग खेती बारीसे भागते हैं। अब समय आगया है कि हम लोग यथार्थ शिक्षाकी उचित मीमांसा करके अपने बालकबालिकाओंको पुरुषार्थी बनानेका प्रयत्न करें। वाशिंगटनने जिस समय नीग्रो लोगोंमें शिक्षाप्रचारका प्रयत्न आरंभ किया उस समय जो दोष सुशिक्षित नीग्रोलोगोंमें वर्तमान थे वे ही

आज हम सुशिक्षित भारतवासियोंमें भी दिखलाई देते हैं। इस दृष्टिसे हम लोगोंके लिए वाशिंगटनका चरित बहुत ही उपयोगी है।

महान् कार्योंमें आध्यात्मिक सहायता।

वाशिंगटनको पाठशालाके लिए भूमि तो मिल ही चुकी थी। अब उनका दूसरा काम कर्ज अदा करना था। इसके लिए उन्होंने स्वयं घूम घूम और मेले तमाशे खडे करके रकम जुटानेका प्रयत्न किया। बडी तकलीफमें उनके दिन कटे–रातकी नींद भी हराम हो गई, पर अन्तमें वे सफलमनोरथ हुए। इस कार्यमें उन्हें और उनके सहकारियोंको कुछ ऐसे आध्यात्मिक सिद्धान्तोंका ज्ञान हो गया कि जिनसे वे अपना भावी कार्य करनेमें समर्थ हुए। उच्च और पवित्र कार्योंमें विघ्न होते ही हैं, परन्तु इन विघ्नोंमें परमात्माका यही अभिप्राय मालूम होता है कि जो लोग सज्जन हैं वे श्रद्धा, सहिष्णुता और अध्यवसायकी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर अपने उठाये हुए कार्यको पूर्ण करें। जितने अधिक विघ्न होते हैं, कार्यमें उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होती है। क्योंकि विघ्नबाधाओंसे सज्जनोंमें सुवर्णके समान अधिक तेजस्विता, और कार्यक्षमता उत्पन्न होती है। संकटोंसे जूझते हुए यदि कुछ लोग खेत रह जाते हैं तो कोई परवा नहीं, क्योंकि निर्बल मनुष्य ईश्वरका पवित्र कार्य करनेके अधिकारी नहीं। यह सिद्धान्त वाशिंगटनके चरितमें भली भाँति दृग्गोचर होता है। घोर चिन्ताके दिनोंने ही उन्हें यश प्राप्त कराया है। उन्हींसे उन्हें निजसे परमात्मा पर अधिक श्रद्धा करनेकी शिक्षा मिली। परिणाम अथवा कर्मफलकी कोई इच्छा मनमें न रख कर अपना काम किये जाना ही मनुष्यका धर्म है।

' कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। '

—भगवद्गीता।

इस सिद्धान्तको उन्होंने कार्यमें परिणत किया। उन्होंने एक और महत्सिद्धान्त यह जाना कि सारी मनुष्यजातिको–अपने शत्रुओंको भी मित्रके समान प्यार करना चाहिए। उन्होंने इस बातका अनुभव किया कि किसीसे वैर करना आप ही अपनेको नीचे गिराना है। इस लिए जिसे उन्नति करनी है उसका धर्म है कि वह किसीसे वैर न करे। इस उच्च कर्मयोगमें अपना व्यक्तित्व तक भूल जानेवाले महात्मा वाशिंगटनने अपनी निष्काम सेवासे संसारको कृतज्ञ बना लिया है।

विद्यालयकी उन्नतिका मार्ग।

विद्यार्थियोंको यह सिखलाया गया कि बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें धर्म-तत्त्वोंको आचरणमें किस प्रकार लाना चाहिए और ईश्वरके लिए अर्थात् दीन-दरिद्रोंको सुखी करनेके लिए किस प्रकारके काम करने चाहिए। सबसे पहले कृषिकर्म आरंभ किया गया, क्योंकि वाशिंगटनका यह विद्यालय क्या था, एक छोटासा उपनिवेश बन गया था, और 'सर्वारम्भास्तण्डुला प्रस्थमूला' के न्यायसे सबसे पहले उदरनिर्वाहके लिए अन्न उत्पन्न करनेकी आवश्यकता थी। सच पूछिए तो टस्केजीके सभी काम और धन्धे स्वाभाविक और उचित मार्गसे जारी किये गये हैं। कुछ काम तो इसीलिए शुरू किये गये हैं कि विद्यालयके अनाथ और निर्धन विद्यार्थी अपनी पढ़ाई और भोजनका खर्च चला सकें। इसके बाद एक विशाल भवनका बनवाना निश्चय हुआ। वाशिंगटन पर सभी लोगोंका पूरा विश्वास था और इसलिए एक गोरे व्यापारीने बिना माँगे भवनके लिए जितनी लकडी चाहिए देना स्वीकार कर लिया। पर वाशिंगटनने यह सोचा कि जबतक अपने पास काफी रकम न जमा हो जाय तबतक इससे लकडी ले लेना ठीक नहीं, इसलिए उन्होंने चन्दा उगाहनेका प्रयत्न आरंभ किया और मिस डेविड्सन चन्देके लिए उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करने गई। ऐसे समय जब कि धन प्राप्त करनेके सब उपाय किये जा चुके और कहींसे भी धन मिलनेकी आशा न रही, अकस्मात् एक स्थानसे अपने आप सहायता मिल गई। वाशिंगटनके जीवनमें इस प्रकारकी अनेक घटनायें हुई हैं। इन सबमें परमात्माका 'अघटितघटनापटुत्व' दिखलाई देता है। बोस्टनकी दो उदार महिलायें बराबर उनकी सहायता करती रहीं। भवनके विषयमें विशेष रूपसे स्मरण करनेकी बात यह है कि विद्यार्थियोंने स्वयं अपने हाथों उनकी नींव खोदी थी। तब तक विद्यार्थियोंका यह खयाल बना हुआ था कि हम लोक यहाँ पढने आते हैं, न कि मजदूरी करने। परन्तु वाशिंगटनने इस शिकायतकी कोई परवा नहीं की। इस प्रकार विद्यार्थियोंको फिर दूसरी बार स्वावलम्बनकी शिक्षा दी गई।

भारतवासियोंके लिए शिक्षा, परिश्रमकी महत्ता और उससे प्रेम।

हम लोग न जाने कब यह जानेंगे कि परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना चाहिए। इस समय हमारे समाजमें इतना स्वार्थ और आलस्य घुसा हुआ है कि

अगर कोई देखभाल करनेवाला नहीं होता है तो हम लोग कोई भी काम अच्छी तरह नहीं करते हैं। इसी कारण साम्पत्तिक दृष्टिसे यूरोपियन अथवा अमेरिकन मजदूरोंकी अपेक्षा भारतीय मजदूरोंका मूल्य बहुत ही कम है। उन देशोंमें मजदूरी अधिक देनी पडती है, पर काम भी अच्छा होता है, और यहाँ मजदूरी कम लगने पर भी उक्त दुर्गुणोंके कारण अन्तमें वह अधिक ही हो जाती है। यही कारण है कि देशी रजवाडोंमें यूरोपियन नौकर और देशी कारखानोंमें यूरोपियन मैनेजर रक्खे जाते हैं। शिक्षासे हम लोग इस दोषको तो समझने लगे हैं, पर हमे यह नहीं सिखलाया गया कि यह दोष कैसे दूर किया जा सकता है। सीखें भी कैसे? परिश्रमकी महत्ता समझकर उससे प्रेम करना सिखलानेके लिए हमारे देशमें हैम्पटन या टस्केजी-विद्यालय जैसी संस्थायें कहाँ हैं?

प्रकृतिके अनुकरणमें वाशिंगटनकी दृढता।

वाशिंगटनके कार्यसे बहुत लोग नाखुश थे, परन्तु किसीकी परवा न करके उन्होंने प्रकृतिका ही अनुकरण किया। वे जानते थे कि आरंभमें भूलें होंगी, परन्तु उन्हें यह भी मालूम था कि इन्हीं भूलोंसे अनुभव और ज्ञान भी प्राप्त होगा। टस्केजीमें जब ईंटोंका कारखाना जारी किया गया उस समय वाशिंगटनको उस विषयमें कुछ भी जानकारी न थी। उन्होंने तीन बार प्रयत्न किया और तीनों बार उनका काम बिगड गया। चौथे बारके लिए उनके पास पैसे ही न रहे। अन्तमें अपनी घडी रेहन रखकर उन्होंने फिर पजावा लगाया और इस बार उन्हें कामयाबी हासिल हुई। इस काममें उनकी घडी चली गई, पर यह देखिए कि उससे उनको कितनी बडी शिक्षा प्राप्त हुई। अब वही ईंटोंका कारखाना इतनी तरक्की पर है कि एक मौसिममें विद्यार्थियोंने बारह लाख ऐसी बढियाँ ईंटें तैयार कीं जो किसी भी बाजारमें कट जातीं। यह एक ऐसी चटियाँ घटना है जो हिन्दीकी दूसरी या तीसरी पुस्तकमें ' फिर कोशिश करो ' इस शीर्षकके साथ छप जानी चाहिए। सन् १९०१ में टस्केजीमें ४० भवन थे जिनमेंसे ३६ केवल विद्यार्थियों द्वारा बने हुए थे। इस समय संयुक्त राज्यके दक्षिण प्रान्तमें उक्त विद्यालयके ऐसे अनेक विद्यार्थी फैले हुए हैं जो भवन बनानेमें कुशल और शिल्पशास्त्रमें प्रवीण हैं। टस्केजीके विद्यार्थी और अध्यापक बिना किसीकी सहायताके अथवा बाहरसे कोई भी मसाला लिये बिना स्वयं चाहे जैसा

भवन तैयार कर सकते हैं। नींव खोदनेके कामसे लेकर भवन तैयार होने पर उसमें बिजलीकी रोशनी लगानेतकके सब काम वे अपने हाथों कर लेते हैं। इसी प्रकार विद्यालय तथा उसकी कृषि-शालाके लिए जिन जिन चीजोंकी आवश्यकता होती है वे सब विद्यार्थियों द्वारा ही तैयार होती है और ऐसी कुछ चीजें बाजारमें बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इस प्रकार धीरे धीरे और स्वाभाविक क्रमसे विद्यालयकी उन्नति हुई है। इस समय इस विद्यालयमें चालीस प्रकारके व्यवसाय सिखलाये जाते हैं।

धनसंग्रह कैसे हुआ ?

यों तो सभी संस्थाओंमें धनकी आवश्यकता होती है, परन्तु जब कोई विद्यालय चलाना होता है तब उसके लिए सबसे पहले धनकी ही चिन्ता आ घेरती है। अब देखिए कि वाशिंगटनने इसके लिए क्या क्या उपाय किये। घोर निराशा होने पर अकस्मात मिली हुई सहायताका विषय ऊपर लिख ही चुके हैं। जनरल आर्मस्ट्रांगके अधीन एक विद्यालय था ही और उस विद्यालयके लिए भी धनकी बडी भारी आवश्यकता थी, तो भी जनरल महाशय वाशिंगटनको अपने साथ उत्तर प्रान्तमें ले गये और वहाँ उन्हें बडे बडे लोगोंसे मिलाकर उन्होंने टस्केजी-विद्यालयको धन दिलानेमें बडी सहायता की। क्या इस देशमें भी कोई संस्था दूसरी संस्थाकी इस प्रकारसे सहायता करती है ? क्या इस प्रकारकी स्वावलंबी संस्थायें यहाँ भी वर्तमान हैं ? दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि जनरल आर्मस्ट्रांग या हैम्पटन विद्यालयने वाशिंगटन या टस्केजी-विद्यालयको केवल मार्ग दिखला दिया था, पर उस मार्ग पर चलकर अपना उद्देश्य पूरा करनेका काम वाशिंगटनने ही किया। स्वावलंबी पुरुषोंको इतनी ही सहायता आवश्यक होती है और इतनी ही उन्हें दी जानी चाहिए। भगवद्गीतामें जो तीन प्रकारके दान बतलाये गये हैं उनमेंसे, अमेरिकन लोग प्रायः सात्विक दान किया करते हैं। कभी कभी गुप्त दान भी दिये जाते हैं; पर वहाँ बिना देश, काल और पात्रकी परीक्षा किये कोई भी दाता दान नहीं देता। इस प्रकारके समझदार और सात्विक दाताओंके कारण ही वाशिंगटनको धन संग्रह करनेमें विशेष कष्ट नहीं उठाने पडे। संस्थायें सुप्रसिद्धि और सर्वप्रियता कैसे सम्पादन कर सकती है, इसके लिए वाशिंगटनने अपने अनुभवसे कुछ सिद्धान्त स्थिर किये हैं जो आगे दिये जाते हैं —

(१) सर्वसाधारणको और सब प्रकारकी सस्थाओंको अपने कार्यकी खबर कर दो, परन्तु यह दीनतासे नहीं, गौरवके साथ करो। अपने कार्यके विषयमें जो कुछ बतलाना हो वह एक तरतीबके साथ, पर साफ साफ, बतलाओ।

(२) परिणामके विषयमे निश्चिन्त रहो।

(३) सस्थाकी भीतरी कायवाही जितनी ही स्वच्छ, पवित्र और उपयुक्त होगी उतनी ही लोग उसकी सहायता करेंगे।

(४) जिस तरह धनवानोंके पास जाते हो उसी प्रकार निर्धनोंके पास भी सहायता मांगनेके लिए जाना चाहिए। सची सहानुभूति और सहृदयता प्रकट करनेवाले सैकडों लोगोंकी छोटी छोटी रकमोंसे ही बडे बडे परोपकारके कार्य हुआ करते ह।

(५) धन सग्रह करते समय धन देनेवालोंसे सहानुभूति और सत्परामर्श भी प्राप्त करनेकी चेष्टा करते रहना चाहिए।

इन सिद्धान्तोंकी सत्यताके कितने ही प्रमाण इस पुस्तकके बारहवें परिच्छेदमें आगये हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढनेसे परोपकारम ही जीवन व्यतीत करनेवाले पाठकोंको अनेक लाभ होंगे।

नीग्रो लोगोंकी राजकीय परिस्थितिके विषयमें विचार न करनेका कारण।

अपनी जातिकी राजकीय परिस्थितिके विषयमें वाशिंगटनने बडी बुद्धिमानी और चालाकीसे भरी हुई बातें कही हैं। परन्तु वाशिंगटनने अपने जातिभाइयोंकी साम्पत्तिक और शिक्षासम्बन्धी उन्नतिके लिए ही अपना जीवन अर्पण कर दिया है, इसलिए, चलिए हम राजकीय बातोंका विचार छोडकर फिर विद्यालयकी ओर चलें।

विद्यालयकी उन्नति।

सन् १८८१ मे अर्थात् विद्यालयके आरभिक कालमे सा एकड जमीन, तीन भवन, एक अध्यापक और कुल तीस विद्यार्थी थे। अब (१९१२ में) १०६ भवन, २३५० एकड जमीन, १५०० चौपाये, और गाडी सग्गड तथा खेतीके औजार वगैरह सब असबाब मिलाकर १२,९५,२१३,१७५ डालरकी सम्पत्ति है। विद्यालयकी सारी मिलकियत स्थायी फण्डको मिलाकर ३४१६,८६१, २८ डालरकी है। विद्यालयके अध्यापकों और अन्य कर्मचारियोंकी सख्या १८० के ऊपर।

है, और रजिष्टरमें १६४५ विद्यार्थियोंके नाम दर्ज हैं जिनमें १०६७ बालक और ५७८ बालिकायें हैं। ये विद्यार्थी ३४ राज्यों और प्रदेशोंसे तथा १९ विदेशोंसे आये हुए हैं। २३५० एकड़ जमीनमेंसे १००० एकड़में खेती होती है। विद्यालयके चौपायोंके लिए जितने चारेकी आवश्यकता होती है उसे विद्यालयका कृषिविभाग ही उत्पन्न कर लेता है। इस विभागके विद्यार्थियोंको खेतीके औजार, खेतीकी नवीन पद्धति और साधारण कृषिकर्मकी अच्छी शिक्षा दी जाती है।

विद्यालयमें मानसिक और साहित्यिक शिक्षाके साथ साथ ४० व्यवसायोंका सप्रयोग ज्ञान कराया जाता है। कृषि और कृषिसंबंधी दूसरे कार्यों पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है। प्रत्येक व्यवसाय या धन्धा इस तरह सिखल दिया जाता है कि विद्यालयसे निकलते ही विद्यार्थियोंको काम मिल जानेमें कोई कठिनाई नहीं पड़ती। विद्यार्थी इतने तैयार हो जाते हैं कि वे और लोगोंको साहित्य और व्यवसायकी शिक्षा अच्छी तरह दे सकते हैं। जिन विद्यार्थियोंमें मानसिक शिक्षा प्राप्त करनेका सामर्थ्य नहीं होता उन्हें रातकी पाठशालामें पढ़ाया जाता है। वे दिनभर काम धन्धा करते हैं और आगे पढ़नेके लिए धन जमा कर रखते हैं। इस विषयमें बालक और बालिकायें दोनोंके लिए एकसा ही प्रबन्ध किया गया है।

विद्यालय एक समाज या संस्था है।

हैम्पटन विद्यालयकी रिपोर्टके निम्नलिखित वाक्य टस्केजी-विद्यालय पर भी भली भाँति घटते हैं।—" विद्यालय एक बड़ा समाज या संस्था है। वह अपने सब अभावोंकी पूर्ति स्वयं करता है, और उसके नानाविध औद्योगिक तथा कृषिसंबंधी प्रयत्नोंके कारण और लोगोंसे उसका संबंध हो जाता है। विद्यार्थियोंके छात्रावास, शयनागार, भजनमन्दिर, भंडारगृह, कारखाने, प्रयोगशाला, खेत, विद्यालय भवन आदि सामानोंमें पाठशाला एक बड़ी संस्था या बसती मालूम होती है, और यहाँ विद्यार्थी अनेक वस्तुयें तैयार करते हैं,—खेत जोतते हैं, रसोई बनाते हैं, भजन करते हैं, खेलते और आराम करते हैं। इस संस्थाके संचालकोंके सामने सदा यही एक प्रश्न उपस्थित रहता है कि विद्यार्थियोंको काम करते हुए किस प्रकार शिक्षा दी जाय और उनकी दिनचर्या तथा कार्यकलापसे किस प्रकार उनकी मानसिक और नैतिक उन्नति की जाय।"

विद्यालय एक तरहका साँचा है।

विद्यालयमें दो प्रकारके विद्यार्थी होते हैं—१ शिल्पशालामें प्रवेश करनेकी तैयारी करनेवाले, और २ शिल्पशिक्षा समाप्त करके साहित्यका अध्ययन करनेवाले। गरीब विद्यार्थियोंको दिनमें शिल्पशिक्षाके लिए काम करना पड़ता है और रातको साहित्यका अभ्यास करना पड़ता है। ऐसा प्रबन्ध होनेसे उन्हें शिल्पशिक्षाके लिए बहुत समय मिलता है। इन दोनों प्रकारकी शिक्षाओंसे विद्यार्थियोंमें नैतिक गुणोंकी वृद्धि होती है, उनके स्वभावमें विशेष दृढ़ता आती है और वे अधिक कार्यक्षम होते हैं। शिक्षा देनेमें ये चार उद्देश सामने रहते हैं—१ संसारको जिन वस्तुओंकी आवश्यकता है उन वस्तुओंको विद्यार्थी तैयार कर सकें, २ विद्यालयके ग्रेज्युएटोंमें इतनी कुशलता, योग्यता और नीतिमत्ता हो कि वे पुरुषार्थके साथ सुखसे अपना उदर निर्वाह कर सकें, ३ विद्यार्थी परिश्रमकी महत्ताको भली भाँति जान जायँ और परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना सीखें और ४ उन विद्यार्थियोंमें देशसेवा करनेकी इच्छा उत्पन्न हो। इस प्रकार विद्यालय एक तरहका साँचा है जिसमेंसे कच्चे विद्यार्थी सुसंस्कृत गृहस्थ होकर बाहर निकलते हैं।

परिश्रमकी शिक्षामें सुगमता।

विद्यार्थियोंको परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना सिखलानेको आरंभमें जो प्रयत्न किये गये थे उनका उल्लेख ऊपर आ ही चुका है, परन्तु अब तो वहाँ परिश्रम करना परंपराकी एक रीति ही हो गई है। जो नये विद्यार्थी भरती होने आते हैं वे देखते हैं कि सैकड़ों विद्यार्थी बड़े आनन्दसे खेतों पर और कारखानोंमें शारीरिक परिश्रम कर रहे हैं और यह देखकर वे भी काममें भिड़ जाते हैं। इस प्रकार पुराने विद्यार्थियोंसे नये विद्यार्थी आप ही परिश्रमकी दीक्षा ले लेते हैं। इसका परिणाम समाज पर भी होता है और इससे जातिकी उन्नतिमें बड़ी सहायता होती है।

विद्यालयके विशेष कार्य।

शिल्पशिक्षा और कृषिशिक्षाके साथ साथ व्यापारी ढंग—व्यवहारचातुर्य भी सिखलाया जाता है। विद्यालयमें शिल्पशिक्षाकी अनेक शाखायें होनेसे इस प्रकारकी शिक्षा देनेके लिए बहुत सुभीते हैं। उत्तम अध्यापक भी निर्माण किये जाते हैं। इस कामके लिए खास तौर पर छोटे बच्चोंका एक बड़ा क्लास रक्खा

गया है। बाहरी लोगोंको भी इस विद्यालयके कार्य करनेका ढंग सिखलानेके लिए छुट्टियोंके दिनोंमें एक विशेष क्लास खोल दिया जाता है जिससे अनेक अध्यापक और प्रौढ विद्यार्थी लाभ उठाते हैं।

परिणाम।

विद्यालयकी शिक्षाका बड़ाभारी और टिकाऊ परिणाम यह हुआ है कि इस विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी रहन-सहन, घरगिरस्तीका ढंग, उद्यमप्रियता और स्वच्छता देखकर समाजके सब प्रकारके लोग उनका अनुकरण कर बहुत सुखी और सभ्य बनते जाते हैं। इस विद्यालयके ग्रेज्युएट (स्त्रियाँ और पुरुष दोनों) उत्तर प्रान्तकी बड़ी बड़ी तनख्वाहें और आरामकी नौकरियोंको छोड़कर अपने समाजकी सेवाके लिए मामूली वेतन पर दक्षिण प्रान्तमें ही रहते हैं। इससे उनका स्वार्थत्याग प्रकट होता है।

आत्मविश्वासका एक दृष्टांत।

जब वाशिंगटन यूरोपमें थे तब उनके पुत्र बेकर वाशिंगटनने उनके पास जो पत्र भेजा था उससे इस बातका पता लगता है कि विद्यालयके विद्यार्थियोंमें कहाँतक आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाता है। बेकरने वाशिंगटनको लिखा था "पूज्य पिताजी, आप यहाँसे चलते समय मुझसे कह गये थे कि मैं दिनमें छ घंटे अपने काममें लगा रहूँ और शेष समयमें चाहे जो करूँ, परन्तु मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मैं दिनभर इसी काममें लगा रहना चाहता हूँ। मैं जब दूसरे विद्यालयमें पढ़ने जाऊँगा तब वहाँका खर्च चलानेके लिए धनकी जरूरत होगी। सो उसके लिए मैं अभीसे धन इकट्ठा कर रखता हूँ।"

अपने ही पुरुषार्थसे संसारमें प्रसिद्ध होनेवाले मातापिताकी सन्तान यदि अपनी ही कमाईके भरोसे विद्या लाभ करे तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। क्या हम भी अपने धनी और निर्धन देशवासियोंमें ऐसा ओज और उत्साह उत्पन्न कर सकते हैं? हमारे देशके विद्यार्थियोंको चाहिए कि वे बेकरके इस दृष्टान्तको सदैव अपने सामने रक्खें।

रचना और प्रबन्ध।

अब चलिए इस विद्यालयकी रचना और प्रबन्धको देखें। विद्यालयकी सारी मिलकियत पंचोंकी एक कमेटीके अधिकारमें है। पंच वे ही लोग हैं जो नीग्रो जातिके प्रतिनिधि माने जाते हैं और जिन्होंने विद्यालयकी सहायता करनेमें

कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इन्हीं पचों द्वारा मिलकियतका सारा प्रबन्ध होता है। विद्यालयकी जितनी शाखायें हैं उतने ही उनके प्रधान या मुख्य अधिकारी हैं और इन प्रधानोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा है जिसके सप्ताहमें दो बार अधिवेशन होते हैं। इसी सभाद्वारा विद्यालयके नियमादि बनते हैं। आयव्ययका विचार करनेवाली एक अलग कमेटी है जिसमें छ सदस्य या मेम्बर रहते हैं। इसका अधिवेशन सप्ताहमें एक बार होता है और इस अधिवेशनमें साप्ताहिक खर्च मजूर किया जाता है। इसके अतिरिक्त महीनेमें एक बार अथवा आवश्यकता पडने पर अनेक बार, सब शिक्षकोंकी साधारण सभा हुआ करती है। इस सभामें शिक्षक शिक्षासबधी अनुभवों और अभावोंकी चर्चा करते हैं। इससे शिक्षासबधी कार्यमें दिनोंदिन उन्नति होती जाती है। इन सबके अतिरिक्त विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंकी भिन्न भिन्न सभायें भी हैं जिनके अधिवेशन सदा ही हुआ करते हैं।

वाशिंगटनकी कार्यपद्धति।

पर टस्केजी विद्यालयकी जान अगर पूछिए तो वाशिंगटन ही हैं। इन्हें विद्यालयमें काम करना पडता है और विद्यालयकी सहायताके लिए बाहर घूमना भी पडता है। वाशिंगटन कहीं भी रहें उन्हें विद्यालयकी दैनिक रिपोर्ट मिला करती है। उनके चतुर सेक्रेटरी और अन्य कर्मचारी उनकी सहायताके लिए तत्पर रहते हैं। उनकी पत्नी भी विद्यालयके कार्यमें उनकी यथेष्ट सहायता करती हैं। विद्यालयके दोष ढूंढ निकालनेके लिए वाशिंगटन सदा ही बहुत उत्सुक रहते हैं। वे बडे स्नेहके साथ विद्यार्थियोंसे बातें करते हैं और बातो ही बातोंमें विद्यालयके सबधमें उनकी सम्मतियाँ लेकर दोष मालूम कर लेते हैं। पूर्ण और निर्दोष उन्नतिके लिए यह ढग बहुत ही उपयोगी है। दोष मालूम हो जानेसे उन्हें दूर करनेका प्रयत्न किया जा सकता है। यदि आँख मूँद कर काम करते गये और दोष बिलकुल देख न पडे तो सारा काम ही बिगड जानेका डर रहता है। जिस विद्यालयका यह उद्देश्य है कि विद्यार्थी विद्यालाभ कर अपने समाजकी सेवा करें और सभव हुआ तो उसकी उन्नति भी करें, उस विद्यालयको समाजकी अत्यन्त आवश्यकताओंके अनुरूप अपने शिक्षाक्रममें हेरफेर करना ही पडेगा और इस प्रकारका हेरफेर करना ही यथार्थमें शिक्षा देना है। शिक्षाहीसे प्रपच और परमार्थके

गया है। बाहरी लोगोंको भी इस विद्यालयके कार्य करनेका ढग सिखलानेके लिए छुट्टियोंके दिनोंमें एक विशेष क्लास खोल दिया जाता है जिससे अनेक अध्यापक और प्रौढ विद्यार्थी लाभ उठाते हैं।

परिणाम।

विद्यालयकी शिक्षाका बडाभारी और टिकाऊ परिणाम यह हुआ है कि इस विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी रहन-सहन, घरगिरस्तीका ढग, उद्यमप्रियता और स्वच्छता देखकर समाजके सब प्रकारके लोग उनका अनुकरण कर बहुत सुखी और सभ्य बनते जाते हे। इस विद्यालयके ग्रेज्युएट (स्त्रियाँ और पुरुष दोनों) उत्तर प्रान्तकी बडी बडी तनख्वाहे और आरामकी नौकरियोंको छोडकर अपने समाजकी सेवाके लिए मामूली वेतन पर दक्षिण प्रान्तमे ही रहते हैं। इससे उनका स्वार्थत्याग प्रकट होता है।

आत्मविश्वासका एक दृष्टात।

जब वाशिंगटन यूरोपमें थे तब उनके पुत्र बेकर वाशिंगटनने उनके पास जो पत्र भेजा था उससे इस बातका पता लगता है कि विद्यालयके विद्यार्थियोंमें कहाँतक आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाता है। बेकरने वाशिंगटनको लिखा था "पूज्य पिताजी, आप यहाँसे चलते समय मुझसे कह गये थे कि मैं दिनमें छ घटे अपने काममें लगा रहूँ और शेष समयमें चाहे जो करूँ, परन्तु मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि म दिनभर इसी काममें लगा रहना चाहता हूँ। म जब दूसरे विद्यालयमें पढने जाऊँगा तब वहाँका खर्च चलानेके लिए धनकी जरूरत होगी। सो उसके लिए में अभीसे धन इकट्ठा कर रखता हूँ।"

अपने ही पुरुषार्थसे ससारमे प्रसिद्ध होनेवाले मातापिताकी सन्तान यदि अपनी ही कमाईके भरोसे विद्या लाभ करे तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। क्या हम भी अपने धनी और निर्धन देशवासियोंमें ऐसा ओज और उत्साह उत्पन्न कर सकते हैं? हमारे देशके विद्यार्थियोंको चाहिए कि वे बेकरके इस दृष्टान्तको सदैव अपने सामने रक्खें।

रचना और प्रबन्ध।

अब चलिए इस विद्यालयकी रचना और प्रबन्धको देखें। विद्यालयकी सारी मिलकियत पचोंकी एक कमेटीके अधिकारमें है। पच वे ही लोग हैं जो नीग्रो जातिके प्रतिनिधि माने जाते हे और जिन्होंने विद्यालयकी सहायता करनेमें

कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इन्हीं पचों द्वारा मिलकियतका सारा प्रबन्ध होता है। विद्यालयकी जितनी शाखायें हैं उतने ही उनके प्रधान या मुख्य अधिकारी हैं और इन प्रधानोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा है जिसके सप्ताहमें दो बार अधिवेशन होते हैं। इसी सभाद्वारा विद्यालयके नियमादि बनते हैं। आयव्ययका विचार करनेवाली एक अलग कमेटी है जिसमें छ सदस्य या मेम्बर रहते हैं। इसका अधिवेशन सप्ताहमें एक बार होता है और इस अधिवेशनमें साप्ताहिक खर्च मजूर किया जाता है। इसके अतिरिक्त महीनेमें एक बार अथवा आवश्यकता पडने पर अनेक बार, सब शिक्षकोंकी साधारण सभा हुआ करती है। इस सभामें शिक्षक शिक्षासबधी अनुभवों और अभावोंकी चर्चा करते हैं। इससे शिक्षासबधी कार्यमें दिनोंदिन उन्नति होती जाती है। इन सबके अतिरिक्त विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंकी भिन्न भिन्न सभायें भी हैं जिनके अधिवेशन सदा ही हुआ करते हैं।

वाशिंगटनकी कार्यपद्धति।

पर टस्केजी विद्यालयकी जान अगर पूछिए तो वाशिंगटन ही हैं। इन्हें विद्यालयमें काम करना पडता है और विद्यालयकी सहायताके लिए बाहर घूमना भी पडता है। वाशिंगटन कहीं भी रहें उन्हें विद्यालयकी दैनिक रिपोर्ट मिला करती है। उनके चतुर सेक्रेटरी और अन्य कर्मचारी उनकी सहायताके लिए तत्पर रहते हैं। उनकी पत्नी भी विद्यालयके कार्यमें उनकी यथेष्ट सहायता करती हैं। विद्यालयके दोष ढूँढ निकालनेके लिए वाशिंगटन सदा ही बहुत उत्सुक रहते हैं। वे बडे स्नेहके साथ विद्यार्थियोंसे बातें करते हैं और बातों ही बातोंमें विद्यालयके सबधमें उनकी सम्मतियाँ लेकर दोष मालूम कर लेते हैं। पूर्ण और निर्दोष उन्नतिके लिए यह ढग बहुत ही उपयोगी है। दोष मालूम हो जानेसे उन्हें दूर करनेका प्रयत्न किया जा सकता है। यदि आँख मूँद कर काम करते गये और दोष बिल्कुल देख न पडे तो सारा काम ही बिगड जानेका डर रहता है। जिस विद्यालयका यह उद्देश्य है कि विद्यार्थी विद्यालाभ कर अपने समाजकी सेवा करें और समय हुआ तो उसकी उन्नति भी करें, उस विद्यालयको समाजकी अत्यन्त आवश्यकताओंके अनुरूप अपने शिक्षाक्रममें हेरफेर करना ही पडेगा और इस प्रकारका हेरफेर करना ही यथार्थमें शिक्षा देना है। शिक्षाहीसे प्रपच और परमार्थके

पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं, शिक्षाहीसे अपने कर्तव्याकर्तव्यका विचार सूझता है और शिक्षासे ही अपने समाजकी यथायोग्य सेवा करते बनती है। टस्केजी विद्यालयके विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही विद्यालयको अपना समझते हैं और विद्यालयके धार्मिक तथा पारमार्थिक कार्योंमे वाशिंगटनकी तनमनधनसे सहायता करते हैं। अपना सर्वस्व विद्यालयकी सेवामे अर्पण कर देनेवाले वाशिंगटनको खेल या मनोरंजनके लिए कभी समय नहीं मिलता। वाशिंगटन पहले अपने नित्य कर्मसे निपट लेते हैं और तब किसी नये काममें हाथ लगाते हैं। कामके बोझसे दबना वे नहीं जानते, कामहीको अपने काबूमें कर लेते हैं। काम यदि अपने अधीन हो जाता है तो उससे मनकी प्रसन्नता बढती और आत्मिक बल प्राप्त होता है। कर्मयोगकी इस पद्धतिसे शरीरमें फुर्ती आती है, मनका उत्साह बढता है और आत्मा सन्तुष्ट होता है। तब कृत्रिम ओषधियोंकी कोई आवश्यकता नहीं रहती। अन्तरात्मा ही तो कल्पतरु है,उससे क्या नहीं मिल सकता?

दूसरे सामाजिक कार्य।

टस्केजी विद्यालयके साथ ही साथ दो संस्थायें और चलती है—१ नीग्रो कृषक महासभा, और २ नीग्रो राष्ट्रीय उद्यम सभा। इन दोनोंका उद्देश्य यही है कि नीग्रो जातिकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नति हो। इन दो महासभाओंकी कितनी ही शाखायें फैल गई है जिनसे बनिज-व्योपार और कृषिकर्मकी बराबर उन्नति होती जा रही है। वाशिंगटनने यह समझ लिया है कि संसार उत्तम वस्तुओंकी कदर करता है—उन वस्तुओंको पैदा करने वालोंका रूपरंग नहीं देखता। एक खेतमें साधारणत जितना अनाज पैदा होता है उससे चौगुना अनाज पैदा करनेवाला मनुष्य अवश्य ही संसारका सम्मान भाजन होगा। इसी प्रकारसे जिसने चित्रकला या और किसी कलामें निपुणता प्राप्त कर ली है संसारमें उसकी प्रतिष्ठा हुए बिना न रहेगी। इस लिए इस जीवनसंग्राममें यह आवश्यक है कि प्रत्येक जातिके लोग अपनी शक्तिभर समाजके काममें आनेकी चेष्टा करें। समाज तभी उनका आदर करेगा। यदि किसी पिछडी हुई जातिमें शिक्षाका प्रचार हो ले और उसकी नैतिक तथा भौतिक उन्नति हो जाय तो फिर उसे राजकीय अधिकार मिलना कोई बडी बात नहीं है।

हिन्दुओंके आक्षेप।

यहाँ तक वाशिंगटन और उनके कार्योंका वर्णन हुआ। अब यह विचार करना चाहिए कि हम लोग यहाँ अपने समाजमें वाशिंगटनके ढगके कोई काम कर सकते

है या नहीं। कुछ लोग इस विषयमें यह आक्षेप करेंगे कि, " हम हिन्दुओंकी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है। नीग्रो लोग तो अभी अभी अज्ञानके अन्धकारसे बाहर आये हैं और अभी उन्हें तो प्रपंचकी छोटी छोटी बातें तक सीखनी हैं। हम लोगोंकी अवस्था बिलकुल भिन्न है। वाशिंगटन और उनके जैसे हैम्पटनी विचारके लोग शिल्पशिक्षाको ही सब कुछ माने बैठे हैं, परन्तु जिस जातिमें प्रचंड बुद्धिसम्पन्न पुरुष उत्पन्न हो सकते हैं उस जातिके लिए इस शिक्षासे काम न चलेगा। यहाँ तो मानसिक शिक्षाकी ही प्रधानता होनी चाहिए।"

आक्षेपोंका विचार।

यह सच है कि किसी समय हमारी जाति बहुत ही उन्नत थी, परन्तु अब हमारी उन्नति रुकी हुई है। यदि हम लोग फिर ऊपर उठना चाहें तो हमें पहले उन्नतिके मूलतत्त्वोंका विचार करना चाहिए। यदि यह प्रमाणित हो जाय कि उन्हीं तत्त्वों पर नीग्रो जाति अपनी उन्नति कर रही है तो क्या कारण है कि हम लोग भी उसी मार्ग पर न चलें? सत्यको स्वीकार करना सत्यान्वेषियोंका धर्म है। पहले हम इस बातका विचार करना चाहिए कि नीग्रो लोग क्या कर रहे हैं। वे लोग इस समय यह चेष्टा कर रहे हैं कि नीग्रो जातिमें पुरुषार्थी स्त्री पुरुष उत्पन्न हों, उनका प्रत्येक कार्य धर्म और ईश्वरभावसे प्रेरित हो, उनमें उच्च प्रकारकी नीतिमत्ता हो, उनका आचरण अत्यन्त शुद्ध हो, वे पुरुषार्थके साथ अपना जीवन निर्वाह करें, आत्मविश्वासके साथ अपने समाजकी सेवा करें, अपने मातापिताओं तथा सरकारके आज्ञापालक हों, उनमें चातुर्य, दक्षता, आत्मसंयम, सहिष्णुता आदि गुणोंका उत्तम विकास हो और वे परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखें। भला बतलाइए तो कि ये गुण किस समाजके लिए आवश्यक नहीं हैं? इन गुणोंका समुदाय ही सनातन सत्य है और इस सत्यका सर्वत्र सम्मान है। इन गुणोंकी प्राप्तिके लिए वाशिंगटनने निसर्ग (प्रकृति) का ही अनुसरण किया है। उन्होंने विद्यालय क्या स्थापन किया है अपने अभावोंकी स्वयं पूर्ति करनेवाला एक समाज ही खड़ा कर दिया है। आरंभमें उन्हें बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं, पर अब सब काम घड़ीके काँटोंकी तरह बराबर हो रहे हैं। इस विद्यालयने समाजकी शकल बदल दी है। यदि भारतवर्षके किसी विद्यालयका कोई विद्यार्थी जंगलमें ले जा कर छोड़ दिया जाय तो वह भूख प्यासके मारे मर जाय, परन्तु उसी स्थान पर टस्केजी या हेम्पटनका विद्यार्थी छोड़ दिया जाय तो वह वहाँ राबिन्सन् क्रूसोकी तरह एक नई वस्ती कायम कर देगा।

हमारे देशमें सारा दारोमदार मानसिक शिक्षा पर ही रहता है, परन्तु हाथ पैर और नाक कान ही अगर ढीले पड गये हों तो मन बेचारा दौड लगाकर क्या करेगा? शरीरके सारे ही अंगोंका विकास होना चाहिए। इतने दिनों बाद अब कहीं यहाँ वालोंने इस सिद्धान्तका पता लगा है और अब किसी किसी विद्यालयमें हाथकाम (Manual Training) की शिक्षा आरंभ की गई है। पर यथार्थ शिक्षा मकानमें नहीं बल्कि मैदानहीमें मिलती है और इसी लिए खेतों पर काम करने वाले और हमारेसे बनानेवाले बालक हाथकाम या शिल्पकी कक्षाओंमें शिक्षा पाये हुए विद्यार्थियोंसे कहीं बढकर पुरुषार्थी होते हैं। भारतवर्षकी आबादीके मुकाबलेमें हमारे बुद्धिमान् या लिखे पढे लोगोंकी संख्या बहुत ही थोडी है। किसानों और कारीगरोंकी संख्या ही विशेष है। सैकडा ८० आदमी तो कोरे किसान ही हैं। इनको शिक्षाका क्या प्रबन्ध किया गया है? जिन्हें हम लिखे पढे या बुद्धिमान कहते हैं उनकी ही क्या दशा है? उन्होंने तो क्लर्कोंकी शिक्षा पाई है। इस शिक्षासे क्या सारी जाति उन्नत हो जायगी? हम तो यह कहते हैं कि हैम्पटन अथवा टस्केजीकेसे विद्यालय इस देशमें स्थान स्थान पर स्थापित हो जाय और उनमें उच्च प्रकारकी मानसिक शिक्षाका भी प्रबन्ध हो। देहातोंमें रहकर देहातियोंकी दशा सुधारनेवाले उत्साही और स्वार्थत्यागी ग्रेज्युएट इस देशमें कहाँ हैं? हमने माना कि ऐसे उत्साही और स्वार्थत्यागी ग्रेज्युएट मिल जायँगे, तो भी यह पूछना है कि क्या इन सब ग्रेज्युएटोंमें इतनी योग्यता है कि वे किसानोंकी दशा सुधार सकें? हम लोगोंको तो देहातोंमें और शहरोंके कारीगरोंमें ही काम करना है। इन लोगोंके लडकोंको हमारे ग्रेज्युएट नहीं सिखला सकते। यही तो मुश्किल है। उच्चशिक्षाके विषयमें यहाँ विचार करनेकी आवश्यकता नहीं, शिक्षाविभागके अधिकारी उसमें उचित हेरफेर कर ही रहे हैं, परन्तु आरंभिक शिक्षामें तथा हाई स्कूलोंमें कुछ भी आवश्यक हेरफेर होता नहीं दीखता। समाजकी आवश्यकता ही तो शिक्षाकी कसौटी है। आजकल स्कूलोंमें जो शिक्षा दी जाती है उससे हमारे समाजका कुछ भी काम नहीं निकलता। आरंभिक शिक्षाक्रममें एक भी ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती जिससे विद्यार्थी अपने बल पर खडा हो या अपने समाजकी कुछ सेवा कर सके। यदि आप लोगोंको उत्तम अध्यापकों, उपदेशकों, शिल्पियों और कृषकोंकी आवश्यकता है तो उनके लिए उनके कामोंमें निपुण करनेवाले विद्यालय स्थापित कीजिए। यहाँ हैम्पटन और

टस्केजी-विद्यालयकी कार्यपद्धति शुरू कर देनेकी कितनी आवश्यकता है सो सब पाठकोंको मालूम होगया होगा। भारतसन्तानोंको शिक्षा दान देनेकी जिन स्त्री पुरुषोंपर जिम्मेदारी है उन्हें हैम्पटन और टस्केजी विद्यालयकी कार्यपद्धति और उनके सिद्धान्तोंको, यहाँकी आवश्यकताओंके अनुरूप उचित हेरफेरके साथ, सदा अपने सामने रखना चाहिए।

तीव्र बुद्धिसम्पन्न पुरुषोंकी संख्या बहुत ही थोडी हुआ करती है। ऐसे पुरुषोंको उनकी उन्नतिके उपाय भी नहीं बतलाने पडते। हर्बर्ट स्पेन्सरने विश्व-विद्यालयमें जाकर कब पढा था? कोई यह नहीं कहता कि विद्यार्थियोंको उच्च शिक्षा न दी जानी चाहिए। जो उच्च शिक्षा पानेके अधिकारी हों, वे अवश्य उद्योग करें—उन्हें कोई नहीं रोकता, परन्तु आजकलकी तरह ऐरे गैरे लोग भी उसमें दखल न दिया करें तो अच्छा हो।

हमें क्या करना चाहिए?

क्या हम लोग भी अपने देशमें हैम्पटन या टस्केजीके समान विद्यालय स्थापित नहीं कर सकते? आरभमें कठिनाइयाँ उठानी पडेंगी इसमें सन्देह नहीं। स्वय वाशिंगटन और उनके गुरु जनरल आर्मस्ट्रागको भी बडी बडी कठिनाइयोंसे सामना करता पडा था। परन्तु दृढनिश्चयी मनुष्योंके मार्गसे पर्वतप्राय कठिनाइया भी हट जाती हैं। भारतवर्षमें दयालु अँगरेज-सरकारकी छत्रछायामें शिक्षाप्रचारके लिए हम लोगोंको अनेक सुबि-धायें मिल सकती हैं। स्वय सरकार भी विद्यादानका बहुत कुछ प्रयत्न कर रही है। यदि हमारे विद्वान् भाई इस कार्यमें योग दें तो शिक्षा-प्रचारके कार्यमें बडी भारी सहायता होगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस कार्यमें उन्हें अपना जीवन अर्पण कर देना होगा। टस्केजी विद्यालयके समान ही काम आरभ किया जाय और उसके साथ शिल्पसंबधी और मानसिक शिक्षा भी देनेका प्रबन्ध हो। काम धीरे धीरे करना ही अच्छा होता है। हाँ एक साथ ही बहुत बडी रकम जमा हो गई और काम करनेवाले भी मिल गये तो बात दूसरी है। खेतीसे आरंभ हो और खेतीके साथ बढई और लुहारका भी काम सिखलाया जाय। कारखाना एकदम बढा देना ठीक नहीं। पहले सीना पिरोना और कातना बुनना आदि छोटे काम हाथमें लिये जायँ और फिर ईंटोंका या और ऐसा ही कारखाना शुरू कर दिया जाय। कामका

पूरा ढग एकाएक नहीं बँध सकता, क्योंकि जहाँ जैसी परिस्थिति हो वहाँ वैसा ढग स्वीकार करना पडेगा। परन्तु खेतीका काम सभी जगह शुरू किया जा सकता है। पढाई और भोजनके खर्चका प्रबन्ध हैम्पटनकासा होना चाहिए। विद्यालयका खर्च चलानेके लिए पहले तो अपने आसपास ही और फिर दूरदूरतक घूम कर चन्दा उगाहनेका काम करना चाहिए। सबसे पहले योग्य अध्यापक मिलनेकी कठिनाई है, परन्तु ढूँढने पर ऐसे अध्यापक मिल जायँगे। विद्यालयके सचालक यदि स्वय विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंको न चला सकें तो कोई परवा नहीं, पर उन्हे कमसे कम चलानेका ढग अवश्य मालूम हो।

उक्त प्रयत्नका परिणाम।

समाजपर इस शिक्षाका बहुत ही अच्छा परिणाम होगा। इस विद्यालयसे जो विद्यार्थी बाहर निकलेंगे वे आजकलकी तरह रट्टू तोते न होंगे, उन्हें इस बातका ज्ञान रहेगा कि समाजमें किस प्रकार मिलना होता है और कैसे उसका साथ देना होता है। तात्पर्य, ऐसे विद्यालयसे निकले हुए विद्यार्थी समाजके वास्तविक नेता होंगे।

स्त्री-शिक्षा।

स्त्री-शिक्षाके विषयमें हम लोगोंकी विचार-पद्धति उनसे भिन्न होगी, क्योंकि हमारी परिस्थिति उनकी परिस्थितिसे भिन्न है। स्त्रियोंके लिए हम लोगोंको अलग पाठशालायें खोलनी होंगी और उनमे इस प्रकारकी शिक्षा देनी होगी कि हमारी बहनें आदर्श मातायें बन सकें। हैम्पटन और टस्केजीके समान उन्हें भी गृहव्यवस्था, पाकशास्त्र, शिशुपालन आदिकी शिक्षा दी जानी चाहिए। यहाँ पुरुषोंके बराबर स्त्रियोंको भी शिल्पशिक्षा देनेकी आवश्यक्ता नहीं। जो स्त्रियाँ आजन्म कुमारिका व्रत धारण करें अथवा जो विधवा हों उन्हें कुछ शिल्पशिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए, और इस समयकी आवश्यकतासे तो यही उचित मालूम होगा कि उन्हें अध्यापिका और दाईका कार्य विशेषतासे सिखलाया जाय।

धार्मिक शिक्षा।

हिन्दू बालक-बालिकाओंको धार्मिक शिक्षाकी कितनी आवश्यकता है सो किसीसे छिपी नहीं है। परन्तु धार्मिक शिक्षा केवल बातूनी न हो, बल्कि उससे आचरण शुद्ध होना चाहिए। धार्मिक शिक्षासे तो सब प्रकारकी उन्नति होनी

चाहिए। बाहरी आडंबर या विधिविशेषकी प्रधानता बिलकुल न रहे। विद्यालयके संचालक जो आचार बतला देंगे उनके अनुसार विद्यालयमें सब किसीका आचरण होना चाहिए, क्योंकि सभी आचार एक ही तत्त्वकी प्राप्ति कराते हैं। असल बात तो यह है कि स्वयं अध्यापकोंको धर्मके—वास्तविक धर्मके—अनुकूल अपना आचरण बनाना चाहिए। दूसरे सम्प्रदायोंके या मतोंके विषयमें सहिष्णुता होनी चाहिए। विद्यालयमें सभी मत और पन्थके लोग होंगे, इसलिए औपचारिक बातोंमें सबको अपने अपने सम्प्रदायके आचार माननेकी स्वतन्त्रता रहे, परन्तु जिन मुख्य तत्त्वोंके विषयमें सब धर्मसम्प्रदायोंकी एक राय है उन तत्त्वोंके आचरणमें सबके लिए एक ही नियम होना चाहिए। ऐहिक शिक्षामें जो लोग तैयार हुए हैं उनके लिए यह बात जितनी कठिन मालूम होती है वास्तवमें उतनी नहीं है। जो कुछ कठिनता इसमें दिखाई देती है वह कार्य आरंभ होते ही नष्ट हो जायगी।

अन्तिम प्रार्थना।

शिक्षादानसे देशसेवा करनेका प्रण करनेवालोंके मनमें ऊपरके तत्त्व और सिद्धान्त जितने ही बैठ जायँगे उतना ही डाक्टर बुकर टी वाशिंगटनके चरित और कार्यावलीका पाठकोंको परिचय करा देनेका प्रयत्न सफल होगा। हमारे देशके सब साधारण जनोंमें अज्ञान फैल रहा है और उन्हें शिक्षित करनेकी बड़ी आवश्यकता है। ब्रह्मचारियों और सन्यासियोंसे हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप अपनी मुक्तिका विचार तो करते ही हैं, पर अब अपने अनजान भाइयोंको भी ऊपर उठानेका विचार करें। क्या हमारे त्यागी ब्रह्मचारी और सन्यासी प्राचीन ऋषिमुनियोंकी तरह इस प्रश्नका विचार करेंगे? क्या फिर एक बार इस देशमें शिक्षा और ज्ञानका सर्वत्र प्रचार होगा? अब हम लोगोंके सामने यही प्रश्न है कि हम लोग अपने देशको पहलेकी तरह अथवा उससे अधिक वैभवशाली करेंगे, या दिन दिन अवनतिके पंकमें ही भँसते जायँगे? इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन गौरव-गरिमाकी बड़ी बड़ी बातें बहुत सुहावनी होती हैं, पर उन बातोंको सुनकर यदि हममें समाजकी उन्नतिके लिए फिर उद्योग करनेकी प्रेरणा नहीं हो तो उनका होना न होना बराबर है। भारतवर्षमें आध्यात्मिक स्वार्थत्यागकी कमी नहीं है, पर वही स्वार्थत्याग जब कर्मयोगके मार्गसे प्रवाहित होने लग जायगा तब भारतके भविष्यके विषयमें किसीको भी निराश होनेका कारण नहीं। काम शुरू हो गया है। स्वतन्त्र

विश्वविद्यालयका प्रयत्न हो रहा है, उसके बड़े बड़े उद्देश्य हैं। यह ठीक है, परन्तु हम लोगोंको भी छोटे छोटे कामोंसे अपना प्रयत्न आरंभ कर देना चाहिए। स्थान स्थान पर ज्ञानदीप प्रज्वलित कर लोगोंको इस योग्य बना देना चाहिए कि वे भावी विश्वविद्यालयके ज्ञानतेजसे तेजस्वी हों। देहातोंमें और छोटे छोटे कस्बोंमें शिक्षादानके प्रयत्न आरम्भ कर देनेका यही समय है।

अन्तमें उस सच्चिदानन्द परमात्मासे प्रार्थना है कि अज्ञानदास्यसे अपनी सन्तानोंको मुक्त करनेके प्रयत्नमें भारतवासी सफलमनोरथ हों, और वाशिंगटन आर्मस्ट्राग जैसे नररत्न तथा वाशिंगटनकी माता, उनकी तीनों सहधर्मिणियाँ, मिस मेरी मैकी, मिसेस रफनर जैसे रमणीरत्न इस रत्नगर्भा भारतवसुन्धरा पर भी अवतीर्ण हों।

उपोद्घात ।

गुलामोंका संक्षिप्त परिचय ।

" If slavery is not wrong, nothing is wrong ! "*

—*Abraham Lincon.*

सत्रहवीं शताब्दिके आरम्भमें यूरोपियन लोग यूरोपके भिन्न भिन्न भागोंसे अमेरिकामें आकर बसने लगे । उस समय अमेरिका बिलकुल जंगली प्रदेश था, इस लिए जंगलोंको साफ करने तथा अन्य कामोंके लिए मजदूरोंकी बड़ी आवश्यकता प्रतीत होने लगी । अमेरिकामें बहुतसी जमीन पाकर, यूरोपसे आये हुए लोग, यहाँके जमींदार बन गये, पर मजदूरोंके बिना उनका काम रुक गया । इस मौके पर पोर्तुगीजोंने अपना हाथ गरम करनेके लिए आफ्रिकाके नीग्रो या हबशियोंको जहाजों पर लाद लाद करके लाना और उन्हें अमेरिकामें बेचना आरंभ किया । आगे चलकर यह व्यापार धीरे धीरे अँगरेजोंके हाथ आ गया । हरसाल हजारों निरपराध मनुष्य भेड़-बकरियोंकी तरह बिकने लगे । नई दुनियामें या अमेरिकामें भावी विपत्तिका बीज इसी समय बोया गया ।

सन् १७६५ के लगभग अँगरेजोंसे कुछ करोंके मामलेमें अमेरिकन औपनिवेशिकोंका मन मोटाव हो गया और आगे चलकर यह झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनोंमें भयंकर युद्ध छिड़नेके लक्षण दिखाई देने लगे । एडमंड बर्क और लार्ड चैथम (विलीयम पिट्) ने बहुत कोशिश की कि युद्ध न हो, पर कोई नतीजा न हुआ और अन्तमें युद्ध छिड़ ही गया । आठ वर्ष 'तू तू, मैं मैं' में बीते और आखिर सन् १७७५ में युद्धका 'मारू बाजा' भी बज उठा । एक ही वर्ष बाद अर्थात् १७७६ में फिलाडेल्फीयाकी कांग्रेसने स्वतन्त्रताका घोषणपत्र (The Declaration of independence) प्रकाशित कर दिया ।

---

* अगर गुलामी पाप नहीं है तो पाप फिर कुछ है ही नहीं ।

—अब्राहम लिंकन ।

विश्वविद्यालयका प्रयत्न हो रहा है, उसके बड़े बड़े उद्देश्य हैं। यह ठीक है, परन्तु हम लोगोंको भी छोटे छोटे कामोंसे अपना प्रयत्न आरभ कर देना चाहिए। स्थान स्थान पर ज्ञानदीप प्रज्वलित कर लोगोंको इस योग्य बना देना चाहिए कि वे भावी विश्वविद्यालयके ज्ञानतेजसे तेजस्वी हों। देहातोंमें और छोटे छोटे कस्बोंमें शिक्षादानके प्रयत्न आरभ कर देनेका यही समय है।

अन्तमें उस सच्चिदानन्द परमात्मासे प्रार्थना है कि अज्ञानदास्यसे अपनी सन्तानोंको मुक्त करनेके प्रयत्नमें भारतवासी सफलमनोरथ हों, और वाशिंगटन आर्मस्ट्राग जैसे नररत्न तथा वाशिंगटनकी माता, उनकी तीनों सहधर्मिणियाँ, मिस मेरी मैकी, मिसेस रफनर जैसे रमणीरत्न इस रत्नगर्भा भारतवसुन्धरा पर भी अवतीर्ण हों।

सत्यानाश होने तक वहाँसे न निकला। गुलामी मेट देनेका उन्होंने संकल्प किया और ईश्वरकी कृपासे वह संकल्प पूरा भी हुआ।

सन् १८३० के लगभग विलियम लायड गैरिसन नामक एक सुप्रसिद्ध सज्जनने सेंटलुई नगरसे 'स्वातन्त्र्यदाता (Liberator)' नामका एक समाचारपत्र निकलना आरंभ किया। उसका उद्देश्य गुलामीके अन्यायोंको सर्वसाधारण पर प्रकट करना था। परन्तु एक दिन कुछ गुंडोंने उसके आफिसमें घुसकर गैरिसन तथा कुछ नौकरों पर आक्रमण किया और उनमेंसे कुछको तो मार ही डाला।

इस प्रकारकी, वरिक, इससे भी अधिक भयंकर घटनायें मिसेस एच बी स्टो नामकी एक विदुषीने देखीं और सुनीं। उनका हृदय बहुत दयालु और कोमल था। गुलामों पर जो अत्याचार होते थे उन्हें वे सह न सकती थीं, परन्तु वे बहुत दिनों तक यह सोच कर चुप रहीं कि ज्यों ज्यों लोगोंमें सुधार और ज्ञानका प्रचार होगा त्यों त्यों यह अन्याय कम होता जायगा, और अन्तमें बिलकुल मिट जायगा। किन्तु जब सन् १८५० में, भागे हुए गुलामोंको गिरफ्तार करके ले आनेका कानून बनानेकी चेष्टा होने लगी, धर्मकी ध्वजा उड़ानेवाले पादरी लोग भी लोगोंको उपदेश देने लगे कि मालिकके अत्याचारोंसे दुखी होकर भागे हुए गुलामोंको पकड़वा देना धर्म है, और उत्तरी राज्योंके बड़े बड़े दयालु और प्रतिष्ठित लोग भी गुलामोंको पकड़वा देनेके बारेमें धर्मशास्त्रोंके वचन संग्रह करने लगे, तब उस मनस्विनी महिलाको बहुत ही आश्चर्य और दुःख हुआ। अब उनसे चुप न रहा गया। उन्होंने गुलामीका असली रूप प्रकट करनेके लिए अपनी देखी और सुनी हुई बातोंके आधार पर 'टाम काकाकी कुटिया (Uncle Tom's Cabin)' नामक एक बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ लिखा। गुलामोंको दिनभर खेतों पर किस प्रकार जी तोड़ परिश्रम करना पड़ता था, जरा सी भूल होने पर भी ओवरसियर लोग कैसी निष्ठुरताके साथ चाबुक मार मार कर उनसे काम लेते थे, यदि वह ओवरसियर नीग्रो ही हुआ तो वह भी 'जातका वैरी जात'के न्यायसे अपने भाइयोंको कितना दुःख देता था, रातको भरपेट भोजन न देकर किस प्रकार एक छोटीसी झोपड़ीमें गुलाम लोग ठूँस दिये जाते थे, पति पत्नी, भाई बहन और मा बेटेको धनके लालचसे जुदा जुदा मालिकोंके हाथ बेचकर उनकी कैसी जाती थी, युवती स्त्रियोंको नाना प्रकारके कष्ट देकर किस

अपना अन्याय समझ कर गुलामोंको छोड देंगे। उत्तर प्रान्तके राज्योंमें शीत अधिक पडता था, इस लिए उन्हें खेती वगैरहके कामोंके लिए गुलामोंसे भी अधिक योग्य मजदूरोंकी आवश्यकता थी और इसी लिए गुलामोंकी स्वाधीनतासे उनकी कोई हानि न हुई। परन्तु दक्षिणी राज्योंकी दशा इससे बिलकुल विपरीत थी। वहाँ गरमी अधिक पडती थी और इस लिए बिना गुलामोंकी मददके खेतीका काम अच्छा नहीं हो सकता था। पर खेतों पर दोपहरकी झलाती हुई धूपमें, एक ओवरसियरके हाथ नीचे सैकडों नीग्रो गुलाम लगातार पसीना बहाया करते थे और गोरे मालिक अपनी हवेलियोंमें आरामसे बैठे रहते थे। यही कारण था कि दक्षिणी लोग गुलामीकी प्रथा बन्द करनेके विरुद्ध थे। सन् १८०५ में डोमिंगो प्रदेशके गुलामोंको बहुत ही कष्ट दिये गये। उस समय टामस पेनने प्रेसिडेंट जफरसनके पास कई प्रार्थनापत्र और चिट्ठियाँ भेजीं, 'पर' उससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। सन् १८०९ में टामस पेनका देहान्त हो गया। कहते हैं कि उसकी उत्तरक्रियाके समय अपनी जातिकी ओरसे कृतज्ञता प्रकट करनेके लिए, दो नीग्रो उपस्थित हुए थे।

ईश्वरके राज्यमें सत्य कभी दबा नहीं रह सकता, अन्तमें उसकी जय होती ही है। गुलामीको मेट देनेकी चेष्टा करनेवाले टामस पेनका तो देहान्त हो गया, पर उसी वर्ष गुलामीको सदाके लिए जमीनके अन्दर गाड देनेवाले महात्मा अब्राहम लिंकनका जन्म हुआ। एक बडे ही दरिद्र घरमें इनका जन्म हुआ था। जब अब्राहम कुछ बडे हुए तब उनकी योग्यता, सावधानता और पुरुषार्थ देखकर ओफट नामके एक व्यापारीने उन्हें अपना सहकारी बनाकर स्प्रिंगफील्डसे न्यूआरलीन्समें अपनी दूकानपर बुलवा लिया। न्यूआरलीन्स पहुँच कर अब्राहमने गुलामीका भयंकर दृश्य देखा। वहां गुलामोंका एक बडा भारी बाजार लगा करता था। अब्राहमने वहीं पहले पहल अपनी आँखों देखा कि झुडके झुड गुलाम बेडियाँ पहनाकर एक कतारमें खडे किये जाते हैं और कोडोंकी मार मारकर उनकी पीठसे रक्तके फव्वारे उडाये जाते हैं। और लोगोंको तो यह दृश्य देखनेकी आदत पड गई थी, इस लिए उन पर कुछ असर न होता था, पर अब्राहमके हृदयमें इससे बडी भारी चोट लगी। उस समय या उसके बाद भी मुँहसे एक शब्द भी उन्होंने इस विषयका नहीं निकाला, पर वे मन ही मन चिन्ता करते रहे। उस समय उनका अन्तःकरण पिघल गया और उनकी छातीमें गुलामीका काँटा चुभ गया जो गुलामीका

गुलामी बन्द करनेका कायदा बना दिया गया। आरम्भमें बलवाइयोंने एक दो लड़ाइयाँ जीतीं और इससे उत्साहित होकर वे राजधानी वाशिंगटन पर चढ़ जानेका विचार करने लगे। तब प्रेसिडेंट लिंकनने और भी सैन्य संग्रह करके विद्रोहियोंको दबानेका प्रयत्न किया। युलिसीस एस ग्रेंट नामक एक चतुर सेनापतिके मिलने पर युद्धका रंग पलटा और बलवाइयोंका बल घटने लगा। निदान सितंबर सन् १८६२ में प्रेसिडेंट लिंकनने घोषित कर दिया कि, "आगामी वर्षप्रतिपदासे (१ जनवरी १८६३ से) गुलामी सदाके लिए मिट जायगी।" उसी वर्ष दिसंबरकी ३ री तारीखको उन्होंने यह भी घोषित किया कि "विपक्षके जो लोग हथियार रख देंगे और कानूनके पाबन्द होकर देशकी रक्षा करनेका वचन देंगे उनके अपराध क्षमा कर दिये जायँगे।" युद्ध हो रहा था तो भी १८६३ की १ ली जनवरीको दास्यविमोचनका घोषणापत्र प्रकाशित किया गया। इस समय बलवाइयोंका जोर घट गया था, तो भी लड़ाई जारी थी। इसी समय प्रेसिडेंट लिंकनका शासनकाल पूरा हो गया। परन्तु सन् १८६५ के मार्च महीनेमें वे फिर प्रेसिडेंट चुन लिये गये। ९ वीं अप्रेलको बलवाइयोंके सेनापति जनरल लीने प्रेसिडेंट लिंकनकी शरण ली और बलवेका अन्त हो गया। युद्धमें दोनों दलके लाखों आदमी काम आये, और करोड़ों रुपयोंकी आहुति हो गई, तब कहीं गुलामीका अन्त हुआ। इसतरह कोई तीस चालीस लाख मनुष्योंको स्वतन्त्रता मिली। सब लोग महात्मा लिंकनका यश गाने लगे। स्वाधीन हुए नाग्रो लोग तो उन्हें साक्षात् ईश्वर ही मानने लगे।

इस तरह देशका संकट निवारण करके और अनेक महत्त्वपूर्ण कार्योंका सम्पादन करके प्रेसिडेंट लिंकन जिस समय दोनों दलोंमें मेल करानेका प्रयत्नकर रहे थे, उसी समय १४ अप्रेलको फोर्ड थिएटरमें एक हत्यारेने गोली मारकर उनका अन्त कर दिया। इस प्रकार इस काममें महात्मा लिंकनका भी बलिदान हो गया।*

---

* अब्राहम लिंकनका विस्तृत जीवनचरित हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर-सीरीजमें निकल चुका है। जो महाशय चाहें, मँगाकर पढ़ लेवें। मूल्य दस आने।

—प्रकाशक।

नष्ट किया जाता था, असत्य दुःखोंसे दुःखी होकर भागे हुए गुलामोंके पीछे इनामके लालचसे किस प्रकार शिकारी कुत्ते और बदमाश लोग छोडे जाते थे, हाथ पर जंजीरोंसे बाँधकर बाजारमें बेचनेके लिए ले जाते समय उन्हें किस बेरहमीसे मारा जाता था, और इन सब अन्यायोंका, पादरी लोग बाइबलके आधारसे कैसे समर्थन करते थे, इत्यादि हृदयविदारक शरीरके रोंगटे खडे करनेवाले और अन्तःकरणको पिघलानेवाले दृश्योंका सत्य और यथार्थ वर्णन इस ग्रन्थमें किया गया है। इस ग्रन्थने हजारों अमेरिकन लोगोंके पाषाण हृदयोंमें दयाका सोता बहा दिया और गुलामीका विरोध चारों ओर फैला दिया। गुलामीके अन्यायों और उसके असली रूपको जो लोग देखना चाहें वे इस ग्रन्थको अवश्य पढें।

इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि देशमें दो प्रबल दल तैयार हो गये। एक दलका कहना था कि गुलामोंको छोड देना चाहिए और दूसरा दल कहता था कि उन्हें स्वाधीन कर देना ठीक नहीं, वे वर्तमान दशामें ही सुखी हैं। ये दोनों दल आपसमें बहुत दिनों तक झगडते रहे। सन् १८५६ के बाद अमेरिकाकी दशा और भी नाजुक हो चली। उस समय देश पर आनेवाली विपत्तिको दूर करनेमें समर्थ एक महापुरुष प्रेसिडेंट चुना गया। ये वे ही अब्राहम लिंकन थे जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

अमेरिकन लोगोंको अपने पूर्वसञ्चित पापोंको धो डालनेकी बडी आवश्यकता थी। सन् १८६० में गुलामोंको स्वतंत्रता देनेके लिए तथा अन्य कारणोंसे दक्षिण और उत्तरके राज्योंमें युद्ध (Civil war) छिड गया जो चार पाँच वर्षों तक जारी रहा। महात्मा लिंकनने इस बातकी प्राणपणसे चेष्टाकी कि बिना युद्ध किये ही यह झगडा निपट जाय और युद्धसे अमेरिकाके दो टुकडे न हों, परंतु बिना युद्धके झगडा निपटनेकी कोई सूरत ही न दिखाई दी। तब सन् १८६१ में प्रेसिडेंट लिंकनने युद्धके लिए ५ लाख स्वयंसैनिकोंकी सेना चाही।* दक्षिणके राज्योंने बलवेका झंडा खडा कर दिया। सन् १८६२ के अप्रेल मासमें

* अमेरिकामें स्थायी सेना (Standing army) नहीं रक्खी जाती। देश पर जब कोई विपद आती है तब प्रेसिडेंट सर्वसाधारणसे स्वयंसैनिक माँगते हैं और उस समय जो लडनेमें समर्थ होते हैं वे देशके झंडेके नीचे आ खडे होते हैं।

आत्मोद्धार।



पहला परिच्छेद।



दासानुदास।

मैं एक नीग्रो या हबशी जातिका गुलाम था। वर्जीनियाके फ्रैंकलिन परगनेमें रहनेवाले एक गुलाम-खान्दानमें मैं पैदा हुआ। कब और किस खास जगह पर, सो मुझे याद नहीं, पर इतना याद आता है कि हैल्सफोर्डकी सड़क पर डाकघरके पास ही कहीं मेरा जन्मस्थान है। मैं यह ज़िक्र १८५८ या ५९ का कर रहा हूँ। जन्मका महीना या तारीख स्मरण नहीं। हां, बचपनकी कुछ बातें याद आती हैं—वह खेत जहाँ मैं काम करता था और वे झोपड़ियाँ मेरी आँखोंके सामने आजाती हैं।

मैं बड़ी ही ज़िल्लत (दुर्दशा) में पला हूँ। मेरे मालिक तो गैर, और मालिकोंसे नेक और दयालु थे, पर आखिर गुलामी ही तो थी। १४×१६ वर्गफुटकी एक कोठरीमें मैं पैदा हुआ। वहीं अपनी मा, भाई और बहिनके साथ रहा करता था। बड़ी कठिनाईसे दिन कटते थे। कुछ दिनों बाद अमेरिकनोंमें गृह विवाद उठा और उसमें गुलामजातिको स्वाधीनता मिली। तबसे हम लोग स्वाधीन हुए।

मुझे अपने पुरखाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं, क्योंकि वह समय ही ऐसा था जब गुलामोंको अपने इतिहासकी जरूरत ही न जान पड़ती थी। हाँ, लोगोंकी बातें सुन कर मैंने यह अटकल लगाया था कि हम लोग आफ्रिकाके रहनेवाले हैं। जो लोग वहाँसे हमें ले आये उन्होंने राहमें जहाजों पर हम लोगोंको अनेक कष्ट दिये। मेरे बाप कौन थे सो भी मुझे मालूम नहीं। उनका नाम तक मुझे ... अटकलसे जान गया हूँ कि वे एक श्वेताङ्ग थे ... हो उसे खरीद लिया था। तबसे वे मेरे और ... । वे पासहीकी बस्तीमें रहते

मेरी व्यापक-शिक्षा

अर्थात्

आत्मोद्धारका दूसरा भाग।

डा० बुकर टी, वाशिंगटनका लिखा हुआ यह ग्रन्थ भी पाठकोंको पढ़ जाना चाहिए। इस भागमे वाशिंगटन महाशयने अपनी यूनावर्सिटीकी शिक्षापद्धतिकी व्यापकता और विशेपता वतलाई है। इससे पाठकोंको अपने देशकी शिक्षापद्धतिके गुणदोपोंपर विचार करनेकी स्फूर्ति होगी और वे अपनी परिस्थितियोंके अनुकूल शिक्षापद्धति निश्चित करनेमें समर्थ हो सकेंगे।

बाबू सूरजमलजी जैन इसके अनुवादक और प्रकाशक हैं। हमने अपने ग्राहकोंको सुभीतेके लिए इसकी थोड़ीसी प्रतियाँ मगाकर रक्खी हैं। मूल्य एक रुपया छह आने।

आत्मोद्धार

पहला परिच्छेद ।

दासानुदास ।

मैं एक नीग्रो या हबशी जातिका गुलाम था । वर्जीनियाके फ्रेंकलिन परगनेमें रहनेवाले एक गुलाम-खान्दानमें मैं पैदा हुआ । कब और किस खास जगह पर, सो मुझे याद नहीं, पर इतना याद आता है कि हेल्सफोर्डकी सडक पर डाकघरके पास ही कहीं मेरा जन्मस्थान है । मैं यह जिक्र १८५८ या ५९ का कर रहा हूँ । जन्मका महीना या तारीख स्मरण नहीं । हाँ, बचपनकी कुछ बातें याद आती हैं—वह खेत जहाँ मैं काम करता था और वे झोपडियाँ मेरी आँखोंके सामने आजाती है ।

मैं बडी ही जिल्लत (दुर्दशा) में पला हूँ । मेरे मालिक तो गैर, और मालिकोंसे नेक और दयालु थे, पर आखिर गुलामी ही तो थी । १४×१६ वर्गफुटकी एक कोठरीमें मैं पैदा हुआ । वहीं अपनी मा, भाई और बहिनके साथ रहा करता था । बडी कठिनाईसे दिन कटते थे । कुछ दिनों बाद अमेरिकनोंमें गृह विवाद उठा और उसमें गुलामजातिको स्वाधीनता मिली । तबसे हम लोग स्वाधीन हुए ।

मुझे अपने पुरखाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं, क्योंकि वह समय ही ऐसा था जब गुलामोंको अपने इतिहासकी जरूरत ही न जान पडती थी । हाँ, लोगोंकी बातें सुन कर मैंने यह अटकल लगाया था कि हम लोग आफ्रिकाके रहनेवाले हैं । जो लोग वहाँसे हमें ले आये उन्होंने राहमें जहाजों पर हम लोगोंको अनेक कष्ट दिये । मेरे बाप कौन थे सो भी मुझे मालूम नहीं । उनका नाम तक मुझे नहीं बतलाया गया । यह तो मैं अटकलसे जान गया हूँ कि वे एक श्वेताङ्ग थे और उन्होंने मेरी मा पर मुग्ध हो उसे खरीद लिया था । तबसे वे मेरे और मेरी माके कर्ता धर्ता विधाता हुए । वे पासहीकी बस्तीमें रहते

थे। खैर, वे कोई हों, उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नहीं किया था। पर मैं उन्हें दोष नहीं लगाता, क्यों कि ऐसे पिता उस गुलामीके युगमें एक दो नहीं, सैकड़ों हजारों थे।

हम लोगोंकी झोपडीमें खाली हमी लोग नहीं रहते थे। उसमें बसतीके सब गुलामोंकी रसोई भी बनती थी। रसोई बनानेका काम मेरी माके सुपुर्द था। घर बडा पुराना और गन्दा था। दीवारोंमें कई सूराख हो गये थे जिसमेंसे रोशनी आती थी और शीतकालमें ठंढी ठंढी हवा भी। झोपडीके दरवाजे बहुत छोटे थे और उनमें कई दरारें पड गई थीं। झोपडीके एक कोनेमें एक बड़ा भारी सूराख था जिसमेंसे बिल्लियां आया जाया करती थीं। सिविल-वार (युद्ध) शुरू होनेसे पहले वर्जीनियाकी हरेक हवेली और झोपडीमें ऐसा ही एक न एक 'बिडाल-बिल' रहा करता था। हम लोगोंके यहाँ तो ऐसे छ सात सूराख थे। खैर, आगे चलिए। फर्श मिट्टीका था। जाडेके दिनोंमें उसके बीचवाले गढेमें शकरकंदका गोदाम रहा करता था। इस गोदामको मैं कभी न भूलूँगा। धरने उठानेमें वहाँ मुझे बहुधा दो चार शकरकंद मिल जाया करते थे और उन्हें भून कर मैं बडे चावसे खाया करता था। रसोईका पूरा सरजाम न था। खुले चूल्होंपर रसोई पकानी पडती थी और जैसे जाडेके दिनोंमें सर्दीके मारे बदन ठिठुर जाता था वैसे ही गरमीके दिनोंमें आगके तापसे जी छटपटा जाता था।

मेरे बचपनके जीवनमें और दूसरे गुलामोंके जीवनमें कुछ भेद न था। मेरी मा मुझको या मेरे भाईबहिनको दिनमें तो देखने सुननेका समय पाती ही न थी, रातको सब काम कर चुकनेके बाद और सवेरे सरकारी काममें हाथ लगानेसे पहले वह हम लोगोंके लिए समय निकालती थी। उस समयकी मुझे याद आती है जब, मेरी मा दोपहर रात बीतने पर हम लोगोंको जगा कर मुर्गीका मास खिला दिया करती थी। वह कहाँसे लाती थी सो मुझे कुछ मालूम नहीं, हो सकता है कि मालिककी पशुशालासे ले आती हो। आप लोग इस कामको चोरी कहेंगे, मैं भी अगर अब कोई ऐसा काम करे तो चोरी ही कहूँगा, पर जिस वक्तका हाल मैं कह रहा हूँ उस वक्तको और उन कारणोंको देखते हुए इसे कोई चोरी साबित नहीं कर सकता। गुलामीमें प्राय ऐसा ही हुआ करता है। स्वाधीनताकी जबतक घोषणा नहीं हुई थी तबतक, मुझे याद नहीं आता कि हम लोग एक दिन भी कभी बिछौने पर लेटे हों। हम तीनों भाई बहिन मैले कुचैले चिथडों पर रात काटते थे।

आज कल कुछ लोग मेरे बचपनके खेल कूदकी बातें सुनना चाहते हैं। ार खेलकूद किस चिडियाका नाम है यह भी मुझे बचपनमें मालूम नहीं हुआ। ाबसे मुझे होश आया है तबसे अबतक काम ही काम करते बीता है। पर मे ामझता हूँ कि अगर बचपनमें मैं खेलने पाता तो इस वक्त बहुत कुछ काम कर ाकता। अस्तु। मेरा समय विशेष करके आँगनमें झाड़ू देना, पानी भरना और ासे खेत पर पहुँचाना, सप्ताहमें एक बार चक्कीमें पिसानेके लिए अनाज ले ाना,—आदि कामोंमें ही बीतता था। इस अनाज ढोनेके कामसे तो मेरी नस ास ढीली हो जाती थी। चक्की वहाँसे तीन मील पर थी और अनाजके थैले ोडे पर लाद कर ले जाना पडता था। यदि राहमें किसी एक तरफका वजन यादा होकर थैले खिसक पडते तो मेरी नानी मर जाती और मैं भी उनके ााथ धडामसे नीचे गिर पडता। मैं अकेला तो इस लायक था नहीं कि उन्हें उठा कर फिर घोडेकी पीठ पर लाद देता। लाचार नीचे बैठ कर रोने लगता। नेदान जब कोई मुसाफिर आ-निकलता तब उसकी मददसे उन्हें उठा कर राह ी करता था। ऐसी ऐसी मुसीबतोंसे कभी कभी घर आनेमें बहुत अबेर हो जाती थी। राहमें बडे घने जङ्गल पडते थे। उन जंगलोंमें, मैंने सुना था कि ौकरी छोड कर भागे हुए फौजी गोरे छिपे रहते हैं और अकेला पाने पर नीग्रो (हबशी) लडकोंके कान काट लेते हैं। और अबेर करके घर आनेसे ात जूता और गालियाँ मिलती थीं।

गुलामीमें मैंने स्कूली तालीम (शिक्षा) कुछ भी नहीं पाई। हाँ, मैं अपने ालिककी लडकीका पोथी पत्रा लेकर स्कूलके फाटक तक कई बार गया हूँ। हाँ लडके लडकियोंको पढाईमें मगन देखकर मेरे मनमें तरह तरहकी उमगें उठती थीं और दिल चाहता था कि मैं भी इसी तरह लिखना पढना सीख लूँ। ुझे इसीमें स्वर्गसुख मालूम होता था।

मुझे बहुत दिनोंतक यह बात मालूम भी नहीं थी कि हम लोग खरीदे हुए ुलाम हैं और न मुझे यही मालूम था कि हम लोगोंकी स्वाधीनताके लिए देश-भरमें आन्दोलन हो रहा है। एक दिन सवेरे जागकर देखता हूँ कि मेरी मा हम लोगोंके सामने, घुटने टेककर भगवानसे प्रार्थना कर रही है,—"हे दीनबन्धो! ेनापति लिंकन और उसके सिपाहियोंकी जय हो। हे भगवन्! हे पतितपावन! हम लोगोंको इस गुलामीसे छुडाओ। हे दीनानाथ! हम दीनोंका उद्धार करो। ेरे जातिबन्धुओंको काला अक्षर भैंस बराबर था, तो भी उन्हें अपनी

थे। खैर, वे कोई हों, उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नहीं किया था। पर मैं दोष नहीं लगाता, क्यों कि ऐसे पिता उस गुलामीके युगमें एक दो नहीं, हजारों थे।

हम लोगोंकी झोपडीमें खाली हमी लोग नहीं रहते थे। उसमें बसतीके गुलामोंकी रसोई भी बनती थी। रसोई बनानेका काम मेरी माके सुपुर्द था घर बडा पुराना और गन्दा था। दीवारोंमें कई सूराख हो गये थे रोशनी आती थी और शीतकालमें ठंटी ठंटी हवा भी। झोपडीके दरवाजे छोटे थे और उनमें कई दरारें पड गई थीं। झोपडीके एक कोनेमें एक भारी सूराख था जिसमेंसे बिल्लियाँ आया जाया करती थीं। सिविल-वार (युद्ध) शुरू होनेसे पहले वर्जीनियाकी हरेक हवेली और झोपडीमें ऐसा ही एक 'बिडाल-बिल' रहा करता था। हम लोगोंके यहाँ तो ऐसे छ सात सू थे। खैर, आगे चलिए। फर्श मिट्टीका था। जाडेके दिनोंमें उसके बीच गढेमें शकरकदका गोदाम रहा करता था। इस गोदामको में कभी न भरने उठानेमें वहाँ मुझे बहुधा दो चार शकरकद मिल जाया करते थे उन्हें भून कर मैं बडे चावसे खाया करता था। रसोईका पूरा सरजाम न था। चूल्होंपर रसोई पकानी पडती थी और जैसे जाडेके दिनोंमें सर्दीके मारे ठिठुर जाता था वैसे ही गरमीके दिनोंमें आगके तापसे जी छटपटा जाता था।

मेरे बचपनके जीवनमें और दूसरे गुलामोंके जीवनमें कुछ भेद न था। मा मुझको या मेरे भाईबहिनको दिनमें तो देखने सुननेका समय पाती ही थी, रातको सब काम कर चुकनेके बाद और सवेरे सरकारी काममें हाथ नेसे पहले वह हम लोगोंके लिए समय निकालती थी। उस समयकी मुझे आती है जब, मेरी मा दोपहर रात बीतने पर हम लोगोंको जगा कर मुर्गी मास खिला दिया करती थी। वह कहाँसे लाती थी सो मुझे कुछ मालूम नहीं हो सकता है कि मालिककी पशुशालासे ले आती हो। आप लोग इस चोरी कहेंगे, मैं भी अगर अब कोई ऐसा काम करे तो चोरी ही कहूँगा, जिस वक्तका हाल म कह रहा हूँ उस वक्तको और उन कारणोंको देखते इसे कोई चोरी साबित नहीं कर सकता। गुलामीमें प्राय ऐसा ही हुआ है। स्वाधीनताकी जबतक घोषणा नहीं हुई थी तबतक, मुझे याद नहीं कि हम लोग एक दिन भी कभी बिछौने पर लेटे हों। हम तीनों भाई मैले कुचैले चिथडों पर रात काटते थे।

आज कल कुछ लोग मेरे बचपनके खेल कूदकी बातें सुनना चाहते है। र खेलकूद किस चिड़ियाका नाम है यह भी मुझे बचपनमें मालूम नहीं हुआ। बसे मुझे होश आया है तबसे अबतक काम ही काम करते बीता है। पर मैं मझता हूँ कि अगर बचपनमें मैं खेलने पाता तो इस वक्त बहुत कुछ काम कर कता। अस्तु। मेरा समय विशेष करके आँगनमें झाड़ देना, पानी भरना और से खेत पर पहुँचाना, सप्ताहमें एक बार चक्कीमें पिसानेके लिए अनाज ले ाना,—आदि कामोंमें ही बीतता था। इस अनाज ढोनेके कामसे तो मेरी नस स ढीली हो जाती थी। चक्की वहाँसे तीन मील पर थी और अनाजके थैले ोड़े पर लाद कर ले जाना पड़ता था। यदि राहमें किसी एक तरफका वजन यादा होकर थैले खिसक पड़ते तो मेरी नानी मर जाती और मैं भी उनके ाथ धड़ामसे नीचे गिर पड़ता। मैं अकेला तो इस लायक था नहीं कि उन्हें उठा कर फिर घोड़ेकी पीठ पर लाद देता। लाचार नीचे बैठ कर रोने लगता। नेदान जब कोई मुसाफिर आ-निकलता तब उसकी मददसे उन्हें उठा कर राह ी करता था। ऐसी ऐसी मुसीबतोंसे कभी कभी घर आनेमें बहुत अबेर हो जाती थी। राहमें बड़े घने जङ्गल पड़ते थे। उन जंगलोंमें, मैंने सुना था कि नौकरी छोड़ कर भागे हुए फौजी गोरे छिपे रहते हैं और अकेला पाने पर नीग्रो (हबशी) लड़कोंके कान काट लेते हैं। और अबेर करके घर आनेसे लात जूता और गालियाँ मिलती थीं।

गुलामीमें मैंने स्कूली तालीम (शिक्षा) कुछ भी नहीं पाई। हाँ, मैं अपने मालिककी लड़कीका पोथी पत्रा लेकर स्कूलके फाटक तक कई बार गया हूँ। वहाँ लड़के लड़कियोंको पढ़ाईमें मगन देखकर मेरे मनमें तरह तरहकी उमगें उठती थीं और दिल चाहता था कि मैं भी इसी तरह लिखना पढ़ना सीख लूँ। मुझे इसीमें स्वर्गसुख मालूम होता था।

मुझे बहुत दिनोंतक यह बात मालूम भी नहीं थी कि हम लोग खरीदे हुए गुलाम हैं और न मुझे यही मालूम था कि हम लोगोंकी स्वाधीनताके लिए देश-भरमें आन्दोलन हो रहा है। एक दिन सबेरे जागकर देखता हूँ कि मेरी मा हम लोगोंके सामने, घुटने टेककर भगवानसे प्रार्थना कर रही है,—"हे दीनबन्धो! सेनापति लिंकन और उसके सिपाहियोंकी जय हो। हे भगवन्! हे पतितपावन! हम लोगोंको इस गुलामीसे छुड़ाओ। हे दीनानाथ! हम दीनोंका उद्धार करो। मेरे जातिबन्धुओंको काला अक्षर भैंस बराबर था, तो भी उन्हें अपनी

कि उनसे बडी ही वेदना होती थी। मेरा बदन मुलायम था—उस कुरतेको प-
नना मेरे लिए बडी भारी मुसीबत थी। पर किया क्या जाता? पहनना
तो उसी टाटके कुरतेको पहनो, नहीं तो, नगे रहो। मैं कहता हूँ कि
पहनना-न-पहनना भी मेरी मर्जी पर छोड दिया जाता तो कोई बात नहीं थी,
मैं नगा रहना ही पसन्द करता! पर यह भी मेरे हाथमें न था। नगे रहने
तो मनाई थी। मेरा बडा भाई 'जान' मुझ पर रहम खा जाता और नया कुरता
खुद कुछ दिन स्वय पहनकर मुलायम होने पर मुझे पहननेको देता था। मे
बचपनकी जिन्दगी इन्हीं कपडोंमें बीती है।

इस बातोंसे आप लोग सोचेंगे कि गुलाम अपने गोरे मालिकोंसे बडा
रखते होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे मालिक हम लोगोंको
बनाये रखना चाहते थे और इसी लिए वे उत्तरवालोंसे लड रहे थे। परन्तु
लोगोंमें और जहाँ जहा गुलामोंसे अच्छा सुलूक किया गया है, यह
बिलकुल न था। हम लोग जानते थे कि अगर इन लोगोंकी जीत रही तो हम
लोगोंको गुलामी ही करनी पडेगी, तो भी हम लोगोंने कभी उनसे वैर नहीं
किया। हम लोग उनके सुखसे सुखी और दु खसे दुखी रहते थे। हम लोगोंके
हृदयमें उनके लिए बडी सहानुभूति थी। लडाईमें मेरा जवान मालिक
निली मारा गया और उसके घरके दो आदमी घायल हुए। जब यह खबर
लोगोंने सुनी तब, उसके घरवालोंको जो दु ख हुआ उसका कहना ही क्या है,
पर हम लोगोंको भी कुछ कम दु ख नहीं हुआ। हम लोगोंमेंसे कुछने उसकी
सेवा शुश्रूषा की थी और कुछ उसके लंगोटिया यार थे। इस लिए उसकी
मृत्युसे हम लोगोंको जो दु ख हुआ वह केवल दिखौआ न था। जब घायल
जवान घर लाये गये तब हम लोग जी जानसे उनकी सेवा टहल करने लगे
कितनोंने रात रात जागकर उनकी सेवा की। यह स्नेह और यह दिली दर्द
लोगोंकी उदार और सरल प्रकृतिका ही फल था। जब हमारे मालिक रणभूमि
जाते तब गुलाम ही उनके गृह और परिवारकी रक्षा करते थे। मालिकके
रातको सो रहनेके लिए जिस किसीका चुनाव होता वह समझता कि यह
'अहोभाग्य' है। यदि कोई दुष्ट, युवती अथवा वृद्धा स्त्रियोंको कष्ट देने
तो बिना गुलामोंको मारे उसकी राह साफ न होती थी। क्या गुलामीमें
क्या आजादीमें, मेरे भाइयोंने कभी विश्वासघात नहीं किया। कमसे कम
उदाहरण बहुत ही विरले मिलेंगे। इसके विपरीत घायल, असहाय,

मालिकों और उनके बालबच्चोंकी हरतरहसे मदद करनेवाले गुलामोंके दृष्टान्त अनेक हैं। उनकी इज्जत और हुर्मत, जान और मालकी, जब काम पड़ा है, उन्होंने रक्षा की है। जिनके पास धन नहीं था, उन्हें धन दिया है। गोरे लड़कोंको तालीम दिलानेके लिए गाँठके पैसे खुले हाथ खर्च किये हैं। एक साहूकारका लड़का शराब-खोरीसे बिलकुल तबाह हो गया था। उसकी तबाही इन्होंने हर तरहसे दूर की। इतना ही नहीं, गुलामीके दिनोंमें उन्होंने अपने मालिकोंसे जो वादे किये थे, उन्हें भी पूरा करके छोड़ा। एक उदाहरण मुझे याद आता है। यह गुलाम मुझे ओहिओ शहरमें मिला था। उसने गुलामीके दिनोंमें अपने मालिकसे वादा किया था कि हर साल अमुक रकम अदा करके मैं स्वाधीन हो जाऊँगा। यह करनेकी आवश्यकता नहीं कि स्वाधीनताकी घोषणा होने पर यह गुलाम भी स्वाधीन हो चुका, अब उसे गुलामीका वादा पूरा करनेकी जरूरत नहीं थी। पर उसने वादेके अनुसार मालिकको कौड़ी कौड़ी सूदतक चुका दिया! मैंने उससे कहा कि "जब तुम स्वाधीन हो चुके तब फिर ऐसा करनेकी क्या जरूरत थी?" इस पर उसने जवाब दिया कि "कानूनके अनुसार तो कोई जरूरत नहीं थी, पर मैंने अपने मालिकसे वादा किया था और उसे पूरा करना मेरा धर्म था। अबतक मैंने ऐसा कोई वादा नहीं किया जिसे पूरा न किया हो।" उसका मन गवाही देता था कि वह अपने वचनको जबतक पूरा न करेगा तबतक, वह स्वाधीनताका आनन्द न ले सकेगा।

आप कहेंगे, तो क्या नीग्रो लोग स्वाधीनता नहीं चाहते थे? क्या गुलामीकी जंजीरसे उनका इतना मोह हो गया था? नहीं ऐसा नामर्द आदमी मैंने एक भी न देखा।

जो बदनसीब आदमी या जाति गुलामीकी बेड़ियोंमें जकड़ गई है, उस पर मुझे रहम आता है। पर अपनी जातिकी गुलामीके विषयमें मैंने दक्षिणी गोरोंसे वैर रखना बहुत दिनोंसे छोड़ दिया है। गुलामी जो चल पड़ी वह, किसी खास समाजने नहीं चलाई। बहुत अरसे तक तो सरकार ही इसका समर्थन करती रही थी। रिपब्लिककी सामाजिक और आर्थिक दशासे यह दासता जकड़ गई थी, इस लिए उसको एकाएक अलग कर देनेका काम देशके लिए कुछ सहज न था। और कुसंस्कार तथा जातिद्वेषको अलग रखकर यदि हम असली हालत पर विचार करते हैं तो यह स्वीकार करना पड़ता है कि यद्यपि गुलामी सुनीति और दयालुताकी हत्या करनेवाली है, तो भी इस देशमें रहनेवाले

घर पर जमा हों। मैं अपनी मा, भाई, बहन और अन्य दासोंके साथ वहाँ गया। देखा, मालिकके घरके लोग छत पर एकत्र हुए हैं। वहाँसे वे हम लोगोंको देखते थे और हम लोग भी उन्हें देख सकते थे। चेहरो पर वैर नहीं, उदासी छाई हुई थी। वे हम लोगोंका साथ छूटनेसे दुखी थे—आमदनीकी उन्हें इतनी फिक्र न थी। उस प्रात कालका स्मरण होनेसे वह स्वाधीनताका व्याख्यान याद आता है। एक विदेशी पुरुषने—शायद यह सयुक्त राज्यका कोई अधिकारी था—एक छोटीसी वक्तृता दी और एक लवा कागज—शायद यही स्वाधीनताका घोषणा पत्र था—पढ सुनाया। फिर हम लोगोंको वतलाया गया कि तुम लोग स्वाधीन हुए, अव चाहे जहाँ जा सकते हो और जो चाहो कर सकते हो। मेरी माता मेरे पास खडी थी। उसने झुककर अपने बच्चोंको चूम लिया और उसके गालों परसे प्रेमाश्रुओंकी धारा वहने लगी। उसने सब वातें समझा दीं और कहा कि इसी दिनके लिए मैं प्रतिदिन ईश्वरसे प्रार्थना किया करती थी और मुझे यह आशा नहीं थी कि यह सुदिन देखनेके लिए मैं जीती रहूँगी।

स्वाधीनताका घोषणापत्र सुन कर गुलामोंके आनन्दका पारावार न रहा। पर उनके मनमें गोरे मालिकोंसे कोई वैरभाव न था। उलटे उन्हें उन पर रहम आया। स्वाधीनताका समाचार सुन कर उन्हें जो अपार आनद हुआ वह वहुत-देर तक टिकने न पाया। वे लोग अपनी झोपडियोंमें गये तब उनके चेहरों पर चिन्ता झलकने लगी। स्वाधीनताकी जिम्मेदारीने उन्हें आ घेरा। वे इस सोचमें पडे कि, स्वाधीन तो हुए, पर अव करना क्या चाहिए? अपने और अपने परिवारका गुजारा कैसे हो? दस पदरह वर्षका कोई वालक घोर जगलमें आकर सामने जिस विपत्तिको देखता है वही विपत्ति हम लोगों पर आ पडी। घर-वार, रोजगार-हाल, बच्चोंकी परवरिश, उनकी तालीम, नागरिकोंके कर्तव्य, गिरिजाघरोंकी स्थापना आदि वातें एकके वाद एक सामने आने लगीं। झोपडियोंमें लडकोंका खेलना कूदना वन्द हो गया और उदासी छा गई। कुछ लोगोंको तो यह स्वाधीनताका वोझ अन्दाजसे भी भारी मालूम हुआ। गुलामोंमें वहुतसे ७०।८० वर्षके वूढे थे। उनके जीवनका उत्तम अश तो बीत ही चुका था। रहनको कोई घर मिल जाना तो कठिन नहीं था, पर उन्हें कमा खानेमें वडा सन्देह था। इसलिए स्वाधीनताने उनके सामने एक वडा पेचीला मामला पेश कर दिया। अपने पुराने मालिक और उनके परिवारसे उनका वडा स्नेह हो गया था। इस स्नेहको तोडना ही उन्हें वहुत अखरने लगा। कुछ

लोगोंने गुलामी करते करते पचास पचास साठ साठ वर्ष बिताये थे, ऐसे लोग अपने मालिकसे कब नाता तोड सकते थे? उन्हें तो अपने मालिकके घरका रास्ता ही मालूम था। बूढे गुलाम धीरे धीरे एक एक करके मालिकोंके यहाँ जा जाकर उन्हींसे इस बातकी सलाह लेने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

दूसरा परिच्छेद।

शैशव।

स्वतन्त्रता मिलनेपर बस्तीके सब गुलामोंकी यह राय हुई कि अब दो बातें करनी चाहिए,-

१ हम लोगोंको अब अपना अपना नाम बदल डालना चाहिए।

२ हम लोग स्वाधीन हुए सही, पर एक बार इसकी जाँच कर लेनी चाहिए और इस लिए यह जरूरी है कि हम कुछ दिनों तक अपनी पुरानी जगह छोड दें।

इन दो बातों पर हम सबकी राय एक हुई और करीब करीब सारे दक्षिणके गुलामोंकी यही राय थी।

गुलामीके दिनोंमें हम लोग अपने नामोंके साथ अपने मालिकका नाम भी लिया करते थे, या यों कहिए कि मालिकका नाम हम लोगोंका उपनाम या 'अल्ल' हुआ करता था। अब न जाने क्यों, सब लोगोंने यह सोचा कि यह अल्ल उडा देना चाहिए। बहुतसे लोगोंने ऐसा किया भी और एक नया उपनाम धारण कर लिया। गुलामीके दिनोंमें हम लोग इकहरे नामसे ही पुकारे जाते थे, जैसे जान, सुसान इत्यादि। कभी कभी गोरे मालिकके नामके साथ भी पुकारे जाते थे, पर वह भी इस तरह कि किसी स्वाधीन मनुष्यको कभी अच्छा न लगे-'जान हचर' या हचरका जान। पर अगर 'जान' या 'सुसान' किसी गोरेका नाम हुआ तो सिर्फ जान या सुसान कहना बेइज्जती समझी जाती थी। इस लिए हम लोगोंने अपने नामोंको और सुडौल बना लिया, जैसे जानका हुआ 'जान एस लिंकन' अथवा सुसानका 'जान एस सुसान'। उपनामके पहले जो 'एस' आया है उसका, कुछ मतलब नहीं है, काले लोगोंने उसे यों ही अल्लके तौर पर धारण कर लिया है।

और कैसे ले आई सो मुझे मालूम नहीं । बिलकुल पहली किताब यही मेरे हाथ लगी और मैं झटपट इसे पढ जानेकी कोशिश करने लगा। मने किसीके मुँह सुना था कि सबसे पहले वर्णमाला सीखनी पडती है। इस लिए अपनी बुद्धिके अनुसार मैं वर्णमाला सीखनेका प्रयत्न करने लगा । कोई सिखानेवाला तो था नहीं, क्योंकि मेरे आसपास जितने मेरे भाई लोग थे वे 'लिख लोढा पढ पत्थर' ही थे और गोरे, जो लिखे पढे थे उनके पास फटकने तकका मुझे साहस न होता था। खैर, किसी तरहसे हो मैं एक दो महीनोंमें वर्णमाला सीख गया। मेरी माने मुझे इस काममें बडी मदद दी, क्यों कि वह चाहती थी कि मैं लिख पढ जाऊँ, यद्यपि वह स्वयं कुछ लिख पढ नहीं सकती थी। वह बडी चतुर थी और इसलिए हर मौके पर उसने हम लोगोंकी हरतरहसे रक्षा की। सचमुच, अगर मैंने इस जिन्दगीमें कोई अच्छा काम किया है तो, वह अपनी माकी ही बदौलत।

जब मै शिक्षा प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा था, उस समय एक काले याने मेरी जातिके ही एक लडकेसे मेरी जान पहचान हो गई। इसने ओविओमें शिक्षा पाई थी और अब यह माल्डनमे आ गया था। जब मेरे और भाइयोंको यह खबर लगी कि यह लिखा पढा भी है तब उन्होंने एक समाचारपत्र मँगवाया और शामको सब लोग उसे घेर कर उससे वह पत्र पढवाने लगे। स्त्री-पुरुष सब उस लडकेसे प्रसन्न थे। मुझे तो यह पडी थी कि कब मैं इसके बराबर लिख पढ जाऊँ। मैं बिलकुल अधीर हो उठा था। मेरा यह ख्याल हो गया कि इस लडकेके बराबर कोई सुखी नहीं और वैसा ही सुखी बननेकी मेरी कोशिश जारी थी।

अब हमारे जातभाई भी शिक्षाका महत्त्व समझने लगे और इस बातका प्रयत्न करने लगे कि काले लडकोंके लिए भी एक पाठशाला बन जाय। इस पर बडा आन्दोलन हुआ, क्योंकि वर्जीनियामें नीग्रो लडकोंकी पाठशाला एक बिलकुल नई बात थी। बडा निकट प्रश्न यह था कि शिक्षक कहाँसे लाया जाय। वही एक लडका था जिसे लोग लिखा पढा समझते थे, पर वह लडका ही था, इस लिए उसे शिक्षक बनानेकी बात जहाँकी तहाँ ही रह गई। इसी बीच ओविओसे एक नीग्रो नवयुवक आ पहुँचा। यह पहले सिपहगीरी करता था पर और सिपाहियोंकी तरह अनपढा न था। लोगोंको जब मालूम हुआ कि यह अच्छा लिखा पढा आदमी है तब उन्होंने उसे अपनी पहली पाठशालाका पहला

शिक्षक नियत कर दिया। अब तक नीग्रो बालकोंके लिए मुफ्ती पाठशालाये खुली नहीं थीं और इस लिए इस शिक्षकके साथ यह तै हुआ था कि सब लोग मिलकर चन्देसे इसे महीने महीने कुछ रुपये दें और भोजनके लिए बारी बारीसे एक एक दिन बुलावें। इससे शिक्षकको भी बडा सुभीता था, क्यों कि जिस रोज जिसके यहाँ शिक्षक जीमने जाते वह उस रोज अपने यहाँ बडी तैयारी करता था। मुझे स्मरण है कि जब हम लोगोंकी बारी आती तब मैं शिक्षकके आनेकी बाट जोहता हुआ बैठा रहता था और जब तक वे न आते मुझे कल नहीं पडती थी।

किसी जातिकी उन्नतिके विषयमें विचार करते हुए यह एक बडे ही महत्त्वका प्रश्न मालूम होता है कि सब लोग—सारी जाति—पढनेके लिए पाठशालामें भरती हो। शिक्षाके लिए मेरे जातभाइयोंने जो उत्साह प्रकट किया वह निस्सन्देह अपूर्व था। मैं तो यह कहता हूँ कि जिन लोगोंने स्वय अपनी आँखों नहीं देखा वे उसका अन्दाज भी न कर सकेंगे। सौ पचास लडके नहीं, सारी जाति पाठशालामें भरती होकर पढने लगी। क्या बूढे और क्या बालक, सभी बडे उत्साहसे पढते थे। शिक्षक भी मिलने लगे और दिनकी कौन कहे, रातको भी, पाठशालायें ठसाठस भर जाने लगी। हम लोगोंमें जो वृद्ध थे उनमें भी यह आकांक्षा पैदा हुई कि इस लोककी यात्रा समाप्त करनेसे पहले लिंग पटरर बाइबल (इंजील) पढने योग्य हो जावें। साठ साठ सत्तर सत्तर वर्षकी बूढी स्त्रियाँ और पुरुष नाइट-स्कूलोंमें आकर पढने लगे। स्वाधीनताकी घोषणा होनेके पश्चात् रविवारकी पाठशालायें खुलने लगीं, और इन पाठशालाओंमें जो खास किताब पढाई जाती थी वह 'स्पेलिंग बुक' यानें हिज्जोंकी किताब थी। रातकी और रविवारकी पाठशालाओंमें इतनी रेलपेल हुआ करती थी कि बहुतोंको निराश होकर लौट जाना पडता था।

कनावा वैलीमें पाठशाला स्थापित हुई, पर मेरी आशा पर पानी फिर गया। मैं कुछ महीनों तक नमककी भट्टामें काम करता था। इससे मेरे बापकी आमदनी बढती थी, इसलिए कमाना छोड पढने जानेसे उसने मुझे रोक दिया। मुझे ऐसा दुःख हुआ कि कह नहीं सकता। जब पाठशालासे लौटते हुए लडकोंको देखता तो मेरी छाती फटने लगती थी। पर मैं करता ही क्या? स्पेलिंगबुक पर सब कसके मिहनत करने लगा।

मेरी निराशासे माको भी बड़ा दु ख हुआ । उससे जहाँ तक बन पड़ता मुझे दिलासा देती और मेरी शिक्षाके लिए किसी न किसी फिक्रमें रहा करती थी । कुछ दिनोंके बाद ऐसा प्रबन्ध हो गया कि मैं दिन भर मजदूरी कर चुकने पर रातको शिक्षकसे पाठ (सबक) लेने लगा । रातके पाठ इतने अच्छे होते कि दिनमें पढ़नेवाले लड़कोंसे मैं जियादा सीख गया । इस अनुभवसे रात्रि पाठशाला कितना काम करती है, यह मैं खूब जान गया, और इस कारण आगे चल कर टस्केजी और हैम्पटनके नाइट--स्कूलोंमें मैं बराबर पढ़ा करता था। पर इस समय लड़कईसे हो या और किसी कारणसे हो, मुझे दिनके स्कूलमें ही जाकर पढ़नेकी रुची लगी थी, और इसकी कोशिश भी मैंने ऐसी की कि एक भी मौका हाथसे न जाने दिया । अन्तमें मेरी इच्छा पूर्ण हुई, और कुछ महीनोंके लिए मुझे दिनकी पाठशालामें पढ़नेकी इजाजत मिल गई । मैं बड़े सवेरे उठकर भट्टी पर नौ बजेतक काम करता और दो पहरको पाठशालासे छुट्टी मिलने पर काम पर आ जाता और फिर दो घंटे भट्टीका काम करता था ।

भट्टीसे पाठशाला कुछ फासले पर थी । पाठशाला नौ बजे खुल जाती थी और मैं नौ बजेतक भट्टी पर ही रहता था । इससे पाठशालामें पहुँचनेसे पहले ही वहाँ पढ़ाई शुरु हो जाती थी । यह असुविधा दूर करनेके लिए मैंने एक ऐसा काम किया जिसके लिए लोग मुझे दोष लगावेंगे, पर जो कुछ हुआ उसे बिना कहे मुझसे रहा नहीं जाता। सच बातका बड़ा बल है। बात छिपानेसे शायद ही कभी किसीको लाभ होता होगा । भट्टीके आफिसमें एक घड़ी थी । इसी घड़ीके हिसाबसे सैकड़ों नहीं, इससे भी जियादा लोग अपना अपना काम शुरू और बंद करते थे । मैंने यह सोचा कि ८॥ वाली सुई अगर मैं ९ पर हटा दूँ तो मैं समय पर स्कूलमें जा सकूँगा । बस मैं रोज सबेरे ऐसा ही करने लगा । धीरे धीरे मैनेजरको इस बातका सन्देह हुआ कि कोई लड़का घड़ीमें हाथ लगाता है। जब ऐसा सन्देह हुआ तब उन्होंने घड़ी वहाँसे हटा कर एक सन्दूकमें रख दी और उसमें ताला लगा दिया । खैर, मैंने यह काम सिर्फ इसलिए किया था कि मैं वक्त पर स्कूलमें पहुँच सकूँ- इसलिए नहीं कि और लोगोंको इससे कुछ असुविधा हो ।

पहले पहल जब मैं पाठशालामें जाने लगा तब दो अड़चनें मेरे सामने आईं । एक तो यह कि सब लड़के सादी या खड़ी टोपी पहन कर पाठशालामें आते थे और मेरे पास तो टोपी ही नहीं थी । जबतक मैं स्कूलमें नहीं गया

था तबतक, मुझे टोपीकी जरूरत ही नजर न आई। पर अब और लड़कोंकी पोशाक देखकर मैं भी बेचैन हो गया। मैंने अपनी मासे कहा। यद्यपि जैसी टोपियाँ उस वक्त नीग्रो लोग पहनते थे वैसी टोपी खरीदनेके लिए उसके पास दाम नहीं थे, फिरभी उस वक्त उसने दिलासा देकर मुझे सन्तुष्ट कर दिया। कुछ दिनों बाद उसने एक खुरदरे कपड़ेके दो टुकड़ोंको जोड़ कर एक टोपी सी दी। इस तरह मुझे सबसे पहली टोपी मिली और उस पर मुझे बड़ा फख्र (अभिमान) हुआ।

इस टोपीके मामलेमें मेरी माने मुझे जो एक बात सिखला दी उसे मै कभी न भूला, और जहाँ तक मुझसे बन पड़ा है उसे मैने दूसरोंको भी सिखलानेकी चेष्टा की है। जब जब इस घटनाका स्मरण आता है तब तब मुझे इस बातका बड़ा अभिमान होता है कि जो चीज पास नहीं होती थी उसे साफ साफ 'नहीं' कह देने और बतला देनेकी दृढ़ता मेरी मामें थी। बहुतसे लोगोंके पास उस वक्तके फैशनकी टोपियाँ खरीदनेके लिए दाम नहीं थे, पर कर्ज करके उन्होंने उन टोपियोंको खरीदा था। पर मेरी माने जिस चीजको खरीदनेके लिए उसके पास दाम नहीं थे उसके लिए कभी कर्ज नहीं किया। इसके बाद मैंने कई बार सादी और बढ़ी टोपियाँ खरीदीं, परन्तु जो अभिमान मुझे माताकी दी हुई उस दो टुकड़ोंकी टोपी पर है वह और किसी टोपी पर नहीं। मेरे जिन जिन साथियोंने फैशनवाली टोपी पहनी, और घरकी बनी हुई टोपी पहनने पर मेरी हँसी उड़ाई, उनमेंसे बहुतेरोंको आगे चलकर जेलकी हवा खानी पड़ी, और मुझे अब बड़े दु:खसे कहना पड़ता है कि उनमेंसे बहुतोंको किसी भी तरहकी टोपी खरीदनेकी शक्ति नहीं रह गई है।

दूसरी अड़चन नामके बारेमें थी। बचपनसे लोग मुझे 'बुकर' कहकर पुकारते थे। पाठशालामें भरती नहीं हुआ था तबतक, मुझे और एक नाम धारण करनेकी आवश्यकता भी न जान पड़ी थी। किन्तु जब पाठशालामें हाजिरी हुई और मैंने सुना कि किसीके दो नाम है और किसी किसीके तीन नाम, तब मैं सोचने लगा कि मेरा तो एक ही नाम है और जब मास्टर साहब मुझसे मेरे दो नाम पूछेंगे तब मैं क्या जवाब दूंगा। आखिर जब नाम लिखानेका वक्त आया तब मुझे एक तदबीर सूझी और मेरा विश्वास हो गया कि यह मौका मैं अवश्य मार लूँगा। जब मास्टर साहबने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है, तो मैंने ऐसे शान्तचित्तसे उत्तर दिया—'बुकर वाशिंगटन,' मानो

इसी नामसे लोग मुझे हमेशासे पुकारते हैं। आगे मेरा यही नाम प्रसिद्ध हुआ। कुछ दिनों बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि मेरी माने मेरा नाम 'बुकर टेलीफेरो' रक्खा था। यह दूसरा नाम अबतक क्यों गुम रहा सो मुझे मालूम नहीं। पर जैसे ही मुझे खबर लगी कि मेरा दूसरा नाम टेलीफेरो है, वैसे ही, मैं उसे चलाने लगा और इस तरह मेरा पूरा नाम 'बुकर टेलीफेरो वाशिंगटन' हुआ। मैं समझता हूं कि ऐसे इने गिने ही लोग होंगे जिन्हें मेरी तरह अपना नाम आप रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

कई बार मेरे मनमें यह विचार उठा है कि अगर मैं किसी बड़े खान्दानमें पैदा होता तो बडी बहार आती, पर अगर सचमुच ही कहीं मैं किसी अमीरका लड़का होता, तो अपने पुरुषार्थको भूलकर मैं शाही ठाठके दलदलमें ही धँस जाता। कुछ वर्ष पहले मैने यह निश्चय किया कि मैं किसी बड़े घरानेका अभिमान नहीं कर सका तो क्या हुआ, मैं स्वयं कुछ ऐसे सत्कार्य करूँगा जिन पर मेरे लड़के फक्र करें और, और भी बड़े काम करनेके लिए उत्साहित हों।

नीग्रो लोगोंके विषयमें किसीको विना समझे बूझे एकाएक अपनी राय खिलाफ न कर लेना चाहिए। नीग्रो लोगोंको जिन मुसीबतों, नाउम्मेदियों और तरह तरहकी मोहमायाओंसे सामना करना पड़ता है, उन्हें वे ही जानते हैं—और लोग उनका अन्दाज भी नहीं कर सकते हैं। जब कोई गोरा किसी कामको उठा लेता है तब, यह मान लिया जाता है कि वह जरूर कामयाब होगा। पर नीग्रोकी दशा उसके बिलकुल विपरीत है। अगर कोई नीग्रो-बच्चा किसी काममें कामयाब होता है तो लोग दाँतों उँगली दबाते हैं और कहते हैं कि इसने यह काम कैसे कर लिया? तात्पर्य यह है कि नीग्रो जाति ही बदनाम है।

किसी व्यक्ति या जातिकी उन्नतिमें कुलीनता भी बड़ी सहायक होती है। नीग्रो लोगोंसे ओर कुलीनतासे अब तक कोई सरोकार न था। नीग्रो लोगोंको अपना इतिहास मालूम नहीं—उनके बापदादा कौन थे, उन्होंने क्या पुरुषार्थ किया इत्यादि बातें, उन्होंने अपने कानोंमें कभी सुनी तक नहीं। ऐसी हालतमें यह कैसे संभव है कि गोरोंकी तरह उन्हें भी अपने कुलका अभिमान हो। बहुतसे लोग इस बातको भूले जाते हैं और नीग्रो युवकोंकी चालचलन पर दृष्टि रखकर उनकी और गोरोंकी उन्नतिका मुकाबला किया करते हैं। एक मेरा ही उदाहरण लीजिए। मेरी नानी या दादी कौन थी, मैं नहीं जानता। मेरे चचा,

मामा,-फूफी, फूफा, चचेरे भाई और चचेरी बहनें थीं, पर वे सब इस वक्त कहा है और क्या करते हैं इसकी, मुझे खबर तक नहीं है। नीग्रो लोगोंका तो यह हाल है। गोरोंकी हालत इससे कहीं अच्छी है। जीवनमें अगर 'नाकामयाबी हुई तो उन्हें इस बातका डर रहता है कि ऐसा होनेसे कुलकीर्तिमें कलकका टीका लग जायगा, और अकेली यही एक बात उन्हें बुरे कर्मोंके करनेसे बार बार बचाती है। अपने कुलका इतिहास कैसे कैसे सत्कार्योंसे भरा हुआ है और ऐसे अच्छे कुलमें हमने जन्म पाया है, ये विचार प्रयत्नशील पुरुषोंके मार्गकी बाधायें दूर करनेमें बडी मदद देते है।

दिनका बहुत थोडा समय मैं स्कूलमें दे सकता था और मेरी हाजिरी भी वक्त पर न होने पाती थी। कुछ ही दिनों बाद मेरा दिनका स्कूल जाना बन्द हो गया, और सारा समय फिर काम करनेमें बीतने लगा। मैं फिर नाइट (रात) स्कूलमें भरती हुआ। सच पूछिए तो दिनमें काम कर चुकने पर रातकी पढाई-से ही मुझे जो कुछ शिक्षा प्राप्त हुई सो हुई। मैंने बहुत कोशिश की कि कोई अच्छे मास्टर मिलें, पर अच्छे मास्टरका मिलना बडा ही मुश्किल था। कभी कभी तो यहाँ तक नौबत आई है कि रातको पढानेवाले कोई मास्टर मिले भी, तो उनके इल्मकी पहुँच मेरे ही जितनी देख, मुझे ऐसी नाउम्मेदी हुआ करती थी कि कुछ कह नहीं सकता। कई बार मुझे रातका सबक सुनानेके लिए मीलों दौड जाना पडता था। पर मुझे अध्यवसायमें दृढ विश्वास था। बीसों बार मुझे ऐसी निराशा और उदासी हुई कि जिसकी हद नहीं, पर मैंने कभी अपने इस निश्चयको टलने न दिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं शिक्षा अवश्य प्राप्त करूँगा।

जब हम लोग वेस्ट वर्जीनियामें आये तब बडी ही गरीबीमें दिन बिताते थे। पर इस हालतमें भी मेरी माने एक अनाथ बालकको अपने यहाँ रख लिया। ठीक वही मसल हुई कि "आप मिया मांगते द्वार खडे दरवेश।" आगे चल कर हम लोगोंने इसका नाम 'जेम्स बी वाशिंगटन' रक्खा। जबसे हमारे यहाँ वह आया तबसे परिवारका ही एक आदमी होकर रहने लगा।

कुछ दिन नमककी भट्टी पर काम करनेके बाद मुझे एक कोयलेकी खानमें काम करना पडा। उस खानसे कलके लिए कोयला जुटाया जाता था। खानमें काम करनेसे मैं बहुत डरता था। इस कामसे तन्दुरस्ती बिलकुल खराब हो

जाती है । दिन भर काम करते करते इतना मैल बदन पर जम जाता कि वह सहजमें साफ न हो सकता था । उसके सिवाय खानसे कोयले खोद जानेका स्थान एक मील दूर था । सुरंगके अँधेरेमें एक मील चलने तो कोयलेसे भेट होती थी । वहाँ कोयलेकी कई गुफायें थीं जिनको पहचानना बड़ा कठिन था । इसलिए अँधेरेमें बहुत भटकना पड़ता था । राह अकसर भूल जाती थी और तब मेरी छाती धड़धड़ाने लगती और यदि कहीं चिराग गुल हो गया और मेरे पास दियासलाई भी न हुई तो मेरे देवता ही कूच कर जाते । जब तक कोई आदमी चिराग लेकर वहाँ न आता तबतक उस अँधेरे भूलभुलैयासे मेरा छुटकारा न होने पाता था । मौत तो हर दम सिर पर सवार रहती थी । कभी कभी कोयलेकी चट्टान धँस जानेसे बहुतोंकी जाने तक चली जाती थी । जब कभी सुरंगकी बारूद समयके पहले ही भभक उठनेसे बहुतेरे लोग बेमौत मर जाते थे ।

उन दिनों अच्छे अच्छे होनहार बालक खानों पर काम करनेके लिए भेज दिये जाते थे, पर उनकी शिक्षाका कोई प्रबन्ध न किया जाता था और प्राय इसका ऐसा बुरा परिणाम होता था कि जो लड़के बचपनसे ही खानोंका काम करते थे वे खानोंका ही काम करने लायक रह जाते थे—न उनके शरीरकी कभी उन्नति होती और न मनकी ही । वे खानके ही आदी हो जाते थे और उनकी सारी जिन्दगी इसी काममें बीतती थी ।

उस समय और उसके बाद युवा होने पर मैं प्राय गोरे लड़कोंकी मनोवृत्तियों और महत्त्वाकांक्षाओंको मन-ही-मन समझनेकी कोशिश किया करता था और देखता था कि उनकी उन्नतिके लिए कोई कार्यक्षेत्र रुका नहीं है और जो चाहें विचार सकते हैं जो चाहें कर सकते हैं। वे कांग्रेसके सभासद हो सकते थे, किसी प्रदेशके गवर्नर हो सकते थे, बिशप (मुख्य पादरी) हो सकते थे और संयुक्तराज्यके कर्ताधर्ता भी हो सकते थे । और यह सब उनके जाति और वर्णकी बदौलत था । इनसे मैं ईर्ष्या किया करता था और सोचता था कि अगर मैं भी इनकी तरह एक गोरा लड़का होता तो बहुत अच्छा होता । उस हालतमें मैं क्या क्या करता, बिलकुल नीचेसे आरंभ कर किस तरह सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच जाता, इन बातोंको मैं अक्सर सोचा करता था।

पर जैसे जैसे मेरी उम्र बढ़ती गई वैसे वैसे गोरे लड़कोंकी तरह होनेकी इच्छा कम होने लगी । मैं अब जानने लगा कि किसी मनुष्यके यशका

इस बातसे नहीं कूता जा सकता कि उसने अपने जीवनमें कौनसा पद प्राप्त कर लिया है, किन्तु यश प्राप्त करनेके मार्गमें उसने कितनी विघ्नबाधाओंसे लडझगड-कर उन्हें पददलित कर डाला है, इसीसे उसके यशका मूल्य ठहराया जा सकता है। अर्थात् जिसने अपनी जिन्दगीमें जितनी ही अधिक विघ्नबाधाओंसे डट कर सामना किया हो, उसे उतना ही अधिक पुरुषार्थी समझना चाहिए। इस दृष्टिसे विचार करने पर मेरा यह निश्चय होता है कि एक नीग्रो होना ही समार-यात्रामें विजय पानेके लिए सबसे अच्छा स्थान है। नीग्रो जाति किसीको प्यारी नहीं, इस लिए जीवनके आरमसे ही विघ्नबाधाओंको हटानेका काम नीग्रो बालक पर आ पडता है, अर्थात् उसकी विजययात्रा जन्मसे ही आरभ होती है। नीग्रो युवाओंको विख्यात होनेके लिए गोरे युवकोंसे बहुत अधिक प्रयत्न करने पडते हैं, इसमें सन्देह नहीं, पर इस कठिन और असाधारण विकट मार्गसे जानेवाले नीग्रो युवाओंमें जो आत्मबल, आत्मविश्वास और योग्यता आ जाती है, वह सुगमतासे अपने गौर वर्णकी बदौलत ही बडप्पन पानेवालोंमें कदापि नहीं आ सकती, और इस लिए नीग्रो होना भी एक बडा भारी लाभ है।

चाहे जिस दृष्टिसे देखा जाय, दूसरी किसी भी उच्च जातिका मनुष्य होनेकी अपेक्षा, जिस जातिमें मैं पैदा हुआ हूँ उसी जातिका मैं एक मनुष्य रहूँ, अब मुझे यही इष्ट जान पडता है। मुझे यह सुनकर बडा दु ख हुआ है कि एक विशिष्ट जातिके कुछ लोगोंने राष्ट्रीय अधिकारका दावा किया है। इन लोगों पर मुझे बडी दया आती है, क्योंकि उच्च जाति या वर्ण होनेसे क्या होता है? जब तक योग्यता न हो तब तक, उन्नति हो ही नहीं सकती, और मेरा यह विश्वास है कि किसीका वर्ण चाहे कैसा ही हो, अत्यन्त हीन जातिमें भी क्यों न पैदा हुआ हो, वह अपनी योग्यतासे अवश्य आगे निकल जायगा। योग्यता और श्रेष्ठता—फिर वह किसी भी रगके चमडेमें हो—अन्तमें अवश्य पहचानी जाती है और उसीका बोलबाला होता है। यह सनातन नियम है और सारे ससारमें इसका अमल होता है। अत्याचारसे इस समय जो जातियाँ पीडित है, अन्तमें उनकी विजय होगी। इस सनातन सिद्धान्त पर भरोसा करके उन्हें धीरताके साथ अपना बल और योग्यता बढानेकी चेष्टा करनी चाहिए। मैं यह इस लिए नहीं कहता कि आप लोग मेरी ओर देखें, बल्कि मैं चाहता हूँ कि मुझे जिस जातिमें पैदा होनेका फक्र (गर्व) है उस जातिकी ओर आप जरा ध्यान दें।

तीसरा परिच्छेद।

शिक्षाके लिए प्रयत्न।

एक रोज मैं कोयलेकी खानमें काम कर रहा था और थोड़ी दूर पर दो मजदूर कुछ बातचीत कर रहे थे। उससे मुझे पता लगा कि काले नीग्रो लोगोंके लिए एक बड़ा भारी स्कूल खुलनेवाला है। एक छोटीसी पाठशाला तो हमारे गाँवमें भी थी, पर एक बड़ा स्कूल या कालेज खुलनेका समाचार यह पहला ही सुना गया।

कोयलेकी खानमें ये बाते हो रही थीं, इस लिए उन मजदूरोंको यह मालूम नहीं था कि उनकी बातें एक तीसरा आदमी भी सुन रहा है। अँधेरेमें किसको दिखाई दे? मैं और भी पास आ गया और उनकी बातें सुनने लगा। मैंने एकको दूसरेसे यह कहते हुए सुना कि स्कूल स्थापित हो चुका है और यही नहीं, बल्कि चतुर विद्यार्थी कुछ काम करके अपने उदरनिर्वाहका भी प्रबन्ध कर सकते हैं और इसके साथ उन्हें कोई धन्धा भी सिखाया जानेवाला है।

वे उस स्कूलकी ज्यों ज्यों केफियत बयान करने लगे त्यों त्यों, मेरी यह धारणा होती चली कि अगर संसारमें कोई महत्त्वका स्थान है तो वह उक्त स्कूल ही है। उस स्कूलका नाम भी मैंने सुना और मन-ही-मन कहा कि 'हैम्पटन नार्मल एण्ड एग्रिकलचरल इन्स्टिट्यूट' (यह स्कूलका नाम था) में जो आनन्द है वह स्वर्गके सुखको भी मात करता है। मैं अभी यह नहीं जानता था कि यह स्कूल कहाँ है, यहाँसे कितनी दूर है, और वहाँ कैसे कोई जा सकता है, तो भी मैंने तुरन्त वहाँ जाना ठान लिया। एक हैम्पटनकी धुन ही मुझ पर सवार हो गई। रात दिन मैं वहाँके स्वप्न देखने लगा।

कुछ महीने तक और भी मैं खानमें काम करता रहा। इसी बीच मैंने सुना कि नमककी भट्टी और कोयलेकी खानके मालिक जनरल लेविस रफनरके यहाँ (घर पर) एक जगह खाली हुई है। जनरल रफनरकी पत्नी उत्तर अमेरिकाके वरमाट स्थानकी रहनेवाली थीं और उनका नाम वायोला रफनर था। उनके बारे यह बात मशहूर थी कि वे अपने मातहतके लडकोंसे बडा कडा व्योहार रखती हैं। यह कड़ाई देखकर दो तीन महीनेसे जियादा कोई नौकर वहाँ टिकता ही

था। सब लोग इसी एक सबबसे उनकी नौकरी छोड दिया करते थे। मैंने सोचा कि कोयलेकी खानमें काम करनेसे तो यहाँ काम करना कुछ आसान जरूर होगा। इसलिए उनके यहाँ नौकरी करना मैंने ठान लिया, और मेरी माने भी उस जगहके लिए मेरी तरफसे कोशिश की। मैं पाँच डालर × मासिक वेतन पर वहाँ नियत किया गया।

रफनर बीबीकी कड़ाईके बारेमें मैं इतना शोर सुन चुका था कि उन्हें मिलते मुझे डर लगता था, और मैं उनके सामने आया तब तो मेरी देहमें कँपकँपी ही भर गई। तो भी कुछ सप्ताह काम कर चुकने पर उनका मुझे अच्छी तरह परिचय हो गया। सबसे पहले मैंने यह जाना कि हरेक चीज साफ और सुथरी रखनी चाहिए और सब काम ठिकानेसे और ढगके साथ होने चाहिए, इसी तरह हर काम ईमान और सफाईके साथ होना चाहिए, तब तो वे प्रसन्न रहती हैं, और नहीं तो उनका दिमाग बिगड जाता है। वे चाहती थीं कि कोई बेगारी या टालमटोल न करे, घरकी चीजें बे-करीने रक्खी न हों, तात्पर्य, सचाई और सफाईको वे बहुत पसन्द करती थीं। और उनकी यह पसन्दगी कुछ बुरी न थी।

हैम्पटनको जानेसे पहले, मैंने कबतक रफनर बीबीके यहाँ काम किया सो मुझे ठीक याद नहीं, तो भी मैं समझता हूँ कि साल डेढ साल मैंने उनके यहाँ बिताया होगा। यह तो मैं कई बार कह चुका हूँ और फिर भी कहता हूँ कि रफनर बीबीके यहाँ मैंने जो तालीम पाई वह जिन्दगी भर मेरे काम आई। अब भी अगर मैं कहीं कागजके टुकडोंको फैले हुए देखता हूँ तो झट बटोर लेता हूँ, आँगनमें कूडा करकट देखता हूँ तो चट उसे साफ करता हूँ, दीवारके छड अगर निकल पडे हों तो फौरन उन्हें जहाँके तहाँ बैठा देता हूँ। गन्दी जगहोंको मैं देख नहीं सकता, बे बटनका कोट मुझे अच्छा नहीं लगता, किसीके कपडे पर अगर तेलके धब्बे पडे हुए देखता हूँ तो मेरा जी मचलाता है और मैं लोगोंको ये बातें मौके मौके पर बतला भी देता हूँ।

शुरू शुरूमें मैं रफनर बीबीसे डरता था, पर वह समय भी जल्दी आ गया जब, मैं उन्हें अपना एक परम हितू समझने लगा। जब उन्हें भी मुझ पर विश्वास हो गया तब, वे मुझे बहुत प्यार करने लगीं। जाडेके मौसिममें उन्होंने मुझे

× एक डालर तीन रुपयेका होता है।

एक घंटे भर स्कूलमें जाकर पढनेकी इजाजत दे दी। पर मैंने जियादातर रात हीको पढा। पढानेके लिए कुछ रुपये खर्च करनेसे कोई न कोई मास्टर मिल जाते थे। रफनर बीबी मुझे शिक्षा पानेके लिए बराबर उत्साहित करती थीं। उनके यहाँ रहते हुए ही मैंने अपनी पहली लाइब्रेरी जुटाना शुरू किया। एक लकडीका सन्दूक मुझे मिल गया, उसके एक तरफका हिस्सा मैंने काट डाला और उसीकी चिप्पियाँ बना कर उस सन्दूकमें लगा दीं। अब जो कोई पुस्तक मुझे मिलती उसे मैं इसीमें रखने लगा, और इसीको मैं अपनी लाइब्रेरी कहा करता था।

इस तरह मेरे दिन रफनर बीबीके यहाँ बडे आनन्दसे कटते थे। तो भी हैम्पटन जानेकी धुन अब भी सवार थी। हैम्पटन किस तरफ है और वहाँ जानेमें कितना खर्च लगेगा, सो भी मुझे मालूम नहीं था। पर १८७२ की बरसातमें मैंने वहाँ जानेकी चेष्टा की। इस कार्यमें सिवा मेरी माताके, और किसीकी भी मेरे साथ सहानुभूति न थी। मेरी माको भी थोडी देरके लिए मेरा यह प्रयत्न मृग जलका पीछा करना ही जान पडा। वह कुछ दुखित भी हुईं, पर कोई न कोई सूरत निकाल कर मैंने उससे जानेकी आज्ञा ले ली। अबतक मैंने जो कुछ कमाई की थी उसमेंसे कुछ ही डालर मेरे पास रह गये थे, बाकी सब मेरे बापने और परिवारके और लोगोंने खर्च कर डाले थे। अब मुझे कपडे खरीदने थे और राहका खर्च चलाना था, पर पासमें कुछ ही रुपये थे। मेरे भाई जानने भर तक मेरी मदत की, पर वह कोई बडी भारी मदद नहीं थी। एक तो उसे खानमें बहुत वेतन मिलता नहीं था, और जो कुछ मिलता था, वह घरमें खर्च हो जाता था।

मैं जब हैम्पटन जानेकी तैयारी करने लगा तब बूढे नीग्रो लोगोंने बडी ममता दिखाई और ऐसा प्यार किया कि मैं गद्गद हो गया। इन लोगोंकी जवानी गुलामीमें बीती थी, इन्हें यह आशा नहीं थी कि हमारी जातिका कोई होनहार युवक छात्रालयमें पढनेके लिए जायगा। इन बूढे लोगोंमेंसे किसीने मुझे निकल (ढाई आने), किसीने पाव डालर (बारह आने) और किसीने रुमाल भेंट किया।

निदान वह दिन भी उदय हुआ और मैंने हैम्पटनके लिए प्रस्थान किया। जितने कपडे मिल गये उतने एक थैलेमें भर लिये। इन दिनों मेरी माकी तबि-

...त एकाएक खराब हो चली थी और वह दिनोंदिन कमजोर होती जाती थी। मुझे इस बातकी आशा न रही कि म उससे फिर मिल सकूँगा और इस कारण इस मातृवियोगसे मुझे दु सह दु ख हुआ, परन्तु उसने बडी धीरतासे इस प्रसगको झेल लिया। उन दिनों वेस्ट वर्जीनियासे ईस्ट वर्जीनिया तक बराबर रेलगाडीका रास्ता नहीं था। कुछ दूर रेलगाडी थी और बाकी सफर डाककी शिकरमसे तै करनी पडती थी।

माल्डनसे हैम्पटन अनुमान ५०० मील है। घरसे रवाना हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी। इतनेमें मुझे यह मालूम हुआ कि मेरे पास हैम्पटन तकका काफी किराया नहीं है। राहमें जो एक घटना हो गई, उसे मे कभी न भूलूँगा। एक दिन दो पहरके वक्त एक पुरानी शिकरमम सवार हो मैं एक पहाडी रास्तेसे जा रहा था। शाम होते ही वह गाडी एक मामूली होटलके पास ठहर गई। उस गाडीमें, मेरे सिवाय और सब मुसाफिर गोरे थे। मने समझा कि शिकरमके मुसाफिरोंके लिए ही यह होटल बना है। चमडेके रगसे कितना उलट फेर हो जाता है, इसका मने विचार नहीं किया था। और सब मुसाफिरोंके टिकनेका जब प्रबन्ध हो गया और भोजनकी भी तैयारी हुई तब, मैं चुपकेसे वहाँके मैनेजरके पास गया। भोजन या आरामके खातिर एक पैसा भी मेरे पास नहीं था जो म दे सकता। पर किसी न किसी सूरतसे म मैनेजरको खुश करना चाहता था। बात यह थी कि इस मौसिममें वर्जीनियाके पहाडोंपर बडी ठड पडती है, और इस लिए रातको ठडसे बचने और आरामके लिए कोई ठिकाना मिलना जरूरी था। मैनेजरने मुझे देखकर ही–बिना कुछ पूछताँछ किये ही कोरा जवाब सुना दिया कि "जाओ, तुम्हारे लिए यहा जगह नहीं है। अपने शरीरके रगका मतलब समझनेका मेरे लिए यह पहला ही मौका था। इधर उधर टहल कर मैने बदनमें कुछ गरमी पैदा की, और किसी तरह वह रात बिताई। हैम्पटन जानेकी धुनमें मुझे उस होटलवालेसे वैर करनेका या असतुष्ट होनेका वक्त ही न मिला।

कुछ राह पैदल चला और कुछ गाडीवानकी दयासे गाडी पर सवार हो चला, और इस तरह बहुत दिनों बाद वर्जीनियाके रिचमड शहरमें आ पहुँचा। वहाँसे अब हैम्पटन ८२ मील था। आधी रातका वक्त था, मार्गके परिश्रमसे शरीरकी नस नस ढीली हो गई थी, भूखकी ज्वाला पेटमें धधक रही थी, और ऐसे समय में रिचमड नगरमें पहुँचा। आज तक मैंने

कोई बडा शहर नहीं देखा था और इससे मेरी मुसीबत और भी बढी। मेरे पास खर्चेके लिए एक दमडी भी न थी, किसीसे जान न पहचान, शहरके रास्ते भी कभी आँखों न देखे थे। कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, कुछ समझमें न आता था। कई लोगोंसे मैंने गिडगिडाकर कहा—'भाई! कहीं रहनेका ठिकाना हो तो बताओ,' पर बिना दामके कोई बात न करता था और दामके नाम मेरे पास एक फूटी कोडी भी न थी। लाचार मैं राहमें ही चहलकदमी करने लगा। कई दूकानें मुझे देख पडीं। वहाँ खानेकी चीजें रक्खी हुई थीं और इस ढंगसे रक्खी थीं कि मन खानेको दौड जाय। उन चीजोंमेंसे मुझे उस समय अगर कोई एक भी भर पेट खानेको मिलती तो, आगे मुझे जो कुछ मिलनेवाला था वह सब दे देनेके लिए मैं तैयार हो जाता! परन्तु उस वक्त मुझे कुछ भी खानेको न मिला!

आधी रातके बाद भी बहुत देर तक शायद मैं वहां टहलता ही रहा। आखिर मैं इतना थक गया कि फिर एक कदम चलना मुश्किल हो गया। मैं थका, माँदा, भूखा, सब कुछ हुआ, पर एक बात नहीं हुई—मैंने हिम्मत न हारी! टहलते टहलते मैं एक चबूतरेके पास आया और वहाँ कुछ ठहर गया। इधर उधर एक बार नजर दौडाकर कि कोई मुझे देखता तो नहीं है, मैं उस चबूतरेके नीचे आ गया, और कपडोंके थैलेको सिरहाने रख कर वहीं लेट गया। लोगोंके पैरोंकी आहट मुझे रात भर सुनाई देती रही। दूसरे दिन सवेरे बदनमें कुछ फुरती मालूम हुई, पर बहुत दिन हुए थे कि मैंने पेट भर खाया नहीं था जिससे बहुत तेज भूख लगी। जब पौ फटी और साफ साफ दिखने लगा तब मैंने इधर उधर देखा तो एक बडा जहाज दिखाई दिया। उस परसे लोहा उतारा जा रहा था। मैं फौरन उस जहाजकी तरफ चल पडा और खाना कमानेकी गरजसे जहाजके कप्तानके पास जाकर लोहा उतारनेकी इजाजत माँगने लगा। उस गोरे दयालु कप्तानने मुझ पर रहम खाके इजाजत दे दी। भोजनके योग्य दाम कमानेके लिए मुझे बहुत देर तक काम करना पडा, और अब मुझे याद आता है कि उस वक्त जो भोजन मैंने किया उसका मजा ही कुछ और था!

मेरे कामसे कप्तान साहब इतने सन्तुष्ट हुए कि उन्होंने मुझसे कहा, 'अगर तुम चाहो तो, रोज काम किया करो और अपनी मजदूरी ले जाया करो।' यह काम मिलनेसे मैं भी खुश हुआ। कुछ दिन वहीं काम करता रहा। जो मजदूरी

मिलती उससे केवल भोजनका खर्च चलाता था–पासमें कुछ भी जमा न कर सका। मैं हर बातमें किफायत किया करता था जिससे शीघ्र ही हैम्पटन जा सकूँ। मेरे सोनेका ठिकाना वही चबूतरा था जहाँ पहले दिन सोया था। आगे कई वर्ष बाद रिचमण्डके काले हब्शी लोगोंने मेरा बड़ा स्वागत किया। स्वागतके लिए, दो हजार लोग इकट्ठे हुए थे, और स्वागतका स्थान उसी पुराने चबूतरेके पास ही था। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि लोगोंने हृदयसे और बड़े प्रेमसे मेरा स्वागत किया, पर मेरा मन उस वक्त भी उसी चबूतरेवाली पटरीहीकी तरफ दौड़ता था कि जहाँ पहले पहल मुझे पनाह मिली थी।

हैम्पटनको जाने योग्य राहखर्च जमा होते ही मैंने पहले उस दयालु गोरे कप्तानको धन्यवाद दिया और फिर हैम्पटनकी राह ली। राहमें कोई ऐसी वारदात नहीं हुई जिसका उल्लेख किया जाय, मैं सही सलामत हैम्पटन जा पहुँचा। उस समय मेरे पास सिर्फ ५० सेंट (२५ आने) बचे थे और इसी रकमसे मैंने अपनी पढ़ाई शुरू की। हैम्पटनकी सफरमें कई बातें ऐसी कष्टप्रद हुई कि जिनकी मुझे अबतक याद है, पर जब मैंने हैम्पटनमें आकर उस विद्यालयभवनके दर्शन किये तब मैंने समझा कि आज मेरे सब परिश्रम और कष्ट सफल हुए। विद्यालयके दर्शनसे मुझ पर जो असर पड़ा उसका अंदाज अगर विद्यालय बनानेके लिए दान देनेवाले लोग कर सकें तो, मैं समझता हूँ कि वे ऐसे दान देनेमें और भी अधिक उत्साहित हों।

विद्यालयको देखकर मैंने सोचा कि दुनियामें यही सबसे बड़ी और सुन्दर हवेली है। उसके दर्शनसे मुझमें नवीन चैतन्य भर गया। यहाँसे मेरा नया जीवन आरम्भ हुआ। अब मेरे लिए जीवनका अर्थ भी नया हो गया। मेरे लिए वह स्वर्ग ही बन गया और मैंने यह निश्चय किया कि संसारका उपकार करनेकी योग्यता प्राप्त करनेमें यहाँसे जो कुछ मिल सकता है उसे लेनेमें, मैं कोई बात उठा न रक्खूँगा।

हैम्पटनके विद्यालयमें पहुँच कर, मैं वहाँकी मुख्य अध्यापिकाके पास गया और उनसे मैंने प्रार्थना की कि मुझे किसी दर्जेमें भरती कर लीजिए। बहुत दिनोंसे न मुझे अच्छा खाना मिला था, न मैं कपड़े ही बदल सका था, नहानेतककी सुविधा नहीं हुई थी। ऐसी हालतमें मैं उनके पास गया और उनके चेहरेसे ही मालूम किया कि मुझे भरती करनेके बारेमें उनके मनमें कोई निश्चय

नहीं होता है । मन-ही मन मैंने यह भी विचार किया कि अगर ये मुझे कोई आवारा लडका समझती हों तो कोई ताज्जुब नहीं । कुछ देरतक उन्होंने मुझे न यह बतलाया कि मैं तुम्हें भरती किये लेती हूँ और न यही कि तुम भरती नहीं किये जाओगे-दोनोंमें से एक भी नहीं । मैं उनके पीछे पीछे चल कर उन्हें यह दिखलानेकी कोशिश, अपनी शक्तिभर कर रहा था कि मुझमें कहाँतक योग्यता है । बीचहीमें जब मैंने और विद्यार्थियोंको भरती करते हुए देखा तब मुझे बहुत ही दु ख हुआ, क्योंकि मुझे इस बातका दृढ विश्वास था कि अगर मुझे अपनी लियाकत दिखलानेका मौका दिया जाय तो मैं इन लडकोंसे किसी बातमें कम न रहूँगा ।

कुछ घंटे बाद मुख्य अध्यापिकाने मुझसे कहा, " पासका कमरा झाड़, कर साफ करना होगा, झाडू लो और कूडा निकालकर बाहर फेंक दो। " अब मैंने समझा कि यह मौका आया । मुझे अबतक कोई ऐसी आज्ञा नहीं मि[ली] जिससे, मुझे इतना आनन्द हुआ हो ! कूडा बटोर कर फेंक देनेका काम बडी खूबीके साथ करता था—रफनर बीबीके यहाँ मुझे यह तालीम मि[ल] चुकी थी ।

मैंने उस रेसिटेशनरूममें-सबक सुनानेके कमरेमें-तीन बार झाड़ू दी। [फिर] धूल झाडनेका कपडा लेकर मैंने उस कमरेको तीन चार बार साफ किया। इसके अलावे हरेक चीजको उठा कर उसके नीचेका गर्द दूर किया और [बड़े] अतरे तकसे सब कमरा साफ और सुथरा करके रख दिया । कमरा साफ [कर]नेके मेरे कामसे मुख्य अध्यापिका यदि प्रसन्न हुईं तो मेरी राह साफ हो[गी], मुझे आशा थी, और अगर अप्रसन्न हुईं तो मैंने सोचा कि मेरे लिए कोई स[हारा] न रह जायगा । खैर, मैंने अध्यापिकासे जाकर कहा कि कमरा साफ कर चु[का]। वे उत्तर अमेरिकाकी रहनेवाली थीं और जानती थीं कि कहाँ कूडा जमा [हुआ] करता है । उन्होंने कमरेमें आकर फर्श और आलोंको देखा । फिर उ[न्होंने] अपना रूमाल निकाल कर उसे खंभे, मेज और बेंच पर रगडा। फर्श या [किसी] लकडीकी चीज पर जब उन्हें एक भी कण धूलका नजर न आया तब उ[न्होंने] शांत चित्तसे कहा, "मैं समझती हूँ कि तुम इस पाठशालामें भरती हो[ने] योग्य हो ।"

बस, हो चुका मेरा काम ! संसारके भाग्यशाली पुरुषोंमें मैं भी भरती [हो] गया ! मेरा जीवन आज सफल हुआ ! उस कमरेको झाड़ू देकर साफ क[रना]

मेरे लिए, कालेजकी प्रवेश परीक्षा थी और मेरा विश्वास है कि हारवर्ड अथवा येल विश्वविद्यालयकी प्रवेशपरीक्षा पास करनेवाले किसी युवकको मेरे जैसा आनन्द न हुआ होगा। इसके बाद मैंने कई परीक्षायें पास कीं, पर मैं यही समझता हूँ कि उन सब परीक्षाओंमें यही उत्तम हुई।

हैम्पटनके विद्यालयमें प्रवेश करते समय मुझे जो अनुभव हुआ उसे, मैंने यहाँ प्रकट किया है। ऐसा अनुभव शायद विरलोंको ही प्राप्त हुआ होगा, परन्तु उस वक्त मुझे जिन कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा था वैसी कठिनाइयोंसे मैं समझता हूँ कि बहुतोंको सामना करना पड़ा होगा। हैम्पटनके तथा दूसरे विद्यालयोंमें भरती होनेवाले सैकड़ों विद्यार्थियोंने मेरी ही जैसी कठिनाइयाँ भोगी होंगी। चाहे जो हो, उस समय शिक्षा प्राप्त करनेके लिए हमारी जातिके मेरे ही जैसे बहुतसे युवकोंने कमर कसी थी।

हैम्पटने विद्यालयसे उत्तीर्ण होनेमें उस कमरेकी सफाईने मेरी बड़ी मदद की। मुख्य अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकीने मुझे दरबानकी जगह पर मुकर्रर किया और मैं बड़ी खुशीसे उस जगह पर तैनात हुआ, क्योंकि उस जगह पर काम करके मैं अपने भोजन लायक कमा सकता था। उस काममें मिहनत तो बहुत थी और कष्ट भी अनेक थे, तो भी मैंने यह काम छोड़ा नहीं। मुझे कई कमरोंकी निगरानी करनी पड़ती थी और रातको कई घंटे इस कामको करनेके बाद आग सुलगाने और अपना सबक याद करनेके लिए सबेरे चार बजे फिर उठना पड़ता था। जबतक मैं हेम्पटनमें था तब तक और उसके बाद भी मुख्य अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकीने समय पड़ने पर मेरी बड़ी सहायता की है। उनकी सलाहसे मेरी हिम्मत बढ़ती थी और उनकी बातोंसे मुझमें बल आ जाता था।

हैम्पटन विद्यालयके दर्शनसे मुझ पर कैसा अच्छा परिणाम हुआ उसका वर्णन तो मैं कर ही चुका हूँ, परन्तु जिसने मुझ पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और स्थिरस्थायी परिणाम किया उस पुरुषके विषयमें मैंने अबतक कुछ भी जिक्र नहीं किया। जिसकी मुलाकातको मैं एक बड़ी इज्जत समझता हूँ, वह एक अत्यन्त उदार और महात्मा पुरुष था। अब उसका स्वर्गवास हो गया है, पर उसकी आत्मा मेरे हृदयमन्दिरमें विराज रही है और उसका नाम जनरल एस. सी. आर्मस्ट्रांग, मेरी जिह्वाको अब भी पवित्र कर रहा है।

मे इस बातमे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि यूरोप और अमेरिकाके सैकडों सच्छील पुरुषोसे मेरी मुलाक़ात हुई, पर यह बात कहनेमे मैं जरा भी नही हिचकता कि मैने अबतक जनरल आर्मस्ट्रागका कोई नमूना न देखा। गुलामोंकी यमपुरी और कोयलेकी खानसे बचकर आये हुए मुझ जैसे नातजुर्बेकार (अनुभवहीन) को जनरल आर्मस्ट्राग जैसे सत्पुरुषका समागम होना एक बड़े सम्मान और अधिकारकी बात थी। पहले पहल जब मैं उनके पास गया तो मेरा यह विश्वास हो गया कि ये पहुँचे हुए महात्मा है। उनके चेहरेसे और बातकरनेके ढगसे दैवी तेज टपक रहा था। जब मैं हैम्पटनमे आया तबसे उनके देहान्त तक, मुझे उनका सत्सग हुआ, और ज्यों ज्यो उनसे मेरा परिचय बढता गया त्यों त्यों, उनके विषयमें मेरी श्रद्धा बढती ही गई। हैम्पटनकी सारी इमारतों, विद्यालय, कक्षाओं, शिक्षको और उद्योगोंसे जितने लाभ होते हैं वे अकेले जनरल आर्मस्ट्रागके सत्सगमे प्राप्त हो सकते है। मेरा तो यह विश्वास है कि विद्यालयसे मिलनेवाली शिक्षासे कहीं अधिक अच्छी और उपकारी शिक्षा सत्सगसे प्राप्त होती है और ज्यो ज्यों मेरी उम्र ढलती जाती है त्यों त्यों मेरी यह धारणा दृढसे दृढतर होती जाती है कि पुस्तकों और मूल्यवान् सरजामसे प्राप्त होनेवाली शिक्षा, सत्पुरुषोंके समागमसे प्राप्त होनेवाली शिक्षाके सामने कोई चीज ही नहीं है। पुस्तकोंका अभ्यास करानेके बदले यदि हम लोगोंकी पाठशालाओंमे मनुष्यो और वस्तुओंका अभ्यास कराया जाय, तो मैं समझता हूँ कि उससे कई गुना अधिक लाभ हो।

जनरल आर्मस्ट्रागने अपनी आयुके अतिम दो महीने मेरे टस्केजीके मकानमे बिताये। उस वक्त उन्हें लकवा मार गया था। उनसे बोला नहीं जाता था और उनका शरीर बिल्कुल सुन हो गया था। उनको इतनी तकलीफ थी तो भी—इस हालतमे भी, जिस कामको उन्होने उठाया था उसके लिए, वे दिन रात प्रयत्न कर रहे थे। ऐसा अपने आपको भूल जानेवाला आदमी मैने दूसरा नहीं देखा। मै नहीं समझता कि स्वार्थने कभी उन्हें स्पर्श किया हो। हैम्पटन-विद्यालयके लिए काम करते हुए जो आनन्द उन्हें प्राप्त होता वही आनन्द, उन्हें दक्षिणके किसी भी परोपकारी कार्यमें सहायता करते हुए भी होता था। सिविल वारमें वे दक्षिणके गोरोंसे लड पडे थे सही, पर उसके बाद उन गोरोंके बारेमें एक भी अपशब्द उनके मुँहसे निकलता मैने नहीं सुना। इसके विपरीत इस

तका वे अवश्य विचार किया करते थे कि दक्षिणके गोरोंके लिए म क्या र सकता हूँ।

हेम्पटनके विद्यार्थियो पर उनका जो भाव था, अथवा उनके प्रति विद्या-र्थियोंकी जो श्रद्धा थी, उसका वर्णन करना बडा ही कठिन काम है। उनके वद्यार्थी सचमुच ही उन्हें ईश्वरके समान मानते थे। वे जिस कामको उठा ते थे उसे पूरा करके छोडते थे। उन्हें किसी काममें नाकामयाब (असफल) ोते मैंने नहीं देखा। ऐसा भी कभी न हुआ कि उन्होंने किसीसे कोई प्रा-र्थना की हो और वह स्वीकृत न हुई हो। अलबामामें जब वे मेरे यहाँ मेहमान " तब उन्हें लकवेकी बीमारी थी और इसलिए उन्हें पहियेदार कुर्सी पर बैठाके हलाना पडता था। उस समयका जिक्र है कि एक रोज उनके एक पुराने शिष्यको उनकी कुर्सी एक ऊँची पहाडी पर ले जानी पडी थी और इस काममे सको बहुत ही कष्ट और परिश्रम उठाना पडा था। किन्तु जब कुर्सी पहाडीकी ोटी पर पहुँच गई तब उस शिष्यने प्रसन्नतासे कहा,—"मुझे इस बातका बडा र्ष है कि जनरल साहबकी मृत्युके पहले मुझे उनके लिए एक ऐसा कठिन ाम करनेका अवसर मिला।"

जिस समय में हेम्पटनके विद्यालयमें पढता था उस समय वहाँका छात्रालय बोर्डिंग हाऊस) इतना भर गया था कि नवीन छात्रोंको वहाँ कदम रखनेके लिए गह नहीं थी। यह असुविधा दूर करनेके लिए जनरल साहबने यह निश्चय िया कि कुछ नये खेमे गाडे जायँ और उनसे कोठरियोंका काम लिया जाय। िद्यार्थियोंम यह बात फैल गई कि गरमी भर, पुराने विद्यार्थियोंमेंसे यदि ुछ विद्यार्थी खेमोंमें डेरा डालेंगे तो जनरल आर्मस्ट्राग प्रसन्न होंगे। इस खब-को सुनते ही प्राय सबके सब विद्यार्थी खेमोंमे जा कर रहनेके लिए तैयार ो गये।

इन्हीं विद्यार्थियोंमे म भी एक था। उस साल बहुत ही तेज गरमी पडी थी और उन खेमोंमे हम लोगोंके प्राण छटपटाते थे। हम लोगोंको किस कदर तक-लीफ हुई सो जनरल आर्मस्ट्राग कुछ भी नहीं जानते थे, क्योंकि हम लोगोंने कभी इस बातकी शिकायत ही नहीं की। जनरल आर्मस्ट्राग हम लोगोंसे प्रसन्न है, एक बात, और दूसरी बात यह कि हम लोगों द्वारा इस प्रकारसे नये विद्या-र्थियोंकी शिक्षाका प्रबन्ध होता है—इन दो बातोंसे बढकर आनन्द देनेवाली

तीसरी बात ही कौनसी है ? कई बार जब रातके वक्त ठंडी ठंडी हवासे ५ ठिठुरने लगता, हवाके झोकोंसे खेमे ही उड जाते और हम लोगोंको ७ रात उस ठंडमें कॉपते हुए वितानी पडती थी तब जनरल आर्मस्ट्राग तडके खेमोंकी ओर आते और उनके आनन्द देनेवाले, उत्साह बढानेवाले और भरे शब्दोंको सुनते ही हम लोग सारे क्लेश भूल जाते थे।

मैंने जनरल आर्मस्ट्रागके प्रति अपनी भक्ति प्रगट की है, और मुझे यह कहना चाहिए कि प्रभु ईसा मसीहके समान जिन उदार स्त्री पुरुषोंने नीग्रो शालाओंमें पढानेका भार अपने सिर उठाया था उन्हींमें, ये भी एक रूप पुरुष थे। नीग्रो पाठशालाओंमें जिन स्त्रीपुरुषोंने पढानेका काम उनसे, अधिक अच्छे, पवित्र, शीलवान् और स्वार्थत्यागी स्त्री पुरुष इतिहासमें ढूँढे न मिलेंगे।

हैम्पटनमें रहते हुए मने कई नई बातें सीखीं। म तो यही सोचता था कि किसी नई दुनियामें आ गया हूँ। ठीक समय पर भोजन करना, भोजनके वक्त मेज पर कपडा बिछाना, मुँह पोंछनेके लिए रुमाल काममें लाना, नहानेके लिए टब और दॅतवनके लिए ब्रशसे काम लेना, गद्दे पर साफ चादर बिछाना, इत्यादि बातें ऐसी थीं जो मेरे बापदादोंके भी बर्तावमें कभी न आई थीं।

हैम्पटन-विद्यालयमें मैंने यह जाना कि नहानेसे क्या लाभ है और उसका कितना महत्त्व है। स्नान शरीरको नीरोग बना देता है, यही नहीं किन्तु आत्माभिमान आर सद्गुणोंकी वृद्धि करता है। स्नानके इन लाभोंको मैंने यहीं जाना। हैम्पटनसे विदा होनेपर दक्षिणमें और अन्यत्र भी जहाँजहाँकी मैंने यात्रा की वहाँ वहा नित्य स्नान करनेका नियम जारी रक्खा है। कभी कभी मुझे ऐसे घरों रहना पडा है कि जहाँ सिर्फ एकही कोठरी है और उसमें बहुतसे लोग रहते हैं ऐसी जगहोंमें नहाना कठिन होता था। तब मे जगलेमें जाकर किसी नदीनाले स्नान कर आता था। हरेक घरमें स्नानका कोई प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए, यह बात मेने अपने जात भाइयोंको बार बार बतलाई है।

मैं जब हैम्पटनमें था तब कुछ दिनों तक मेरे पास एक ही जोडा मोजे थे ये जब मैले हो जाते तब रातको मे उन्हे धोता था और दूसरे दिन पहनने गरजसे आग पर सुखा लिया करता था।

हैम्पटनमें मेरे भोजनका खर्च मासिक १० डालर था। इसके बारेमें यह तै हुआ था कि कुछ रकम तो म नकद दूं और बाकी मेरे काममें समझ ली जाया करे। पर जब पहले पहल म यहाँ आया तो मेरे पास, मैं बतला ही चुका हू कि ५० सेंट थे। मेरे भाई जानने कुछ रुपये भेज दिये थे, पर तो भी मेरे पास नकद देनेके लिए काफी खर्च नहीं था। इस लिए मने दरबानीका काम ऐसा अच्छा दिखलानेका सकल्प किया कि अधिकारियोंको मेरे कामकी जरूरत जान पड़े। म अपना काम इस खूबीसे करने लगा कि मुझे जल्द ही यह सूचना दी गई कि तुम्हारे काम पर तुम्हारा भोजन खर्च माफ कर दिया जायगा। शिक्षाका खर्च वार्षिक ७० डालर था, और यह रकम देना मेरे सामर्थ्यके बाहरका काम था। मुझे भोजनखर्चके अलावे यदि ये ७० डालर और भी देने पड़ते तो मुझे यह छात्रालय ही छोड देना पडता। जबतक म हैम्पटनमें था तबतक मेरी पढाईका खर्च जनरल आर्मस्ट्राग मुझपर दया करके एक रईस मि० एच ग्रिफोद्स मार्गनसे दिला दिया करते थे। हैम्पटनकी पढाई समाप्त होने पर और अपने जीवनकार्यमें हाथ लगा देने पर मैं कई बार मि० मार्गनसे मिला हूं।

हैम्पटनमें आ जाने पर कुछ ही दिनोंमें पुस्तकों और कपडोंकी मुझे बड़ी असुविधा होने लगी। एक असुविधाको तो मने किसी तरह उडा दिया, यानी अपने साथके दूसरे लड़कोंसे पुस्तकें मांगना मांगकर पढ लेता था। पर कपडोंके लिए क्या करता? मेरे पास कपडोंकी कमी था और जो कपडे थे भी, वे मेरे उस छोटेसे थैलेमें थे। जनरल आर्मस्ट्राग सब लड़कोंको एक कतारमें खडे कर देखा करते थे। यह देखकर तो मेरी चिन्ता और भी बढी। जूते ब्रश वगैरह देकर बिलकुल साफ रखने पडते थे, कोटके बटन टूटे हुए न हों, और कपडों पर तेलके दाग रहने न पावे—यह उनकी सख्त ताकीद थी। अब म बडी आफतमें फसा, क्योंकि मेरे पास एक ही सेट कपडे थे और उन्हीं कपडोंको पहने म दिन भर सब काम करता था। अब साफ कपडे लाऊ तो कहासे लाऊ? लडकोंमें बडी चिन्तापूर्वक पडता था और मेरी पढाई देखकर मेरे मास्टर भी मुझसे प्रसन्न थे, पर कपडोंके लिए लाचार था। अन्तमें भगवानकी दया आई और मुझे कुछ कपडे मिल गये। मेरे शिक्षकोंको ही इस बातकी चिन्ता हुई कि इसे कपडे दिला देने चाहिए। इसी समय उत्तर प्रान्तसे कपडोंकी कई पेटियां आई। उनमेंसे कुछ पुराने कपडे मुझे दिला दिये गये। इन कपडोंने सैकडों असहाय, पर योग्य विद्यार्थियोंका बडा उपकार

किया। मैं समझता हूँ कि अगर ये कपडे मुझे न मिलते तो हैम्पटनमें शायद ही मेरा निर्वाह हो सकता।

हैम्पटन जानेसे पूर्व, मुझे याद नहीं आता कि मै कभी दो चादरोंवाले बिछौने पर भी सोया था। उन दिनों हैम्पटनके विद्यालयमें जगह बहुत थोडा थी। मेरे कमरेमें मेरे सिवाय और सात लडके थे। इनमेंसे बहुतेरे बड़ा सुद्दतके ये। पहले पहल तो चादरोंका गोरखधन्धा मेरी समझमें ही न आया। पहली रातको तो मै उन दोनों चादरोंके बीचमें सोया और दूसरी रातको उन दोनोंके ऊपर सोया! फिर और लडकोंसे मैने जान लिया कि चादरोंको किस तरह काममें लाना चाहिए, और फिर दूसरोंको भी उनका उपयोग बतलाने लगा।

हैम्पटनमें जितने विद्यार्थी थे मैं उन सबसे छोटा था। बहुतसे विद्यार्थी दाढी मोछवाले भी थे। कई स्त्रियाँ भी थीं। चालीस चालीस वर्षके भी कुछ विद्यार्थी थे। विद्यार्थी और विद्यार्थिनी मिला कर, उस समय मेरे सहपाठियोंकी संख्या ३००–४०० थी। ये सब शिक्षा प्राप्त करनेके लिए दिनरात परिश्रम करते थे। इनका एक एक मिनिट काममें या लिखने पढनेमें बीतता था। इन लोगोंको मालूम हो गया था कि संसारमें सुखी और कृतकार्य होनेके लिए शिक्षाकी बडी भारी जरूरत है। कुछ विद्यार्थी तो इतने बूढे थे कि वे अपनी कक्षाकी पुस्तकें भी बडी कठिनाईसे समझते थे और उनकी विद्यालाभकी चेष्टा देखकर औरोंको दया आती थी! उन्होंने अपनी प्रीति और आस्थासे पुस्तकसम्बन्धी ज्ञानके अभावकी पूर्ति की। उनमेंसे बहुतेरे मेरे जैसे ही कंगाल थे। उन्हें केवल पुस्तकोंसे ही नहीं, दरिद्रतासे भी जूझना पडता था। जिन चीजोंके बिना किसी का काम नहीं चल सकता ऐसी चीजें भी, उनके पास नहीं थीं। कितनोंको अपने वृद्ध माता-पिताओंके भोजन वस्त्रोंका प्रबन्ध करना पडता था और बहुतेरोंको अपने परिवारकी परवरिश करनी पडती थी।

अपने गाँवके लोगोंकी दुर्दशा देखकर इन विद्यार्थियोंके हृदय पिघल रहे थे। ये चाहते थे कि हमारे हाथों हमारे भाइयोंका कुछ कल्याण हो। इसके लिए योग्यता और अधिकार प्राप्त करनेका इन्होंने संकल्प किया था। किसीको भी अपनी फिक्र नहीं थी। विद्यालयके शिक्षक और नौकर चाकर असाधारण मनुष्य थे। मनुष्य नहीं, उनको देवता कहना चाहिए। वे विद्यार्थियोंके लिए रात दिन परिश्रम करते थे। उन्हें तो विद्यार्थियोंकी सहायता करनेहीमें—फिर वह किसी तरहकी क्यों न हो— सुख मिलता था। सिविल वारके बाद उत्तर अमेरिकाके

गोरे शिक्षकोंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाके सबधमें जो काम किया है वह, इतिहासके पृष्ठों पर सुनहले अक्षरोंमें लिखा जाने योग्य है। इसमें सन्देह नहीं कि दक्षिण अमेरिकाके लोग भी शीघ्र ही इस कामका परिचय पा जायँगे और उन्हें भी इसका महत्त्व मालूम होगा।

चौथा परिच्छेद।

असहायोंकी सहायता।

हैम्पटनमें साल भर खुब पढाई हुई। इसके बाद ही एक नई मुश्किलासे सामना पडा। छुट्टीका समय आया और सब विद्यार्थी अपने अपने घर जानेकी तयारी करने लगे। छुट्टियोंमें प्राय सभी विद्यार्थी अपने घर चले जाते थे, वहाँ कोई रहने नहीं पाता था। किसी कारणवश कुछ विद्यार्थी न जा सकते तो उन्हें विद्यालयके अधिकारियोंसे वहाँ रहनेकी इजाजत लेनी पडती थी जो बडी कठिनाईसे मिलती थी। जब सब लोग तैयारी करने लगे तब, मै भी घर जानेके लिए तरसने लगा। पर मेरे पास क्या घर और क्या बाहर, कहीं भी जानेके लिए दाम न थे।

आखिर एक तदबीर सूझी। मुझे कहींसे एक पुराना कोट मिल गया। मुझे यह बडा कीमती मालूम होता था। राहखर्चके लिए म उसे बेचनेके लिए तयार हुआ। मेरी प्रकृतिमें कुछ अभिमान भी था—अभिमान क्या था, लडकई थी और इसलिए मै अपने सहपाठियोंसे अपने खर्चकी तगी सदा छिपाये रहता था—मैने कभी उनपर यह बात जाहिर न होने दी कि कहीं सैर करने जानेके लिए मेरे पास खर्च नहीं है। हैम्पटन गॉवके कुछ लोगोंको मैने बतलाया कि मुझे एक कोट बेचना है। बडी मुश्किलसे एक काला मनुष्य कोट देखनेके लिए मेरे स्थान पर आनेको तैयार हुआ। इससे मुझे कुछ आशा बँध गई। दूसरे दिन मेरे ठीक समय पर वह आ पहुँचा। उसने एक बार कोटको अच्छी तरह देखा और पूछा, 'बतलाओ, कितनेमें दोगे?' इसपर मैने जवाब दिया कि 'इसकी कीमत तीन डालरसे क्या कम होगी।' कोट उसे जँचा और मने समझा कि कीमत भी उसे वाजिब मालूम हुई है। पर वह था बडा धूर्त, उसने कहा,—"अच्छा यह कोट म ले लेता हूँ और नकद ५ सेंट (ढाई आने) भी दिये देता

हूँ, बाकी दाम पीछे दे दूँगा ! ' उस वक्त मेरे दिलका जो हाल हुआ उसका अन्दाज करना कुछ कठिन नहीं है।

इस तरह जब मैं निराश हुआ तब बाहर जाकर कुछ कमा लेनेकी आशा भी मैंने छोड दी। मैं बहुत चाहता था कि किसी ऐसी जगह जाऊं जहा काम करके अपने लिए कपडे और जरूरी चीजें खरीद लाऊँ। सब लोग अपने अपने घर चले गये और इससे मुझे और भी अधिक दुःख हुआ।

हैम्पटन गॉव और उसके आसपास मैंने कामके लिए बहुत तलाश की। अन्तमें फारेट्स मनरोके एक होटलमें, काम मिल गया। मजदूरी जो मिलती थी उससे भोजन खर्च चलता था, बचत बहुत ही थोडी होती थी। शाम सुबह भोजनके वक्त मुझे वहाँ हाजिर रहना पडता था और बीचका समय पढने लिखनेमें बीतता था। इस प्रकार गरमीकी छुट्टियोंमें मैंने अपनी अवस्था बहुत कुछ सुधार ली।

प्रथम वर्ष जब समाप्त हुआ तब, मेरी तरफ विद्यालयके सोलह डालर निकलते थे। काम करके मैं यह रकम अदा न कर सका। मेरी यह इच्छा थी कि गरमीकी छुट्टियोंमें मजदूरी करके यह ऋण दे डालूँ। कर्जका बोझ मुझे बेइज्जती मालूम होती थी और इस हालतमें मैं अपना मुँह किसीको दिखलाना न चाहता था। मैंने बडी किफायतसे अपना खर्च चलाया। अपने कपडे पहनना भी मैंने त्याग दिया। इतना करके भी मैं छुट्टियोंके अन्तमें १६ डालर जमा न कर सका।

होटलमें एक दिन मुझे एक मेजके नीचे दस डालरका एक कोरा करकरा नोट मिल गया। मुझे बडा हर्ष हुआ। उस जगह पर मेरी मालकियत नहीं थी, इस लिए मैंने वह नोट अपने मालिकको दिखलाना उचित समझा। देखकर वह भी बडा प्रसन्न हुआ और उसने मुझसे कहा, 'यह जगह अपनी है और इसलिए इसे रख लेनेका अपना हक है।' उसने नोट रख लिया। मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं कि इससे एक बार मेरे हृदय पर फिर चोट लगी। यह मैं न कहूँगा कि मैं निराश हो गया—मेरा हिम्मत टूट गई, क्योंकि इससे पहले मैंने जो कुछ साधनेका—सिद्ध करनेका निश्चय किया था उसके विषयमें मैं कभी हिम्मत नहीं हारा था। प्रत्येक काम मैंने इसी भरोसे पर शुरू किया है कि मैं अवश्य सफल-मनोरथ होऊँगा। बहुतसे नाकामयाब लोग जब कभी अपनी नाकामयाबीका (असफलताका) सबब बतलाते थे तब बिना बीचमें दखल दिये मुझसे रहा न जाता था। जिस पुरुषके मुँहसे मैं कामयाबी हासिल करनेके उपाय सुनता

था उस पर मेरी श्रद्धा बैठ जाती थी। उस वक्त मुझ पर जो मुसीबत थी, उसका सामना करनेके लिए मै तैयार हुआ। सप्ताहके अन्तमें मैं हैम्पटन-विद्यालयके खजाची, जनरल जे एफ बी मार्शलके पास गया और उन्हें मने अपनी गमहानी सुनाई। उन्होंने मुझसे कहा, 'कोई हरज नहीं, जब तुम्हारे पास उतनी रकम आजाय तब दे देना घबरानेकी कोई बात नही है। मुझे तुम्हारे ऊपर विश्वास है।' इन शब्दोंको सुनकर मुझे बहुत सतोष हुआ। दूसरे साल भी म दरवानका काम करता रहा।

हैम्पटनके विद्यालयमें मैंने पढा सही, पर विद्यालयमें जो कुछ मैंने सीखा पढा, वहाँ जो शिक्षा और अनुभव मैंने प्राप्त किया उसका, एक अश मात्र था। वहाके शिक्षकोका स्वार्थत्याग देखकर मेरे हृदय पर बडा ही अच्छा परिणाम हुआ। उस समय मेरी समझमें यह नहीं आता था कि दूसरोंके लिए इस प्रकार त्याग करनेसे ये लोग क्योंकर सुखी होते हैं। पर दूसरा साल समाप्त होनेसे पहले ही मुझे यह अनुभव होने लगा कि जो लोग दूसरोंके लिए अपना शरीर घिसते हैं वे ही सबसे अधिक सुखी हुआ करते हैं। तभीसे म इस शिक्षाको स्मरण रखनेकी चेष्टा कर रहा हूँ।

हैम्पटनमें उत्तम जानवर और मुर्गे पैदा करनेका पद्धतिका बारबार निरीक्षण करके मने एक नया पाठ सीख लिया। जिस किसीको इनकी परवरिशका नया ढग देखनेका अवसर मिला है वह मामूली चौपायोंके रखनेमे कभी सन्तुष्ट न होगा।

दूसरे वर्षमें मने एक और शिक्षा पाई। बाइबलका उपयोग और महत्व मैं समझने लगा। यह शिक्षा मुझे पोर्टलडकी मिस नाथेली लार्ड नाम्नी एक अध्यापिकासे मिली। इससे पहले मैं बाइबलकी कोई परवा नहीं करता था। पर अब तो सिर्फ अपनी आत्मिक उन्नतिके लिए ही नहीं बल्कि साहित्यकी दृष्टिसे भी मैं उसे पढ़ने लगा। उसका अब मुझ पर ऐसा दृढ सस्कार हो गया है कि मैं रोज सवेरे उसके एकाध अध्यायका पाठ कर लेता हूँ तब दूसरा काम देखता हूँ।

मुझे यदि व्याख्यान देना कुछ आ गया है तो, यह भी मिस लार्डहीका कृपा है। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि व्याख्यान देनेकी तरफ मेरा झुकाव है तभीसे वे मुझे इस विषयकी एक एक बात बतलाने लगीं। उन्होंने ही मुझे खास तौर पर शिक्षा दी कि व्याख्यान देते समय किस प्रकार श्वासोच्छ्वास लेना चाहिए, वाक्यमें कहाँ जोर देना चाहिए और स्पष्ट उच्चारण कैसे करना होता

और कभी बिलकुल ही न मिलता था। प्राय हम लोग एक कटोरीमें 'टोमेटो' और कुछ पतले बिस्कुट, इतना ही भोजन पाने लगे। कपडोंकी भी यही दुदशा हुई। सब बात ही बिगड गई। जिन्दगीमें सबसे अधिक दुःखदायी अवसर मेरे लिए यही था।

मेरी मदद करनेवाली रफनर बीबी मुझे अकसर अपने यहाँ प्रेमसे बुलाती थीं। इस मुसीबतमें भी उन्होंने मेरी कई तरहसे मदद की। छुट्टी समाप्त होनेसे पहले उन्होंने मुझे एक काम दिया। इसी वक्त मेरे घरसे कुछ दूर एक खान पर भी मुझे काम मिला, जिससे मेरे पास कुछ रकम हो गई।

एक बार मुझे यह भी आशंका हुई थी कि अब मैं शायद हैम्पटनको न जा सकूँगा। परन्तु वहाँ लौट जानेकी इच्छा इतनी प्रबल हो उठी कि उसके सामने सब विघ्नोंको तुच्छ-समझकर मैं प्रयत्न करने लगा। जाडेके लिए मुझे कुछ कपडोंकी जरूरत थी। पर यह जरूरत रफा न हुई। मेरे भाई जानने मुझे कुछ कपडे ला दिये सही, पर वे काफी न थे। न धन था, न कपडे ही थे, पर एक बातसे मैं सुखी था। हैम्पटन जानेके लिए राहखर्च मेरे पास काफी था। मुझे इस बातका तो पूरा भरोसा था कि जहाँ एक बार मैं वहाँ पहुँचा, तहाँ फिर दरबानका काम करके गुजारा कर लूँगा।

हेम्पटन-विद्यालय खुलनेसे तीन सप्ताह पहले मुझे मिस मेरी मैकीका एक पत्र मिला। उसे पढकर मुझे बडा हर्ष हुआ। उस पत्रमे उन्होंने लिखा था कि मैं तुमसे भवनको साफ सुथरा करने और सब चीजें करीनेसे रखनेके काममें मदद लेना चाहती हूँ, इसलिए विद्यालय खुलनेसे दो हफ्ते पहले ही यहाँ आ जाओ। बस, मेरा काम हो गया। खजानेमें अपने नाम कुछ रकम जमा करा सकनेका यह अच्छा अवसर हाथ लगा। मैने हैम्पटनके लिए उसी समय प्रस्थान कर दिया।

इन दो सप्ताहोंमें मैंने जो कुछ सीखा, उसे मैं कभी न भूलूँगा। मिस मेकी उत्तर प्रान्तके एक पुराने और नामवर कुलमें उत्पन्न हुई थीं, तथापि वे मेरे साथ खिडकियोंको साफ करतीं, झाडू देतीं, बिस्तरोंको साफ रखतीं और कोई ऐसा काम नहीं था जिससे वे किनारा कसती हों। खिडकियोंके ऊपरके झरोखे जबतक बिलकुल साफ न होवे तबतक वे सन्तुष्ट न होती थीं। यह काम वे हरसाल छुट्टियोंमें किया करती थीं।

उस समय मै उनके कार्यका महत्त्व न समझता था। मै नहीं सोच सकता था कि उनके जैसी लिखी पढी, प्रभावशाली और कुलीन स्त्री एक अभागी जातिकी स्त्रियोंमे सहायता पहुँचानेके लिए इस प्रकार सेवाके कार्य क्यों करती है और इसमें इतना आनन्द क्यों मानती है। परन्तु आगे मै परिश्रमसे इतना प्यार करने लगा कि किसी ऐसी पाठशालामे, कि जहाँ लडकोंको परिश्रमकी महत्ता सिखलाई न जाती हो, एक पल भी मेरी पटती नहीं थी।

हैम्पटनके अन्तिम वर्षमें दरवानका काम कर चुकनेके बाद मुझे जो कुछ समय मिलता था उसका प्रत्येक मिनिट में लिखने पढनेमें बिताता था। मैने यह निश्चय किया था कि परीक्षामें मेरा नम्बर बहुत ऊपर आवे, और उपाधि-दान-समारंभमें मेरा नाम माननीयोंकी (Honour roll) सूचीमें लिखा जाय। मेरा यह निश्चय सफल हुआ। १८७५ के जून मासमे मेरी हैम्पटनकी पढाई समाप्त हुई। हैम्पटनमें रहनेसे मुझे दो बडे भारी लाभ हुए —

(१) मेरे सौभाग्यसे जनरल एस सी आमस्ट्राग जैसे अद्वितीय, उदार, सच्छील और परोपकारी महात्माके साथ मेरा समागम रहा।

(२) हैम्पटनमे ही पहले पहल मुझे यह ज्ञान हुआ कि यथार्थ शिक्षासे मनुष्य कितनी उन्नति कर लेता है। हैम्पटन जानेसे पहले शिक्षाके विषयमें मेरा भी उतना ही ज्ञान था जितना कि साधारण लोगोंका। मै समझता था कि ऐसी जिन्दगी, कि जिसमें शारीरिक परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं, और बडे आनन्दसे—आरामसे—दिन कटते है, शिक्षा कहाती है। हैम्पटनमे जाकर मैने सीखा कि परिश्रम करना न लज्जाका काम है और न निन्दाका, हमें उससे प्रेम करना चाहिए। परिश्रम करनेसे धन मिलता है, इसीलिए नहीं, बल्कि समाजको जिस बातकी जरूरत है उसे करनेकी योग्यता हममे भी है इस प्रकारका जो आत्मविश्वास है उसके लिए, स्वतन्त्रताके लिए और परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना मैने हैम्पटनमें सीखा। उसी विद्यालयमें मैने पहले पहल उस आनन्दका अनुभव किया जो परोपकारमे जीवन दे देनेसे मिलता है। और यह बात भी मैने उसी विद्यालयमे सीखी कि दूसरोंको उपयोगी और सुखी बनानेमें जो लोग हद कर देते है वे ही सबसे अधिक भाग्यशाली है।

मेरी पढाई समाप्त हुई उस समय, मेरे पास कुछ नहीं था। रुपयेकी जरूरत थी। उस मौके पर कानेक्टिकटके होटलमें मैने और विद्यार्थियोंके साथ खिदमतगारकी नौकरी कर ली। यह होटल गरमीके दिनोंमें खुला करती थी।

नेका ढग भी बड़ा विचित्र था। गिरजाघरमें लोग इकट्ठे हुए हैं और एसे दिना एक आदमी मेजके ऊपर धड़ामसे गिर पड़ता है। बहुत देरतक कुछ बोल नहीं, चालता नहीं—एकदम सुन्न! इसीसे चारों ओर यह खबर फैल जाती अमुक मनुष्यको 'आदेश' हुआ है। हरेक नीग्रो-गाँवमें ऐसी घटनायें साल चार बार हो जाया करती थीं। अगर एक बारमें यह धर्मगुरु बननेको तैयार हो सका तो वह फिर गिरता था या गिराया जाता था। इस तरह दो ...गिरने पड़नेसे उसे 'आदेश' मानना ही पड़ता था। मुझे बड़ा भय था कि यह बला मुझ पर न आ जाय, क्योंकि मैं भी पढ़नेवालोंमेंसे एक था। पर ईश्वरकी कृपा थी जो इस मुसीबतसे मैं बचा रहा!

धर्मगुरुओंकी संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। एक ... बाबत तो मुझे याद है कि उसमें कुल लोग शरीक थे २००, और उनमें धर्मगुरु थे २०। पर अब इन धर्मगुरुओंका बहुत कुछ चरित्रसुधार हो रहा है और मैं समझता हूँ कि २०–२५ वर्षोंमें उनमेंसे नालायकोंकी संख्या बहुत कुछ कम हो जायगी। अब आदेशकी लीला पहलेकी तरह नहीं हुआ करती और रोजगार करनेकी तरफ भी लोग झुकते हैं। धर्मगुरुओंकी अपेक्षा शिक्षकोंका चरित्र अधिक सुधरा हुआ है।

नवसंगठनकालमें नीग्रो लोगोंकी दशा एक नन्हें बालककीसी थी। बच्चे अपनी माके ही भरोसे रहता है वैसे ही हर बातमें ये लोग संयुक्त सरकारका (Federal Govt.) मुँह ताकते थे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था। क्योंकि संयुक्त सरकारने उन्हें स्वाधीनता दी थी, और सारा राष्ट्र नीग्रो लोगोंके परिश्रमसे दो शताब्दियोंतक बल्कि इससे भी अधिक, बराबर लाभ उठाता रहा था। जब सरकारने हमें स्वाधीनता दे दी तो उसका यह कर्तव्य होता है कि वह अपनी प्रजाओंको कर्तव्यशील नागरिक बनानेके लिए सर्वसाधारणमें शिक्षाका यथोचित प्रबन्ध कर दे। मैं यह समझता था कि रियासतोंने शिक्षाके लिए जो कुछ किया सो किया, पर इसके साथ ही, मुख्य सरकारको उसका पूरा सार्वत्रिक प्रबन्ध कर देना चाहिए था। ऐसा न करना मेरी समझमें बड़ा भारी पाप था।

किसीका दोष ढूँढ निकालना और यह बतलाना कि क्या किया जाना उचित था, बहुत आसान है। पर उस समयकी हालत देखनेसे पता लगता है कि सरकारने जो कुछ किया वही उचित था। पर मुझे यह कहना ही पड़ता है कि अगर कोई ऐसा रास्ता निकाल दिया जाता कि अमुक श्रेणीतक

शिक्षा अथवा अमुक रकम तककी हैसियत होने पर अथवा दोनों ही होने पर वोट देनेका अधिकार मिल सक्ता है और काली तथा गोरी दोनों जातियों पर वोट संबंधी नियमका ईमान और सचाईसे अमल किया जाता तो इसमें सरकारकी विशेष बुद्धिमानी समझी जाती।

नवसंगठन कालमें मेरी उम्र कुछ अधिक नहीं थी—पचीसी ही पार कर रहा था, पर मैं यह समझता था कि बड़ी गलतियाँ हो रही हैं। किन्तु जैसी हालत इस वक्त है वह अधिक दिन न रहने पायेगी। मेरी यह धारणा थी कि संगठन-पालिसी मेरी जातिके लिए ठीक नहीं है। उसकी उठान ही ऐसी नीव पर की गई जो अस्वाभाविक है और जिसमें बड़े दावपेंच हैं। मैंने देखा कि हम लोगोंको अपट और अजान बतला कर गोरे लोगोंको बड़ी बड़ी नौकरियाँ दी जाती हैं। उत्तर अमेरिकाके कुछ लोगोंको यह सूझा थी कि दक्षिणमें गोरे लोगोंका जो मरतबा है उससे बड़ा मरतबा नीग्रो लोगोंको दिलाना चाहिए, अर्थात् उनसे बड़े ओहदों पर इन्हें नौकरी मिलनी चाहिए। ऐसा करके वे दक्षिणवालोंको नीचा दिखाना चाहते थे। पर मुझे तो इसमें नीग्रो लोगोंकी ही हानि देख पड़ी। इसके सिवाय राजनीतिक आन्दोलनमें फँसकर मेरे भाइयोंने अपने समीपके व्यवसायमें पक्के बनना और कुछ कमा खाना छोड़ दिया। वास्तवमें देखा जाय तो यह उनका मुख्य काम होना चाहिए था।

राजनीतिक कार्योंके मोहने मुझे ऐसा घेरा था कि मैं उसके जालमें फँस जाता। पर मैं समझता था कि कर्मेन्द्रिय, और अन्तःकरण अथवा, शरीर, मस्तक और हृदय (Hand, head and heart) की यथेष्ट शिक्षा पर उन्नतिकी नीव दृढ करनेसे मैं अपनी जातिका विशेष और यथार्थ कल्याण कर सकूँगा, और इसी विचारने उस जालमें फँसनेसे मुझे बचाया। कुछ नीग्रो लोग रियासतकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य होते थे, कुछ लोगोंको बड़ी अफसरी हासिल थी, पर उन्हें एक अक्षर भी पढ़ना नहीं आता था, और उनका चरित्र भी बहुत निर्बल था। दक्षिण अमेरिकाके एक शहरके रास्तेमें चलते हुए मैंने सुना कि कुछ मजदूर किसीको पुकार रहे हैं। वे लोग ईंटोंकी एक दुमंजिली इमारत पर काम कर रहे थे और वहींसे किसी गवर्नरको पुकार कर कह रहे थे कि, 'जल्दी करो, और ईंटें ले आओ।' मैंने कई बार ये शब्द सुने, 'गवर्नर, जल्दी करो। गवर्नर, जल्दी करो!' जिन गवर्नर महाराजकी इतनी इज्जत थी उनका पता

लगाना मैंने जरूरी समझा। पता लगानेसे मालूम हुआ कि वह एक काला आदमी था और एक बार वह अपनी रियासतका लेफ्टनेंट गवर्नर हुआ था।

इससे यह न समझना चाहिए कि सभी काले अधिकारी ऐसे ही थे। भूतपूर्व सिनेटर बी के ब्रुस, गवर्नर पिकबैंक, तथा और भी कई सज्जन बड़े ही योग्य और उपयोगी पुरुष थे। सभी लोग बेइमान नहीं समझे जाते थे, उनमेंसे कुछ लोग जार्जियाके भूतपूर्व गवर्नर बुलक साहब जैसे उदार और परोपकारी भी थे।

अब यह कहनेकी आवश्यकता ही न रही कि अपढ और नवसिखुए काले लोगोंने ऐसी ऐसी गलतियाँ कीं कि जिनकी हद नहीं, परन्तु मेरी समझमें और लोग भी उस हालतमें ऐसी ही गलतियाँ करते। दक्षिण प्रान्तके बहुतेरे गोरे लोगोंका यह ख्याल है कि अब अगर नीग्रो लोगोंको कुछ राजनीतिक अधिकार दिये जायँगे तो फिर वैसा ही बखेडा खडा होगा जैसा कि नवसगठन कालमें हुआ था। परन्तु मुझे तो ऐसा भय बिलकुल नहीं है। शुरूके पैंतीस वर्षोंमें जो बातें नहीं थीं वह अब हुई हैं। नीग्रो जवान अब अधिक बुद्धिमान् और शक्तिमान् हुआ है और वह इस बातको समझने लगा है कि दक्षिणके गोरेको नाराज करनेसे हमारा काम न बनेगा। दिनोंदिन मेरी यह धारणा दृढ होती जाती है कि काले और गोरे दोनोंके लिए वोटका समान अधिकार और निर्वाचनका एक ही मार्ग होना चाहिए जिसमें आजकलकी तरह टालमटोल और दुटप्पी व्योहारके लिए जगह ही न हो—ऐसा होगा तभी नीग्रो जातिके राजनीतिक प्रश्नोंका निबटारा होगा। दक्षिणमें रहकर, वहाका हाल अपनी आँखों देखकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि इसके विपरीत उपायका अवलंबन करना नीग्रो लोगोंसे, और संयुक्त राज्यकी सब रियासतोंसे अन्याय करना है। यह गुलामीसे कुछ कम पाप नहीं है और इस पापका बदला हमें किसी न किसी समय देना ही पडेगा।

'माल्डनमें मैं दो वर्षतक शिक्षकका काम करता रहा। वहाँ रहते हुए मैंने अपने दो भाइयोंके सिवाय और भी कितने ही स्त्री-पुरुषोंको हेम्पटनविद्यालयमें भरती करा दिया और फिर १८७८ के शरदृतुमें मैंने कोलंबियाके वाशिंगटन नामक स्थानमें जाकर अभ्यास-अध्ययन करना ठाना। वहाँ मैं आठ महीने रहा। वहाँके अभ्याससे भी मुझे बडा लाभ हुआ और कुछ अच्छे पुरुषोंसे भी हुआ। वहाँके विद्यालयमें शिल्प-शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं था, और इससे मुझे दो तरहके नमूने देखनेका अच्छा मौका मिला। हेम्पटनके विद्यालयमें सिर्फ शिल्पशिक्षा ही दी

जाती थी। उसे म देख चुका था और उसका परिणाम भी समझ चुका था। अब वाशिंगटनकी शिल्पशिक्षासे वहाँकी शिल्पशिक्षाका मुकाबला कर सकता था। वाशिंगटनके विद्यालयमें पढ़नेवाले कुछ पैसेवाले थे। उनकी पोशाक भी अच्छी हुआ करती थी, यही नहीं बल्कि बिलकुल ताजा फैशनसे ही वे रहा करते थे। यहाँके कुछ विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान् होते थे। हैम्पटनका तो यह नियम था कि विद्यार्थीकी पढ़ाईका खर्च विद्यालयके अधिकारी ही दिलाते थे। पर इन्हें भोजन, वस्त्र, पुस्तक और घरके किरायेका प्रबन्ध खुद करना पड़ता था। इसका खर्च कुछ तो वे अपने कामसे कमा देते थे और कुछ नकद भी देते थे। वाशिंगटनके विद्यार्थियोंकी अवस्था इससे निराली थी। इन्हें भोजनादिके खर्चकी तो चिन्ता ही नहीं थी, रहा प्राइवेट खर्च, सो वह भी कहीं न कहींसे मिल जाता था। हैम्पटनमें उन्हें मिहनत करके कमाना पड़ता था और इससे उनके चरित्र-गठनमें बड़ी मदद होती था। वाशिंगटनके विद्यार्थी अपने बल पर खड़े होना बहुत कम जानते थे। बाहरी भूलभुलैयामें ही वे फँसे रहते थे। तात्पर्य, मैंने यह देखा कि हैम्पटनके विद्यार्थी अपनी शिक्षा बड़ा सुदृढ नींव पर आरम्भ करते थे और यहाँके विद्यार्थियोंमें यह बात नहीं थी। यहाँके विद्यार्थियोंकी पढ़ाई समाप्त होने पर उन्हें लैटिन और ग्रीक भाषाका ज्ञान अधिक होता था, पर जीविका निर्वाह और व्यवहारका ज्ञान कम होता था। हैम्पटनके विद्यार्थी पढ़ाई समाप्त करके देहातोंमें जाकर वहीं शान्तिसे अपनी जातिके लोगोंके लिए काम करते थे। यहाँके विद्यार्थियोंको आरामतलबीकी आदत पड़ जाती थी और इसलिए वे परिश्रमसे भागते थे। होटलमें खिदमतगारी करना या पल्मानकारमें* पोर्टर होना ही उनके जीवनकी इतिकर्तव्यता हो जाती थी।

म जब वाशिंगटनमें पढ़ता था तब, दक्षिणसे आये हुए काले लोगोंसे यह शहर खचाखच भर गया था। बहुतसे लोग तो इसी गरजसे आये थे कि वाशिंगटनमें जाकर जरा मजा-मौज उड़ावें। कुछ लोगोंको कुछ सरकारी काम मिल गये थे, और बहुतसे लोग नौकरीकी तलाशमें आये थे। बहुतसे काले लोग—इनमें बहुतेरे बड़े होशियार और बुद्धिमान् थे—अमेरिकाकी पार्लियामेंट—House of Representatives—में सदस्य थे, और आनरेबल बी के ब्रूस नामके सज्जन सीनेटमें थे। इन सब कारणोंसे काले लोगोंके लिए वाशिंगटन शहर बड़ा ही मनोहर और प्रिय हुआ था। इसके सिवाय, वे यह भी जानते थे कि कोलम्बिया

* अमेरिकामें यह एक तरहकी गाड़ी होती है जिसमें सोनेका सुभीता रहता है।

प्रदेशमें कानूनकी सुनाई होती है। वाशिंगटनके काले लोगोंकी सार्वजनिक पाठशालायें अन्य स्थानोंकी पाठशालाओंसे बहुत अच्छी होती थीं। यहाँ मैंने अपने जातिभाइयोंकी दशाका भली भाँति निरीक्षण किया। उनमें कई तो बड़े लायक आदमी थे, तो भी बहुतेरोंका दिवालियापन देखकर मुझे बड़ी चिन्ता हुई। कितने ही काले नवयुवक ऐसे थे कि जिनकी आमदनी सप्ताहमें चार डालरसे अधिक नहीं, पर वे रविवारके दिन ऐसा शाही खर्च किया करते थे मानो इनके पास रुपयोंकी कमी नहीं। पेन्सिलवानियाकी सडक पर गाडीमें बैठ इधर उधर टहलनेमें दो चार डालर खर्च करना इनके लिए मामूली बात थी। सरकारसे ७५ या १०० डालर मासिक वेतन पानेवाले और हर महीने कर्जका बोझ बढानेवाले कितने ही युवकोंको मैंने अपनी आँखों देखा है। मैंने ऐसे भी लोगोंको देखा है कि जो पहले प्रतिनिधि सभा याने पार्लियामेंटमें प्रतिनिधि बनकर बैठते थे, और अब बिलकुल निकम्मे कंगाल रोटीके मुहताज हो रहे हैं। कितने ही लोग छोटी छोटी बातोंके लिए भी सरकारका मुँह ताकते थे। इस तरहके लोगोंमें अपनी हालत बदलनेकी इच्छा बहुत कम थी और जो थी भी, उसे पूर्ण करना वे सरकार पर ही छोड बैठे थे। उस समय और उसके बाद भी, कई बार मैंने सूचित किया कि ऐसे लोगोंको किसी न किसी तरह यहाँसे उठाकर देहातोंमें छोड देना चाहिए और वहाँकी सुदृढ तथा विश्वस्त भूमाताके अंक पर ही इनकी 'रोपाई' होनी चाहिए। सारे विजयी राष्ट्रों और लोगोंने यहाँसे अपनी उन्नतिको आरंभ किया है। आरंभमें तो यह उन्नतिका मार्ग बडा विकट और लंबा पडा मालूम होगा, पर यही सच्चा और सीधा मार्ग है।

वाशिंगटनमें मैंने कुछ लडकियोंको देखा। उनकी मातायें कपडे धोनेका काम करती थीं। उन लडकियोंने भी यह काम उसी पुरानी लकीर पर सीख लिया था। बादको ये लडकियाँ स्कूलोंमें जाने लगीं और वहां सात आठ वर्ष रहीं। पढाई समाप्त होने पर उन्हें कीमती पोशाकों, कीमती टोपियों और कीमती जूतोंकी जरूरत पडने लगी। तात्पर्य, उनकी आवश्यकतायें बढीं, पर उन्हें पूरा करनेकी लियाकत न आई! सात आठ वर्ष पढने लिखनेमें बीतनेसे अब अपना पुराना रोजगार करनेमें उनकी तबियत न लगती थी, उस रोजगारसे भी उन्होंने हाथ धोये। परिणाम यह हुआ कि उनमेंसे कितनी ही लडकियाँ तबाह हो गईं। लडकियोंको अगर मानसिक शिक्षाके साथ (मेरी समझमें भाषा, या गणित, इनमेंसे किसी एक विषयका ज्ञान करा देना चाहिए जिसमें मन सुदृढ

ार सुसंस्कृत हो,) धोबीके व्यवसायकी आधुनिक शिक्षा या ऐसा ही कोई
ूसरा काम सिखलाया जाता तो मैं समझता हूँ कि बडा लाभ हुआ होता।

छठा परिच्छेद।



कृष्णवर्ण और ताम्रवर्ण जाति।

जिस समय मैं वाशिंगटनमें रहता था उस समय, इस बातका बडा आन्दोलन हो रहा था कि वेस्ट वर्जीनियाकी राजधानी वीलिंगसे हटाकर किसी मध्यवर्ती स्थानमें लाई जानी चाहिए। इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि सरकारने तीन शहर चुने और यह घोषित किया कि इनमेंसे जिस शहरके लिए अधिक सम्मतियाँ होंगी वही राजधानी की जायगी। इन शहरोंमें मेरे गाँव माल्डनके समीप लगभग पाँच मीलके फासले पर चार्लस्टन नामका स्थान पडता था। वाशिंगटन विद्यालयकी मेरी पढाई समाप्त होनेके समय चार्लस्टनके गोरोंकी पचासे मुझे इस लिए निमन्त्रण आया कि मैं वहाँ आकर चार्लस्टनकी तरफसे योग करूँ। मुझे इस निमन्त्रणसे आश्चर्य और आनन्द दोनों हुए। मैंने निमन्त्रण स्वीकार किया, और रियासतके कई हिस्सोंमें बराबर मैं तीन महीने तक व्याख्यानोंकी झडी लगाये रहा। चार्लस्टनको इस काममें कामयाबी हुई और इस समय वहीं सरकारकी अटल राजधानी है।

इस आन्दोलनमें मेरा व्याख्यान कुछ मशहूर हो गया और इस लिए बहुतेरोंने चाहा कि मैं राजनीतिक कार्योंमें किसी तरह योग देने लगूँ। पर मैं इससे दूर ही रहना चाहता था, क्योंकि मुझे इस बातका पूरा विश्वास था कि मैं और किसी भी कामसे अपनी जातिकी इससे अधिक सेवा कर सकूँगा। उस समय मुझे अपने लोगोंके लिए शिक्षा, व्यवसाय और जायदादका कोई आधार निर्माण करनेकी बडी आवश्यकता मालूम होती थी, और इस लिए राजकीय अधिकार प्राप्त करनेके बदले उक्त त्रिपुटी या तीन बातोंके लिए प्रयत्न करनेमें विशेष लाभ था। अगर मेरी बात पूछिए तो राजनीतिक क्षेत्रमें मुझे कामयाबी अवश्य थी, परन्तु यह कामयाबी एक तरहकी खुदगरजी (स्वार्थपरता) ही थी, और अगर मैं इसीके पीछे पड जाता तो अपने समाजकी उन्नतिमें हाथ बँटानेके कर्तव्यसे विमुख हो जाता।

नीग्रो-समाजकी इस उन्नतिके समयमें, स्कूल और कालेजोंमें ... तेरे विद्यार्थी आगे चल कर बड़े बड़े वकील या प्रतिनिधिसभाके सदस्य चाहते थे और बहुतसी स्त्रियाँ वादनकलाकी अध्यापिका बनना चाहती, परन्तु मेरा विचार कुछ और ही था। मैंने निश्चय किया था कि पहले वकील, योग्य प्रतिनिधि और गायनवादन कलाके उत्तम अध्यापक करनेकी भूमिका तैयार करनी चाहिए।

गुलामीके दिनोंमें एक बूढ़े नीग्रोको सरगी सीखनेकी बड़ी इच्छा हुई उसने एक तरुण संगीत-मास्टरसे प्रार्थना की, परन्तु मास्टरको यह विश्वास होता था कि यह बूढ़ा सरगी सीख जायगा। इस लिए उसने उसे नाउम्मेद मेंकी गरजसे कहा, " जेक चचा, मैं आपको सरगी तो सिखला दूँगा, पर सबकके लिए मैं आपसे तीन, दूसरेके लिए दो, और तीसरेके लिए ... लूँगा। " जेक चचा बोले, " ठीक है, मुझे मंजूर है, पर पहले मुझे आखीरका सबक ही दीजिए। " इस वक्त भी लोगोंकी ऐसी ही परिस्थिति रही थी।

रियासतकी राजधानी बदलने पर मुझे एक और आमन्त्रण मिला, ... मुझे बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ। जनरल आर्मस्ट्रांगने इस आशयका पत्र भेजा कि हेम्पटनमें आगामी उपाधिदान समारंभके समय ग्रेजुएट हुए विद्यार्थियोंको तुम कुछ उपदेश दो। मैंने कभी स्वप्नमें भी इस ... कल्पना नहीं की थी। मैंने अपनी शक्तिभर चिन्तापूर्वक एक स्पीच तैयार की। इस स्पीचके लिए मैंने ' The force that wins ' अर्थात् ' यशस्वी शक्ति ' यह विषय चुना था।

छ वर्ष पहले मैं जिस रास्तेसे हैम्पटनके विद्यालयमें विद्यार्थीके नाते भरती होनेके लिए गया था, इस बार स्पीच देनेके लिए भी मैं उसी रास्तेसे गया, पर इस बार मैं रेलगाडीमें सवार था। मेरी पहली सफरमें और इस सफरमें कितना अन्तर है! पाँच वर्षकी अवधिमें शायद ही किसी मनुष्यकी अवस्थामें इतना परिवर्तन हुआ होगा।

हैम्पटनमें शिक्षक और विद्यार्थी, दोनोंने ही शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा ... किया। यहाँ मैंने देखा कि विद्यालयने पहलेसे कहीं अधिक उन्नति की है और नीग्रो लोगोंकी हालत सुधारने और जरूरतोंको रफा करनेसे उसकी उपयोगिता

ोदिन बढ़ा रही है। शिक्षाप्रणालीमें भी बहुत कुछ सुधार हो रहा है। हैम्प- विद्यालय किसी नमूनेकी नकल नहीं था, बल्कि उसमें नीग्री लोगोंकी अवस्था ारके और उनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके विचारसे ही जनरल आर्म- ागके उदार नेतृत्वमें सुधारका प्रत्येक कार्य हुआ करता था। अपढ लोगोंमें क्षाप्रचार तथा अन्य परोपकारके कार्य करते समय शिक्षित लोग प्राय पुरानी ीर ही पीटते आते हैं। वे इस बातको भूल जाते हैं कि हमें जिन लोगोंका काम ना है, उनकी क्या क्या आवश्यकतायें हैं, और उनकी शिक्षाका ध्येय क्या ना चाहिए। इन बातोंको भूल कर वे एक ही शिक्षाप्रणालीके साँचेमें नये ाने विद्यार्थियोंको ढालते जाते हैं, परन्तु हैम्पटनमें यह बात न थी।

उपाधिदानसमारम्भके समय मैंने जो व्याख्यान दिया उससे लोग बहुत प्रसन्न ए और बहुतोंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करके मुझे खूब ही उत्साहित किया। शीघ्र ही वेस्ट वर्जीनियामें अपने गावको वापिस चला आया, और फिर ाठशालामें पढानेका विचार करने लगा। इसी बीच अर्थात् १८७९ में एका- ेक मुझे जनरल आर्मस्ट्रागका पत्र फिर मिला। उन्होंने इस पत्रमें शिक्षकका ाम करने और रही सही पढाई पूरी करनेके लिए चले आनेको लिखा था। ेस्ट वर्जीनियामें शिक्षकका काम करते समय मैंने अपने दो भाइयोंके अतिरिक्त ौर चार युवकोंको हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करानेके लिए बड़ी तैयारी की ी। इसका फल यह हुआ कि जब ये विद्यार्थी हैम्पटन पहुँचे तो उनकी योग्यता ेखकर शिक्षक इतने प्रसन्न हुए कि उनको उन्होंने एकदम ऊपरके दर्जेमें भरती र लिया। मैं समझता हूं कि यही देखकर हेम्पटनके विद्यालयमें मुझे शिक्ष- का काम करनेके लिए बुलाया था।

मैंने जिन विद्यार्थियोंको हैम्पटन भेजा उनमसे एकका नाम है डाक्टर सेमु ल ई कर्टिस। ये इस समय बोस्टन शहरके बड़े डाक्टरोंमें गिने जाते हैं और हांके स्कूल बोर्डके मेम्बर भी हैं।

इस समय जनरल आर्मस्ट्रागने इंडियन लोगोंको पहले पहल शिक्षा देनेका योग करना आरंभ किया था। उस समय बहुत कम लोगोंको यह आशा थी के इंडियन लोग भी लिख पढकर कुछ काम लायक हो जायँगे। जनरल आर्म- ट्रागके मनमें यह समाई कि यह प्रयोग विशाल परिमाण पर और ढंगके साथ करना चाहिए। वे पश्चिम प्रान्तके जगलोंमेसे जंगली और बिलकुल अपढ ऐसे एक सौसे भी ज्यादा इंडियन ले आये, उनमें बहुतेरे युवा भी थे। जनरल

आर्मस्ट्रांग चाहते थे कि मैं उन सब इंडियनोंका पितृवत् पालक बनूँ-अर्थात् एक ही मकानमें उनके साथ रहकर उनकी शिक्षा, चाल ढाल और रहन-सहनकी देखभाल किया करूँ। इस कार्यमें मोहकता अवश्य थी, पर वेस्टवर्जीनियाके कार्यमें मैं इतना मगन हो गया था कि उसे छोड देना मेरे लिए बडे भारी कष्टका कारण था, पर मैंने दिलको मजबूत करके उस कामको छोड ही दिया, क्योंकि जनरल आर्मस्ट्रांगकी आज्ञाको मैं टाल नहीं सकता था।

हैम्पटन जाने पर मैं ७५ इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक मकानमें रहने लगा। मैं ही अकेला एक ऐसा आदमी था जो उनकी जातिके बाहर था। शुरू शुरूमें मुझे बडा सन्देह था कि इस कार्यमें मैं कैसे कामयाब हो सकूँगा। मैं भली भाँति जानता था कि इंडियनोंके मिजाज हम लोगोंसे बहुत ऊँचे हैं। वे अपनेको गोरोंसे भी बडे मानते थे—इसीसे अन्दाज किया जा सकता है कि गुलामीको महत्पाप समझनेवाले इंडियन गुलामीमें पले हुए नीग्रो लोगोंको क्या समझते होंगे। गुलामीके दिनोंमें इंडियन लोगोंके भी बहुतसे गुलाम थे। इन सब बातोंके सिवाय सब लोगोंको यह विश्वास हो गया था कि इंडियन लोगोंको पढाने और सुधारनेकी चेष्टा कभी फलवती नहीं हो सकती। यह सब होते हुए भी मैंने यह प्रण कर लिया कि मैं दिल लगाकर, सावधानीके साथ काम करूँगा और सफलता प्राप्त किये बिना न रहूँगा। कुछ ही दिनोंमें इन इंडियनोंको मेरा विश्वास होगया—वे मुझसे प्रेम करने लगे और मुझे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे। इंडियनोंके विषयमें और लोग चाहे जो कहें, परन्तु मेरा अनुभव तो यह है कि और मनुष्योंके समान वे भी मनुष्य हैं, उनके साथ अच्छा बर्ताव करनेसे वे प्रसन्न रहते हैं और बुरा बर्ताव करनेसे नाराज होते हैं। जब उन्हें मेरा परिचय हो गया तब, वे मुझे सुखी करनेका प्रयत्न भी करने लगे। पर उन्हें अपने लंबे बालोंसे, कंबल ओढनेसे और तबाकू पीनेसे इतनी प्रीति थी कि वे इन बातोंको छोडना पसन्द नहीं करते थे, और ऐसे ही कारणोंसे गोरे लोग उन्हें असभ्य और जंगली समझते थे।

अँगरेजी भाषा सीखनेमें इंडियन बहुत पिछड जाते थे सही, पर और विषयोंमें तथा कलाकौशल सीखनेमें काले नीग्रो और लाल इंडियन विद्यार्थियोंमें कोई बडा भारी अन्तर न था। मैं इस बातसे बहुत प्रसन्न रहता था कि काले विद्यार्थी हर तरहसे इंडियनोंकी सहायता करते थे। अवश्य ही कुछ काले विद्यार्थी चाहते थे कि हैम्पटन-विद्यालयमें इंडियन भरती न किये जायँ, पर सौभाग्य

उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। नीग्रो विद्यार्थियोंकी यह सदासे ही इच्छा थी कि इंडियन भी अँगरेजी बोलना सीख जायँ और उनकी रहन सहन तथा आदतें सभ्य लोगोंकीसी हो जाय। इसलिए जब कभी कभी उनके शिक्षक इंडियनोंको अपने साथ लेने या अपने कमरेमें ही टिकानेके लिए कहते तो वे बड़े प्रेमसे इंडियनोंका स्वागत करते थे।

मुझे इस बातका आश्चर्य होता है कि इस प्रकारका स्वागत करनेवाली एक भी ऐसी गोरी संस्था नहीं है जहाँ अन्य जातिके सौसे अधिक विद्यार्थियोंका प्रवेश हो। गोरोंको यह सिरगपन देनेकी मुझे कई बार इच्छा हुई है कि दूसरोंकी तरक्की करनेमें हम लोग जितनी ही मदद करेंगे उतनी ही हमारी तरक्की होगी और जितनी ही कोई जाति बदकिस्मत (अभागिनी) और असभ्य होगी, उसकी उतनी ही मदद करके हम अपने आपको ही ऊपर उठावेंगे।

यहाँ पर मुझे आनरेबल फ्रेडरिक डगलसके कथनका स्मरण हो आता है। एक बार पेन्सिलवनियाकी रियासतमें मि० डगलस भ्रमण करने गये थे और दूसरे मुसाफिरोंकी तरह उन्होंने भी टिकट कटाया था, पर बदनका रंग काला होनेसे उन्हें मालगाड़ीमें बैठना पड़ा। कुछ गोरे मुसाफिरोंने यह देखा और मि० डगलससे अपनी सहानुभूति प्रकट करनेके लिए उनके पास जाकर कहा—"मि० डगलस, हम लोगोंको इस बातका बड़ा दुःख है कि आपका ऐसा अपमान हुआ।" महाशय डगलसने बैठे बैठे ही जरा गर्दन तान कर कहा—"अजी! वे फ्रेडरिक डगलसका अपमान नहीं कर सकते। मेरी आत्माका अपमान करनेकी ताकत किसी मनुष्यमें नहीं है। इस बर्तावसे मेरा अपमान नहीं हुआ; बल्कि मेरे साथ जो ऐसा बर्ताव कर रहे हैं उन्हींका अपमान हो रहा है।"

हमारे देशके एक हिस्सेमें यह कायदा है कि काले और गोरे लोग गाड़ियोंके अलग अलग डब्बोंमें बैठें। इस हिस्सेमें मुझे एक ऐसा उदाहरण मिला जिससे यह मालूम हो जाता है कि काला रंग कहाँ आरम्भ होता है और सफेद कहाँ खतम होता है इस बातका समझना कितना कठिन है।

हम लोगोंमें एक बड़ा प्रसिद्ध नीग्रो था। पर वह था इतना गोरा कि बड़े बड़े पहचाननेवाले उसे काला नहीं कह सकते थे। एक बार वह कालोंके डब्बेमें बैठ कर सफर कर रहा था। गाड़ीका कंडक्टर जब उसके पास आया तब उसे

आर्मस्ट्रांग चाहते थे कि मैं उन सब इंडियनोंका पितृवत् पालक
एक ही मकानमें उनके साथ रहकर उनकी शिक्षा, चाल ढाल और रह
देखभाल किया करूँ। इस कार्यमें मोहकता अवश्य थी, पर ...
कार्यमें मैं इतना मगन हो गया था कि उसे छोड देना मेरे लिए बडे
कष्टका कारण था, पर मैंने दिलको मजबूत करके उस कामको छोड ही दि
क्योंकि जनरल आर्मस्ट्रांगकी आज्ञाको मैं टाल नहीं सकता था।

हैम्पटन जाने पर मैं ७५ इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक
रहने लगा। मैं ही अकेला एक ऐसा आदमी था जो उनकी जातिके बाहर था
शुरू-शुरूमें मुझे बडा सन्देह था कि इस कार्यमें मैं कैसे कामयाब हो सकूँगा
मैं भली भाँति जानता था कि इंडियनोंके मिजाज हम लोगोंसे बहुत ऊँचे हैं।
वे अपनेको गोरोंसे भी बडे मानते थे—इसीसे अन्दाज किया जा सकता है
गुलामीको महत्पाप समझनेवाले इंडियन गुलामीमें पले हुए नीग्रो लोगोंको क
समझते होंगे। गुलामीके दिनोंमें इंडियन लोगोंके भी बहुतसे गुलाम थे।
सब बातोंके सिवाय सब लोगोंको यह विश्वास हो गया था कि इंडियन लोगोंको
पढाने और सुधारनेकी चेष्टा कभी फलवती नहीं हो सकती। यह सब होते
हुए भी मैंने यह प्रण कर लिया कि मैं दिल लगाकर, सावधानीके साथ काम
करूँगा और सफलता प्राप्त किये बिना न रहूँगा। कुछ ही दिनोंमें इन इंडियनोंको
मेरा विश्वास होगया—वे मुझसे प्रेम करने लगे और मुझे आदरकी दृष्टिसे देखने
लगे। इंडियनोंके विषयमें और लोग चाहे जो कहें, परन्तु मेरा अनुभव तो
यह है कि और मनुष्योंके समान ये भी मनुष्य हैं, उनके साथ अच्छा बर्ताव
करनेसे वे प्रसन्न रहते हैं और बुरा बर्ताव करनेसे नाराज होते हैं। जब उ
मेरा परिचय हो गया तब, वे मुझे सुखी करनेका प्रयत्न भी करने लगे। प
उन्हें अपने लंबे बालोंसे, कम्बल ओढनेसे और तमाकू पीनेसे इतनी प्रीति थी
वे इन बातोंको छोडना पसन्द नहीं करते थे, और ऐसे ही कारणोंसे गोरे लो
उन्हें असभ्य और जंगली समझते थे।

अँगरेजी भाषा सीखनेमें इंडियन बहुत पिछड जाते थे सही, पर और वि
षयोंमें तथा कलाकौशल सीखनेमें काले नीग्रो और लाल इंडियन विद्यार्थियों
कोई बडा भारी अन्तर न था। मैं इस बातसे बहुत प्रसन्न रहता था कि ब
विद्यार्थी हर तरहसे इंडियनोंकी सहायता करते थे। अवश्य ही कुछ काले विद्
चाहते थे कि हैम्पटन-विद्यालयमें इंडियन भरती न किये जायँ, पर सौभ

नकी सख्या बहुत थोटी थी। नीग्रो विद्यार्थियोंकी यह सदासे ही इच्छा थी कि इडियन भी अँगरेजी बोलना सीख जाय और उनकी रहन सहन तथा आदतें सभ्य लोगोंकीसी हो जायँ। इसलिए जब कभी कभी उनके शिक्षक इडियनोंको अपने साथ लेने या अपने कमरेमें ही टिकानेके लिए कहते तो वे बडे प्रेमसे इडियनोंका स्वागत करते थे।

मुझे इस बातका आश्चर्य होता है कि इस प्रकारका स्वागत करनेवाली एक भी ऐसी गोरी संस्था नहीं है जहाँ अन्य जातिके सौसे अधिक विद्यार्थियोंका प्रवेश हो। गोरोंको यह सिखापन देनेकी मुझे कई बार इच्छा हुई है कि दूसरोंकी तरक्की करनेमें हम लोग जितनी ही मदद करेंगे उतनी ही हमारी तरक्की होगी और जितनी ही कोई जाति बदकिस्मत (अभागिनी) और असभ्य होगी, उसकी उतनी ही मदद करके हम अपने आपको ही ऊपर उठावेंगे।

यहाँ पर मुझे आनरेबल फ्रेडरिक डगलसके कथनका स्मरण हो आता है। एक बार पेन्सिलवनियाकी रिसायतमें मि० डगलस भ्रमण करने गये थे और दूसरे मुसाफिरोंकी तरह उन्होंने भी टिकट कटाया था, पर बदनका रग काला होनेसे उन्हें मालगाडीमें बैठना पडा। कुछ गोरे मुसाफिरोंने यह देखा और मि० डगलससे अपनी सहानुभूति प्रकट करनेके लिए उनके पास जाकर कहा—"मि० डगलस, हम लोगोंको इस बातका बडा दु ख है कि आपका ऐसा अपमान हुआ।" महाशय डगलसने बैठे बैठे ही जरा गर्दन तान कर कहा—"अजी! वे फ्रेडरिक डगलसका अपमान नहीं कर सकते। मेरी आत्माका अपमान करनेकी ताकत किसी मनुष्यमें नहीं है। इस बर्तावसे मेरा अपमान नहीं हुआ, बल्कि मेरे साथ जो ऐसा बर्ताव कर रहे हैं उन्हींका अपमान हो रहा है।"

हमारे देशके एक हिस्सेमें यह कायदा है कि काले और गोरे लोग गाडियोंमें अलग अलग डब्बोंमें बैठें। इस हिस्सेमें मुझे एक ऐसा उदाहरण मिला जिससे यह मालूम हो जाता है कि काला रग कहाँ आरभ होता है और सफेद कहाँ खतम होता है इस बातका समझना कितना कठिन है।

हम लोगोंमें एक बडा प्रसिद्ध नीग्रो था। पर वह था इतना गोरा कि बड़े बडे पहचाननेवाले उसे काला नहीं कह सकते थे। एक बार वह कालोंके डब्बेमें बैठ कर सफर कर रहा था। गाडीका कडक्टर जब उसके पास आया तब उसे

देखते ही चकरा गया। अगर यह नीग्रो ही है तो इसे गोरोंके डब्बेमें बैठने
जरूरत नहीं, पर अगर यह गोरा है तो इससे यह पूछना कि "क्या तु
नीग्रो हो ?" इसका अपमान करना है। कंडक्टरने उसकी तरफ खूब बा
कीसे देखा—उसके बाल, आँखें, नाक और हाथ वगैरह सब कुछ देखा, प
वह कुछ निश्चय न कर सका। आखिर उसने यह उलझन सुलझानेके लि
जरा झुक कर उस आदमीके पैरोंकी तरफ देखा। इस पर मैंने मन-ही-मन क
"अब फैसला हो गया!" और सचमुच ऐसा ही हुआ, उसने समझ लि
कि यह नीग्रो ही है और उसे वहीं बैठा रहने दिया। हमारी जातिमेंसे ए
आदमी कम नहीं हुआ, इसलिए मैंने कंडक्टरका अन्तःकरणसे आभार माना

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि किसी सच्चे सभ्य पुरुषकी प
चान ऐसे वक्त करनी चाहिए जब उसे अपनेसे नीचे दर्जेके लोगोंके साथ मि
नेका अवसर मिले। दक्षिण प्रान्तके कोई पुराने सज्जन जब अपने पुराने गुलामों
या उनकी सन्ततिसे मिलते हैं देखिए कि वे किस ढंगसे मिलते हैं, तब मेरे इ
कथनकी यथार्थता प्रकट हो जायगी। मेरे कथनका तात्पर्य जार्ज वाशिंगटनके
विषयमें कही गई एक बातसे विशेष स्पष्ट होता है। रास्तेमें जार्ज वाशिंगटनक
देखकर एक नीग्रोने शिष्टाचारसे अपनी टोपी ऊपर उठाई। जार्ज वाशिंगटन
भी इसके उत्तरमें अपनी टोपी उठाई। इस पर उनके कई गोरे मित्रोंने उन
कहा, "आप इतने बड़े आदमी होकर एक अदने काले आदमीके सामने टोप
उठाते हैं, यह ठीक नहीं है।" इस पर जार्ज वाशिंगटनने जवाब दिया
"क्या आप समझते हैं कि मैं किसी काले आदमीको अपनेसे बढ़कर विनम्रशी
बन जाने दूँगा ?"

जिस समय मैं हैम्पटनमें इंडियन युवाओंकी निगरानी करता था, मेरे दे
नेमें एक दो अवसर ऐसे आये जिनसे अमेरिकाके वर्णभेदकी विचित्रताका प
लग जाता है। एक इंडियन लड़का बीमार हुआ। उसे मुझे वाशिंगटन ले जा
पड़ा, और वह अपने पश्चिमाचलके अरण्यप्रदेशमें वापिस पहुँचा दिया जा
इसके लिए उसे उस प्रदेशके सेक्रेटरीके हवाले करके उससे रसीद लेनी पड़
उस समय मुझे संसारकी रीति नीतिसे विशेष परिचय नहीं था। मैं वाशिंगटन
जा रहा था। रास्तेमें स्टीमरमें, भोजनकी घंटी बजी। और सब लोग भो
करनेके लिए चले गये, पर मैं नहीं गया—सबके निपटनेकी राह देखता रह
जब सब मुसाफिर भोजन कर चुके तब मैं उस लड़केके साथ भोजनगृ

गया। पर वहाँका एक आदमी मुझसे बडी शिष्टताके साथ बोला—"उस लड़केको तो भोजन मिलेगा, पर आपको नहीं।" उस लडकेका और मेरा रग एकहीसा था, पर न जाने उस आदमीने हम दोनोकी जाति कैसे पहचान ली। इस काममें वह बडा चतुर था इसमें सन्देह नहीं। हैम्पटन विद्यालयके अधिकारियोंने मुझसे कह दिया था कि वाशिंगटन पहुँचकर तुम अमुक होटलमें ठहरना। उस होटलमें पैर रखते ही एक क्लर्कने मुझे स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया कि उस इडियनको तो यहाँ जगह मिल जायगी, पर तुम्हारे लिए कोई प्रबन्ध न हो सकेगा।

इसके बाद, इसी तरहका एक और उदाहरण देखनेमें आया। एक बार म एक गाँवमें गया था। उस समय वहाँ इतनी खलबली मच रही थी कि नव्वा बीसा अमल होनेमें थोडी ही कसर थी। इस खलबलीका कारण भी मजेदार था। एक काले रगका आदमी वहाँके होटलमें आ टिका था। वह मरक्कोका रहनेवाला था और अपने सुभीतेके लिए अगरेजी भाषा बोलता था। एक नीग्रो आदमी गोरोंके होटलमें आकर ठहरे और अँगरेजी बोले! यह उस गावके गोरोंसे न सहा गया, पर पीछे जब यह मालूम हुआ कि वह अमेरिकन नीग्रो नहीं है तब लोगोंको शान्ति हुई। उस मनुष्यको भी यह शिक्षा मिल गई कि अब यहाँ अँगरेजी बोलनेका काम नहीं।

इडियन विद्यार्थियोंके साथ एक वर्ष बिता चुकने पर मुझे हैम्पटनमें एक और मौका मिला। पिछली बातोंको सोचनेसे यही कहना पडता है कि आगे चलकर टस्केजीमें योग्यतापूर्वक काम करनेके लिए जिस तैयारीकी आवश्यकता थी वह हासिल करनेके लिए ही ईश्वरने मानो यह अवसर दिया। बहुतसे स्त्री-पुरुषोंको विद्या प्राप्त करनेकी बडी अभिलाषा थी, पर उनमें भोजन वस्त्र और पुस्तकोंका खर्च जुटानेका सामर्थ्य न था। जनरल आर्मस्ट्रागको यह बात मालूम थी और इसलिए वे चाहते थे कि हैम्पटन विद्यालयके साथ ही एक नाइट स्कूल खोला जाय और उसमें बुद्धिवान् और होनहार स्त्री पुरुषोंकी पढाईका प्रबन्ध हो—दिनमें ये लोग दस घटे काम किया करें और रातको दो घटे स्कूलमें पढें। इन लोगोंको मेहनताना इतना दिया जाता है हुआ कि उसमेंसे भोजनखर्चके बाद कुछ बचत हो जाय, जो स्कूलके खजानेमें जमा की जाय, और एक दो वर्ष नाइटस्कूलमें पढकर जब ये दिनकी पाठशालामें भरती किये जावें, यह बचत उनके भोजन-खर्चके लिए दी जाय। यह एक ऐसी योजना थी कि

किया है और अमुक विषयोंमें पारदर्शिता प्राप्त की है। आपसमें जब इस तरहकी बातें ये लोग करते तो सुनकर मुझे हँसी आती थी। कुछ छात्रोंने लैटिन भाषाका अभ्यास किया था। दो एक छात्र ग्रीकभाषा भी जानते थे, इसलिए वे अपनेको औरोंसे बहुत श्रेष्ठ समझते थे।

सचमुच ही मैंने अपनी एक महीनेकी यात्रामें एक बडी ही खराब बात देखी, वह यह कि हाई-स्कूलमें पढा हुआ एक विद्यार्थी अपनी झोपडीमें बैठा हुआ था। उसके कपडों पर तेलके धब्बे लगे हुए थे, आसपास इतनी गन्दगी थी कि जी मचला जाय, आँगनमें और बागमें बेहिसाब घास बढी जा रही थी, और आप फ्रेंच भाषाका व्याकरण पढनेमें मगन हो रहे थे!

शुरु शुरूमें जो विद्यार्थी आये उन्हें व्याकरण और गणितकी लंबी लंबी और कठिन परिभाषायें कंठ करनेका बडा शौक था, पर रट किये हुए इन नियमोंको काममें लानेकी बात कभी उनके ध्यानमें भी न आई। उन्होंने सूद, मितीकाटा, स्टाक आदिके नियम तोतेकी तरह रट डाले थे, पर यह नहीं जानते थे कि इनसे क्या काम लिया जाता है। विद्यार्थियोंके नाम रजिस्टरमें लिख लेते समय मैंने यह देखा कि हरेकके नामके साथ एक या दो अक्षर भी हुआ करते हैं, जैसे जान जे जेम्स। अगर यह पूछा जाता कि इस 'जे'का क्या मतलब है तो यही जवाब मिलता कि यह भी उपनामका (अल्लका) एक हिस्सा है। बहुतेरे शिक्षार्थी इसलिए पढना चाहते थे कि आगे चलकर वे शिक्षक हो जायँगे तो बहुतसा धन कमा लेंगे।

पर इन बातोंसे यह न समझिए कि स्कूलके छात्र बिलकुल निकम्मे थे। इन विद्यार्थी और विद्यार्थिनियोंमें पढनेकी ओर जैसी प्रवृत्ति और जैसा उत्साह था वैसा तो मैंने कहीं देखा ही नहीं। कोई बात जब उन्हें समझाई जाती थी तो वे उसे पूरा ध्यान दे कर समझते थे। मैंने निश्चय किया कि उन्हें जो कुछ पुस्तकसम्बन्धी विद्या सिखलाई जाय उसकी जड उनमें पहले पक्की जमा दी जाय तब आगे पढाया जाय और जो कुछ सिखलाया जाय वह अधूरा ही न छोडा जाय। जिन विषयोंके ज्ञानकी डींग वे लोग हाँका करते थे, मैंने देखा कि उन विषयोंका उन्हें बहुत ही थोडा परिचय है। हमारी नई विद्यार्थिनियाँ नकशे पर सहाराकी मरुभूमि दिखला सकती थीं, चीनकी राजधानी भी ढूँढ निकाल सकती थीं, पर भोजनकी मेज पर काँटा और चम्मच कहाँ रक्खा जाता है, या रोटी और मांस कहाँ परोसना चाहिए, इतना भी न जानती थीं।

एक विद्यार्थी घनमूल और सूद मितीकाटेके हिसाब लगानेमें बड़ी माथापची किया करता था। आखिर मुझे उससे कहना ही पड़ा कि पहले तुम पहाड़े अच्छी तरहसे याद कर लो तब आगे बढ़ो।

विद्यार्थियोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जाती थी, यहाँ तक कि पहले ही सालके अन्तमें ५० विद्यार्थी हो गये। कई विद्यार्थियोंका यह कहना था कि "हम लोगोंको यहाँ बहुत थोड़े दिन रहना है, इस लिए हम ऊपरके दर्जेमें भरती कर लीजिए और सम्भव हो तो पहले ही सालमें डिप्लोमा दिला दीजिए।"

थोड़े डेढ़ महीने बाद स्कूलको एक उत्तम व्यक्तिके अध्यापकका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनका नाम मिस आलिविया ए डेविड्सन था। आगे चलकर ये मिस आलिविया मेरी सहधर्मिणी हुईं। मिस डेविड्सनने आहिओ रियासतमें जन्म लिया था, और उसी रियासतके पब्लिक स्कूलमें उन्होंने आरंभिक शिक्षा भी पाई थी। जब वे कुछ सयानी हुईं तब उन्होंने सुना कि दक्षिण प्रान्तमें शिक्षकोंकी बड़ी आवश्यकता है। तभीसे वे बाहर जानेकी चिन्ता करने लगीं। एक दिन एक अच्छा योग पा करके ये मिसिसिपी रियासतमें आकर अध्यापनका कार्य करने लगीं। इसके बाद मेंफिस रियासतमें पढ़ाती रहीं। मिसिसिपीमें जब वे पढ़ाती थीं तब उनके एक विद्यार्थीको माता निकल आई थीं। उस वक्त लोग इतने घबरा गये कि उस बेचारे लड़केकी सेवा-टहल करनेके लिए भी कोई न रहा। मिस डेविड्सनने अपना स्कूल बन्द कर दिया, और जब तक वह लड़का बिलकुल चंगा न हो गया तब तक वे रात दिन उसीकी सेवाशुश्रूषा करने लगीं। छुट्टियोंमें वे अपने घर आ गईं और ऐसे वक्त मेंफिसमें 'यलो फीवर' नामक संक्रामक ज्वर फैलने लगा। जब मि० डेविड्सनको इसकी खबर मिली तो वे संक्रामक रोगके रोगियोंकी शुश्रूषा करनेको तैयार हो गईं और यद्यपि उन्होंने कभी इस रोगके रोगियोंकी परिचर्या नहीं की थी—इस रोगका नाम भी न सुना था तो भी मेंफिसके शेरीफको तार दे दिया कि "मैं दाईका काम करनेके लिए तैयार हूँ।"

दक्षिण प्रान्तमें मिस डेविड्सनको जो कुछ अनुभव प्राप्त हुआ उससे उनकी भी यह धारणा हो गई थी कि केवल पुस्तकी विद्याके अतिरिक्त कुछ और भी, लोगोंके लिए आवश्यक है। हैम्पटनकी शिक्षापद्धतिके विषयमें उन्होंने सुना था, और उन्होंने यह विचार भी कर रक्खा था कि दक्षिण प्रान्तमें मैं तभी कुछ कार्य ... अभ्यास करूँ। संयोगवश

किया है और अमुक विषयोंमें पारदर्शिता प्राप्त की है। आपसमें जब इस तरहकी बातें ये लोग करते तो सुनकर मुझे हँसी आती थी। कुछ छात्रोंने लैटिन भाषाका अभ्यास किया था। दो एक छात्र ग्रीकभाषा भी जानते थे, इसलिए वे अपनेको औरोंसे बहुत श्रेष्ठ समझते थे।

सचमुच ही मैंने अपनी एक महीनेकी यात्रामें एक बडी ही खराब बात देखी, वह यह कि हाई-स्कूलमें पढा हुआ एक विद्यार्थी अपनी झोपडीमें बैठा हुआ था। उसके कपडों पर तेलके धब्बे लगे हुए थे, आसपास इतनी गन्दगी थी कि जी मचला जाय, आँगनमें और बागमें बेहिसाब घास बढी जा रही थी, और आप फ्रेंच भाषाका व्याकरण पढनेमें मगन हो रहे थे!

शुरू शुरूमें जो विद्यार्थी आये उन्हें व्याकरण और गणितकी लम्बी लम्बी और कठिन परिभाषायें कंठ करनेका बडा शौक था, पर कंठ किये हुए इन नियमोंको काममें लानेकी बात कभी उनके ध्यानमें भी न आई। उन्होंने सूद, मितीकाटा, स्टाक आदिके नियम तोतेकी तरह रट डाले थे, पर यह नहीं जानते थे कि इनसे क्या काम लिया जाता है। विद्यार्थियोंके नाम रजिस्टरमें लिख लेते समय मैंने यह देखा कि हरेकके नामके साथ एक या दो अक्षर भी हुआ करते हैं, जैसे जान जे जेम्स। अगर यह पूछा जाता कि इस 'जे'का क्या मतलब है तो यही जवाब मिलता कि यह भी उपनामका (अल्लका) एक हिस्सा है। बहुतेरे शिक्षार्थी इसलिए पढना चाहते थे कि आगे चलकर वे शिक्षक हो जायेंगे तो बहुतसा धन कमा लेंगे।

पर इन बातोंसे यह न समझिए कि स्कूलके छात्र बिलकुल निकम्मे थे। इन विद्यार्थी और विद्यार्थिनियोंमें पढनेकी ओर जैसी प्रवृत्ति और जैसा उत्साह था वैसा तो मैंने कहीं देखा ही नहीं। कोई बात जब उन्हें समझाई जाती थी तो वे उसे पूरा ध्यान देकर समझते थे। मैंने निश्चय किया कि उन्हें जो कुछ पुस्तकसम्बन्धी विद्या सिखलाई जाय उसकी जड उनमें पहले पक्की जमा दी जाय तब आगे पढाया जाय और जो कुछ सिखलाया जाय वह अधूरा ही न छोडा जाय। जिन विषयोंके ज्ञानकी डींग वे लोग हाँका करते थे, मैंने देखा कि उन विषयोंका उन्हें बहुत ही थोडा परिचय है। हमारी नई विद्यार्थिनियाँ नकशे पर सहाराकी मरुभूमि दिखला सकती थीं, चीनकी राजधानी भी ढूँढ निकाल सकती थीं, पर भोजनकी मेज पर काँटा और चम्मच कहाँ रक्खा जाता है, या रोटी और मांस कहाँ परोसना चाहिए, इतना भी न जानती थीं!

एक विद्यार्थी धनमूल और सूद मितीकाटेके हिसाब लगानेमें बडी माथापची किया करता था। आखिर मुझे उससे कहना ही पडा कि पहले तुम पहाड़े अच्छी तरहसे याद कर लो तब आगे बढो!

विद्यार्थियोंकी संख्या दिनोंदिन बढती जाती थी, यहाँ तक कि पहले ही मासके अन्तमें ५० विद्यार्थी हो गये। कई विद्यार्थियोंका यह कहना था कि 'हम लोगोंको यहाँ बहुत थोडे दिन रहना है, इस लिए हमें ऊपरके दर्जेमें भरती कर लीजिए और सम्भव हो तो पहले ही सालमें डिप्लोमा दिला दीजिए।'

कोई डेढ महीने बाद स्कूलको एक उत्तम व्यक्तिके अध्यापनका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनका नाम मिस आलिविया ए डेविड्सन था। आगे चलकर ये ही आलिविया मेरी सहधर्मिणी हुईं। मिस डेविड्सनने आबिओ रियासतमें जन्म पाया था, और उसी रियासतके पब्लिक स्कूलमें उन्होंने आरम्भिक शिक्षा भी पाई थी। जब वे कुछ सयानी हुईं तब उन्होंने सुना कि दक्षिण प्रान्तमें शिक्षकोंकी बडी आवश्यकता है। तभीसे वे बाहर जानेकी चिन्ता करने लगीं। एक दिन एक अच्छा योग पा करके वे मिसिसिपी रियासतमें आकर अध्यापनका कार्य करने लगीं। इसके बाद मफिस रियासतमें पढाती रहीं। मिसिसिपीमें जब वे पढाती थीं तब उनके एक विद्यार्थीको माता निकल आई थीं। उस वक्त लोग इतने घबरा गये कि उस बेचारे लडकेकी सेवा-टहल करनेके लिए भी कोई न रहा। मिस डेविड्सनने अपना स्कूल बन्द कर दिया, और जब तक वह लडका बिलकुल चंगा न हो गया तब तक वे रात दिन उसीकी सेवाशुश्रूषा करने लगीं। छुट्टियोंमें वे अपने घर आ गईं और ऐसे वक्त मेंफिसमें 'यलो फीवर' नामक संक्रामक ज्वर फैलने लगा। जब मि० डेविड्सनको इसकी खबर मिली तो वे संक्रामक रोगके रोगियोंकी शुश्रूषा करनेको तैयार हो गईं और यद्यपि उन्होंने कभी इस रोगके रोगियोंकी परिचर्या नहीं की थी–इस रोगका नाम भी न सुना था तो भी मेंफिसके शेरीफको तार दे दिया कि "मैं दाईका काम करनेके लिए तैयार हूँ।"

दक्षिण प्रान्तमें मिस डेविड्सनको जो कुछ अनुभव प्राप्त हुआ उससे उनकी यह धारणा हो गई थी कि केवल पुस्तकी विद्याके अतिरिक्त कुछ और भी, लोगोंके लिए आवश्यक है। हैम्पटनकी शिक्षापद्धतिके विषयमें उन्होंने सुना था, और उन्होंने यह विचार भी कर रक्खा था कि दक्षिण प्रान्तमें मैं तभी कुछ कार्य कर सकूँगी जब हैम्पटन विद्यालयमें जाकर पूरा अभ्यास करूँ। संयोगवश

डालर कीमत बहुत थोडी थी, पर जिसके पास कुछ है ही नहीं उसके लिए त ज्यादा ही कहनी चाहिए।

आखिर बहुत सोच समझकर मैंने हैम्पटन-विद्यालयके खजाची जनरल जे एफ बी मार्शल साहबको एक पत्र लिखा। उसमें मैंने सब हाल लिख दि और खास अपनी जिम्मेदारी पर ढाई सौ डालर उधार देनेकी प्रार्थना की कुछ ही दिनोंमें उनका जवाब आया। उसमें लिखा था–" हैम्पटन विद्यालय धन किसीको कर्ज या उधार देनेका मुझे अधिकार नहीं, पर मैं अपनी बचतमें बडी खुशीके साथ आपको यह रकम दूँगा।"

इस प्रकार एकाएक इस धनके मिल जानेसे मुझे बडा आश्चर्य हुआ, औ आनन्द भी हुआ। अबतक एक साथ सौ डालर कभी मेरे हाथ नहीं आ थे, इसलिए यह जनरल मार्शलसे उधार माँगी हुई रकम मुझे बहुत बडी जा पडी। रकम अदा करनेकी जिम्मेदारी भी मुझ ही पर होनेसे मेरा चित्त अस्थि रसा हो उठा।

स्कूलको नये स्थान पर ले जानेमें मैंने बडी फुरती की। जिस वक्त य जगह खरीदी गई उस वक्त वहाँ चार कोठरियाँ थीं—एक भोजनघर, एक पुरा रसोईघर, एक अस्तबल और एक पुराना मुर्गीखाना। इन कोठरियोंको काम लाने लायक बनानेके लिए एक दो सप्ताहसे अधिक समय नहीं लगा। अस्तब साफ सुथरा कर वहाँ सबक सुनानेका कमरा बना, और फिर मुर्गीखाना भी इस तरह काममें लाया गया।

एक दिनकी याद आती है कि सबेरे मैंने अपने पासके एक नीग्रो मददगार कहा कि, "अब हमारा स्कूल इस कदर बढ चला है कि मुर्गीखाना भी काम लाना पडेगा, उसकी सफाई करनेमें तुम्हारी मदद होनी चाहिए।" इसपर उ बडा ताज्जुब हुआ और उसने पूछा, "आप कहते क्या है? क्या आप दि दहाडे सबके सामने मुर्गीखाना साफ करेंगे?" नीग्रो समाजमें लोकनिन्दा इतना भय था!

यह नई जगह स्कूलके कामलायक बनानेमें हम लोगोंने ही शुरूसे अखी तक सब काम किये, कुलियोंकी जरूरत न हुई। दोपहरको स्कूलसे छुट्टी होनेपर विद्या र्थियोंने स्वयं यह काम किया। कमरे तैयार हो चुकने पर, मेरा यह विचार था कि कुछ जमीन साफ करके रख देनी चाहिए ताकि उसमें कुछ बोया जा सके। यह तो मैंने ता लिया कि मेरा यह विचार हमारे युवा विद्यार्थियोंको पसन्द न हुआ। जमी

साफ करना और शिक्षा इन दोनोंके बीचका सम्बन्ध समझना उनका का मन था। इन विद्यार्थियोंमें बहुतेरे शिक्षक भी थे। उन्होंने यह सोचा कि अगर हम लोगोंने झाड़ू देकर जमीन ही साफ की तो हमारी इज्जत ही क्या रह गई? इसका जवाब देना फिजूल था, इस लिए मैं खुद रोज स्कूल बन्द होने पर कुदारी लेकर मैदानमें जाने लगा। जब उन्होंने मुझे मिटी खोदते हुए देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने जान लिया कि मैं काम करनेमें न किसीसे डरता हूँ और न किसीसे लजाता हूँ। यह देखकर वे लोग भी बड़े उत्साहसे मेरी मदद करने लगे। रोज दोपहरके वक्त काम करके हम लोगोंने २० एकड़ जमीन साफ करके—कमा करके रख दी और उसमें बीज बो दिया।

इधर मिस डेविड्सन जमीनका कर्ज अदा करनेके लिए रुपया इकट्ठा करनेकी फिक्रमें थीं। पहली कोशिश उनकी यह थी कि उन्होंने एक मेला खड़ा कर दिया और फिर घर घर जा कर इस मेलेमें बिकने लायक केक, मुर्गी, रोटी पक्वान आदि चीजोंको, सहायताके रूपमें देनेके लिए लोगोंसे प्रार्थना की और लोगोंने भी हरतरहसे सहायता करनेका वादा किया। काले नीग्रो लोग तो अपनी शक्तिभर सब कुछ देते ही थे, पर मुझे यहाँ यह बतलाना है कि कभी ऐसा भी मौका नहीं आया कि मिस डेविड्सनने किसी गोरेसे मददकी प्रार्थना की हो और उस गोरेने उनकी मदद न की हो। इस प्रकार गोरे परिवारोंने भी नाना प्रकारसे स्कूलके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की।

कई बार ऐसे मेले किये गये, और उनसे कुछ रकम भी जमा हुई। दोनों जातिके लोगोंसे नकद रुपये वसूल करनेकी कोशिश भी की गई, और जिन जिन सज्जनोंसे प्रार्थना की गई उन सब ही लोगोंने कुछ न कुछ दान दिया। जिन बूढे नीग्रो लोगोंने अपना यौवन गुलामीमें बिताया था उनके दानकी प्रशंसा अनिर्वचनीय है। उन्होंने जो दान दिया, वह अपने हृदयसे काट कर दिया, इसमें सन्देह नहीं। वे कभी कुछ सेंट देते, कभी अपनी चादर दे डालते और कभी कभी तो अपने खेतसे ऊख काटकर ला देते। इस तरह धन इकट्ठा किया जा रहा था, इसी समय एक नीग्रो वृद्धा मुझसे मिलने आई। उससे चला नहीं जाता था। डंडेके सहारे चलती हुई वह किसी तरह मेरे कमरेमें आई। उसके शरीर पर कपड़े नहीं, कपड़ोंकी धज्जियाँ थीं, पर बिलकुल साफ थीं। उसने मुझसे कहा, "वाशिंगटन, ईश्वर जानता है, मेरी उम्रका अच्छा अश तो गुलामीमें बीत गया। उसे यह भी मालूम है कि मैं कंगाल और मूर्ख

हूँ। पर मै यह जानती हूँ कि मिस डेविड्सन और तुम दोनों क्या कर रहे हो। तुम दोनो हमारी जातिमे उत्तम स्त्रियाँ और पुरुष उत्पन्न करनेका प्रयत्न कर रहे हो। मेरे पास धन नहीं, पर मेरे पास ये छ अडे हैं, मै चाहती हूँ, इन्हें तुम लो और लडके लडकियोंके पढानेमें इनका उपयोग करो।"

टस्केजीमे स्कूल खुला तबसे अवतक मुझे उस स्कूलके लिए कितने ही दान लेनेका अवसर मिला है, परन्तु इस वृद्धाके दानसे मेरे अन्त करणमें करुणाका जैसा कुछ भाव उठा उसका अनुभव फिर कभी न हुआ।

नवाँ परिच्छेद।

घोर चिन्ताके दिन।

टुस्केजामा रियासतमे आकर रहने पर बडे दिनोंमे मुझे वहाँके लोगोंके रहन सहनका वास्तविक परिचय पानेके लिए और भी अधिक अच्छा अवसर मिला। बडे दिनोंका जलसा आरभ होनेसे एक रोज पहले ही शहरके बालक दल बाँधकर, घरघर घूमकर, बडे दिनोका उपहार माँगते फिरते थे। उस दिन दो बजे रातसे शामके पाँच बजेतकके बीचमे कमसे कम पचास टोलियाँ हमारे यहाँ उपहार माँगने आई होंगी। दक्षिण प्रान्तके इस भागमें अब भी यह रिवाज चला जाता है।

गुलामीके दिनोंमें, प्राय सभी दक्षिणी रियासतोंमे बडे दिनोके अवसर पर काले लोगोंको पूरे एक सप्ताहकी छुट्टी मिला करती थी। इस छुट्टीभर सभी बाँधुए रूप शरावके नशेमें चूर रहते थे। बडे दिनका त्योहार आरभ होनेसे एक रोज पहले ही इन लोगों पर दिवालीका रग चढ जाता था और उसी दिनसे ये लोग सब काम धन्धा छोडकर मारे खुशीके मतवाले हो जाते थे, यहाँ तक कि बडे दिनोंमें एक भी काला आदमी किसी तरहका काम करनेके लिए राजी न होता था। जो लोग वर्ष भरमें कभी शरावको छूते तक न थे वे भी इन दिनों बोतल पर बोतल बेखटके चढा जाते थे। लोग मस्त हो कर आनन्द करते और खूब शिकार खेलते थे। इस तरह बडे दिनोंका पवित्रताको लोग एकदम भूलने गये थे।

पहले वर्षके बड़े दिनोंमें मैं टस्केजीके बाहर एक बड़ा गाँव देख गया। ऐसे पवित्र और आनन्द देनेवाले त्योहारमें इन कंगाल और गवाँर भाइयोंको मौजके सामान जुटाते हुए देखकर मुझे दया आती थी। एक झोपड़ीमें जाकर देखा कि पाँच लड़के थोड़ेसे पटाके आपसमें बाँट रहे थे। एक दूसरी झोपड़ीमें ६-७ आदमी थे जिनके पास पाँच आने मूल्यकी अदरकी चपातियाँ थीं। एक परिवारमें थोड़ेसे गन्ने ही थे। एक स्थान पर एक पादरी महाशय अपनी स्त्रीके साथ बैठे शराब चढ़ा रहे थे। एक जगह नोटिसके रंगीन कार्डोंको ही काले लोग बड़े कुतूहलसे देख रहे थे। एक जगह एक नया तमचा खरीदा गया था। उत्सवकी और कोई खास बात नहीं दिखाई दी, इसके सिवाय कि सब लोग काम-धाम छोड़कर अपनी अपनी झोपड़ीमें स्वर्ग देखा करते या इधर उधर व्यर्थ घूमा करते थे। रातके वक्त वे एक तरहका जंगली नाच नाचते थे और शराब पीकर पिस्तौल और दूसरे हथियार लेकर दंगा-फसाद किया करते थे।

इसी समय मुझे एक बूढ़ा नीग्रो उपदेशक मिला। उसने बाबा आदमका किस्सा कह कर मुझे यह समझाना चाहा कि परमेश्वर उद्योगसे अप्रसन्न होता है और इस लिए उद्योग करना बड़ा भारी पाप है। इसी लिए यह बूढ़ा जहाँ तक होता, कामसे भागता था। बड़े दिनोंमें कामके पापसे बचे रहनेके कारण यह बहुत ही प्रसन्न मालूम होता था।

हम लोगोंने अपने स्कूलके लड़कोंको बड़े दिनोंका महत्त्व और उन्हें मनानेकी रीति समझानेका बहुत प्रयत्न किया। इसका परिणाम भी विद्यार्थियों पर अच्छा हुआ और मैं यह भी कह सकता हूँ कि जहाँ जहाँ हमारे ग्रेज्युएट विद्यार्थी हैं वहाँ वहाँ उन्होंने इस बड़े दिनोंके त्योहार पर एक नई रोशनी डाल दी है।

अब बड़े दिनोंमें हमारे विद्यार्थी वह आनन्द मनाते हैं जिससे अनाथ और अभागे लोग मदद पाकर सन्तुष्ट होते हैं। एक बार हमारे विद्यार्थियोंने अपनी यह छुट्टी एक पचहत्तर वर्षकी बुढ़ियाके लिए एक झोपड़ी बना देनेमें खर्च कर दी। एक दूसरे अवसर पर मैंने गिरजेमें कहा था कि एक अनाथ विद्यार्थी कोट न होनेके कारण जाड़ेसे बहुत कष्ट पा रहा है। दूसरे ही दिन मेरे पास उस विद्यार्थीके लिए दो कोट आ गये।

मैं कह ही चुका हूँ कि टस्केजी और आसपासके गोरे लोग इस स्कूलकी मदद किया चाहते थे। मैं भी सदा इस बातकी चेष्टा किया करता था कि यह

विद्यालय सर्वप्रिय हो—कोई भी इसे पराये लोगोंकी संस्था न समझे । मैंने
विद्यालय-भवनके लिए काले-गोरोंसे गजसे चन्देकी प्रार्थना की थी । इस प्राय
नासे ही उनमें विद्यालयके सम्बन्धमें एक प्रकारका आत्मीय भाव उत्पन्न हो गया
था—वे इस बातको समझने लगे थे कि विद्यालयसे हमारा भी कुछ नेह और
नाता है ।

सर्व साधारणको यह समझानेकी चेष्टा की गई कि यह विद्यालय आपका है।
आप सब लोग इसकी सहायता कीजिए । इसके साथ ही विद्यालयसे होनेवाले
लाभ उन्हे बतलाये गये । तब सभी लोग विद्यालयके पक्षमें हो गये ।

यहाँ मै यह भी कहना चाहता हूँ—इसका सुबूत भी आगे चलकर दूँगा—कि
इस समय टस्केजी-विद्यालयकी मदद करनेवालोंमें टस्केजी, अलबामा और
समस्त दक्षिणके गोरे अधिवासियोंके बराबर मदद करनेवाला कोई नहीं है।
शुरूसे ही मै अपने भाइयोंको यह नसीहत देता आया हूँ कि काले गोरेका ख्याल
न कर अपने पड़ोसियोंको, किसी प्रकारकी गाठ न रखकर शुद्ध हृदयसे, अपने
मित्र बना लो । मैने उन्हें यह भी बतलाया है कि किसी प्रश्नके बारेमें या निर्वा
चनके सबधमें सम्मति देते हुए स्थानीय हिताहितका विचार करके—न कि
किसी जातिका विरोध करनेके लिए—अपने मित्रोंको वोट देनेकी सलाह देनी
चाहिए ।

स्कूलके लिए खरीदी हुई भूमिका ऋण चुकानेके हेतु लगातार कई महीने तक
उद्योग होता रहा । तीन महीनोंमें जनरल मार्शलका ऋण चुकाने योग्य धन
इकट्ठा हो गया फिर और दो महीने परिश्रम करनेसे पूरे पाँच सौ डालर जमा
हो गये । इससे हमारे नाम सौ एकड जमीनका कागज हो गया । अब हम
लोगोंको बड़ा सन्तोष हुआ । सतोष केवल इसी बातका न था कि स्कूलकी एक
जगह हो गई, किन्तु सबसे अधिक सन्तोषका विषय यह था कि इस
अधिक अंश टस्केजीके ही गोरे और काले लोगोंसे सग्रह किया गया
प्राय मेलों, जलसों, बैठकों और छोटे छोटे फुटकर दानोंसे यह सग्रह
था ।

...न एकत्र कर चुकने पर हम लोगोंने खेती बारीके काममें हाथ लगाया
... दो लाभ होनेवाले थे । एक तो स्कूलके लिए कुछ बँधी आमदनी
...। और दूसरे छात्रोंको भी कृषिकर्म्मकी शिक्षा मिल जाती । टस्केजी-स्कूल
धन्धे लोगोंकी असली आवश्यकताओंकी पूर्त्ति करनेके लिए ही, सम

और साधनके अनुसार आरंभ किये गये हैं। आरंभ खेतीसे ही किया गया, क्योंकि सबसे पहले पेटकी चिन्ता दूर करनेका प्रयत्न होना चाहिए।

बहुतसे विद्यार्थी स्कूलमें भरती होकर अधिक दिन ठहर नहीं सकते थे, क्योंकि भोजन-खर्चके लिए उनके पास पैसा नहीं रहता था। ऐसे विद्यार्थियोंको सालमें नौ महीने विद्यालयमें रह सकने योग्य बनानेके लिए ही औद्योगिक शिक्षाकी तजवीज करनेकी आवश्यकता हुई।

टस्केजी-विद्यालयको सबसे पहले जो पशु मिला वह एक गोरे आदमीका दिया हुआ एक अन्धा और बूढ़ा घोड़ा था। आज यहाँ दो सौसे अधिक घोड़े, खच्चर, गायें, बैल, बछड़े और अनुमान सातसौ सूअर और बहुतसी भेड़-बकरियाँ हैं।

जब भूमिका ऋण चुका दिया गया, खेती आरंभ हो गई और पुराने मकानोंकी मरम्मत हो चुकी तब हम लोगोंने विद्यालयके लिए एक नया भवन बनाना आवश्यक समझा, क्योंकि विद्यार्थियोंकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। हम लोगोंने बहुत सोच समझ कर भावी भवनका नकशा तैयार किया और हिसाब लगा कर देखा कि इसमें छः हजार डालर लगेंगे। इतनी बड़ी रकम कहाँसे मिले? पर हम यह जानते थे कि दोमेंसे एक बात अवश्य होगी—या तो स्कूल उन्नति करके आगे बढ़ेगा या पीछे हट जायगा। यदि आगे बढ़ना है तो विद्यार्थियोंके लिए स्थानका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा, क्योंकि यदि हम लोग विद्यार्थियोंकी रहन सहन पर पूरी निगरानी न रख सकें तो हम लोगोंके सारे परिश्रमों पर पानी फिर जायगा और वह निगरानी स्थानका यथेष्ट प्रबन्ध हुए बिना हो नहीं सकती।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे मुझे बड़ा सन्तोष और साथ साथ आश्चर्य भी हुआ। जब नगरनिवासियोंको यह बात मालूम हुई कि हम लोग एक नया भवन बनानेकी फिक्रमें हैं तब एक लकड़ीके कारखानेका गोरा मालिक मेरे पास आया और कहने लगा—"भवनके लिए लकड़ीका जितना सामान लगेगा वह सब मैं यहाँ लाकर रखा किये देता हूँ। उसका मूल्य मैं अभी नहीं चाहता। जिस समय आपके हाथ रुपया आ जाय उस समय दे दीजियेगा। इसके सिवाय मैं आपकी कोई गारंटी या स्वीकारता नहीं चाहता कि रुपया आने पर मुझे दे दिया जायगा।" मैंने साफ साफ कह दिया कि मेरे पास इस वक्त एक पैसा भी नहीं है। इस पर भी वह यही कहता रहा कि "लकड़ी

विद्यालय सर्वप्रिय हो—कोई भी इसे पराये लोगोंकी संस्था न समझे। मैंने विद्यालय-भवनके लिए काले-गोरोंसे सबसे चन्देकी प्रार्थना की थी। इस प्रार्थनासे ही उनमें विद्यालयके सबधमें एक प्रकारका आत्मीय भाव प्रत्यक्ष हो गया था—वे इस बातको समझने लगे थे कि विद्यालयसे हमारा भी कुछ नेह और नाता है।

सर्व साधारणको यह समझानेकी चेष्टा की गई कि यह विद्यालय आपका है। आप सब लोग इसकी सहायता कीजिए। इसके साथ ही विद्यालयसे होनेवाले लाभ उन्हें बतलाये गये। तब सभी लोग विद्यालयके पक्षमें हो गये।

यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ—इसका सुबूत भी आगे चलकर दूँगा—कि इस समय टस्केजी-विद्यालयकी मदद करनेवालोंमें टस्केजी, अलबामा और समस्त दक्षिणके गोरे अधिवासियोंके बराबर मदद करनेवाला कोई नहीं है। शुरूसे ही मैं अपने भाइयोंको यह नसीहत देता आया हूँ कि काले गोरेका ख्याल न कर अपने पड़ोसियोंको, किसी प्रकारकी गाँठ न रखकर शुद्ध हृदयसे, अपने मित्र बना लो। मैंने उन्हें यह भी बतलाया है कि किसी प्रश्नके बारेमें या निर्वाचनके सबधमें सम्मति देते हुए स्थानीय हिताहितका विचार करके—न कि किसी जातिका विरोध करनेके लिए—अपने मित्रोंको वोट देनेकी सलाह देनी चाहिए।

स्कूलके लिए खरीदी हुई भूमिका ऋण चुकानेके हेतु लगातार कई महीने तक उद्योग होता रहा। तीन महीनोंमें जनरल मार्शलका ऋण चुकाने योग्य धन इकट्ठा हो गया फिर और दो महीने परिश्रम करनेसे पूरे पाँच सौ डालर जमा हो गये। इससे हमारे नाम सौ एकड़ जमीनका कागज हो गया। अब हम लोगोंको बड़ा सन्तोष हुआ। सतोष केवल इसी बातका न था कि स्कूलकी एक निजी जगह हो गई, किन्तु सबसे अधिक सन्तोषका विषय यह था कि इस धनका अधिक अंश टस्केजीके ही गोरे और काले लोगोंसे सग्रह किया गया था। प्राय मेलों, जलसों, बैठकों और छोटे छोटे फुटकर दानोंसे यह सग्रह हुआ था।

धन एकत्र कर चुकने पर हम लोगोंने खेती बारीके काममें हाथ लगाया। इससे दो लाभ होनेवाले थे। एक तो स्कूलके लिए कुछ बँधी आमदनी हो जाती और दूसरे छात्रोंको भी कृषिकर्मकी शिक्षा मिल जाती। टस्केजी-स्कूलके सभी काम धन्धे लोगोंकी असली आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके लिए ही, समय

और साधनके अनुसार आरंभ किये गये हैं। आरंभ खेतीसे ही किया गया, क्योंकि सबसे पहले पेटकी चिन्ता दूर करनेका प्रयत्न होना चाहिए।

बहुतसे विद्यार्थी स्कूलमें भरती होकर अधिक दिन ठहर नहीं सकते थे, क्योंकि भोजन-खर्चके लिए उनके पास पैसा नहीं रहता था। ऐसे विद्यार्थियोंको सालमें नौ महीने विद्यालयमें रह सकने योग्य बनानेके लिए ही औद्योगिक शिक्षाकी तजवीज करनेकी आवश्यकता हुई।

टस्केजी-विद्यालयको सबसे पहले जो पशु मिला वह एक गोरे आदमीका दिया हुआ एक अन्धा और बूढ़ा घोड़ा था। आज यहाँ दो सौसे अधिक घोड़े, खच्चर, गायें, बैल, बछड़े और अनुमान सात सौ सूअर और बहुतसी भेड़-बकरियाँ हैं।

जब भूमिका ऋण चुका दिया गया, खेती आरंभ हो गई और पुराने कमरोंकी मरम्मत हो चुकी तब हम लोगोंने विद्यालयके लिए एक नया भवन बनवाना आवश्यक समझा, क्योंकि विद्यार्थियोंकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। हम लोगोंने बहुत सोच समझ कर भावी भवनका नकशा तैयार किया और हिसाब लगा कर देखा कि इसमें छ हजार डालर लगेंगे। इतनी बड़ी रकम कहाँसे मिले? पर हम यह जानते थे कि दोमेंसे एक बात अवश्य होगी—या तो स्कूल उन्नति करके आगे बढ़ेगा या पीछे हट जायगा। यदि आगे बढ़ना है तो विद्यार्थियोंके लिए स्थानका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा, क्योंकि यदि हम लोग विद्यार्थियोंकी रहन सहन पर पूरी निगरानी न रख सकें तो हम लोगोंके सारे परिश्रमों पर पानी फिर जायगा और यह निगरानी स्थानका यथेष्ट प्रबन्ध हुए बिना हो नहीं सकती।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे मुझे बड़ा सन्तोष और साथ साथ आश्चर्य भी हुआ। जब नगरनिवासियोंको यह बात मालूम हुई कि हम लोग एक नया भवन बनवानेकी फिक्रमें हैं तब एक लकड़ीके कारखानेका गोरा मालिक मेरे पास आया और कहने लगा—"भवनके लिए लकड़ीका जितना सामान लगेगा वह सब मैं यहाँ लाकर खड़ा किये देता हूँ। उसका मूल्य मैं अभी नहीं चाहता। जिस समय आपके हाथ रुपया आजाय उस समय दे दीजिएगा। इसके सिवाय मैं आपकी कोई गारंटी या स्वीकारता नहीं चाहता कि रुपया आने पर मुझे दे दिया जायगा।" मैंने साफ साफ कह दिया कि मेरे पास इस वक्त एक पैसा भी नहीं है। इस पर भी वह यही कहता रहा कि "लकड़ा लाकर

मैं यहाँ रखवा देता हूँ।" पर मैंने उसे ऐसा करनेसे रोका और जब मेरे हाथ कुछ रुपया आ गया तब लकड़ी लाने दी।

अब फिर मिस डेविड्सनने काले-गोरे दोनोंसे चन्दा लेना आरम्भ किया। इस नये भवनके समाचारसे नीग्रो लोगोंको जो आनन्द हुआ मैंने नहीं देखा कि दूसरे लोगोंको कभी किसी बातसे ऐसा आनन्द हुआ हो। एक रोज इमारतके लिए धन किस तरह संग्रह किया जाय इस विषयमें विचार करनेको एक सभा हो रही थी। उसमें बारह मीलसे चल कर एक बूढ़ा नीग्रो आया जो अपने साथ बैलगाड़ी पर एक बड़ा सूअर लाया था। भरी सभामें खड़े होकर उसने कहा, "मैं निर्धन हूँ, इस लिए धन नहीं दे सकता। पर भवनके व्ययके अर्थ मैं यह सूअर देता हूँ। मुझे आशा है कि जिन लोगोंको अपनी बिरादरीसे प्रेम है और जिनमें कुछ भी स्वाभिमान है, वे अगली सभामें एक एक सूअर अवश्य दान करेंगे।" इस सभामें और कितने ही लोगोंने प्रतिज्ञा की कि इमारतके लिए हम अपनी कमाईके कुछ दिन अर्पण कर देंगे।

जब इस प्रान्तसे पूरा चन्दा उतर चुका तब, मिस डेविड्सनने विशेष धन संग्रह करनेके लिए उत्तरकी ओर जाना निश्चय किया। कुछ सप्ताहों तक वे लोगोंसे मिलती जुलती रहीं और पाठशालाओं, गिरजों तथा अन्य सभा-समितियोंमें व्याख्यान देती रहीं। चन्दा करनेमें उन्हें बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ी, क्योंकि [illegible] इस ओर नहीं हुई थी। तथापि मिस डेविड्सनको वहाँके बड़े बड़े आदमियोंका चित्त अपनी संस्थाकी ओर आकर्षित करनेमें बहुत विलम्ब नहीं लगा। मिस डेविड्सन जिस नाव (अगन बोट) पर सवार होकर उत्तर [illegible] जा रही उसी नाव पर [illegible]

चलाती थीं। उनमें शारीरिक बल अधिक नहीं था पर विद्यालयके लिए दिन रात परिश्रम करते रहनेमें ही उन्हें आनन्द मिलता था। धन-संग्रह करनेके लिए घर घर घूमकर वे इतनी थक जाती थीं कि रातको अपने कपड़े उतारना भी उनकी सामर्थ्यके बाहरका काम हो जाता था। बोस्टनमें एक महिलासे ये मिली थीं। उस महिलाने मुझसे कहा—"जब मिस डेविड्सन मुझसे मिलने आईं तब मैं किसी काममें फँसी थी, इस लिए मैंने उनसे कुछ समय तक ठहरनेके लिए कहा। थोड़ी देर बाद जब मैं बाहरके कमरेमें आई तो देखा कि उन्हें थकावटसे नींद आ गई है।"

सबसे पहले, मिस्टर ए एच पोर्टर नामक एक सज्जनके नाम पर—जिन्होंने एक बहुत बड़ी रकम दी थी—'पोर्टर हाल' नामका भवन बनाया गया। जिन दिनों इस भवनका काम चल रहा था उस समय रुपयेकी बड़ी तंगी मालूम हुई। एक साहूकारसे मैंने वादा किया था कि अमुक दिन चार सौ डालर आपको दूँगा, पर उस दिन सबेरे मेरे पास एक पैसा भी न था। जब दस बजे डाक आई तब उसमें मिस डेविड्सनका भेजा हुआ पूरे चार सौ डालरका एक चेक

में यहां रखवा देता हूँ।" पर मैंने उन्हें ऐसा करनेसे रोका और जब मेरे पास कुछ रुपया आ गया तब लकडी लाने दी।

अब फिर मिस डेविड्सनने काले-गोरे दोनोंसे चन्दा लेना आरंभ किया। इस नये भवनके समाचारसे नीग्रो लोगोंको जो आनन्द हुआ मैंने नहीं देखा कि दूसरे लोगोंको कभी किसी बातसे वैसा आनन्द हुआ हो। एक रोज इमारतके लिए धन किस तरह संग्रह किया जाय इस विषयमें विचार करनेको एक सभा हो रही थी। उसमें बारह मीलसे चल कर एक बूढा नीग्रो आया जो अपने साथ बैलगाडी पर एक बडा सूअर लाया था। भरी सभामें खडे होकर उसने कहा, "मैं निर्धन हूँ, इस लिए धन नहीं दे सकता। पर भवनके व्ययके चन्देमें मैं यह सूअर देता हूँ। मुझे आशा है कि जिन लोगोंको अपनी बिरादरीसे प्रेम है और जिनमें कुछ भी स्वाभिमान है, वे अबकी सभामें एक-एक सूअर अवश्य दान करेंगे।" इस सभामें और कितने ही लोगोंने प्रतिज्ञा की कि इमारतफंडके लिए हम अपनी कमाईके कुछ दिन अर्पण कर देंगे।

जब टस्केजीसे पूरा चन्दा उतर चुका तब, मिस डेविड्सनने विशेष धन संग्रह करनेके लिए उत्तरकी ओर जाना निश्चय किया। कुछ सप्ताहों तक वे लोगोंसे मिलती जुलतीं रहीं और पाठशालाओं, गिरजों तथा अन्य सभा-समितियोंमें वक्तृतायें देती रहीं। चन्दा करनेमें उन्हें बडी कठिनाई झेलनी पडी, क्योंकि स्कूलकी विशेष प्रसिद्धि उस ओर नहीं हुई थी। तथापि मिस डेविड्सनको वहाँके बडे बडे लोगोंका चित्त अपनी संस्थाकी ओर आकर्षित करनेमें बहुत विलम्ब नहीं लगा। मिस डेविड्सन जिस नाव (अगन बोट) पर सवार होकर उत्तर प्रान्तकी भूमि पर उतरीं उसी नाव पर, न्यूयार्ककी एक महिलासे उनका परिचय हो गया। उत्तर प्रान्तके चन्दा देनेवालोंकी नामावलीमें इन्हींका पहला नाम है। नाव पर दोनोंमें परिचय हुआ, बातचीत शुरू हुई और टस्केजी-विद्यालयकी बात चली। टस्केजी-विद्यालयके प्रयत्नमें ये इतनी प्रसन्न हुईं कि चलते वक्त मिस डेविड्सनको पचास डालरका एक चेक देती गईं। विवाहसे पहले और इसके उपरान्त भी मिस डेविड्सनने पत्र व्यवहार करके और लोगोंसे स्वयं मिल करके भी उत्तर दक्षिणमें धन संग्रह करनेका काम बराबर जारी रक्खा। इसके साथ ही वे टस्केजी-विद्यालयकी देखरेख और अध्यापनका कार्य भी करती थीं। इसके अतिरिक्त वे टस्केजीके और आसपा[illegible] ,काम करतीं और टस्केजीमें एक रविवार-पाठशाला भी

चलाती थीं। उनमें शारीरिक बल अधिक नहीं था, पर विद्यालयके लिए दिन रात परिश्रम करते रहनेमें ही उन्हें आनन्द मिलता था। धन-संग्रह करनेके लिए घर घर घूमकर वे इतनी थक जातीं थीं कि रातको अपने कपडे उतारना भी उनकी सामर्थ्यके बाहरका काम हो जाता था। बोस्टनमें एक महिलासे ये मिली थीं। उस महिलाने मुझसे कहा—"जब मिस डेविड्सन मुझसे मिलने आईं तब मैं किसी काममें फँसी थी, इस लिए मैंने उनसे कुछ समय तक ठहरनेके लिए कहा। थोडी देर बाद जब मैं बाहरके कमरेमें आई तो देखा कि उन्हें थकावटसे नींद आ गई है।"

सबसे पहले, मिस्टर ए. एच. पोर्टर नामक एक सज्जनके नाम पर—जिन्होंने एक बहुत बडी रकम दी थी—'पोर्टर हाल' नामका भवन बनाया गया। जिन दिनों इस भवनका काम चल रहा था उस समय रुपयेकी बडी तंगी मालूम हुई। एक साहूकारसे मैंने वादा किया था कि अमुक दिन चार सौ डालर आपको दूँगा, पर उस दिन सबेरे मेरे पास एक पैसा भी न था! जब दस बजे डाक आई तब उसमें मिस डेविड्सनका भेजा हुआ पूरे चार सौ डालरका एक चेक मेरे हाथ आया! ऐसी घटनायें मेरे जीवनमें प्रायः हुई हैं। अस्तु। ये जो चार सौ डालर मिस डेविड्सनने भेजे थे सो बोस्टनकी दो महिलाओंने दिये थे। दो वर्ष बाद, जब कि टस्केजी विद्यालयका काम बहुत बढ गया था और हम-लोग धनके अभावसे भविष्यके विषयमें उदास और हताश हो रहे थे, इन्हीं दो महिलाओंने छः हजार डालर भेजकर हमारी मदद की थी। इस मददसे हम लोगोंको जो आश्चर्य हुआ और जो उत्तेजना मिली उसका वर्णन करनेका लेखनीमें सामर्थ्य नहीं। इसके उपरान्त ये ही दो स्त्रियाँ चौदह वर्षों तक बराबर छः सौ डालर अर्थात् अठारह सौ रुपया वार्षिक भेजकर विद्यालयकी सहायता करती रहीं।

पहला भवन बन चुकने पर अब दूसरा उठानेकी बारी आई। विद्यार्थी पढाई हो चुकनेके बाद प्रतिदिन नियमपूर्वक उसकी नींव खोदने लगे। अभी उन लोगोंका यह संस्कार मिटा नहीं था कि हाथसे काम करना अपना मान घटाना है। एक विद्यार्थीने एक दिन कह भी डाला था कि "हम लोग यहाँ पढने आते हैं, मजदूरी करने नहीं।" पर हाँ, धीरे धीरे यह कुसंस्कार मिटता जाता था। कुछ दिनोंके परिश्रमसे नींव तैयार हो गई और नींवका पत्थर रखनेके लिए दिन निश्चित हो गया।

दक्षिणका यह भाग गुलामगीरीका केन्द्रस्थान था। कृष्णकटिबन्धके इस स्थानमें इमारतकी नीव रख दी गई। गुलामगीरीको बन्द हुए अभी केवल १६ वर्ष हुए थे। सोलह वर्ष पहले कोई नीग्रो यदि लोगोंको पुस्तकों द्वारा शिक्षा देनेका साहस करता तो समाज और राज्य दोनों ही उस पर टूट पडते, परन्तु उस दिन उसी दासत्वके केन्द्रस्थल पर अज्ञाननाशिनी भगवती सरस्वतीके सुरम्य निकेतनकी नीव शिला बिठाई गई। सचमुच ही वह समारम्भ और वसन्तका वह प्राकृतिक सौन्दर्य अपूर्व था। ससारके शायद ही किसी स्थानको ऐसा मनोहर दृश्य देखनेका अवसर मिला हो।

इस अवसर पर उस प्रदेशके शिक्षाविभागके सुपरिंटेंडेंट आनरेबल वाडी थामसनकी मुख्य वक्तृता हुई। कोणशिलाके इर्दगिर्द प्रेक्षक, विद्यार्थी, उनके मातापिता या मित्रमडली, उस प्रदेशके गोरे अधिकारी, आसपासके मुख्य मुख्य गोरे रईस और अनेक नीग्रो स्त्रियाँ तथा पुरुष, जिन्हें कुछ वर्ष पहले ही गोरे अपने गुलाम समझते थे, एकत्रित हुए थे। दोनों ही जातियोंके लोग कोणशिलाके पास अपना कुछ न कुछ स्मारक या चिह्न रखनेके लिए बहुत ही उत्सुक दिखाई देते थे।

भवन बन चुकनेके पहले लोगोंकी कई बडी बडी कठिनाइयोंसे सामना करना पडा। बिलपर बिल आ धमकते थे और उनका रुपया चुका न सकनेके कारण हम लोग बहुत ही दुखी होते थे। जिसे इस तरहके मौके बराबर नहीं आये हैं कि स्कूलके लिए इमारतें तो बनवाना है पर यह मालूम नहीं है कि धन कहाँसे आयगा, वह हम लोगोंकी दुरवस्थाकी और अडचनोंकी पूरी पूरी कल्पना कदापि नहीं कर सकेगा। मुझे टस्केजीके वे दिन याद आते हैं जब मैंने इस फिकरमें कि धन कहाँसे लाया जाय, बिस्तरे पर करवटें बदलते हुए सारीकी सारी रातें बिता दी हैं। मैं जानता था कि यह समय मेरी जातिकी परीक्षाका है—समय इस बातको बतलावेगा कि हम नीग्रो लोगोंमें कोई स्वतन्त्र विद्यापीठ चलानेकी सामर्थ्य है या नहीं। मुझे मालूम था कि यदि इस कार्यमें मैं हारा, तो सारी जातिको इसका कुफल चखना पडेगा। मुझे यह भी विदित था कि नीग्रो जाति बदनाम है और इसलिए हमारे प्रयत्न भी 'बालू पर भीत' समझे जा रहे हैं। मैं जान चुका था कि यदि ऐसा ही कोई दुस्साध्य कार्य गोरे लोग उठा लेते तो लोगोंको उनके कामयाब होनेमें जरा भी सन्देह न रहता,

और इसके विपरीत यदि हम लोग नामयाब हुए तो लोग आश्चर्य करेंगे। इन बातोंके बोझेने हम लोगोंको बुरी तरह दबा रक्खा था।

इस दुरवस्थामें भी मैं टस्केजी नगरके जिस किसी गोरे या नीग्रो मनुष्यके पास गया उसने कुछ न कुछ सहायता अवश्य की। ऐसा एक भी मौका नहीं आया जब किसीने इंकार कर दिया हो। कई बार ऐसा हुआ कि सैकड़ों रुपयोंके बिल आये और उनका रुपया चुकानेके लिए मुझे गांवके दस पाँच सज्जनोंसे छोटी छोटी रकमें उधार लेनी पड़ीं। पर एक बातका मैं सदा ध्यान रखता था कि स्कूलकी साख रहे, और इस प्रयत्नमें मुझे बराबर सफलता प्राप्त हुई।

मि० कैम्बल जिन्होंने जनरल आर्मस्ट्रांगको लिखकर मुझे टस्केजीस्कूलके लिए बुलाया था, बड़े ही योग्य पुरुष थे। उनका एक उपदेश मैं कभी न भूलूँगा। टस्केजीका काम शुरू होने पर एक दिन उन्होंने पितृतुल्य स्नेहसे कहा था—"वाशिंगटन, यह सदा स्मरण रखना कि साख ही पूँजी है।"

एक बार धनाभावके मारे जब हमलोग बहुत ही तंग हुए तब मैंने जनरल आर्मस्ट्रांगको अपनी सारी दशा लिख भेजी। उन्होंने तत्काल ही अपनी सारी बचतका चेक मेरे पास भेजा दिया। इस प्रकारसे जनरल आर्मस्ट्रांगने टस्केजी विद्यालयकी कई बार मदद की है। यह बात शायद मैंने इससे पहले सर्वसाधारण पर जाहिर नहीं की थी।

स्कूलका प्रथम वर्ष समाप्त होने पर, १८८२ के ग्रीष्म ऋतुमें माल्डनकी मिस फैनी ए स्मिथके साथ मेरा विवाह हुआ। शरदृतुमें हम दोनों टस्केजीमें आकर एक साथ रहने लगे। स्कूलमें इस समय चार शिक्षक थे, उन्हें इसी मकानमें रहनेको जगह दी गई। मेरी सहधर्मिणी हैम्पटन विद्यालयकी ग्रेजुएट थीं। स्कूलके लिए इन्होंने भी जीतोड़ परिश्रम किया था। इनके कारण मेरा घर सदा हँसतासा देख पड़ता था। पर दुर्भाग्यवश १८८४ के मई मासमें, पोर्शिया एम वाशिंगटन नामकी एक कन्याको छोड़कर, ये सुरलोकको सिधार गईं।

आरम्भसे ही मेरी सहधर्मिणी तन, मन और धनसे विद्यालयकी सहायता करती थीं। उनके विचार और अभिलाषायें सर्वथा मेरी ही जैसी थीं, पर आशाकी कली खिलनेसे पहले ही उन्होंने इस लोकसे प्रस्थान कर दिया।

दसवाँ परिच्छेद ।

टेढ़ी खीर ।

टस्केजी-विद्यालयका आरम्भ करनेसे पहले ही मैंने यह विचार कर रक्खा था कि इस विद्यालयके द्वारा विद्यार्थियोंको खेती बारी और गृहस्थीके कामोंके अतिरिक्त, मकान बनानेका काम भी सिखलाया जायगा । ऐसा करनेमें मेरा अभिप्राय था कि इन कामोंको सिखलाते हुए विद्यार्थियोंको काम करनेकी नई पद्धतियाँ भी बतलाई जायँ जिससे उनके परिश्रमोंसे स्कूलको भी लाभ हो और उन्हें भी परिश्रमके महत्त्व, उसके उपयोग और उससे होनेवाले आनन्दका अनुभव हो । इसके सिवाय उनकी मानसिक उन्नति यहाँतक हो जाय, कि वे किसी परिश्रमको आपत्ति या कष्ट न समझ कर परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखें । हवा, जल, भाफ, बिजली और अश्वबल आदि निसर्गशक्तियोंको किसतरह उपयोगमें लाना चाहिए, इसकी शिक्षा भी मैं उन्हें देना चाहता था।

शुरू शुरूमें बहुतसे लोगोंने मुझे विद्यार्थियों द्वारा भवन बनवानेकी चेष्टासे रोक देना चाहा । पर मैं अपने विचारोंको बदलनेवाला न था । जिन लोगोंने मुझे रोका उनसे मैंने कहा-" मैं जानता हूँ कि बाहरके अनुभवी कारीगर जैसा भवन बना देंगे वैसा हमारे विद्यार्थी नहीं बना सकेंगे, पर विद्यार्थियोंके हाथों भवन बनवानेसे जो लाभ होंगे उनके सामने यह कमी किसी गिनतीमें न रह जायगी । उन्हें जो शिक्षा प्राप्त होगी, अपने बल पर खड़े होनेकी जो आदत पड़ेगी और जो आत्मविश्वास उत्पन्न होगा उसका मूल्य भवनके टीप-टॉपसे बहुत अधिक है । "

जिन लोगोंको मेरे इन विचारोंमें विश्वास न होता था उनसे मैंने यह भी कहा कि " हमारे विद्यार्थी निर्धन हैं, कपास, चावल और गन्ने बेचनेवालोंकी झोपड़ियोंमें पले हुए हैं । इसलिए यह मैं जानता हूँ कि कारीगरोंकी बनाई हुई सुन्दर हवेलीमें स्थान मिलनेसे उन्हें बड़ीभारी खुशी होगी, पर मेरा यह विश्वास है कि अपने मकान आप ही बना लेना यदि उन्हें सिखलाया जायगा तो उनके मनोविकासका मार्ग बहुत ही सुगम हो जायगा । भूल होना स्वाभाविक है, पर इन्हीं भूलोंसे वे आगेके लिए बहुमूल्य शिक्षा भी प्राप्त करेंगे । "

टस्केजीविद्यालयको स्थापित हुए बीस वर्ष हो गये । इस बीचमें इमारतें बनानेका काम विद्यार्थियों द्वारा ही हुआ है और लगभग चालीस भवन बन चुके । इनमेंसे चारको छोड़कर बाकी सब विद्यार्थियोंके परिश्रमके ही फल हैं। क्षिण प्रान्तमें इस समय ऐसे सैकड़ों आदमी फैले हुए हैं जो पहले इसी विद्यालयके विद्यार्थी थे और जिन्हें कारीगरीकी शिक्षा यहीं पर भवन बनानेके कारण मिली थी।

विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर चले जाते हैं। उनके स्थानमें नये विद्यार्थी आकर उनकी परम्परा सुरक्षित रखते हैं। इस प्रकार ज्ञान और कौशलका सिलसिला बराबर जारी रहता है और आज यहाँ तक उन्नति हुई है कि भवन बनाने में हमारे विद्यालयको किसी बाहरी कारीगर या मजदूरकी आवश्यकता नहीं होती, सब काम अर्थात् इमारतोंके नकशे खींचनेसे लेकर इमारतें तैयार होने और उनमें बिजलीकी रोशनी लगा देने तक सब तैयारियाँ हमारे विद्यालयके शिक्षक और विद्यार्थी वहींके वहीं अपने हाथों कर लेते हैं।

ऐसा होनेसे विद्यालयके भवनतकसे विद्यार्थियोंका स्नेह हो जाता है। किसी इमारतकी दीवार पर यदि कोई नया विद्यार्थी चाकू या पेन्सिलसे निशान करता हुआ दिखाई देता है तो पुराना विद्यार्थी उससे तत्काल ही कहता है—"खबरदार! ऐसा काम मत करना। यह हमारी इमारत है। इसके बनानेमें मैंने सहायता की है।" इस प्रकारके शब्द मैंने स्वयं कई बार सुने हैं।

विद्यालयके शुरू दिनोंमें हम लोगोंको ईंट बनानेके काममें बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ी। जब खेती बारीका काम चल निकला तब हम लोगोंने ईंटें बनानेका विचार किया। अपनी इमारतोंके लिए तो ईंटोंकी जरूरत थी ही, इसके अतिरिक्त और भी एक कारण था। टस्केजीमें ईंटें बनानेका कारखाना एक भी न था और इससे वहाँ भी ईंटोंकी बड़ी माँग थी। हमारे पास न तो धन था और न इस कामका अनुभव ही था। तो भी हमने यह कठिन कार्य हाथमें लिया।

ईंटें बनानेका काम गन्दा और कठिन है, इस कारण इसमें विद्यार्थियोंकी सहायता लेना जरा टेढ़ी खीर थी। जब वे ईंटें बनानेके काममें लगाये गये तब बहुत घबराये और शारीरिक परिश्रमसे उनका जी हटने लगा। घुटनों घुटनों तक कीचड़ और कीचड़में खड़े होकर घण्टों काम करना किसीको भी पसन्द न आता। बहुतसे विद्यार्थी तो कामसे घबराकर विद्यालय छोड़ गये।

कई जगहें देखभाल कर अन्तमें एक स्थान पर मिट्टीके लिए गड्ढा खोदा गया। अबतक मेरी यह धारणा थी कि ईंटें बनानेका काम सुगम है, पर जब काम पड़ा तब मालूम हुआ कि इस काममें भी विशेषकर ईंटें पकानेमें, बुद्धि और कौशलकी आवश्यकता है। बड़े परिश्रमसे हम लोगोंने पचीस हजार ईंटें तैयार करके पजावेमें पकानेके लिए रक्खीं। पजावा दुरुस्त न होनेसे हो, या काफी आग न होनेसे हो, हमारी पहली कोशिश तो बिलकुल ही व्यर्थ गई। इसके बाद हमने दूसरा पजावा तैयार किया। यह प्रयत्न भी खाली गया। इससे विद्यार्थी भी पीछे हटे। तीसरी बार इस विषयकी शिक्षा पाये हुए अनेक अध्यापकोंने बड़े परिश्रम और उद्योगसे फिर पजावा लगाया। ईंटें पकनेके लिए एक सप्ताह लगता था। चार पाँच दिन बीत गये और हम लोगोंको यह आशा हुई कि अब शीघ्र ही बहुतसी ईंटें तैयार मिल जायँगी, पर एक दिन आधी रातके समय अकस्मात् पजावा खिसक पड़ा और हमारे सारे परिश्रमों पर पानी फिर गया।

अब चौथी बार पजावा लगानेके लिए मेरे पास एक डालर भी न बचा। मेरे साथी शिक्षकोंने ईंटें बनानेका विचार छोड़ देनेके लिए मुझसे अनुरोध भी किया। इसी बीच मुझे अपनी एक पुरानी घड़ीका स्मरण हुआ। मैं समीप ही माटगोमरी नगरमें गया और वहाँ इसे रेहन रखकर फिर पजावा लगानेके लिए पन्द्रह रुपये ले आया। इन पन्द्रह रुपयोंके बल पर मैंने अपने निराश साथियोंमें फिर उत्साह उत्पन्न किया और चौथा पजावा फिर लगा दिया। मुझे यह बतलाते हुए आनन्द होता है कि इस बार मेरी ईंटें भलीभाँति पक गईं। इसके बाद जब तक मेरे पास धन आया तब तक उस घड़ीके रेहनकी मियाद गुजर गई और मैं घड़ी छुड़ा न सका, पर मुझे इसके लिए कभी दुःख न हुआ।

अब हमारे यहाँ ईंटोंका कारखाना भी शिल्पविभागका एक विशेष अंग हो गया है। इसमें विद्यार्थियों द्वारा जो ईंटें तैयार होती हैं वे चाहे जैसे बाजारमें खप सकती हैं। इसके अतिरिक्त, हाथोंसे और यन्त्रोंकी सहायतासे ईंटें तैयार करनेके काममें कितने ही युवक अच्छी जानकारी रखते हैं और उन्होंने दक्षिणके कई हिस्सोंमें यह व्यवसाय जारी कर दिया है।

ईंटोंके कामसे मैंने गोरों और कालोंके सबंधके विषयमें एक नई बात सीखी। हमारे विद्यालयकी बनी हुई ईंटें बहुत बढ़ियाँ होती थीं, इस लिए विद्यालयसे कोई सरोकार न रखनेवाले गोरे भी उन्हें खरीदने लगे। उ

मे यह बात भी बैठ गई कि विद्यालयकी बदौलत समाजके एक बडे भारी ावकी पूर्ति हो रही है। वे यह भी समझने लगे कि नीग्रो शिक्षा पाकर म्मे नहीं हो जाते, बल्कि उनसे समाजके गुण और वैभवकी वृद्धि होती आसपासके लोग ईंटें खरीदनेके लिए आने लगे, इससे उनसे हमारी जान चान बढी और आपसमें लेन देन भी शुरू हो गया। दक्षिण प्रान्तके इस स्सेमें हम लोगोंमे जो कुछ अच्छापन दिखाई देता है उसकी जड जमानेमें ंका विज्ञानने बडी भारी मदद की है।

दक्षिणमें जहां जहां हमारे ईंटें बनानेवाले विद्यार्थी गये हैं वहाँ वहाँ उन्होंने ाजका कुछ न कुछ उपकार करके उसे अपना कृतज्ञ बनाया है। इस प्रकारसे नों जातियोंमें परस्पर अच्छा सम्बन्ध स्थापित हुआ है।

मनुष्यकी प्रकृतिमें कोई ऐसी बात अवश्य है जिससे वह गुणोंको—फिर वे ग किसी वर्णके मनुष्यके क्यों न हों—परख कर उनकी कदर करता है। मैंने ह भी अनुभव किया है कि बकबकसे कोई काम नहीं होता, जो कुछ होता है, यक्ष कार्यसे होता है। नीग्रो लोगोंके विषयमें ही देखिए। उदाहरणार्थ, किसी ग्रोकी बनाई हुई एक बहुत अच्छी इमारत है। ऐसी इमारत नीग्रो आदमी ा सकता है या नहीं, बनावे तो कैसे बना सकता है, इत्यादि बातों पर एक च दिन डालनेसे भी जो काम न होगा, वह उस इमारतके देखनेसे हो ायगा।

टस्केजी विद्यालयमें कई प्रकारकी गाडियाँ भी बनती हैं। खेतीके कामोंके लिए और खास विद्यालयके लिए हम इन गाडियोंसे काम लेते हैं। ये सब गाडियाँ स्वयं विद्यार्थियोंके हाथोंकी बनाई हुई हैं। हमारे यहाँ जो गाडियाँ तैयार होती हैं वे बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इन गाडियोंने भी ईंटोंकी तरह सर्व साधारणको मोह लिया है और गाडीका काम सीखे हुए विद्यार्थी जहाँ कहीं गये हैं वहाँ वे दोनों जातियोंके सम्मानभाजन हुए हैं। जिस समाजसे हमारे विद्यार्थियोंका सम्बन्ध हो जाता है वह समाज फिर उसे अपने गलेका हार बना लेता है।

जो मनुष्य दूसरोंकी आवश्यकतायें पूरी कर सकता है, वह, चाहे किसी जातिका हो, ऊपरीचढीमें बाजी मार ही ले जायगा। किसी भाषा विशेषमें पारंगत होकर यदि कोई मनुष्य किसी समाजमें प्रवेश करे तो वहाँ उसकी क्या कदर

होगी ? हॉ, ईंटे, घर और गाडियोंका काम जाननेवालेकी कदर जरूर होगी। बात यह है कि जिस मनुष्यकी सहायतासे समाजका कोई अभाव पूरा होता है समाज उसीका आदर करता है।

ईंटे पकानेमे जब हम लोगोंको पहली बार कामयाबी हुई, तब हम लोगों यह काम विद्यार्थियोंको सिखलानेके लिए और भी अधिक जोर दिया। इस तक आसपासके गॉवोंमे और नगरोंमे यह बात प्रसिद्ध हो चुकी थी कि टस्केजी विद्यालयमें प्रत्येक विद्यार्थीको कोई न कोई शिल्पव्यवसाय या धन्धा सिखलाया जाता है, चाहे वह विद्यार्थी अमीर हो या गरीब। इस पर कई विद्यार्थियों मातापिताओंने चिट्ठियाँ भेजकर बडा विरोध किया और कुछ तो विरोध करने लिए स्वय ही चले आये। नये भरती होनेवाले विद्यार्थियोंके मातापिताओंने किसी न किसी रूपमे यह प्रार्थना की कि हमारे लडकोंको सिवाय पुस्तकें पढ़ानेके और कुछ भी न सिखलाया जाय। पढाईमे बडी बडी पुस्तकोंके ढेर उनके बडे बडे नाम देखकर ही विद्यार्थी और उनके माता पिता प्रसन्न होते

मैंने इस विरोध पर कुछ भी ध्यान न दिया। पर हॉ, जब कभी समय मिल जाता था, प्रदेशके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जाकर विद्यार्थियोंके अभिभावकोंको शिल्पशिक्षाका महत्त्व और उससे होनेवाले लाभोंका परिचय करा देनेमे चूकता नहीं था। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियोंको भी समय समय पर इसकी महत्ता बतला दिया करता था। शुरू शुरूमें शिल्पशिक्षासे लोगोंके हृदयमें एक प्रकारका तिरस्कार था, फिर भी विद्यार्थियोंकी सख्या बढती ही जाती थी, यहाँ तक कि दूसरे वर्ष छ महीनोंके भीतर ही अल्बामाके भिन्न भिन्न भागों और दूसरे राज्योंसे आये हुए विद्यार्थियोंकी सख्या डेढ सौ पर पहुँच गई थी।

सन् १८८२ के ग्रीष्मकालमे मै अपने साथ मिस डेविड्सनको लेकर भवनके लिए धनसग्रह करनेके अभिप्रायसे उत्तरकी ओर गया। रास्तेमें मैं न्यूयार्क नगरमे अपने एक पुराने मुलाकाती पादरीसे एक सिफारिशी चिट्ठी लेनेके लिए ठहरा। परन्तु इस भले आदमीने चिट्ठी देना तो दूर रहा, उलटा मुझे समझा देना चाहा कि मै अपने घरका रास्ता लूँ, धनसग्रह करनेके बखेडेमें न पडूँ क्योंकि ऐसा करनेसे लेनेके देने पडेंगे—राहखर्च भी न मिलेगा। इस उपदेशके लिए मैने उसे धन्यवाद दिया और अपना रास्ता लिया।

पहला मुकाम नार्थम्प्टनमें हुआ। होटलवाले तो मुझे ठहरने न देंगे आसपाससे मैंने आधा दिन किसी ऐसे नीग्रो कुटुम्बको ढूँढनेमें बिताया जि

,यहाँ ठहरनेका आर भोजनका सुभीता हो जाय। पीछे मुझे मालूम हुआ कि यदि मैं एक होटलमें चाहता तो ठहर सकता था। इससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

धन तो यथेष्ट मिला, और इसी लिए भवन पूरा तैयार न होने पर भी इस .नमें ' धन्यवाद-पर्व ' पर हम लोगोंने पोर्टर-हालके ही भजनमन्दिरमें पहली ईशस्तुति और प्रार्थना की। इस अवसरपर 'धन्यवाद-मन्त्र' पढ़नेके लिए भी एक अत्युत्तम व्यक्ति जिनका नाम पादरी रावर्ट सी बेडफोर्ड है, मिल गये। ये विसकान्सिनके रहनेवाले एक गोरे आदमी ह और उस वक्त माटगोमरी राज्यके काले गिरजेमें धर्मोपदेशक थे। इससे पहले मैंने कभी इनका नाम भी न सुना था और मिस्टर बेडफोर्ड भी मुझसे इतने ही अपरिचित थे। इन्होंने टस्केजीमें आना और ' धन्यवाद-पर्व ' पर उपदेश देना बड़े आनन्दसे स्वीकार किया। अभीष्ट सिद्धि होनेपर इस प्रकार ईश्वरको धन्यवाद देनेकी प्रथा गोरोंमें तो प्रचलित थी, परन्तु नीग्रो लोगोंके लिए यह एक बिलकुल नई बात थी। -स अवसर पर उपस्थित लोगोंमें अपूर्व उत्साह देख पड़ता था। नये भवनका वह दृश्य, वह उपासनाकार्य और वह दिन लोगोंको भूलनेवाला नहीं।

मिस्टर बेडफोर्डने विद्यालयका ट्रस्टी होना भी स्वीकार कर लिया। अब वे उसी नातेसे और अन्य प्रकारसे भी वे विद्यालयकी बराबर सहायता कर रहे हैं। विद्यालयकी उन्नतिका उन्हें सदा ही ध्यान रहता ह। वे विद्यालयके लिए, चाहे कैसा ही मामूली काम क्यों न हो, करके बड़े प्रसन्न होते ह। वे हर बातमें अपनेको एकदम भूल जाते हैं, और जिस कामसे लोग किनारा कसते हैं उसे वे बढ़कर कर डालते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वे सत्य मार्ग पर चलनेवाले एक अलौकिक महात्मा हैं।

कुछ दिनोंके उपरान्त हमारे विद्यालयमें एक नवीन व्यक्तिने प्रवेश किया। ये हैम्पटन-विद्यालयसे हाल ही उत्तीर्ण होकर निकले थे। इनके कारण टस्केजी-विद्यालयने बड़ी उन्नति की है। इनका नाम मिस्टर लोगन है। ये सत्रह वर्षसे विद्यालयके कोषाध्यक्ष हैं और मेरी अनुपस्थितिमें प्रिन्सिपलका कार्य भी करते हैं। ये इतने स्वार्थत्यागी हैं, कामधन्धेमें इतने चतुर हैं, और इनकी बुद्धि भी ऐसी तीव्र है कि इनके कारण मुझे और कामोंसे बाहर जानेके लिए बहुत अवकाश मिलता है—मेरी अनुपस्थितिमें कोई काम न कभी रुका है और न

कभी बिगडा ही है। अनेक अवसरों पर धनाभावके कारण विद्यालयको अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पडी है, पर मि० लोगनने कभी हिम्मत नहीं हारी।

पहला भवन बनकर तैयार हुआ ही चाहता था कि हम लोगोंने दूसरे वर्षके मध्यमें, विद्यार्थियोंके लिए भोजनगृह खोल दिया। दूर दूरसे अनेक विद्यार्थी आते थे, इसलिए उनके भोजन निवास आदिका प्रबन्ध करना आवश्यक था। विद्यार्थियोंकी संख्या इतनी बढने लगी कि उनकी भीतरी स्थितियोंकी तथा रहन-सहनकी पूरी पूरी देखभाल रखना कठिन हो गया और यह देखकर हम लोग बहुत दुखी हुए।

भोजनगृह खोलनेके लिए हमारे पास विद्यार्थी और उनकी क्षुधाके अतिरिक्त और कोई साधन न था। नये भवनमें रसोई और भोजन आदिके लिए कोई स्थान न बना था। इस लिए भवनके नीचेकी भूमि खोद कर इस कामके लिए स्थान निकालनेका विचार किया गया। विद्यार्थियोंने भूमि खोदनेमें बहुत सहायता दी, जिससे शीघ्र ही रसोई और भोजन आदिके लिए स्थानका किसी कदर प्रबन्ध हो गया। पर अब इसी स्थानका इतना परिवर्तन हो गया है कि देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि कभी यह रसोईघर था।

अब और एक पेचीदा मामला आ पडा। भोजनका सामान खरीदनेके लिए धन बिलकुल न था। इस पर गाँवके कुछ व्यापारी हम लोगोंको खाद्य पदार्थ उधार देनेके लिए तैयार हुए। मुझे खुद अपने ऊपर जितना विश्वास नहीं उतना लोग मुझ पर रखते थे। इससे कभी कभी मैं बहुत घबराता था। (यह बात बिना अनुभवके समझमें नहीं आ सकती।) हमारे पास रसोई बनानेके लिए स्टोव या मिट्टीके तेलवाले चूल्हे नहीं थे और न खानेके लिए थालियाँ ही थीं। इस लिए शुरू शुरूमें पुराने ढगके ही चूल्होंसे काम लेना पडा। कुछ बेंचें–जो इमारत बनते समय काम आई थीं–वहीं पडी हुई थीं, उन्हींसे मेजोंका काम लिया गया। थालियाँ भी कुछ मिली पर वे नहींके बराबर थीं।

आरम्भमें रसोईघरका प्रबन्ध बडा गडबड रहता था। नियमित समय पर भोजन करना तो वहाँ कोई जानता ही न था। भोजनके पदार्थ भी ठीक नहीं बनते थे। एक दिन प्रातःकालकी घटना है कि मैं भोजनगृहके दरवाजे पर खडा था। भीतर विद्यार्थी भोजनके अप्रबन्धकी शिकायत कर रहे थे। कितनोंको उस दिन जल भी न मिला था। इसी समय एक लडकी, जिसे कुछ भी खानेको न मिला था, बाहर आई और ' खाना न सही, पानी तो कमसे कम

,गी हूँ' इस विचारमे वह कुएँ पर गई। पर वहां रस्सी भी टूटी हुई थी। वहाँसे लौटकर उसने, मुझे न देख पानेसे, बहुत ही निराश होकर कहा–" इस विद्यालयमें पीनेको जल भी नहीं मिलता।" यह सुनकर मेरे हृदयमें गहरी चोट लगी। इसके समान नाउम्मेद करनेवाली बात मने और कोई नहीं सुनी।

एक बार विद्यालयके ट्रस्टी मि० बेटफर्ड विद्यालय देखनेके लिए आये। उन्हें भोजनगृहके ऊपर सोनेके लिए स्थान दिया गया। एक दिन तडके दो विद्यार्थियोंसे झगडा हो पडनेके कारण उनकी नींद खुल गई। झगडा इस बातका था कि उस दिन चहवेका प्याला दोनोंमेंसे कौन ले। एक विद्यार्थीने अन्तम यह सिद्ध कर दिया कि उसे तीन दिन हुए, प्याला नहीं मिला और तब उसने वह प्याला ले लिया।

परन्तु धीरे धीरे उद्योगमे लगे रहकर हम लोगोंने सारी कठिनाइयों और अभावोंको दूर कर दिया। कोई काम हो, यदि चतुराईसे, सच्चे हृदयसे और अध्यवसायके साथ किया जाय तो अवश्य ही सिद्ध होता है।

इस समय जब मुझे उन पुराना कठिनाइयों और अभावोंका ध्यान आता है तो म बहुत ही प्रसन्न होता हूँ, क्योंकि यदि आरम्भहीमें सुख और चैनके सामान प्रस्तुत हो जाते तो शायद हम लोगोंके दिमाग ठिकाने न रहते और हम लोगों द्वारा कोई काम भी न बनता। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि कोई काम हो उसे अपने ही बल पर शुरू करना चाहिए।

अब पुराने विद्यार्थी टस्केजीमें आकर बहुत ही आनन्दित होते ह, क्योंकि उन्होंने जिस स्वाभाविक क्रमसे उन्नति आरम्भ की थी उसी क्रमसे वह आगे बराबर होती हुई चली जा रही है। अब वह अव्यवस्था और अभाव नहीं रहा। इस समय भोजनगृहके कमरे बडे बडे हैं और सुन्दर तथा हवादार हैं। उनमें जो जो वस्तुयें आवश्यक होती हैं, वे सब इस समय प्रस्तुत हैं। सब काम बेशिकायत और नियमसे होते हैं। विद्यार्थियों द्वारा तैयार हुए पक्वान्न, मेजें, उनपरके कपडे (मेज पोश), फूलोंके गुच्छे और काँचके बरतन आदि सामान करीनेसे रक्खे हुए पाकर और भोजनके समय परोसनेम कोई शिकायतकी बात न देखकर पुराने विद्यार्थियोंको बडा हर्ष होता है और अवसर मिलने पर वे अपना हर्ष मुझ पर भी प्रकट करते ह। उन्हे विशेषकर इसी बातका हर्ष है कि टस्केजीके विद्यालय और विद्यार्थियोंने अपनी उन्नति अपने पैरों पर खडे होकर स्वाभाविक क्रमसे की है।

ग्यारहवाँ परिच्छेद।

सोनेके पहले बिछौनेकी तैयारी।

कुछ दिनोंके उपरान्त हैम्पटन-विद्यालयके कोषाध्यक्ष जनरल जे एफ बी मार्शल विद्यालयमें आये। इनका आना एक बड़े महत्त्वकी घटना थी। इन्हीं मार्शल साहबने हम लोगों पर विश्वास रखकर टस्केजी विद्यालयकी भूमिके लिए आरम्भमें ढाई सौ डालर उधार दिये थे। उन्होंने विद्यालयमें एक सप्ताह तक रहकर सब कार्योंका भली भाँति निरीक्षण किया। विद्यालयके प्रबन्ध और कार्यक्रम आदिसे वे बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी रिपोर्टमें विद्यालयकी प्रशंसा लिखकर वह रिपोर्ट हैम्पटन भेज दी। इसके कुछ दिन उपरान्त वहाँकी सुप्रसिद्ध अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकी—जिन्होंने हैम्पटन विद्यालयमें भरती करनेसे पहले मुझसे झाड़ू दिलवाकर मेरी परीक्षा ली थी—आ गईं और कुछ दिनोंमें स्वयं जनरल आर्मस्ट्राग भी आ पधारे।

इस समय टस्केजी-विद्यालयमें अध्यापकोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी उनमेंसे अधिकांश हैम्पटनहीके ग्रेज्युएट थे। हम लोगोंने इन हितचिन्तकोंका विशेषतः जनरल आर्मस्ट्रागका सच्चे हृदयसे स्वागत किया। अभ्यागत भी विद्यालयकी इस थोड़ेसे अरसेमें इतनी अधिक उन्नति देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। आसपासके नीग्रो लोग जनरल आर्मस्ट्रागकी प्रशंसा सुन चुके थे और इसलिए जब उन्हें मालूम हुआ कि जनरल आर्मस्ट्राग टस्केजी-विद्यालयमें आये हैं तो वे दूर दूरसे उन्हें देखनेके लिए आये। गोरोंने भी उनका अच्छा स्वागत किया।

जनरल आर्मस्ट्रागके इस समागममें मुझे उनका स्वभाव भली भाँति परखनेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। सिविल वारमें जनरल आर्मस्ट्राग दक्षिणी गोरोंके विरुद्ध लड़े थे, इसलिए मैं यह समझता था कि वे उनसे चिढ़ते होंगे और दक्षिणके सिर्फ काले लोगोंकी ही मदद करना उन्हें अभीष्ट होगा, परन्तु उनके टस्केजीमें आने पर मेरा यह भ्रम दूर हो गया और मैंने जाना कि जनरल आर्मस्ट्राग बड़े ही उच्च विचार और उदार प्रकृतिके महात्मा हैं। जिस ढंगसे दक्षिणी गोरोंसे मिलते और बातचीत करते थे उससे स्पष्ट मालूम होता था कि वे दोनों जातियोंकी सुखसमृद्धि देखनेके लिए उत्सुक थे। कभी किसी अवसर पर उन्होंने दक्षिणी गोरोंके विषयमें कोई अनुचित बात नहीं कही। जनरल

धामस्थानके समाचारसे मैंने यह जाना कि महात्मा लोग सबसे स्नेह रखते हैं। द्वेष रखना नीच जीवोंका काम है। निर्बलकी सहायता करनेसे सहायक ही अधिक बलवान् होता है और अभागोंको कष्ट देनेवाला स्वयं बलहीन हो जाता है यह सत्य भी मैंने उन्हींसे सीखा। तभीसे मैंने निश्चय कर लिया कि अब न कभी किसी जातिके मनुष्यके साथ घृणा करके अपने आपको नीच न बनाऊँगा। मेरा विश्वास है कि अब मेरे मनमें दक्षिणी गोरोंके प्रति कोई दुर्भाव नहीं है। अपने जाति-भाइयोंकी सेवा करनेमें मुझे जो आनन्द होता है वही आनन्द दक्षिणी गोरोंकी सेवा करके भी प्राप्त होता है। किसीके मनमें यदि जातिद्वेषकी जड़ जमी हुई देखता हूँ तो मुझे उसपर बहुत दया आती है।

विचार करके मैंने यह मालूम किया है कि दक्षिण अमेरिकाके जो गोरे इस बातके उद्योगमें लगे रहते हैं कि राजनीतिक विषयोंमें नीग्रो लोगोंकी सम्मतिका कोई उपयोग न हो, वे केवल नीग्रो लोगोंकी ही हानि नहीं करते, बल्कि अपनी भी हानि करते हैं। नीग्रो लोगोंकी हानि तो अस्थायी होती है, पर गोरोंकी नीतिमत्ता ही सदाके लिए बिगड़ जाती है। मैंने अनुभव करके यह बात जानी है कि जो गोरा नीग्रो लोगोंका मत निर्बल करनेके लिए झूठी सौगन्द खानेको तैयार होता है वह अपने जीवनमें अपने भाइयोंसे भी अनुचित व्यवहार करना सीख लेता है। नीग्रोको ठगनेवाला गोरा अपने गोरे भाइयोंको भी ठगनेमें संकोच नहीं करता। कानूनको ताखपर रख करके नीग्रोको दण्ड देनेवाला गोरा आदमी आगे मौका आने पर अपने गोरे भाईसे भी वैसा ही व्यवहार करता है। इन सब बातोंसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि अमेरिकाका यह अज्ञानान्धकार दूर करनेके लिए समूचे राष्ट्रकी सहायता बहुत आवश्यक है।

जनरल आर्मस्ट्रांगके शिक्षासम्बन्धी विचारोंका गोरे काले दोनोंमें दिन पर दिन अधिक प्रचार होता जाता है। आजकल प्रायः सभी दक्षिणी राज्योंमें बालकों और बालिकाओंको शिल्पकलाकी शिक्षा देनेका प्रयत्न किया जाता है और इन सारे प्रयत्नोंके मूल जनरल आर्मस्ट्रांग हैं।

विद्यालयके साथ भोजनालयका पूरा प्रबन्ध हो चुकने पर विद्यार्थियोंकी संख्या दिनदिन बढ़ने लगी। हम लोगोंके पास धन नहीं था, तो भी हमें कई सप्ताहों तक विद्यार्थियोंके भोजनके अतिरिक्त उनके बिस्तर आदिका भी प्रबन्ध करना पड़ा। स्थान न होनेके कारण विद्यालयके पास कुछ कोठरियाँ किराये पर लेनी

पडी। ये कोठरियाँ बहुत बुरी दशामें थीं जिसके कारण जाडेमें विद्यार्थियोंको बहुत कष्ट हुआ। भोजन-खर्चके लिए प्रत्येक विद्यार्थीसे मासिक आठ डालर लिये जाते थे। इतना भी विद्यार्थियोंसे मिलना कठिन होता था। भोजनखर्च-हीमें कोठरीका किराया और कपडोंकी धुलाई भी आ जाती थी। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यालयका जो कार्य करते थे उसका पुरस्कार इन आठ डालरोंमेंसे काट दिया जाता था। पढाईकी फीस वार्षिक पचास डालर होती थी और आजकलके समान उस समय भी जो विद्यार्थी देने लायक थे उनसे यह फीस वसूल कर ली जाती थी।

इन छोटी छोटी रकमोंसे भोजननिवासगृह शुरु करनेके योग्य पूँजीका प्रबन्ध नहीं हो सका। दूसरे सालके जोडेमें बडी ठंड पडी और विद्यार्थियोंको पूरे ओढने बिछौने भी न मिल सके। कुछ समयतक थोडेसे विद्यार्थियोंके लिए केवल चारपाई और चटाईका ही प्रबन्ध हो सका और शेषके लिए वह भी न हुआ। जिस दिन अधिक जाडा पडता था उस दिन विद्यार्थियोंकी चिन्ताके कारण मुझे भी रातको नींद न आती थी। प्राय मैं आधी रातके समय विद्यार्थियोंकी टूटी फूटी झोपडियोंमें जाकर उन्हें धीरज दिलाता था। वहाँ मैं उन विद्यार्थियोंको एक ही कंबल ओढकर आगके चारों ओर बैठे हुए पाता था। कुछ विद्यार्थी तो रात रात भर बैठे रहते थे। एक रात बहुत ही अधिक ठंड पडी। दूसरे दिन जब सब विद्यार्थी प्रार्थनामन्दिरमें इकट्ठे हुए तब मैंने कहा—"जिन लोगोंको कल जाडेसे बहुत अधिक कष्ट हुआ हो, वे हाथ ऊपर उठावें।" सुनते ही एक साथ सब विद्यार्थियोंने हाथ उठा दिया। हम लोगोंको इस प्रकारसे उनके कष्टोंका अनुभव हुआ, पर वे स्वयं कभी शिकायत न करते थे। वे जानते थे कि हम लोग अपनी शक्तिभर उनके दु:ख दूर करनेका यत्न कर रहे हैं। इसी लिए वे सदा सब कार्योंमें शिक्षकोंकी सहायता करनेके लिए तैयार रहते थे।

मैंने उत्तर और दक्षिण अमेरिकामें अनेक बार यह शिकायत सुनी है कि यदि किसी नीग्रोको कोई उच्च पद या अधिकार मिल जाता है तो उसके मातहत लोग न तो उसका कहना मानते हैं और न परस्पर मेलसे रहते हैं। पर मैं अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि इन उन्नीस वर्षोंमें किसी विद्यार्थीने अथवा विद्यालयके किसी नौकरने अपनी जबानसे या कामसे मेरा कभी निरादर नहीं किया। उलटे उन्होंने अनेक बार मुझ पर एहसान चढाकर मुझे ही अपना कृतज्ञ बनाया है। जब कभी मैं कोई पुस्तक या और कोई चीज हाथमें लेकर कहीं जाता हूँ, तो

मेरे विद्यार्थी उसी समय पर चीज मेरे हाथसे लेकर निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचा देते हैं। पानी बरसनेके समय अगर मैं दफ्तरसे बाहर निकलता हूँ तो कोई न कोई विद्यार्थी मेरे हाथसे छाता अवश्य ले लेता है।

इसके साथ ही मुझे यह कहते हुए भी आनन्द होता है कि दक्षिणके गोरोंके साथ मेरा जो सहवास रहा है उसमें अब तक कभी किसी गोरेने मेरा निरादर नहीं किया। टस्केजी और आसपासके गोरे लोग मेरा हर प्रकारसे सम्मान करनेहीमें अपना गौरव समझते हैं।

जब कभी मैं किसी स्थानके लिए प्रस्थान करता हूँ तो लोगोंको न जाने कहाँसे मेरी यात्राका समाचार मिल जाता है और प्राय सभी स्टेशनों पर अनेक गोरे और विशेषतः गाँवोंके गोरे कर्मचारी मुझसे आकर मिलते हैं और दक्षिणमें मैंने जो कार्य आरम्भ किया गया है उसके लिए धन्यवाद देते हुए मेरा अभिनन्दन करते हैं। डालास-हाउस्टनकी यात्रामें मुझे यही अनुभव प्राप्त हुआ है।

एक बार एटलाटा जाते समय मैं रेलगाडीमें सफर कर रहा था। बहुत अधिक थक जानेके कारण चौथमें म एक ऐसे डब्बेके पास गया जिसमें यात्रियोंके सोनेका भी प्रबन्ध रहता है। वहाँ बोस्टनकी दो महिलायें बैठी थीं। मैंने उन्हें देखते ही पहचान लिया। उनसे मेरी अच्छी जान पहचान थी। उन्होंने भी मुझे देखते ही अन्दर आ बैठनेके लिए आग्रह किया। शायद उन देवियोंको दक्षिणका रिवाज मालूम न था। खैर, उनके बहुत आग्रह करने पर मैं उनके पास बैठ गया। थोडी ही देर बाद मेरे बिना जाने उन्होंने नौकरको तीन आदमियोंका भोजन परोसनेकी आज्ञा दी। इससे म और भी चकराया—कारण उस डब्बेमें दक्षिणी गोरे भरे हुए थे और उनमेंसे बहुतेरे हमीं लोगोंकी ओर देख रहे थे। जब भोजन परोस कर सामने रक्खा गया तब कोई न कोई बहाना निकालकर मैंने इस बलासे बचनेकी बहुत चेष्टा की। पर उन महिलाओंने बहुत जोर देकर मुझे अपने साथ भोजन करनेके लिए विवश कर दिया। मने मन-ही-मन कहा—"अब तो बेतरह फँसा!"

अब और एक बला खडी हुई। मेज पर भोजन परोसा जा चुकने पर उन महिलाओंमेंसे एकको अपनी थैलीमें रक्खी हुई उमदा चायकी याद आई और उसने चाहा कि यह तैयार करके अभी भोजनके वक्त सबको दी जाय। नौकर

चाहिए। हम लोग अगर गरीब है, तो हमारे पास सुखसुभीतेके सामान न होना कोई अपराध नहीं, परन्तु इसके साथ ही यदि स्वच्छता भी न हो तो लोग हमें, कभी क्षमा न करेंगे—हमसे घृणा करने लगेंगे। यह बात मैंने अपने विद्यार्थियोंको बार बार बतलाई है और अब भी बतलाता हूँ।

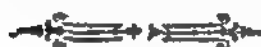
ब्रशसे दाँत साफ करने पर भी हमारे यहाँ बहुत जोर दिया जाता है। जनरल आर्मस्ट्राँग इस दाँतोंकी सफाईके उपदेशको The Gospel of the tooth-brush अर्थात् ' दाँतोंको ब्रशसे साफ करनेका धर्मोपदेश ' कहा करते थे। टस्केजी-विद्यापीठका यह एक विशिष्ट संस्कार रहा है। ब्रश पास रहते हुए जो विद्यार्थी उससे दाँत साफ नहीं करता उसे हम लोग अपने विद्यालयमें भरती नहीं करते। पुराने विद्यार्थियोंसे ब्रशकी कड़ाईका हाल सुनकर जो नये विद्यार्थी भरती होनेके लिए आते हैं वे अपने साथ कमसे कम टूथ ब्रश अवश्य लाते हैं—और कोई चीज चाहे न ले आवें। एक दिन सबेरे मैं लेडी प्रिन्सिपलके साथ विद्यार्थियोंकी कोठरियाँ देखने गया। एक कमरेमें तीन लड़कियाँ थीं। मैंने उनसे पूछा—" तुम लोगोंके पास टूथ-ब्रश हैं ? " फौरन उनमेंसे एक लड़कीने ब्रश सामने लाकर कहा—" यह है। कल ही हम तीनों जनी मिलकर इसे खरीद लाई हैं। " उन्हें उस वक्त तक यह ज्ञान न था कि सबका एक एक अलग ब्रश होना चाहिए।

टूथ-ब्रशके उपयोगसे विद्यार्थियोंको बड़ा लाभ हुआ है। यहाँतक मैंने अनुभव किया है कि यदि किसी विद्यार्थीका टूथ-ब्रश खो गया और वह चट बिना कहे दूसरा ले आया तो आगे चलकर ऐसे विद्यार्थीने बड़ी कीर्त्ति संपादन की है। दाँतोंकी सफाईके अतिरिक्त शरीरके शेष अवयवोंकी स्वच्छता पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। भोजनकी तरह स्नान भी नित्य नियमित समय पर करनेकी शिक्षा दी जाती है। स्नानागार तैयार होनेके पहलेसे ही हम लोगोंने यह शिक्षा आरम्भ कर दी थी। बहुतसे विद्यार्थी देहातोंसे आये हुए थे और इसलिए उन्हें सोना, बिस्तर बिछाना आदि बातें भी सिखलानी पड़ती थीं। रातको कुरता पहननेका महत्त्व भी उन्हें बतलाया।

यहाँ कोई विद्यार्थी फटे, मैले, बिना बटनोंके, तेलहे कपड़े नहीं पहनने पाता। शुरू शुरूमें इसकी शिक्षा देनेमें बड़ी कठिनाई पड़ती थी। पर अब मुझे यह कहते आनन्द होता है कि स्वच्छताकी शिक्षासे हमारे विद्यार्थियोंने इतना बड़ा लाभ उठाया है और पुराने विद्यार्थियोंसे नये विद्यार्थियोंने यह गुण इतना है

लिया है कि नित्य सन्ध्यासमय जब सब विद्यार्थी गिरजेसे बाहर जाते हैं और जब उनके कपड़ोंकी परीक्षा की जाती है तो एक भी विद्यार्थी ऐसा नहीं निकलता कि जिसके कपड़े मैले हों या बटनका भी स्थान खाली हो।

बारहवाँ परिच्छेद।



धन-सग्रह।

टस्केजी विद्यालयमें जब विद्यार्थियोंके निवास आदिका प्रबन्ध हो गया, तब पहले भवन अर्थात् पोर्टर-हालके ऊपरके खण्डकी कुछ कोठरियोंमें बालिकाओंके रहनेका प्रबन्ध किया गया। परन्तु छात्रोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ने लगी। विद्यार्थियोंको तो भवनके बाहर भी स्थान दिला दिया जा सकता था, परन्तु बालिकाओंको वहाँ रखना ठीक न मालूम हुआ। इसलिए एक विशाल छात्रावास शीघ्र ही बनवानेकी आवश्यकता हुई, क्योंकि बालिकाओंके रहने और सब छात्रोंके भोजनादिके लिए पर्याप्त स्थान चाहिए था।

इस नये भवनका नकशा बनने पर मालूम हुआ कि उसके बननेमें दस हजार लगेंगे। कार्य आरंभ करनेके लिए हम लोगोंके पास धन बिलकुल न था, पर तो भी इस नये भवनका नामकरण हम लोगोंने कर दिया। हम लोग जिस राज्यमें कार्य कर रहे थे उस राज्यका आदर करनेके निमित्त इस भवनका नाम-अलबामा हाल' रखनेका निश्चय किया गया। अब फिर मिस डेविडसन आसपासके गोरों और नीग्रो लोगोंसे चन्दा उगाहनेका उद्योग करने लगीं और प्रायः उन्होंने अपनी अपनी शक्तिके अनुसार सहायता दी। विद्यार्थियोंने भी पहलेकी भाँति जमीन खोदकर नावकी तैयारी आरंभ कर दी।

नये भवनके लिए हम रुपयोंकी बहुत ही जरूरत थी। जब सब उपाय हम कर चुके तब एक ऐसी घटना हुई जिससे जनरल आर्मस्ट्रांगके मनका असाधारण उदारताका पूरा परिचय मिला। हम लोगोंको धनकी बड़ा चिन्ता रही थी कि इसी बीच जनरल आर्मस्ट्रांगका एक तार आया जिसमें उन्होंने मुझसे पूछा था,–" क्या आप एक मासतक उत्तर प्रान्तमें मेरे साथ प्रवास कर सकते हैं? यदि कर सकते हों तो शीघ्र ही हैम्पटन चले आइए।" मैं

टस्केजी-विद्यालयके लिए धनसंग्रह करनेमें जो अनुभव हुआ है वह मुझे चुप नहीं बैठने देता। पहले तो, जो लोग इस प्रकार धनवानोंको दोष देते हैं वे यह नहीं जानते कि यदि धनवान् लोग अपनी मिलकियतका बड़ा भारी हिस्सा दानधर्ममें ही खर्च कर डालें तो उनका व्यवसाय गिर जाय, हजारों लोग भूखों मरें, और बहुत बड़ा अनर्थ हो जाय। दूसरे, धनवानोंके पास सहायता माँगनेके लिए कितने लोग आते हैं इसका अन्दाज भी बहुत थोड़े लोग कर सकते हैं। मैं ऐसे धनवानोंको जानता हूँ जिनके पास रोज कमसे कम बीस आदमी सहायता माँगने आते हैं। मैंने धनवानोंकी कोठियोंमें जाकर देखा है कि वहाँ चार छह आदमी एक ही कामसे अर्थात् धनके लिए बैठे हुए हैं। यह तो लोगोंके खुद आकर मिलनेकी बात हुई, इसके अलावे डाकसे कितनी प्रार्थनायें आती होंगी सो ईश्वर जाने! अनेक ऐसे भी दाता होते हैं जो अपना नाम भी प्रकट नहीं होने देते। ऐसे लोगोंके दानका अन्दाज कौन कर सकता है? इस प्रकार गुप्तरूपसे हरसाल हजारों रुपयोंका दान करनेवाले कई लोगोंको मैं जानता हूँ। परन्तु मैंने कई बार सुना है कि लोग उन पर कुछ भी दान न करनेका—कंजूसीका दोष लगाते हैं! उदाहरणार्थ, न्यूयार्कमें दो महिलायें हैं। इनके नाम समाचारपत्रोंमें बहुत ही कम प्रकाशित होते हैं। परन्तु इन्हीं दो महिलाओंने गत आठ वर्षोंमें हम लोगोंको तीन बड़ी भारी इमारतें बनवाने लायक गुप्तदान दिया है। इसके अतिरिक्त और भी कई बार अलग दान दिये हैं जिनकी कुल रकम बहुत बड़ी होगी। इन उदार स्त्रियोंने केवल टस्केजी-विद्यालयकी ही मदद नहीं की है, बल्कि अन्यान्य कार्योंमें भी इसी प्रकार बहुत सहायता दी है।

यद्यपि टस्केजीके लिए मेरे हाथों लाखों रुपये संग्रह किये गये हैं, तथापि जिसे 'भिक्षा' कहते हैं उससे मैं बचा हुआ हूँ। धनके लिए मैंने भीख नहीं माँगी, और लोगोंसे भी मैंने कई बार कहा है कि मैं भिक्षुक नहीं हूँ। मेरा यह दृढ विश्वास है कि धनके लिए किसी धनवानका गला दबानेसे धन नहीं मिलता। जो लोग धन कमाना जानते हैं वे उसका व्यय करना भी जानते हैं—यह मैं जानता हूँ और इस लिए धनसंग्रहकी यात्रामें मैं केवल लोगोंके सामने हाथ पसारनेके बदले टस्केजी विद्यालय और उससे निकले हुए ग्रेज्युएटोंके कार्योंका परिचय देता रहा हूँ, और इसी उपायसे मुझे धन भी अधिक मिला है। मैं समझता हूँ कि धनवान् लोग हमसे सब बातों और कार्योंका सुनना और योग्यता संबंध सदा ही सुनना चाहते हैं।

घर घर माँगने जानेमें शरीरको बहुत कष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु
न कष्टोंका प्रतिफल भी मिलता है। इसके सिवाय मनुष्य स्वभावकी जाँच-
ड़ताल करनेका भी सुअवसर हाथ लगता है और उत्तम पुरुषोंसे—सर्वोत्तम
रुषोंसे कहना अधिक अच्छा होगा—मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। स्थिती
ताका स्थूल रूपसे निरीक्षण करनेमें यह मालूम हो जाता है कि प्रत्येक देशमें
बसे अधिक परोपकारी और प्रभावशाली पुरुष वे ही होते हैं जो सार्वज-
क कार्योंसे—सबके लाभके लिए स्थापित हुई संस्थाओंसे—सहानुभूति
ते हैं।

...र मैं बोस्टन नगरमें एक धनाढ्य महिलासे मिलने गया। मैंने अपनी
... अन्दर भेजा और उत्तरकी बाट जोहता हुआ खड़ा रहा। इतनेमें
पतिने बाहर आकर मुझसे पूछा—"तुम्ह क्या चाहिए?" मैंने
समझाना चाहा, पर वह भला आदमी इतना तेज और रूखा हो
उस महिलासे मिले ही मुझे वहाँसे लौट आना पड़ा। इसके
थोड़ी ही दूर पर रहनेवाले एक सज्जनके घर गया। उसने
...थोचित स्वागत किया और एक बड़ी रकमका चेक
... उसे धन्यवाद भी न देने पाया कि उसने
ऐसे अनूठे काममें हाथ बटानेका अवसर
...में सत्कार्यमें योग देना भी एक
...वासियोंको यह गौरव प्राप्त
" धनसंग्रहके कार्यसे मुझे
...हार करनेवाले—लोग
...का व्यवहार करने-
इस प्रकारसे भी
...द माँगनेवाले
...लोकप्रतिनिधि

...मैंने-
...समझते हैं
...नोंमें भी
उदार और

टस्केजी-विद्यालयके लिए धनसग्रह करनेमें जो अनुभव हुआ है वह मुझे चुप नहीं बैठने देता। पहले तो, जो लोग इस प्रकार धनवानोंको दोष देते हे वे यह नहीं जानते कि यदि धनवान् लोग अपनी मिलकियतका बडा भारी हिस्सा दानधर्म्ममें ही खर्च कर डालें तो उनका व्यवसाय गिर जाय, हजारों लोग भूखों मरें, और बहुत बडा अनर्थ हो जाय। दूसरे, धनवानोंके पास सहायता माँगनेके लिए कितने लोग आते ह इसका अन्दाज भी बहुत थोडे लोग कर सकते हैं। म ऐसे धनवानोंको जानता हूँ जिनके पास रोज कमसे कम बीस आदमी सहायता माँगने आते हैं। मैंने धनवानोंकी कोठियोंमे जाकर देखा है कि वहाँ चार छह आदमी एक ही कामसे अर्थात् धनके लिए बैठे हुए ह। यह तो लोगोंके खुद आकर मिलनेकी बात हुई, इसके अलावे डाकसे कितनी प्रार्थनायें आती होंगीं सो ईश्वर जाने! अनेक ऐसे भी दाता होते हैं जो अपना नाम भी प्रकट नहीं होने देते। ऐसे लोगोंके दानका अन्दाज कोन कर सकता है? इस प्रकार गुप्तरूपसे हरसाल हजारों रुपयोंका दान करनेवाले कई लोगोंको म जानता हूँ। परन्तु मैंने कई बार सुना है कि लोग उन पर कुछ भी दान न करनेका—कंजू सीका दोष लगाते है! उदाहरणार्थ, न्यूयार्कमें दो महिलायें हैं। इनके नाम समाचारपत्रोंमें बहुत ही कम प्रकाशित होते हैं। परन्तु इन्हीं दो महिलाओंने गत आठ वर्षोंमें हम लोगोंको तीन बडी भारी इमारतें बनवाने लायक गुप्तदान दिया है। इसके अतिरिक्त और भी कई बार अलग दान दिये हैं जिनकी कुल रकम बहुत बडी होगी। इन उदार स्त्रियोंने केवल टस्केजी विद्यालयकी ही मदद नहीं की है, बल्कि अन्यान्य कार्योंमें भी इसी प्रकार बहुत सहायता दी है।

यद्यपि टस्केजीके लिए मेरे हाथों लाखों रुपये सग्रह किये गये हे, तथापि जिसे 'भिक्षा' कहते ह उससे म बचा हुआ हूँ। धनके लिए मैंने भीख नहीं माँगी, [illegible] लोगोंसे भी मेने कई बार कहा है कि मैं भिक्षुक नहीं हूँ। मेरा यह दृढ [illegible] धनके लिए किसी धनवानका गला दबानेसे धन नहीं मिलता। [illegible] जानते ह वे उसका व्यय करना भी जानते हैं-यह [illegible] लिए धनसग्रहकी यात्रामें मे केवल लोगोंके सामने [illegible] टस्केजी विद्यालय और उससे निकले हुए ग्रेज्युएटोंके कार्योंका [illegible] हूँ, और इसी उपायसे मुझे धन भी अधिक मिला है। म सम[illegible] धनवान् लोग हमसे सब बातों और कार्योंका गुरुता और योग्यताप[illegible] ही सुनना चाहते ह।

घर घर माँगने जानेमें शरीरको बहुत कष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु कष्टोंका प्रतिफल भी मिलता है। इसके सिवाय मनुष्य स्वभावकी जाँच-ताल करनेका भी सुअवसर हाथ लगता है और उत्तम पुरुषोंसे—सर्वोत्तम योंसे कहना अधिक अच्छा होगा—मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। किसी ता स्थूल रूपसे निरीक्षण करनेमें यह मालूम हो जाता है कि प्रत्येक देशमें से अधिक परोपकारी और प्रभावशाली पुरुष वे ही होते हैं जो सार्वज-क कार्योंसे—सबके लाभके लिए स्थापित हुई संस्थाओंसे—सहानुभूति ते हैं।

एक बार मैं बोस्टन नगरमें एक धनाढ्य महिलासे मिलने गया। मैंने अपने मकार्ड अन्दर भेजा और उत्तरकी बाट जोहता हुआ खड़ा रहा। इतनेमें स महिलाके पतिने बाहर आकर मुझसे पूछा—"तुम्हें क्या चाहिए?" मैंने पना उद्देश्य समझाना चाहा, पर वह भला आदमी इतना तेज और रूखा हो या कि बिना उस महिलासे मिले ही मुझे वहाँसे लौट आना पड़ा। इसके नन्तर मैं वहाँसे थोड़ी ही दूर पर रहनेवाले एक सज्जनके घर गया। उसने द्ध अन्तःकरणसे मेरा यथोचित स्वागत किया और एक बड़ी रकमका चेक रे नाम लिख दिया। इसके लिए मैं उसे धन्यवाद भी न देने पाया कि उसने कहा,—"मिस्टर वाशिंगटन, आपने मुझे ऐसे अच्छे काममें हाथ बटानेका अवसर दिया, इसलिए मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ। ऐसे सत्कार्यमें योग देना भी एक बड़े गौरवकी बात है। आपके आगमनसे बोस्टनवासियोंको यह गौरव प्राप्त हुआ, इसलिए हम लोग आपके बहुत अनुगृहीत हैं।" धनसंग्रहके कार्यसे मुझे ह अनुभव हो गया है कि पहले प्रकारके—रुखाईका व्यवहार करनेवाले—लोग दिन घट रहे हैं और दूसरे प्रकारके लोगोंकी—सुजनताका व्यवहार करने-वालोंकी—संख्या बराबर बढ़ती जा रही है। इसी बातको इस प्रकारसे भी ह सकते हैं कि अब धनवान् लोग, अच्छे कार्योंके लिए मदद माँगनेवाले की पुरुषोंको, भिक्षुक न समझ कर, अपने ही कार्य करनेवाले लोकप्रतिनिधि मानने लगे हैं।

बोस्टन शहरमें मैंने यह देखा है कि दाता धन देकर मुझे धन्यवाद देने-का अवसर न देकर उल्टे मुझहीको धन्यवाद देते हैं। वे लोग यह समझते हैं कि ऐसे कामोंमें दान देना अपना ही गौरव बढ़ाना है। अन्य स्थानोंमें भी मुझे अच्छे अच्छे लोगोंसे मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ है, पर जैसी उदार और

टस्केजी-विद्यालयके लिए धनसंग्रह करनेमें जो अनुभव हुआ है वह मुझे चुप नहीं बैठने देता। पहले तो, जो लोग इस प्रकार धनवानोंको दोष देते हैं वे यह नहीं जानते कि यदि धनवान् लोग अपनी मिलकियतका बड़ा भारी हिस्सा दानधर्म्ममें ही खर्च कर डालें तो उनका व्यवसाय गिर जाय, हजारों लोग भूखों मरें, और बहुत बड़ा अनर्थ हो जाय। दूसरे, धनवानोंके पास सहायता माँगनेके लिए कितने लोग आते हैं इसका अन्दाज भी बहुत थोड़े लोग कर सकते हैं। मैं ऐसे धनवानोंको जानता हूँ जिनके पास रोज कमसे कम बीस आदमी सहायता माँगने आते हैं। मैंने धनवानोंकी कोठियोंमें जाकर देखा है कि वहाँ चार छह आदमी एक ही कामसे अर्थात् धनके लिए बैठे हुए हैं। यह तो लोगोंके खुद आकर मिलनेकी बात हुई, इसके अलावे डाकसे कितनी प्रार्थनायें आती होंगी सो ईश्वर जाने! अनेक ऐसे भी दाता होते हैं जो अपना नाम भी प्रकट नहीं होने देते। ऐसे लोगोंके दानका अन्दाज कौन कर सकता है? इस प्रकार गुप्तरूपसे हरसाल हजारों रुपयोंका दान करनेवाले कई लोगोंको मैं जानता हूँ। परन्तु मैंने कई बार सुना है कि लोग उन पर कुछ भी दान न करनेका—कंजूसीका दोष लगाते हैं। उदाहरणार्थ, न्यूयार्कमें दो महिलायें हैं। इनके नाम समाचारपत्रोंमें बहुत ही कम प्रकाशित होते हैं। परन्तु इन्हीं दो महिलाओंने गत आठ वर्षोंमें हम लोगोंको तीन बड़ी भारी इमारतें बनवाने लायक गुप्तदान दिया है। इसके अतिरिक्त और भी कई बार अलग दान दिये हैं जिनकी कुल रकम बहुत बड़ी होगी। इन उदार स्त्रियोंने केवल टस्केजी-विद्यालयकी ही मदद नहीं की है, बल्कि अन्यान्य कार्योंमें भी इसी प्रकार बहुत सहायता दी है।

यद्यपि टस्केजीके लिए मेरे हाथों लाखों रुपये संग्रह किये गये हैं, तथापि जिसे 'भिक्षा' कहते हैं उससे मैं बचा हुआ हूँ। धनके लिए मैंने भीख नहीं माँगी, और लोगोंसे भी मैंने कई बार कहा है कि मैं भिक्षुक नहीं हूँ। मेरा यह दृढ विश्वास है कि धनके लिए किसी धनवानका गला दबानेसे धन नहीं मिलता। लोग धन कमाना जानते हैं वे उसका व्यय करना भी जानते हैं—यह मैं ...। इस और इस लिए धनसंग्रहकी यात्रामें मैं केवल लोगोंके सामने हाथ ... के बदले टस्केजी-विद्यालय और उससे निकले हुए ग्रेज्युएटोंके कार्योंका ... देता रहा हूँ, और इसी उपायसे मुझे धन भी अधिक मिला है। मैं समझ... कि धनवान् लोग हमसे सब बातों और कार्योंका गुरुता और योग्यतापू... ही सुनना चाहते हैं।

घर घर माँगने जानेमें शरीरको बहुत कष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इन कष्टोंका प्रतिफल भी मिलता है। इसके सिवाय मनुष्य स्वभावकी जाँच-पड़ताल करनेका भी सुअवसर हाथ लगता है और उत्तम पुरुषोंसे—सर्वोत्तम पुरुषोंसे कहना अधिक अच्छा होगा—मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। किसी देशका स्थूल रूपसे निरीक्षण करनेमे यह मालूम हो जाता है कि प्रत्येक देशमें सबसे अधिक परोपकारी और प्रभावशाली पुरुष वे ही होते हैं जो सार्वजनिक कार्योंसे—सबके लाभके लिए स्थापित हुई संस्थाओंसे—सहानुभूति रखते हैं।

एक बार मैं बोस्टन नगरमें एक धनाढ्य महिलासे मिलने गया। मैंने अपने नामका कार्ड अन्दर भेजा और उत्तरकी बाट जोहता हुआ खड़ा रहा। इतनेमें उस महिलाके पतिने बाहर आकर मुझसे पूछा—"तुम्हें क्या चाहिए?" मैंने अपना उद्देश्य समझाना चाहा, पर वह भला आदमी इतना तेज और रूखा हो गया कि बिना उस महिलासे मिले ही मुझे वहाँसे लौट आना पड़ा। इसके अनन्तर मैं वहाँसे थोड़ी ही दूर पर रहनेवाले एक सज्जनके घर गया। उसने शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा यथोचित स्वागत किया और एक बड़ी रकमका चेक मेरे नाम लिख दिया। इसके लिए मैं उसे धन्यवाद भी न देने पाया कि उसने कहा,—"मिस्टर वाशिंगटन, आपने मुझे ऐसे अच्छे काममें हाथ बटानेका अवसर दिया, इसलिए मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ। ऐसे सत्कार्यमें योग देना भी एक बड़े गौरवकी बात है। आपके आगमनसे बोस्टनवासियोंको यह गौरव प्राप्त हुआ, इसलिए हम लोग आपके बहुत अनुग्रहीत हैं।" धनसग्रहके कार्यसे मुझे यह अनुभव हो गया है कि पहले प्रकारके—रुखाईका व्यवहार करनेवाले—लोग दिनों दिन घट रहे हैं और दूसरे प्रकारके लोगोंकी—सुजनताका व्यवहार करनेवालोंकी—संख्या बराबर बढ़ती जा रही है। इसी बातको हम इस प्रकारसे भी कह सकते हैं कि अब धनवान् लोग, अच्छे कार्योंके लिए मदद माँगनेवाले को पुरुषोंको, भिक्षुक न समझ कर अपने ही कार्य करनेवाले लोकप्रतिनिधि मानने लगे हैं।

बोस्टन शहरमें मैंने यह देखा है कि दाता धन देकर मुझे धन्यवाद देने-का अवसर न देकर उलटे मुझहीको धन्यवाद देते हैं। वे लोग यह समझते हैं कि ऐसे कामोंमें दान देना अपना ही गौरव बढ़ाना है। अन्य स्थानोंमें भी मुझे अच्छे अच्छे लोगोंसे मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ है, पर जैसी उदार और

दयालु प्रकृतिके लोग मैंने वोस्टनमें देखे वैसे अन्यत्र कहीं देखनेमें न आये। मैं समझता हूँ कि लोगोंमें दिनोंदिन दानशीलता बढ रही है । धनसग्रह करते हुए मेरे सामने यही एक वात रही और अब भी है कि धनवान् लोगोंको स त्कार्योंमें दान देनेका मोका दिलानेमें कोई वात उठा न रखनी चाहिए।

टस्केजी-विद्यालयके प्रारभके दिनोंमे कुछ समयतक उत्तर प्रान्तके शहरों और देहातोंमे भटकते रहने पर भी कहींसे एक पैसा भी मुझे न मिला था। कई बार ऐसा हुआ है कि जिन लोगोंसे वहुत कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी उनसे तो कुछ भी न मिलता और उदासीसे मेरा उत्साह भग हो जाता, पर जिन लोगोंसे कुछ भी मिलनेकी आशा न होती थी, ऐसे लोगोंसे कभी कभी बडी सहायता मिल जाती थी।

कनेक्टिकट राज्यके स्टेफर्ड गॉवसे दो मीलके फासले पर रहनेवाले एक सज्जनके विषयमें मुझसे यह कहा गया था कि अगर उन्हें टस्केजीविद्यालयका सब हाल बतलाया जायगा तो वे अवश्य सहायता करेंगे । इसलिए मैं एक दिन उनसे मिलने गया । उस रोज बडी ही ठड थी और पाला पड रहा था। पर इसकी मैंने कोई परवा नहीं की और उनके मकान तक जाकर मैंने उनसे भेंट की । उन्होंने मेरी वाते सब सुन लीं, पर दिया कुछ भी नहीं । इससे मुझे खेद अवश्य हुआ, क्योंकि मेरे तीन घटे व्यर्थ ही खर्च हुए, परन्तु सतोष इस बातका था कि मैंने अपना कर्तव्य किया । यदि मैं उनसे न मिलता तो मुझे अपना कर्तव्य पालन न करनेके कारण बहुत अधिक वेचैनी होती।

इस घटनाके दो वर्ष बाद इन्हीं सज्जनने मेरे पास एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था,-" आपके विद्यालयके लिए इस पत्रके साथ मैं दस हजार डालरकी एक हुडी भेजता हूँ । मैंने यह रकम अपने मृत्युपत्रमें (वसीहतनामेमें) आपके विद्यालयके नाम लिख दी थी, पर अब इसे मे जीते जी ही दे डालना उचित समझता हूँ । दो वर्ष पूर्व मैंने आपके दर्शन किये थे, उसका स्मरण होनेसे मुझे बडा आनन्द होता है । "

इस हुडीसे मुझे जैसा आनन्द हुआ वैसा और किसी वातसे न हुआ होगा। विद्यालयको अबतक जितने दान मिले थे उनमें सबसे बडी रकम यही थी । यह दान भी ऐसे अवसर पर मिला जब कि बहुत दिनोंसे विद्यालयको कहींसे कुछ भी न मिला था । धनाभावके कारण उस समय हम लोग बडी चिन्तामें थे। एक बडे विद्यापीठके सचालनका भार सिर पर था, अभी कितने ही बिलोंको

चुकाना था, इसके सिवाय हर महीने बिल पर बिल आते ही जाते थे और हम लोग यह नहीं जानते थे कि इनको चुकानेके लिए धन कहाँसे आवेगा। मैं नहीं जानता कि इससे भी अधिक चिन्ताग्रस्त करनेवाली और कोई दुरवस्था हो सकती है।

यदि मेरे विषयमें पूछिए तो मुझ पर दूनी जिम्मेदारी थी और इसलिए मेरी चिन्ता भी उसी हिसाबसे बढ़ी हुई थी। यही विद्यापीठ यदि गोरोंकी किसी मह्लौके देसरेखमें होता और उसमें नाकामयाबी होती तो केवल नीग्रो लोगोंकी शिक्षाका एक प्रबन्ध टूट जाता, परन्तु यह नीग्रो द्वारा ही चलाई जानेवाली एक संस्था यदि मिट जाती तो एक विद्यालयकी ही हानि न होती, बल्कि सारी जाति पर कलंकका टीका लग जाता। ऐसी विकट अवस्थामें इन दस हजार डालरोंने बड़ा भारी काम किया।

मैंने अपना यह सिद्धान्त बना लिया है और मैं मौका पाकर विद्यालयके अध्यापकोंको बार बार यही बतलाया करता हूँ कि विद्यालयकी आन्तरिक व्यवस्था जितनी ही निर्मल, पवित्र और उपयोगी रक्खी जायगी उतनी ही उसे बाहरसे सहायता मिलेगी।

मैं पहली बार जब सुप्रसिद्ध रेल-महाजन मिस्टर कालीस पी हटिंगटनसे मिला तो उन्होंने हमारे विद्यालयके लिए सिर्फ दो ही डालर दिये थे। उन्हीं हटिंगटन साहबने, उनकी मृत्युसे कुछ महीने पहले जब मैं उनसे मिला तो, पचास हजार डालर दे दिये। इन दो दानोंके मध्यसमयमें मिस्टर हटिंगटनसे हमें और भी कई बड़ी बड़ी रकमें मिली हैं।

कुछ लोग शायद यह कहेंगे कि यह टस्केजी-विद्यालयका बड़ा भाग्य था, जो उसे पचास हजार डालर मिल गये। पर मैं इसे भाग्य या तकदीर नहीं कहता। यह अविराम परिश्रम और अध्यवसायका ही फल था। दीर्घोद्योगके बिना किसीको कुछ नहीं मिलता। मिस्टर हटिंगटनने मुझे जिस वक्त दो ही डालर दिये उस वक्त मैंने अधिक दान न देने पर उन्हें दोष नहीं लगाया। तबसे मैं बराबर उन्हें यह दिखलानेका उद्योग करता रहा कि हम लोग अधिक दानके पात्र हैं। मैं लगातार बारह वर्षतक यह उद्योग करता रहा। ज्यों ज्यों वे विद्यालयकी उन्नतिके आगे बढ़ते हुए कदम देखते चले त्यों त्यों अधिक सहायता भी करते गये। मिस्टर हटिंगटनसे अधिक सहानुभूति और विद्यालयके नियम उदारता रखनेवाला कोई भी धनिक पुरुष मैंने नहीं देखा। उन्होंने हम

लोगोंको भरपूर धन दिया, यही नहीं बल्कि उन्होंने मुझे संस्थासचालनके विषयमें अनेकबार पितृवत् स्नेहसे उपदेश दिया है और इस कार्यमें अपना अमूल्य समय खर्च किया है।

उत्तर प्रान्तमे धन सग्रहका कार्य करते हुए मुझे बडी बडी कठिनाइयोंसे सामना करना पडा है। लोक शायद विश्वास न करेंगे, इस लिए मैंने अबतक एक घटनाका हाल किसीको भी नहीं बतलाया है, पर आगे बतला देता हूँ। मैं अपने कामसे होड द्वीपके प्राविडेन्स नामक स्थानमें आया हुआ था।, सबेरेका वक्त था। मेरी जेबमे भोजनके लिए एक पैसा भी न था, एक महिलासे कुछ मिलनेकी आशा थी। उससे मिलनेके लिए सडकके उस पार जाते समय गाडीकी राह पर मुझे पचील सेंटका (साडे बारह आनेका) एक सिक्का हाथ लग गया। भोजनके लिए ये पचीस सेंट तो मिल ही गये, और थोडी ही देर बाद उस महिलाके यहाँसे आशानुसार दान भी मिल गया।

एक बार उपाधिदानके अवसर पर मैंने ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर, बोस्टनके पादरी मिस्टर विचेस्टर डोनाल्डको विद्यालयमें मुख्य भाषण करनेके लिए निमंत्रित किया। व्याख्यान सुननेके लिए आनेवाले लोगोंको पेडकी डालियाँ छाकर और लकडीकी बडी बडी बल्लियाँ खडी करके एक मामूली मडप तैयार कर दिया था। ज्यों ही डाक्टर डोनाल्ड वक्तृता देने खडे हुए त्यों ही मूसलधार वृष्टि होने लगी। इसलिए उन्हें अपनी वक्तृता बन्द करनी पडी और उन पर छाता लगाना पडा।

ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर उस बडे भारी जनसमुदायके सामने पुराने छातेके नीचे खडे हैं और इस बातकी राह देख रहे है कि वर्षा समाप्त होकर कब मेरा भाषण आरम्भ होता है। इस दृश्यको जब मैंने देखा तब मुझे अपने कियेकी सुध हुई।—मालूम हुआ कि मेने कितने बडे साहसका काम कर डाला है।

शीघ्र ही पानी रुका और डाक्टर डोनाल्डने अपनी वक्तृता चटपट दे डाली। हवा प्रतिकूल थी तो भी आपकी वक्तृताका रग जम गया। कुछ देर बाद, भीगे कपडे सूखने पर, डाक्टर साहबने यों ही मामूली बातचीतमें कहा कि "यहाँ एक बडा गिरजाघर बन जाय तो अच्छा हो।" दूसरे ही दिन इटालीमें प्रवास करती हुई दो स्त्रियोंका एक पत्र मेरे पास आया। उसमें लिखा था कि "टस्केजीमें जिस बडे गिरजाघरकी जरूरत है हमने उसे बनवानेका सारा खर्च देना निश्चय किया है।"

इसके कुछ ही दिन बाद अमेरिकाके सुप्रसिद्ध दानी मिस्टर एड्रू कार्नजी-ने टस्केजी विद्यालयके नवीन पुस्तकालयके लिए बीस हजार डालर भेज दिये। हमारा पुराना पुस्तकालय एक छोटासी झोपडीमे था। मिस्टर कार्नजी-की सहानुभूति और सहायता प्राप्त करनेमे मुझे दस वर्ष उद्योग करना पडा। दस वर्ष पहले पहली मुलाकातमे उन्होंने हमारे विद्यालयकी ओर विशेष ध्यान न दिया था। परन्तु मने उन्हे यह दिखला देनेका निश्चय किया था कि हम लोग उनके दानपात्र हैं। दस वर्ष अविराम परिश्रम करनेके पश्चात् मैंने उन्हें निम्नलिखित पत्र लिखा —

१५ दिसबर १९००।

मिस्टर एड्रू कार्नेजी,

५ डब्ल्यू ५१ स्ट्रीट, न्यूयार्क—की सेवामे।

प्रिय महाशय, कुछ समय पूर्वकी भेंटमें सूचित किये अनुसार टस्केजी विद्यालयके पुस्तकालय-भवनके लिए आपकी सेवामे यह प्रार्थनापत्र भेजता हूँ।

इस समय हमारे विद्यालयमे ११०० विद्यार्थी, ८६ कर्मचारी और अध्यापक सपरिवार हे। विद्यालयके आसपास लगभग २०० नीग्रो रहते है। ये सब लोग इस पुस्तकालयसे बहुत लाभ उठा सकेंगे।

हमारे पास १२०० पुस्तके, सामायिक पत्र और मित्रोंके दिये हुए उपहार आदि हैं। इनके लायक हमारे पास स्थान नही और न कोई वाचनालय ही है जहाँ लोग आकर पुस्तके या पत्र पढ सकें।

हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएट दक्षिणके हर हिस्सेमे काम करने जाते ह। इस लिए इसमें सन्देह नहा कि वाचनालयसे उन्हें जो ज्ञान प्राप्त होगा वह समस्त नीग्रो जातिकी उन्नतिमे सहायक होगा।

हमारी आवश्यकतानुसार भवन बीस हजार डालरमे बन जायगा। इस भवनके लिए ईंट बनानेका तथा बढई, लुहार आदिका सारा काम विद्यार्थी खुद कर लगे। आपके धनमे केवल भवन ही नहीं बनेगा, बल्कि भवनके बनानेमे बहुतसे विद्यार्थियोंको इमारतके कामकी शिक्षा मिलेगी और उनके कार्यके पुरस्कारस्वरूप उन्हें जो धन मिलेगा, उसकी सहायतासे वे विद्यालयम रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। मै नहीं जानता कि इतने धनसे दूसरी किसी जातिका

इतनी उन्नति हो सकती है। यदि आप कुछ और अधिक विवरण जानना चाहें तो मैं प्रसन्नतापूर्वक बतला सकता हूँ।

विनीत—

बुकर टी. वाशिंगटन,

प्रिन्सिपल।

इसके उत्तरमें मिस्टर कार्नेजीने लिखा कि —

" पुस्तकालयके भवनके लिए मैं बडी प्रसनतासे बीस हजार डालर तक देनेके लिए तैयार हूँ। आपके इस उदार कार्य्यसे मुझे बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई है। "

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि व्यवहार यदि साफ और सुन्दर रक्खा जाय तो धनवान् लोग सहानुभूतिके साथ अवश्य सहायता करते हैं। टस्केजी-विद्यालयका हिसाब और अन्य व्यवहार मैंने इतना साफ रखनेकी चेष्टा की है कि न्यूयार्ककी बडीसे बडी कोठी भी उसे देखकर प्रसन्न होगी।

विद्यालयको मिले हुए बडे बडे दानोंका हाल मैं ऊपर कहा चुका। पर, हमारे विद्यालयको उन्नत दशामें लानेके लिए जो धन खर्च हुआ है उसका बडा भारी अंश छोटी छोटी रकमोंसे ही इकट्ठा हुआ है। जितने परोपकारी कार्य होते हैं वे साधारणत सच्ची सहानुभूति रखनेवाले साधारण लोगोंकी छोटी मोटी रकमों पर ही चल सकते हैं। धनसग्रह करते समय मैंने अनेक धर्मोपदेशकोंकी हालत देखी है। इनके पीछे सहायता माँगनेवालोंकी इतनी भीड रहती है कि साधारण मनुष्य देखकर ही घबरा जाय। पर इनकी सहानुभूति और सहिष्णुता देखकर मैं चकित हो जाता हूँ। ईसके समान उदार और परोपकारी जीवनका महत्त्व मैंने इन्हीं धर्मोपदेशकोंके जीवनसे समझा है। आज पैंतीस वर्षोंसे काले लोगोंकी उन्नतिके लिए अमेरिकाका सार्वजनिक (सब सप्रदायोंका) क्रिश्चियन चर्च जो काम कर रहा है वह बडा ही प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है। रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एनडेवर सोसायटियों, मिशनरी सस्थाओं और सार्वजनिक चर्चोंसे मिलनेवाले धनमें ही नीग्रो लोगोंका ' काया पलट ' हो रहा है।

इन छोटी रकमोंका जिक्र करते हुए मुझे यह भी कहना चाहिए कि टस्केजीके ग्रेज्युएट भी अपना वार्षिक चन्दा समय पर भेज देते हैं। अपवादरूप बहुत ही थोडे हैं। यह चन्दा पचीस सेंटसे दस डालर तक है।

तीसरे वर्षका कार्य आरभ होनेके समयसे हमें अन्य तीन स्थानोंसे अकस्मात सहायता मिलने लगी, और अवतक बराबर मिलती है। (१) अलबामा सरकारने अपनी सहायता दो हजार डालरसे बढाकर तीन हजार प्रतिवर्ष कर दी और आगे चलकर यह सहायता साढे चार हजार डालर तक पहुँच गई। इस सहायतावृद्धिमें वहाँकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य माननीय मिस्टर एम एफ फास्टरने बहुत उद्योग किया है। (२) जान एफ स्लेटर फडसे हमें प्रति वर्ष ग्यारह हजार डालर मिलते हैं। (३) पीवाडी फडसे भी सहायता मिलने लगी। पहले पाँच ही सौ डालर मिले, पर बढते बढते अब यह रकम पद्रह सौ डालर तक पहुँच गई है।

स्लेटर और पीवाडी इन दो फडासे सहायता पानेका उद्योग करनेमें दो अच्छे सज्जनोंसे मेरी जान पहचान हुई। इन दोनोंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाको एक अच्छे मार्ग पर ला दिया है। इनमेंसे एक तो वाशिंगटनके मिस्टर जे एल करी और दूसरे न्यूयार्कके मिस्टर मारिस के जेसप है। डाक्टर करी दक्षिण प्रान्तके रहनेवाले हैं। वे पहले संयुक्तसेनामें एक सैनिक थे। उनके समान नीग्रो जातिकी अभिवृद्धि चाहनेवाले अथवा वर्णविद्वेषको पास भी न फटकने देनेवाले सज्जन इस देशमें बहुत कम होगे। उनमें विशेषता यह है कि काले गोरे दोनों ही उन पर विश्वास रखते हैं। उनसे मेरी जो पहली भेंट हुई उसे मैं कभी न भूलूँगा। मैं उनसे मिलनेके लिए रिचमड शहरमें उनके मकान पर गया था। इससे पहले उनकी सुजनताके विषयमें मैं बहुत कुछ सुन चुका था। तथापि मेरी उम्र अल्प होने और अनुभव भी कुछ न होनेके कारण उनके सामने जाते मुझे डर लगा और शरीर काँपने लगा। उन्होंने बडे प्रेमसे मेरा हाथ पकडा और मुझसे इतनी मधुर और उत्साह देनेवाली वाणीसे बातचीत की, तथा मेरे कर्तव्यके विषयमें मुझे ऐसी अच्छी शिक्षा दी कि मुझे इस बातका पूरा विश्वास हो गया कि मानव जातिके कल्याणके लिए सदा निष्काम भावसे प्रयत्न करनेवालोंमेंसे ही वे एक महात्मा हैं। और सचमुच ही, अनुभवसे मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होता गया है।

मिस्टर मारिस के जेसप, स्लेटर-फडके कोषाध्यक्ष हैं। नीग्रो लोगोंकी उन्नतिके लिए अपना समय और सम्पत्ति खर्च करनेवाला इनके समान धनवान् और उद्योगी पुरुष मैंने दूसरा नहीं देखा। इधर कुछ वर्षोंमें टस्केजी-विद्यालयकी औद्योगिक शिक्षाको जो महत्त्व हुआ है और उसकी जैसी मजबूत नींव

गई है उसके लिए विद्यालय इनका सदा कृतज्ञ रहेगा, क्योंकि इन्हींके प्रयत्न और प्रभावसे यह सब हो सका है।

तेरहवाँ परिच्छेद।



पॉच मिनिटकी वक्तृताके लिए दो हजार मीलकी यात्रा।

जब विद्यालयके साथ छात्रावासका प्रबन्ध हो गया तब बहुतसे ऐसे विद्यार्थियोंने भी विद्यालयमें भरती होनेके लिए प्रार्थना की, जो योग्य और सत्पात्र थे, पर किसी प्रकारकी फीस न दे सकते थे। इन प्रार्थियोंको निराश करना हम लोगोंसे न बन पड़ा और उनके लिए, सन् १८८४ में, एक नाइट-स्कूल (रात्रिकी पाठशाला) खोला गया।

हेम्पटनके नाइट स्कूलके समान इसका भी प्रबन्ध किया गया। ऐसे ही विद्यार्थी इसमें भरती किये गये जो अपने भोजनका कुछ भी प्रबन्ध न कर सकते थे और इस कारण दिनकी पाठशालामें न पढ सकते थे। उन्हें दिनमें दस घंटे काम करना पडता था और रातको दो घंटे पढना पडता था। परन्तु यह नियम पहले एक दो वर्षके लिए ही था। उन्हें भोजन खर्चसे कुछ अधिक मिल जाता था और उनकी यह बचत विद्यालयके कोशमें जमा की जाती थी। आगे जब ये विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें पढना शुरू करते थे तब उनकी इस बचतसे उनका भोजन-खर्च चलाया जाता था। इस समय इस नाइट-स्कूलमें साढे चार सौ विद्यार्थी पढते हैं।

इस नाइट-स्कूलसे बढकर विद्यार्थियोंकी योग्यता परखनेवाली और कोनसी कठिन कसौटी हो सकती है? इसमें विद्यार्थियोंकी दृढताका अच्छा परिचय मिल जाता है, इसी लिए मैं इसको बहुत महत्त्वकी सस्था समझता हूँ। रातकी दो घंटेकी पढाईके लिए जो विद्यार्थी दिनमें दस घंटे धोबीखाने या ईंटोंके कारखानेमें काम कर सकता है उसमें शिक्षा सम्पादनका पूरा सामर्थ्य होता है, यह बात आप ही साबित हो जाती है।

रातकी पढाई समाप्त होने पर विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें भरती होता है। वहाँ उसे सप्ताहमें चार दिन शिक्षा दी जाती है और बाकी दो दिन वह अपने काममें खर्च करता है। इसके अतिरिक्त गरमीके तीन महीने भी वह अपने

कामहीमें बिताता है। रातकी पाठशालासे जो विद्यार्थी निकल आता है उसे साधारणतः शिल्पसम्बधी और मानसिक शिक्षा पूर्ण करनेका मार्ग मिल जाता है। विद्यार्थी कितना ही धनवान् क्यों न हो, उसे इस विद्यालयमें हाथसे काम करना ही पड़ता है। अब अन्य विषयोंके समान शिल्पशिक्षा भी सर्वप्रिय हो चुकी है। टस्केजी-विद्यालयसे ग्रेजुएट होकर संसारमें यश और नाम प्राप्त करके सुखी बने हुए कितने ही स्त्रीपुरुषोंने इसी नाईट स्कूलसे पढ़ना आरम्भ किया था।

टस्केजीमें शिल्पशिक्षा पर जोर दिये जानेका यह अर्थ नहीं है कि यहाँ धार्मिक अथवा आध्यात्मिक शिक्षामें कुछ ढिलाई की जाती है। यह विद्यालय किसी सम्प्रदायविशेषका नहीं, तथापि पूर्ण धार्म्मिक है। हमारी उपासनायें, प्रार्थनासभायें, रविवारकी पाठशालायें, क्रिश्चियन एनडेवर सोसाइटियाँ, वाइ एम सी ए और अन्यान्य मिशनरी संस्थायें हमारे उक्त कथनको प्रमाणित करती हैं।

सन् १८८५ में मिस आलिविया डेविड्सनसे मेरा विवाह हुआ। विवाहके पश्चात् भी वे अपनी शक्ति और समय, घरके कामकाजके अतिरिक्त, विद्यालयके लिए खर्च करती रहीं। विद्यालयमें पढ़ाने और निगरानी करनेके अतिरिक्त पहलेकी भाँति बीच बीचमें धनसंग्रह करनेके लिए उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करनेका क्रम भी उन्होंने जारी रक्खा। चार वर्ष संसारसुख अनुभव कर और आठ वर्ष विद्यालयके लिए प्रसन्नतापूर्वक उद्योग करके १८८९ में वे इहलोकसे सिधार गईं। अपने प्रिय कार्यके लिए उन्होंने अपना शरीर दे डाला था। हम दोनोंके संसारसुखके चिह्नस्वरूप हमारे दो सुन्दर और बुद्धिवान् पुत्र हुए। उनके नाम बेकर टैलिफेरो और अर्नेस्ट डेविड्सन हैं। इनमेंसे बड़े, बेकरने टस्केजीमें ईंटें तैयार करनेके काममें अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि मैंने साधारणमें वक्तृता देनेका आरम्भ किस प्रकार किया। इसके उत्तरमें मुझे यह कहना है कि सार्वजनिक भाषणोंमें मैंने अपने जीवनका बहुत ही थोड़ा अंश लगाया है। बात यह है कि मैं कोरी बातें करनेकी अपेक्षा वास्तविक कार्य्य करना अधिक पसन्द करता हूँ। मैं जब जनरल आर्मस्ट्रांगके साथ उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करने गया था और बड़े बड़े नगरोंमें सभायें करके मैंने व्याख्यान दिये थे, तब मालूम होता है कि एक व्याख्यानके समय वहाँकी जातीय शिक्षासमितिके सभापति माननीय मिस्टर थामस डब्ल्यू बिक्नेल उपस्थित थे। कुछ दिनोंके उपरान्त उन्होंने

मुझे समितिके एक अधिवेशनमें व्याख्यान देनेके लिए निर्मंत्रित किया। यह अधिवेशन माडीसन नामक नगरमें होनेवाला था। यहींसे मानों मेरे व्याख्यान-जीवनका आरंभ हुआ।

समितिमें मेरे व्याख्यानके समय लगभग चार हजार आदमी उपस्थित थे। पीछेसे मुझे यह भी मालूम हुआ कि इस व्याख्यानको सुननेके लिए अलबामा रियासत और ग्राम टस्केजीके भी कुछ गोरे लोग चले आये थे। कुछ समय बाद इनमेंसे कुछ लोगोंने मुझसे कहा कि "हम आपके व्याख्यानमें दक्षिणी गोरोंकी मिट्टी पलीद होनेका ही अनुमान करते थे और इसी लिए हम लोग आपका व्याख्यान सुननेके लिए इतनी दूर गये, पर आपके मुँहसे एक भी खराब शब्द न सुनकर हम लोगोंको आश्चर्य हुआ। यही नहीं बल्कि टस्केजी-विद्यालय स्थापित करनेमें गोरे लोगोंने जो सहायता दी थी उसके लिए आपने उनका आभार तक माना।"

टस्केजीमें जिस समय मैं पहले पहल आया उसी समय मैंने यह निश्चय कर लिया था कि यहीं मैं अपना घर बनाऊँगा। टस्केजीसे मेरा प्रेम हो गया था। वहाँके गोरे अधिवासियोंमें टस्केजीके लिए जो प्रीति थी उससे कम प्रीति मुझमें नहीं थी और मुझे वहाँके अच्छे कार्यों पर उतना ही अभिमान था, और बुरे कामोंके लिए उतनी ही घृणा थी जितनी कि गोरोंको थी। दक्षिण प्रान्तमें मैं जिन बातोंको छिपाये रहता था अथवा जिन्हें कहना नहीं चाहता था उन बातोंको उत्तर प्रान्तमें जाकर कहना मैंने कभी उचित नहीं समझा। किसी व्यक्तिको गालियाँ देकर सन्मार्गमें प्रवृत्त करनेकी आशा करना दुराशा मात्र है। हाँ, यदि उसके दोष दूर करने हैं तो सबसे अच्छा उपाय यही है कि उसके दोषोंकी ओर अधिक ध्यान न देकर उसके अच्छे कामोंकी प्रशंसा करता रहे। इस तत्त्व पर अमल करते हुए मैंने उचित अवसर पर दक्षिणके लोगोंके अन्यायका समुचित रीतिसे, विरोध करनेमें भी भूल नहीं की है और उचित आलोचना करने पर मैंने देखा है कि उससे दक्षिणवाले नाराज भी नहीं होते। आलोचनाके विषयमें मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि जहाँके लोगोंकी आलोचना करनी हो वहीं जाकर उसे करनी चाहिए। इस लिए यदि कभी दक्षिणवालोंकी आलोचना करनी होती है तो मैं दक्षिणके ही किसी नगरमें उसे करता हूँ—बोस्टन या और किसी शहरमें जाकर नहीं।

माडीसनवाली वक्तृतामें मैंने यह बतलाया था कि सीधे और सच्चे व्यवहारसे ही काले गोरोंमें मेल बढ़ सकता है और दोनों जातियोंको इस बातका यत्न करना चाहिए कि परस्पर द्वेषभाव रहनेके बदले मित्रभाव स्थापित हो। मैंने वहाँ यह भी बतलाया था कि हम लोग जिस स्थान और समाजमें रहते हैं उसी स्थान और समाजका जिस बातमें हित हो उसी बात पर ध्यान देकर निर्वाचनके समय सम्मति देनी चाहिए। हजारों मील दूर रहनेवाले किसी मनुष्यको पसन्न करनेके लिए अपने हिताहितका विचार छोड़ सम्मति देना अपनी हानि करना है।

इस व्याख्यानमें मैंने नीग्रो जातिका ध्यान इस बातकी ओर दिलाया था कि यदि उसे अपना भविष्य उज्ज्वल करना हो तो आर सब बातोंको छोड़ उसे अपने कला कौशल, बुद्धिमत्ता, और शुद्ध आचरणसे समाजको अपनी ओर खींच लेना चाहिए। यदि उससे यह न बन पड़ेगा तो समाजको उसकी आवश्यकता ही न रहेगी। जिस किसी मनुष्यने कोई कला हस्तगत कर ली है—फिर उसका रंग चाहे गोरा हो या काला—वह अपनी कलाके बलसे अवश्य बाजी मार लेगा, और जो नीग्रो औरोंकी आवश्यकताओंके अनुसार उन्हें पूर्ण करनेमें जितना ही समर्थ होगा उसकी इज्जत और प्रतिष्ठा भी उसी हिसाबसे बढ़ती जायगी।

उक्त कथनकी सत्यता प्रमाणित करनेके लिए मैंने एक दृष्टान्त भी दिया था। पहले एक एकड़ जमीनमें ४९ मन शकरकन्द पैदा होते थे, परन्तु हमारे विद्यालयके एक ग्रेज्युएटने एक ही एकड़से २५० मन शकरकन्द पैदा करके दिखला दिये। खेतीकी अर्वाचीन पद्धति और रसायनशास्त्रके ज्ञानसे ही वह ऐसा कर सका। इससे आसपासके गोरे किसानोंने उसका बड़ा सम्मान किया और बहुतेरे उसके पास शकरकन्दकी खेतीके विषयमें पूछताँछ करनेके लिए आने लगे। उसके आदरसत्कारका मुख्य कारण यही था कि उसने अपने ज्ञान और परिश्रमसे समाजके सुख और वैभवको बढ़ाया था। मैंने इसके साथ ही यह भी बतला दिया था कि हम लोग अच्छे शकरकन्द पैदा करना अथवा सदा खेतों पर काम करते रहना ही नीग्रो लोगोंके लिए काफी नहीं समझते। मैंने यह समझानेकी चेष्टा की थी कि इसी प्रकारके किसी भी काममें—किसी भी उद्योग धन्धेमें यदि कोई अच्छा जानकार हो जाय तो आगे चलकर उसके लड़के और नाती उससे भी अधिक कुशल और अभिज्ञ होंगे।

इस प्रकार मैने अपने पहले व्याख्यानमें दोनों जातियोंके विषयमें थोडाही बातें कहीं थी। तबसे अबतक मेरे उन विचारोंमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

पहले जब मैं किसी मनुष्यको नीग्रो लोगोंके विषयमें अपशब्द प्रयोग करते हुए देखता था अथवा उनकी सर्वाङ्गीन उन्नतिको रोक देनेका प्रयत्न करते हुए पाता था तो मन-ही-मन बहुत अप्रसन्न होता था, पर अब अगर मैं किसीको किसी गैरकी उन्नतिमें बाधा डालते हुए देखता हूँ तो मुझे उस मनुष्य पर दया आती है। मैं जानता हूँ कि स्वय किसी प्रकारकी उन्नति न कर सकनेके कारण ही वह इस बुरे मार्ग पर चलता है। ऐसे मनुष्य पर मुझे इस लिए दया आती है कि वह जिस ससारकी उन्नतिमें बाधा डालनेकी चेष्टा करता है उस ससारकी उन्नति किसीके रोके नहीं रुक सकती और इस लिए वह सकीर्ण हृदयवाला मनुष्य आगे चलकर स्वय अपने किये पर लज्जित होगा। परस्पर सहानुभूति और बन्धुप्रेम, आदि बातोंमें मानव जातिकी बराबर प्रगति होती जा रही है और इस प्रगतिको रोकनेकी चेष्टा करना और चलती हुई रेलगाडीको रोकनेके लिए उसके आगे लेट जाना एक ही बात है।

माडीसनमें शिक्षासमितिके सामने मैने जो व्याख्यान दिया उससे उत्तर अमेरिकामें मेरा नाम चारों ओर फैल गया और तबसे व्याख्यान देनेके लिए मुझे वहाँके निमन्त्रण पर निमन्त्रण आने लगे।

इस समय मैं दक्षिणके गोरों पर भी अपने विचार प्रकट करनेके लिए उत्सुक हो रहा था। सयोगवश १८९३ में मुझे इसके लिए भी अच्छा मौका मिल गया। इस वर्ष एटलाटामें सब राष्ट्रोंके पादरियोंकी एक महासभा हुई थी। जिस समय मुझे इस महासभामें व्याख्यान देनेका निमन्त्रण-पत्र मिला उस समय मैं बोस्टनमें एक काम कर रहा था। पहले तो मुझे एटलाटामें जाकर व्याख्यान देना असभव ही मालूम हुआ। तथापि मैंने अपने कार्यक्रमको देखकर यह मालूम किया कि मैं बोस्टनसे चलकर एटलाटामें व्याख्यानसे आध घटे पहले पहुंच सकता हूँ और बोस्टन लोटनेसे पहले वहाँ एक घटे ठहर सकता हूँ। आमन्त्रण पत्रमें मेरे व्याख्यानके लिए पाँच मिनिटका समय लिखा था। अब मेरे सामने केवल यही प्रश्न रहा कि इतनी लम्बी मंजिल मार कर वहाँ पाँच मिनिटके समयमें मैं कुछ कह भी सकूंगा या नहीं।

मैंने यह सोचा कि उस अवसर पर वहाँ बड़े बड़े गोरे अधिकारी और महाजन एकत्रित होंगे। इन लोगोंको टस्केजी शिक्षाक्रमके कामका परिचय देनेके लिए ऐसा अच्छा अवसर शीघ्र न मिलेगा। इस लिए मैंने यह यात्रा करना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर मैंने दो हजार दक्षिणी और उत्तरी गोरोंके सामने केवल पाँच मिनिट व्याख्यान दिया। मेरा व्याख्यान सुनकर वे लोग आनन्दसे गद्गद हो गये। दूसरे दिन एटलांटाके समाचारपत्रोंने मेरे व्याख्यान पर अपने अनुकूल अभिप्राय प्रकट किये, और चारों ओर उसकी चर्चा होने लगी। दक्षिणके बड़े बड़े लोगोंको मेरा व्याख्यान सुननेका मौका मिला और मैंने समझा कि मेरा उद्देश्य सफल हुआ।

अब लोगोंमें मेरा व्याख्यान सुननेकी चाह दिन पर दिन बढ़ने लगी और गोरे तथा नीग्रो दोनों ही उसके लिए समानरूपसे उत्सुक होने लगे। टस्के-जीके कार्यसे मैं जितना समय बचा सकता था उतना समय मैं इन व्याख्या-नोंमें खर्च करने लगा। टस्केजी-विद्यालयके फण्डके लिए ही मैंने उत्तर प्रान्तमें अनेक व्याख्यान दिये। नीग्रो लोगोंके सामने मेरे जो व्याख्यान होते थे उनका उद्देश्य यही होता था कि लोग धार्मिक, मानसिक, शिल्प-सम्बन्धी और औद्योगिक शिक्षाका महत्त्व जान जायँ।

अब मैं अपने जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना आपको बतलाता हूँ। १८ सितंबर सन् १८९५ के दिन एटलांटाकी सर्वजातीय प्रदर्शनीमें मेरा जो व्याख्यान हुआ उससे लोगोंमें बड़ा आन्दोलन मचा और ओरसे छोरतक सारे देशमें मेरा कीर्ति फैल गई।

इस घटना पर इतना आन्दोलन हुआ है और मेरे भाषणके सम्बन्ध मुझ पर प्रश्नोंकी इतनी भरमार हुई है कि यदि मैं यहाँ इस घटनाका विस्तारपूर्वक विव-रण दे दूँ तो कुछ अनुचित न होगा। बोस्टनसे आकर एटलांटामें मैंने जो पाँच मिनिटकी वक्तृता दी, वही शायद मेरे इस दूसरे व्याख्यानका मूल है। एट-लांटाकी प्रदर्शनीको सरकारकी सहायता चाहिए थी और इसलिए वाशिंगटन नगरमें कांग्रेस कमेटीसे मिलनेके हेतु एटलांटाके पञ्चोंके साथ जानेके लिए वहाँके नगराध्य लोगोंने एक तार द्वारा मुझसे प्रार्थना की। इन पञ्चोंमें जॉर्जियाके पचास मुखिया और प्रतिष्ठित पुरुष थे। बिशप ग्रांट, बिशप गेनिस और मैं, इन तीन आदमियोंको छोड़कर बाकी सब गोरे थे। शहरके मेयर (शेराफ) और शह-रके अन्य अधिकारियोंने कमेटीके सामने भाषण किये। इनके बाद दोनों काले

आत्मो०—८

प्रतिनिधियोंके भापण हुए। वक्ताओंकी नामावलीमें मेरा नाम सबके बाद लिखा गया था। मे कभी ऐसी कमेटीके सामने उपस्थित न हुआ था और राजधानीमें बोलनेका मैंने कभी साहस भी न किया था। क्या कहूँ और क्या न कहूँ, कुछ देरतक तो मैं यही सोचता रहा। अन्तमें मेरी वारी आई और उस समय मेरे हृदयमें जो विचार उठे मैंने प्रकट कर दिये। इस समय मुझे अपना सम्पूर्ण व्याख्यान स्मरण नहीं, पर मेरे कहनेका तात्पर्य यह था कि यदि कांग्रेस वास्तवमें दक्षिणसे जाति भेद दूर कर दोनो जातियोंमें परस्पर मेल बढाना चाहती है तो उसे उचित है कि वह दोनों जातियोंकी साम्पत्तिक और मानसिक उन्नतिमें हर प्रकारसे सहायता करे। मैंने यह भी बतलाया कि दासत्वकी बेडी टूटने पर, दोनों जातियोंने अपनी कितनी उन्नति की है, यह दिखलानेका सुयोग और उससे भविष्यत्के कार्यके लिए भरपूर उत्साह इस प्रदर्शनीसे मिलेगा। इसके बाद मैंने कहा कि यद्यपि केवल राजनीतिक अधिकारोंसे ही नीग्रो लोगोंको स्वर्ग नहीं मिल जायगा, तथापि उनके निर्वाचन-सबंधी अधिकारोंको छल कपटसे छीन लेनेका प्रयत्न भी न होना चाहिए, बल्कि इसके साथ ही उनमें उद्यम, कौशल, मितव्यय, बुद्धिमत्ता और सदाचारके प्रचारका भी प्रयत्न किया जाना चाहिए। अन्तमें मेरे कहनेका यह भाव था कि सिविल वारके बाद लोगोंको इस प्रकारका यह पहला ही सुअवसर प्राप्त हुआ है, और यदि कांग्रेस इस अवसर पर चाही हुई रकम देगी तो इससे दोनों जातियोंका वास्तविक और स्थायी कल्याण होगा।

मैंने यह व्याख्यान केवल पद्रह-बीस मिनिट तक दिया था, तो भी जाजियाके पचों और कांग्रेसके सदस्योंने मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया, जिससे मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। कमेटीने एक दिलसे हम लोगोंके अनुकूल रिपोर्ट लिख भेजी और थोडे ही दिनोंमें उसकी सूचना कांग्रेसने मान भी ली। इससे एटलांटा-प्रदर्शनीकी सफलताके विषयमें कोई सन्देह न रहा।

इस यात्रासे लौटकर प्रदर्शनीके सचालकोंने यह निश्चय किया कि प्रदर्शनीमें एक ऐसा बडा भवन बनवाया जाय जिसमें यह दिखलाया जाय कि दासत्वसे मुक्त होकर नीग्रो लोगोंने अबतक क्या उन्नति की है। यह भी निश्चय हुआ कि भवनका नकशा नीग्रो ही खींचें और भवन भी वे ही बनावें। इस निश्चय पर शीघ्र ही अमल भी किया गया। नीग्रो लोगोंने जो भवन तैयार किया वह किसी बातमें प्रदर्शनीके अन्य भवनोंसे कम न था।

अब यह विचार हुआ कि नीग्रो लोगोंका पदार्थ-संग्रह भी अलग रक्खा जाय और उस पर मैं निगरानी करूँ। पर टस्केजीमें इस वक्त कामोंकी बहुत अधिकता थी और इस लिए मैंने यह बात स्वीकार न की। तब शायद मेरी ही सूचनासे लिंचबर्गके मिस्टर आई० गारलेंड पेन इस काम पर नियुक्त किये गये। मैंने अपनी शक्ति भर उनकी सहायता करनेमें कोई बात उठा न रक्खी। पदार्थ-संग्रह बडा और देखने योग्य था। हेम्पटन और टस्केजी विद्यालयसे आई हुई वस्तुओंपर तो लोग टूटे पडते थे। नीग्रो-वस्तुसंग्रह देखकर दक्षिणी गोरोंको बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ।

प्रदर्शनी खुलनेका दिन समीप आया और कार्यक्रम बनने लगा। कुछ लोगोंका यह प्रस्ताव था कि प्रदर्शनी खुलने पर पहले दिन किसी नीग्रोकी भी वक्तृता होनी चाहिए, क्योंकि प्रदर्शनीमें उन लोगोंने मुख्यतया योग दिया है, और इसके सिवाय उनमेंसे किसी एकका व्याख्यान पहले रोज होनेसे दोनों जातियोंमें परस्पर सद्भाव भी बढेगा। कुछ लोगोंने इस प्रस्तावका विरोध किया, परन्तु डायरेक्टर लोग सुयोग्य थे इस लिए उन्होंने आरंभिक वक्तृताके लिए किसी नीग्रोकोही निमन्त्रित करनेका निश्चय कर दिया। अब दूसरा प्रश्न यह उठा कि इस कार्य्यके लिए किसको बुलाया जाय। कई दिन वादविवाद होता रहा और अन्तमें यह निश्चय हुआ कि मैं ही पहले दिन वक्तृता दूँ। शीघ्र ही मेरे पास निमन्त्रण पत्र भी आ गया।

इस निमन्त्रणसे मुझ पर कितनी बडी जिम्मेदारी आ पडी, सो वही अनुमान कर सकता है जो स्वयं कभी ऐसी स्थितिमें पडा हो। निमन्त्रणपत्र पाते ही मेरे मनमें तरह तरहके विचार उठने लगे। मुझे स्मरण हुआ कि मैं गुलाम था, मेरा बचपन दुःख दरिद्रता और अज्ञानमें बीता है, इतनी बडी जिम्मेदारीके कार्यके लिए आपको तैयार करनेके मुझे बहुत ही कम मौके मिले हैं, कुछ ही वर्ष पहले मेरी अवस्था इतनी गिरी हुई थी कि श्रोताओंमेंसे कोई भी आदमी उठकर मुझे अपना 'गुलाम' बतलाकर गिरफ्तार कर सकता था, और इस समय भी बहुत संभव है कि मेरे पुराने मालिकोंमेंसे कुछ लोग मेरा भाषण सुननेके लिए एटलांटाकी प्रदर्शनीमें आवें।

एक नीग्रोके लिए ऐसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय अवसर पर दक्षिणी गोरे पुरुषोंके और स्त्रियोंके साथ एक ही व्यासपीठ (प्लेटफार्म) पर खडे होकर वक्तृता

देनेका यह पहला ही अवसर था। मैं जानता था कि मेरे पुराने मालिकोंके प्रतिनिधि (वंशज) रूप दक्षिणके बड़े बड़े विद्वान् और धनवान् इस व्याख्यानको सुननेके लिए आवेंगे। इसके साथ ही मुझे यह भी मालूम था कि उत्तर प्रान्तके भी बहुतसे गोरे और मेरी जातिके लोग उपस्थित होंगे।

मैंने पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि मैं कोई ऐसी बात न कहूँगा जिसे मैं सत्य और समुचित नहीं समझता। मुझे इस बातकी कोई सूचना नहीं मिली थी कि मैं कौनसी बात कहूँ और कौनसी छोड़ दूँ। मेरे लिए यह गौर वकी ही बात थी। प्रदर्शनीके संचालकोंको यह भली भाँति मालूम था कि अगर मैं चाहूँ तो एक ही बातसे प्रदर्शनीकी मर्य्यादा भंग कर दे सकता हूँ। परन्तु मुझे अपने भाषणमें सचाईके साथ अपनी जातिका पक्ष सुरक्षित रखना था और इस लिए मैं इस बातसे डरता था कि मेरा भाषण यदि अप्रासंगिक हुआ तो भविष्यमें कई बरसों तक कोई नीग्रो ऐसे अवसरों पर वक्तृता देनेके योग्य न समझा जायगा। उत्तरप्रान्तवासियोंके संबंधमें और साथ ही दक्षिणके अच्छे अच्छे सज्जनोंके विषयमें सच बातें बतलानेका ही मैंने निश्चय किया।

उत्तर और दक्षिणके समाचारपत्रोंमें मेरे भावी भाषणके संबंधमें खूब टीका-टिप्पणियाँ होने लगीं और उनसे प्रदर्शनी खुलनेके पूर्व चारों ओर मेरी चर्चा फैल गई। दक्षिणके कई समाचारपत्र मेरे व्याख्यान देनेके विरोधी थे। मेरे कई जाति भाइयोंने मेरे व्याख्यानके लिए कितनी ही बातें सुझाई थीं। उस समय विद्यालयका वर्षारम्भ होनेके कारण मुझे अवकाश बहुत कम था, तो भी समय निकालकर मैंने अपना भाषण पूरा ध्यान देकर तैयार किया। सितंबरकी अठारहवीं तारीख जैसे जैसे पास आने लगी वैसे वैसे मुझे न जाने क्यों, अपने प्रयत्न पर पानी फिरनेकी आशंका होने लगी और मेरा उत्साह भी घटने लगा। मैंने अपना भाषण अपनी स्त्रीको पढ़ सुनाया, उन्होंने उसे बहुत सराहा। एटलांटाके लिए प्रस्थान करनेसे एक दिन पहले १६ सितंबरको टस्केजी-विद्यालयके अध्यापकोंके बहुत आग्रह करने पर मैंने उन्हें भी अपना भाषण पढ़ सुनाया। उन्होंने उस पर जो आलोचना की उससे भी मेरे मनकी कुछ कुछ दूर हो गई।

१७ सितंबरको प्रातःकाल मैं अपनी स्त्री मिसेस वाशिंगटन और तीनों बच्चोंके साथ एटलांटाके लिए रवाना हुआ। फाँसी पर लटकाये जानेके लिए जानेवाले किसी अपराधीके समान इस समय मेरी दशा हो रही थी। टस्केजीमें

जाते समय मुझे पासहीके एक गाँवमें रहनेवाला एक गोरा किसान मिला। उसने मेरी तरफ देखकर कहा—" वाशिंगटन, तुमने उत्तरके गोरोंके सामने और गाँव-देहातोंमें रहनेवाले मेरे जैसे दक्षिणी गोरोंके सामने लेकचरबाजी की है, पर, कल एटलाटामें उत्तरके गोरे लोग, और दक्षिणके गोरे तथा नीग्रो लोग तुम्हारा लेकचर सुननेके लिए इकट्ठे होंगे। मालूम होता है कि तुम इसी सोचमें पड़े हुए हो।" इस गोरे किसानने मेरे मनका हाल तो खूब जान लिया, पर उसकी स्पष्टोक्तिसे—साफ साफ कह देनेसे—मेरे मनको धैर्य न मिला।

मार्गमें अनेक गोरे और नीग्रो मेरी ओर इशारा करके प्रदर्शनीके विषयमें जोर जोरसे बातें करते हुए दिखाई देते थे। एटलाटामें एक कमेटीने हम लोगोंका स्वागत किया। गाड़ीसे उतरते ही सबसे पहले, एक नीग्रोके मुँहसे निकले हुए ये शब्द सुन पड़े—" कल प्रदर्शनीमें हमारी जातिके इसी आदमीका व्याख्यान होनेवाला है, मैं इसका व्याख्यान सुननेके लिए अवश्य जाऊँगा।"

उस समय सारा नगर सब प्रदेशोंके डेलीगेटों, विदेशी राज्योंके प्रतिनिधियों और बड़ी बड़ी नागरिक और सामरिक संस्थाओंसे ठसाठस भरा हुआ था। समाचारपत्रोंने बड़े बड़े शीर्षक देकर दूसरे रोजके कार्यक्रमके विषयमें लेख प्रकाशित किये थे। इन सब बातोंसे मेरी छाती और भी धड़कने लगी। रात-को मुझे पूरी नींद भी न आई। दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने अपने व्याख्यानको एक बार फिर पढ़ा और इस उद्योगमें सफलता प्राप्त करनेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना की। यहाँ मैं यह बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि परमेश्वरसे अपने भाषण पर अनुग्रह करनेकी प्रार्थना किये बिना, मैं कभी श्रोताओंके सामने न जाता था।

मेरा यह नियम है कि वक्तृता देनेसे पहले मैं उसकी तैयारी कर लेता हूँ। मैं श्रोताओंके सामने उसी भावसे खड़ा होकर भाषण करता हूँ कि जिस भावसे कोई मनुष्य अपने मित्रसे एकान्तमें बातें करता है। प्रत्येक श्रोताके हृदयसे भिड़ जाना ही मेरी व्याख्यानकलाका लक्ष्य होता है। किसी सभामें भाषण करते हुए मैं यह नहीं सोचा करता कि मेरा भाषण समाचारपत्रोंमें शोभा पायगा या नहीं, अथवा इस भाषणको और लोग पसन्द करेंगे या नहीं। उस समय सम्मुख उपस्थित लोगोंमें ही मेरी सारी सहानुभूति, सारे विचार और सारी शक्ति तन्मय हो जाती है।

प्रात काल ही बहुतसे लोग जुलूस निकालकर मुझे प्रदर्शनी तक लिवा ले जाने के लिए मेरे स्थान पर आये। इस जुलूसमें बहुतेरे नीग्रो सज्जन गाड़ियों प सवार होकर सम्मिलित हुए थे। मैंने इस बातको गौर करके देखा कि प्रदर्शनीं अधिकारी नीग्रो लोगोंकी खातिर करनेमें विशेष सावधानीसे काम ले रहे हैं प्रदर्शनीतक पहुँचनेमे जुलूसको तीन घंटे लगे। रास्ते पर बड़ी कड़ी धूपं सामना करना पड़ा। प्रदर्शनीके स्थानपर पहुँचकर गरमी और मानसिक कष्टोंवे कारण मेरा शरीर शिथिल हो गया। सभास्थान मनुष्योंसे ठसाठस भरा हुआ थ और स्थानाभावके कारण सहस्रों श्रोता बाहर खड़े थे।

प्लेटफार्म खूब लंबा चौड़ा था, स्थान, व्याख्यानके लिए सर्वथा योग्य था प्लेटफार्म पर पैर रखते ही नीग्रो लोगोंने एक साथ तालियाँ बजाईं और कुछ गोरोंने भी उनका अनुकरण किया। मुझे एक रोज पहले ही यह बतलाया गया था कि बहुतसे गोरे तमाशेके तौर पर मेरा भाषण सुननेके लिए आनेवाले हैं, और बहुतोंकी मेरे साथ सहानुभूति है इस लिए उपस्थित होंगे, परन्तु अधिकांश लोग ऐसे ही होंगे जो मेरी 'मूर्खताकी प्रदर्शनी' देखकर प्रदर्शनीके सचाल-कोंसे ताना मारते हुए यह कहेंगे कि कहिए, हमारा ही भविष्यत्कथन ठीक निकला न?

टस्केजी–विद्यालयके एक ट्रस्टी और मेरे मित्र, दक्षिण-रेलनेके मेनेजर, मिस्टर विलियम एच बाल्डविन एटलाटामें रहते हुए भी प्रारंभिक कार्यक्रम समाप्त होने तक अन्दर नहीं आये, क्योंकि उन्हें इस बातका बड़ा भय और सन्देह था कि न तो मेरा (बुकर टी वाशिंगटनका) यहाँ कुछ सम्मान होगा और न मै अपना काम ही सफलताके साथ कर सकूँगा।

चौदहवाँ परिच्छेद।

एटलांटा–प्रदर्शनीमें व्याख्यान।

आरंभमें गवर्नर बुक्लने एक छोटीसी वक्तृता देकर प्रदर्शनी खोली। इसके उपरान्त जार्जियाके बिशप नेल्सनकी प्रार्थना, अल्बर्ट हावे रका स्तुतिपाठ, प्रदर्शनीके सभापति, तथा श्रीमहलकी सभापत्नी मिसेस जोसेफ आदिके भाषण हुए। अन्तमें गवर्नर बुकलने मेरा परिचय करा दिय

और कहा—"नीग्रो जातिकी उन्नति, संस्कृति और साहस प्रीतिके प्रतिनिधि आज हम लोगोंके सम्मुख उपस्थित हैं। वे अब अपना व्याख्यान देंगे।"

व्याख्यान देनेके लिए जब मैं खड़ा हुआ तब श्रोताओंने, विशेषतः नीग्रोंमेंसे, खूब करतल-ध्वनि की। मुझे इस समय स्मरण है कि मैं जो कुछ बतलानेके लिए खड़ा हुआ था उसका भाव यही था कि दोनों जातियोंमें परस्पर मेल रहे और परस्परकी सहायतासे दोनों उन्नत हों। उस वक्त हजारों मनुष्योंकी दृष्टि केवल मेरे ऊपर गड़ी हुई थी। मैंने अपना व्याख्यान इस तरह प्रारंभ किया —

"माननीय सभापति महाशय, संचालक सभाके सदस्य, और नगरवासियों, दक्षिणकी जनसंख्यामें एक तृतीयांश नीग्रो लोग हैं। इस लिए जब तक इन लोगोंका ध्यान न रक्खा जायगा तब तक दक्षिणवासियोंकी नैतिक सामाजिक अथवा सांपत्तिक, किसी प्रकारकी उन्नति कदापि नहीं हो सकेगी। मेरी जातिके लोग खूब समझते हैं कि इस विशाल प्रदर्शनीके संचालकोंने नीग्रो जातिके पराक्रम और महत्त्वका जैसा कुछ आदर किया है वैसा और किसीने कभी नहीं किया, और इसलिए सभापति महाशय और संचालक महाशयो, मैं उन सबकी ओरसे इस बातको आप लोगोंके सम्मुख प्रकट करता हूँ। मैं समझता हूँ कि हम लोगोंके दासत्वविमोचनके उपरान्त आजतक जितने कार्य हुए हैं उन सबकी अपेक्षा नीग्रो जातिके इस गौरवसे दोनों जातियोंकी मित्रता विशेष दृढ़ हुई है।

"आज हम लोगोंको जो अवसर प्राप्त हुआ है उससे हम लोगोंमें औद्योगिक उन्नतिका एक नया युग आरंभ होगा। स्वाधीनता पा लेनेपर हम लोगोंने अज्ञानवश मूलकी ओर ध्यान न देकर शिखरसे ही अपना जीवन आरंभ किया था। कहनेका तात्पर्य यह है कि हम लोगोंने धन और कलाकौशल्यके साधनोंको छोड़कर कांग्रेस या राजसभामें स्थान पानेकी ही चेष्टा आरम्भ की थी। दूध के कारखाने जारी करने या फलोंके बाग लगानेके बदले हमारा हौसला राजसभा या अन्य स्थानोंमें व्याख्यान देनेकी तरफ बढ गया था।

"एक बार समुद्रमें बहुत दिनोंसे भटकते हुए एक जहाजने एक दूसरे जहाजको देखा। पहले जहाजके यात्री गरमी और प्यासके मारे छटपटा रहे थे। इस लिए उन्होंने उसके मस्तूल पर इसी मतलबका एक निशान लगा रक्खा था। उसका मतलब समझकर दूसरे जहाजने उत्तरमें कहा —'जिस स्थान पर तुम

हो, वहीं पर बाल्टी लटकाओ।' इस जहाजने फिर इशारेसे पानी माँगा और उसे फिर वही उत्तर मिला। तीसरा चौथा बार फिर पानी माँगा गया और वही उत्तर बार बार दिया गया। तब पहले जहाजके कप्तानने बाल्टी लटकाकर पानी खींचा और देखा तो उसे आमेजान नदीके मुहानेका साफ, मीठा और ताजा पानी मिल गया! हमारे जो जातिभाई अपने साथी दक्षिणी गोरोंसे मित्रता रखनेमें विशेष लाभ नहीं समझते और विदेशमें जाकर अपनी उन्नति करना चाहते हैं उनसे मैं भी यही कहूँगा कि 'जिस स्थान पर तुम हो वहीं बाल्टी लटकाओ। जिस समाजमें रहते हो उसी समाजके सब लोगोंके साथ जी खोलकर मित्रता करो।'

"खेती, शिल्प, व्यापार, घरू काम और अन्यान्य उद्यमोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ। दक्षिणवाले और बातोंके लिए चाहे भले ही दोषी हों पर व्यापारमें नीग्रो लोगोंको आगे बढ़नेका अवसर दक्षिणमें ही मिला करता है और यही बात आजकी प्रदर्शनीसे भलीभाँति स्पष्ट हो जाती है। मुझे यह एक बड़ा भय है कि दासत्वके अंधकारसे निकलकर एकाएक स्वतन्त्रताके प्रकाशमें आजानेके कारण शायद हम लोग इस बातकी ओर आनाकानी करें कि हम लोगोंमेंसे बहुतेरोंको परिश्रम करके ही अपना गुजारा करना है, अथवा इन बातोंको भूल जायँ कि हम लोग नित्य परिश्रम करनेकी उपयोगिता और महत्ता जितनी ही बढ़ावेंगे, सामान्य व्यवसायोंमें दिमाग भिड़ाकर जितना ही अधिक कौशल लाभ करेंगे, चमक दमक और दिखाआपनको त्याग कर सचाई और पुरुषार्थमें जितनी ही अधिक उन्नति करेंगे, उतना ही हमारा सिर ऊंचा होगा। जबतक कोई जाति सुन्दर काव्यकी रचना करने और खेत पर हल चलानेमें समान प्रतिष्ठा नहीं समझती तब तक वह जाति सम्पन्न नहीं हो सकती। हम लोगोंका कार्य ... नहीं, बल्कि मूलसे आरंभ होना चाहिए। हमें अपने दुःखों और ... कारण तथा अपनी शिकायतोंके कारण मिले हुए सुअवसरको अपने ... खो देना चाहिए।

... गोरे दक्षिणको सम्पन्न करनेके लिए विदेशियोंको ले आना चाहते हैं ... (यदि वे ध्यान देकर सुनें तो) मैं यही कहूँगा कि जहाँ तुम हो ... टी लटकाओ! उन्हीं अस्सी लाख नीग्रो भाइयोंमें अपनी बाल्टी लट... कि जिनके स्वभावसे तुम परिचित हो और जिनकी सचाई और स्वामिभक्तिकी ... तुम ऐसे अवसरों पर कर चुके हो जब वे अपने कपट-व्यवहारसे, यदि चाहते

ता तुम्हारा सर्वस्व नष्ट कर डालते । उन्हीं लोगोंमे अपनी बाल्टी लटकाओ जिन्होंने हड़ताल या और किसी तरहके उपद्रव किये बिना तुम्हारे खेत जोते हैं, तुम्हारे जगलोंको काटकर साफ किया है, तुम्हारी रेलको सडकें और शहर बनाये हैं और इस प्रकार दक्षिणकी सम्पन्न अवस्था दिखलानेवाली इस प्रदर्शनीको खड़ा करनेमें जिन्होंने मदद की है। अगर तुम इसी प्रकारसे उनकी सहायता कर उन्हें उत्साहित करते रहोगे और कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्त करणकी शिक्षा दिलानेमें उनकी मदद करोगे तो तुम्हारी पड़ती पड़ी हुई जमीन वे खरीद लेंगे, उसे उपजाऊ बनावेंगे और तुम्हारे कारखाने चला देंगे। इसके साथ ही ये नीग्रो लोग, जो संसारमें सबसे अधिक सहनशील, शान्त, विश्वासपात्र और कानूनके पाबन्द हैं पहलेकी भाँति तुम्हारी और तुम्हारे परिवारकी सेवामें तत्पर रहेंगे। तुम्हारे बालबच्चोंका लालन करनेमें, तुम्हारे रुग्ण मातापिताओंकी रात रात भर जागकर सेवा टहल करनेमें, उनके देहान्त पर शोकाकुल हो उनके पीछे पीछे स्मशानतक आँसू बहाते हुए जानेमें और ऐसी ही अन्य अनेक बातोंमें हम लोगोंने तुम्हें अपनी सचाई और स्वामिभक्तिका यथेष्ट प्रमाण दे दिया है। अब इसके बाद भी हम लोग विदेशियोंसे कहीं अधिक कृतज्ञता और नम्रताके साथ तुम्हारा साथ देंगे और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण भी तुम लोगों पर न्योछावर कर देंगे। हम अपने धार्मिक, औद्योगिक और व्यावहारिक जीवनको तुम्हारे जीवनमें मिला देंगे। केवल सामाजिक बातोंमें, उँगलियोंके समान हम तुमसे भिन्न रहेंगे परन्तु पारस्परिक उन्नतिके कामोंमें हम लोग हाथकी भाँति एक हो जायँगे।

" जबतक हम सबोंकी उन्नति और अभिवृद्धि न होगी तबतक दोनोंमेंसे कोई भी निर्भय या सुरक्षित नहीं हो सकता। नीग्रोलोगोंकी उन्नति रोकनेका यदि कहीं उद्योग होता हो तो उसे बदल कर उत्तम नागरिक बनानेका उद्योग कीजिए। इस प्रकारके उद्योगसे हजार गुना अधिक लाभ होगा। दोनों जातियोंका मगल इसीमें है।

" मानवी अथवा दैवी नियमोंमें जो बातें अवश्यभावी हैं—अपरिहार्य हैं—उनसे कभी छुटकारा नहीं हो सकता।

"प्रकृतिके कभी न बदलनेवाले नियमोंसे अन्याय करनेवाले और उसे सहनेवाले दोनों एक साथ बँधे हुए हैं और जिस प्रकार पाप और दुःख साथ साथ रहते

है उसी प्रकार हम दोनों भी (अन्यायी और अन्यायपीडित) एक साथ ही नियति या मृत्युकी ओर कंधोंसे कंधे मिलाकर जा रहे है।

" एक करोड़ साठ लाख हाथ या तो भार उठानेमें तुम्हारी सहायता करेंगे या तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध तुम्हारा बोझ नीचे खींचकर तुम्हें मुँहके वल गिरा देंगे। दक्षिणकी जनसंख्याका तीसरा हिस्सा या तो अज्ञान और पापकी कीचडमें डूब जायगा या उन्नत और बुद्धिमान् ही वन जायगा। या तो हम लोग आपके व्यापार और वैभवकी वृद्धिमें सहायता करेंगे या समूचे समाजकी उन्नतिके बाधक बनकर उसके उत्साहको भग करनेवाले एक गतिरहित-निर्जीव, मुर्दे ही बन जावेंगे।

" सज्जनो, इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंने अपनी उन्नति दिखलानेका नम्रतापूर्वक प्रयत्न किया है। आप लोग इससे अधिककी आशा न करें। तीस वर्ष पूर्व हमारी दशा शोचनीय थी-हम लोगोंके पास कुछ भी न था। तबसे अबतक खेतीके औजार, बग्गियाँ, भाफके इंजिन, समाचारपत्र, पुस्तकें, मूर्तियाँ, नक्काशी और चित्र आदि बनानेमें और उनमें नवीन नवीन आविष्कार तक करनेमें हम लोगोंको थोडी कठिनाइयाँ नहीं उठानी पडी हैं—इस उन्नतिके मार्गको हमने सहज ही तै नहीं कर लिया है। यद्यपि हम लोगोंको इस बातका बडा अभिमान है कि प्रदर्शनीमें रक्खी हुई चीजें खुद हम लोगोंने तैयार की हैं, तथापि हम लोग यह भी कदापि नहीं भूल सकते कि यदि दक्षिणके राज्य और उत्तरके दानशूर सज्जन हम लोगोंकी धनद्वारा सहायता न करते तो इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंके करतबका रंग फीका पड जाता।

"हमारी जातिमें जो विशेष बुद्धिमान लोग है वे सामाजिक समताके लिए आन्दोलन करनेको बडी भारी मूर्खता समझते हैं और कृत्रिम उपायोंसे अधिकारयुक्त होनेकी अपेक्षा स्वाभाविक उपायोंसे अर्थात् दृढ प्रयत्न करके उन अधिकारोंका प्राप्त करना अधिक अच्छा समझते हैं। ससारके बाजारमें अपना माल तैयार करके भेजनेवाली कोई भी जाति बहुत दिनोंतक अवहेलाकी दृष्टिसे नहीं देखी जा सकती और न वह उन्नतिमें किसीसे पीछे ही रह सकती है। यह बात बहुत ठीक है कि कानूनसे हम लोगोंके जो अधिकार हैं वे हमें मिलने चाहिए, पर इससे भी अधिक महत्त्वकी बात यह है कि हमें पहले उन अधिकारोंका उचित उपयोग करनेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। किसी

नाटकघरमें जाकर एक डालर खर्च करनेकी अपेक्षा किसी कारखानेमें काम करके एक डालर कमाना बहुत अच्छा है।

"अन्तमें, मैं आप लोगोंसे यही विनय करूँगा कि इस प्रदर्शनीने हम लोगोंको जितनी अधिक आशा और उत्साह दिलाया है, और गोरोंसे हमारा जितना अधिक सम्बध बढाया है, उतना और किसी अवसर या कार्यसे नहीं बढा। तीस वर्ष पूर्व दोनों जातियोंने खाली हाथ प्रयत्न आरम्भ किया था। इन तीस वर्षोंमें दोनों जातियोंने जो उन्नति की है उसका फल इस वेदीके सामने आप लोग देख सकते हे। इस पवित्र वेदीके सामने नम्रतापूर्वक झुककर मैं यह कहना चाहता हूँ कि परमात्माने दक्षिणके लोगोंके सामने जो बडा और गूढ प्रश्न रक्खा है उसकी मीमांसामें आप लोगोंसे मेरी जातिसे सदा सहायता और सहानुभूति मिलती रहेगी। पर आप लोग इस बातको सदा ध्यानमें रक्खें कि इस प्रदर्शनीमें जो खेतों, जगलों, खानों, कारखानों और साहित्य, कला आदिसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुयें रक्खी हे उनसे आपको लाभ तो अवश्य होगा, पर नियमानुसार सबके साथ उचित न्याय करनेके उद्देश्यसे परस्परका जातिद्वेष और भेदभाव नष्ट करनेका जो फल या लाभ होगा वह इन भौतिक लाभोंसे कहीं अधिक कल्याणकारी होगा। जातिद्वेषको नष्ट करके भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करनेसे हमारा प्रिय दक्षिण प्रान्त निस्सन्देह दूसरा नन्दनवन बन जायगा।"

मेरा व्याख्यान समाप्त होते ही गवर्नर बुलक तथा अन्य कई लोगोंने प्लेटफार्म पर आकर मेरे हाथमें हाथ मिलाया। लोग मुझे इतनी अधिक हार्दिक बधाइयाँ देने लगे कि मेरा वहाँसे निकलना कठिन हो गया। दूसरे दिन जब मैं बाजार गया तब मुझे बहुतसे लोगोंने चारों ओरसे घेर लिया और मुझसे हाथ मिलाना चाहा। मैं जिस किसी गली कूचेमें जाता था वहीं लोग मुझसे मिलते और मुझे बधाई देते थे। मैं इससे इतना घबरा गया कि मुझे अपने डेरे पर लौट आना पडा। दूसरे दिन सबेरे मैं टस्केजीके लिए रवाना हो गया। एटलांटा स्टेशन पर और फिर जहाँ जहाँ गाडी ठहरती थी वहाँ वहाँ बहुतसे लोग मुझसे हाथ मिलानेके लिए आये हुए देख पडते थे।

अमेरिकाके प्रायः सभी समाचारपत्रोंमें मेरा यह व्याख्यान छप गया और महीनों तक उस पर अनुकूल सम्पादकीय लेख निकलते रहे। 'एटलांटा कान्स्टिट्यूशन' पत्रके सम्पादक मिस्टर क्लार्क हावेलने न्यूयार्कके एक पत्रसम्पादकके पास तार द्वारा सवाद भेजा कि "दक्षिणमें आजतक जितने व्याख्यान हुए है,

उन सबमें प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटनका कल जो व्याख्यान हुआ वह परम उत्कृष्ट और रमणीय हुआ है। उनका स्वागत भी वैसा ही अपूर्व हुआ। इसमें मैंने कोई अत्युक्ति नहीं की है। उनके व्याख्यानसे वास्तवमें हम लोगोंको बहुतसी नई बातें मालूम हुईं। उन्होंने अपने व्याख्यानमें काले और गोरे, दोनोंकी समुचित आलोचना की है।"

'बोस्टन ट्रान्सक्रिप्ट' नामक समाचारपत्रमें यहाँ तक लिखा गया था कि "एटलांटा प्रदर्शनीमें बुकर टी वाशिंगटनके व्याख्यानके सामने वहाँका सारा कार्यक्रम, और तो क्या स्वयं प्रदर्शनी भी, फीकी पड गई थी। इस व्याख्यानने समाचारपत्रोंमें जैसा आन्दोलन उपस्थित कर दिया है वैसा कभी किसी व्याख्यानसे नहीं हुआ था।"

शीघ्र ही चारों ओरसे व्याख्यान करानेवाले और पत्रसम्पादकगण मुझसे व्याख्यान देने और लेख लिखनेके लिए आग्रह करने लगे। व्याख्यान करानेवाली एक संस्था तो मुझे एक साथ पचास हजार डालर अथवा प्रतिव्याख्यानके लिए दो सो डालर देनेके लिए तैयार हो गई। पर उन सबोंको मैंने यही उत्तर दे दिया कि "मैंने अपने जीवन भर टस्केजी विद्यालयकी सेवा करनेका संकल्प कर लिया है, मैं उक्त विद्यालयकी और अपनी जातिकी सेवाके लिए ही व्याख्यान दिया करता हूँ। मेरा यह कोई पेशा नहीं, जो धनलाभकी दृष्टिसे ही मैं इस कामको करूं।"

मैंने अपने व्याख्यानकी एक नकल संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट आनरेबल ग्रोवर क्लीवलैंडके पास भेजी। इसके उत्तरमें उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ नीचे दिया हुआ पत्र मेरे पास भेजा —

"ग्रे गेबल्स, बजार्ड्स बे, मसेच्युसेट्स,
६ अक्टूबर, १८९५।

श्रीमान बुकर टी वाशिंगटनकी सेवामें—

प्रिय महाशय, एटलांटा प्रदर्शनीमें दिये हुए व्याख्यानकी एक नकल मेरे पास भेज कर आपने मुझे बहुत ही अनुगृहीत किया है।

आपके इस उत्तम व्याख्यान पर मैं आपको हार्दिक उत्साहसे बधाई देता हूँ। मैंने आपका व्याख्यान बहुत ध्यानपूर्वक पढा है और यदि आपके इस व्याख्यानके अतिरिक्त प्रदर्शनीमें और कोई बात न होती तो भी कोई हानि न

होगी। आपकी जातिका कल्याण चाहनेवाले सब लोगोंको आपके व्याख्यानसे आनन्द और उत्साह प्राप्त होगा, सन्देह नहीं। यदि आपके व्याख्यानसे हमारे नीग्रो देशबन्धु नागरिकत्वके अधिकारसे यथासम्भव लाभ उठानेका निश्चय और नवीन आशा न करें तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात होगी।

आपका सच्चा हितैषी—
ग्रोवर क्लीवलंड।"

कुछ काल पश्चात् जब मिस्टर क्लीवलंड प्रेसिडेंटकी हैसियतसे एटलांटा प्रदर्शनी देखने आये तब उनसे मेरी भेंट भी हुई। मेरे और अन्य लोगोंके प्रार्थना करने पर उन्होंने नीग्रो-भवनमें चलकर वहाँ रक्खे हुए नीग्रो कारीगरीके नमूने देखने और उपस्थित नीग्रो लोगोंको हाथ मिलानेका अवसर देनेके लिए एक घंटेका समय देना स्वीकार किया। मिस्टर क्लीवलंडसे पहली बार मिलते ही उनकी रहन सहनकी सादगी, मनकी उदारता और हृदयकी सचाईका मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके बाद भी कई बार उनसे मिलनेका मुझे अवसर मिला है। जितना ही अधिक मैं उनसे मिलता हूँ उतना ही अधिक मेरा उनसे स्नेह होता जाता है। एटलांटा-प्रदर्शनीके नीग्रो-भवनमें जाकर उन्होंने खुले दिलसे सबसे हाथ मिलाया। एक फटे पुराने कपड़े पहनी हुई नीग्रो बुढ़ियासे हाथ मिलाते हुए वे इतने गद्गद और प्रसन्न मालूम होते थे मानों किसी करोड़पतिका ही स्वागत कर रहे हैं। बहुतसे लोगोंने इस अवसरसे लाभ उठा कर उनकी डायरीमें अपने नाम लिखवाये और उन्होंने भी यह काम इतनी सावधानी और धैर्यके साथ किया, मानों राज्यसंबंधी किसी महत्त्वपूर्ण पत्र पर हस्ताक्षर ही कर रहे हों।

मिस्टर क्लीवलंडने मेरे साथ अपना मित्रभाव कई प्रकारसे प्रकट किया है। इतना ही नहीं, बल्कि, टस्केजी विद्यालयके लिए मैंने उनसे जो जो प्रार्थनायें की उन सबको उन्होंने स्वीकार किया है। उन्होंने विद्यालयको स्वयं आर्थिक सहायता दी है और अपने मित्रोंसे भी दिलाई है। मेरे साथ उन्होंने जैसा मित्रभाव रक्खा है उससे मैं नहीं समझता कि वे वर्णद्वेष भी रखते होंगे। वे इतने उच्च विचारके उदार पुरुष हैं कि उनमें वर्णद्वेष जैसे संकुचित भाव कभी रहना ही नहीं सकते। ऐसे महानुभावोंसे मिलकर मैंने यह मालूम किया है कि केवल क्षुद्र और छोटे मनुष्य ही अपने लिए जीते हैं,—अर्थात् स्वार्थी होते हैं। वे कभी अच्छे ग्रन्थोंको नहीं पढ़ते, देशाटन नहीं करते, दूसरी आत्माओंसे—संसारके बड़े बड़े पुरुषोंसे—

परिचय नहीं करते । वर्णद्वेपसे जिनकी दृष्टि छोटी हो जाती है उन्हें ससारकी सुन्दर और मनोहर वस्तुओंका दर्शन नहीं हो सकता । देश देश घूमकर नाना प्रकारके लोगोंसे मिलकर मने यह जाना है कि परहितके लिए प्रयत्न करनेवाले लोग सबसे अधिक सुखी होते हैं, और जो सदा अपने ही स्वार्थमें लगे रहते हैं वे सबसे अधिक दुखी होते हैं । जातिद्वेपके समान मनुष्यको अन्धा और तुच्छ बनानेवाली दूसरी वस्तु नहीं । प्रत्येक रविवारकी सध्याको मेरा उपदेश हुआ करता है । उस समय म अपने विद्यार्थियोंसे अकसर कहा करता हूँ कि मैं ज्यों ज्यों बडा और बूढा होता जाता हूँ और ज्यों ज्यों मेरा सांसारिक अनुभव बढता जाता है त्यों त्यों मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होता जाता है कि 'दूसरोंको अधिक उपयोगी और सुखी बनानेका मौका मिलना ' बस, यही एक ऐसी बात है कि जिसके लिए हमें जीते रहनेकी और समय पडने पर अपने प्राण भी न्योछावर कर देनेकी अवश्यकता है । गरज यह कि मनुष्यका जीवन परोपकारके * लिए है और आवश्यक्ता पडने पर उसके लिए प्राणतक न्योछावर कर देना हमारा धर्म है ।

मेरे व्याख्यानसे और उसकी जो प्रशसा हुई उससे नीग्रो लोग बहुत ही प्रसन हुए। उनके समाचारपत्रोंने भी खूब प्रसन्नता प्रकट की, परन्तु यह प्रसनता बहुत दिनों तक न रहने पाई । थोडे ही दिनोंमें जब उत्साह मन्द पड गया तब मेरे उस ठडे व्याख्यानको पढकर मेरे बहुतसे जातिभाइयोंको ऐसा भासने लगा कि हम इस समय भूल गये—वास्तवमें वह व्याख्यान इतना प्रशसाके योग्य न था । उनका कहना यह था कि मैंने दक्षिणी गोरोंके विषयमें तो बहुत अधिक उदारता दिखलाई, पर अपनी जातिके अधिकारोंका वैसा अच्छा प्रतिपादन नहीं किया । इस तरह कुछ दिनों तक मेरे विषयमें नीग्रो लोग ऐसी ही शिकायत करते रहे, पर पीछेसे वे सब मेरे अनुकूल हो गये ।

यहाँ मुझे एक बात और याद आती है जिसे बतला देना जरूरी है । टस्केजी विद्यालयके ग्यारहवें वर्षमें मुझे एक ऐसा अनुभव प्राप्त हुआ जिसे मैं कभी भूल नहीं सक्ता । शइमाउथ चर्चके पादरी और 'आउट लुक ' पत्रके सम्पादक डाक्टर लीमन एबटने अपने पत्रमें प्रकाशित करनेके लिए नीग्रो

---

* श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्त ग्रन्थकोटिभि ।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

धर्मोपदेशकोंके सबधमें मेरी सम्मति माँगी तदनुसार मैने अपनी यथार्थ सम्मति लिख भेजी। एक तो धर्मोपदेशकोंकी दशाका मैने जो चित्र खींचा वह काला ही था—जब मैं ही काला हूँ, तब वह चित्र कहाँसे गोरा हो?—और दूसरे अभी दासत्वसे मुक्त हुए हम लोगोंको अच्छे उपदेशक निर्माण करनेका अवसर ही न मिला था।

मैं समझता हूँ कि देशके प्रत्येक नीग्रो धर्मोपदेशकने मेरी उस सम्मतिको पढा होगा, क्योंकि मेरे पास इस विषयमें ऐसे सैकडों ही पत्र आये जिनमें मेरी सम्मतिको दूषित और असन्तोषजनक बतलाया था॥ इस घटनासे एक वर्ष बादतक कोई भी ऐसी सभा न हुई जिसमें मुझे उलटी सीधी न सुनाई गई हों अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेने या उचित परिवर्तन करनेके लिए कहनेका प्रस्ताव पास न किया गया हो। कई सस्थाओंने तो यहा तक कहना प्रारभ किया कि लोग अपने बालकोंको टस्केजी विद्यालयमें पढनेके लिए न भेजें। इसी कामके लिए एक सस्थाकी ओरसे एक उपदेशक भी नियुक्त हुआ। इसने स्थान स्थान पर जाकर यह उपदेश देना आरभ किया कि कोई अपने बालकोंको टस्केजीके विद्यालयमें पढनेके लिए न भेजे। पर मजेकी बात यह थी कि इसी भले आदमीने अपने पुत्रको, जो हमारे विद्यालयमें पढता था, विद्यालयसे नहीं हटाया! कितने ही समाचारपत्रोंने तो मेरी कडी आलोचना करने अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेनेकी सूचना करनेका मानों काम ही उठा लिया।

इतना सब होते हुए भी मने इसके उत्तरमें न तो कुछ कहा और न अपनी सम्मति ही लौटा ली। म जानता था कि मेरी सम्मति यथार्थ है और समय पाकर तथा शान्तिपूर्वक विचार करके लोग उसी सम्मतिका समर्थन करने लगेंगे। कुछ दिनोंके बाद जब बडे बडे धर्माधिकारियोंने धर्मोपदेशकोंकी दशाका अनुसन्धान आरम्भ किया तब उन्हें मेरे कथनकी सत्यता प्रतीत हो गई। मेथाडिस्ट चर्चके एक वृद्ध और प्रभावशाली धर्माधिकारीने तो यहाँ तक कह दिया कि मैंने धर्मोपदेशकोंकी दशाका चित्र खींचनेमें बडी मुलामियतसे काम लिया है। थोडे ही दिनोंमें लोकमत भी बदलने लगा और अन्य लोग भी धर्मोपदेशकोंकी दशाका सुधार होना आवश्यक बतलाने लगे। यद्यपि इस समय भी धर्मोपदेशकोंकी जैसी चाहिए वैसी अच्छी दशा नहीं है, तथापि मेरे शब्दोंने—बडे बडे धर्मोपदेशकोंका भी यही कथन है—लोगोंके हृदयमें यह अच्छी तरह जमा दिया कि धर्मोपदेशका कार्य करनेवाले लोग उच्चश्रेणीके शिक्षित और

सदाचारी होने चाहिए। जिन लोगोंने आरम्भमें मेरे लेखसे असन्तुष्ट होकर मेरी निन्दा की थी पीछे उन्हींने मेरी स्पष्ट सम्मतिके विषयमें मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया और इससे मुझे बहुत सन्तोष हुआ।

इस समय धर्मोपदेशकोंमें मेरे जैसे हार्दिक मित्र हैं वैसे और किसी विभागमें नहीं हैं। नीग्रो-धर्मोपदेशकोंका चरित्र अब बहुत सुधरा हुआ है और यह जातिकी उन्नतिका एक सन्तोषप्रद लक्षण है। धर्मोपदेशकोंके सम्बन्धमें और अपने जीवनकी अन्य घटनाओंके विषयमें मुझे जो अनुभव मिला है उससे मेरा यह विश्वास होगया है कि जब अपने किसी उचित कार्यके या कथनके विरुद्ध चारों ओरसे आन्दोलन होता हो तब हमें मौन धारण करके रह जाना चाहिए- उस समय सबसे अच्छा उपाय चुप हो रहना ही है। यदि हमारा कथन या कार्य सत्य है तो समय पाकर वह अवश्य ही सिद्ध होगा।

जिस समय मेरे एटलांटा-प्रदर्शनीवाले व्याख्यानकी चर्चा चारों ओर फैल रही थी उस समय जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटीके अध्यक्ष डाक्टर गिलमनका एक पत्र मेरे पास आया। वह पत्र नीचे दिया जाता है। डाक्टर गिलमन प्रदर्शनीकी पुरस्कार समितिके प्रधान नियुक्त हुए थे।

"जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटी, बाल्टीमोर,
अध्यक्ष-कार्यालय, ३० सितंबर १८९५।

प्रिय वाशिंगटन महाशय,

क्या आप एटलांटा-प्रदर्शनीके शिक्षाविभागकी पुरस्कार-कमेटीके पंच होना पसन्द करेंगे? यदि पसन्द करें तो मैं आपका नाम कमेटीके पंचोंकी नामावलीमें लिख लूँ। कृपया तार द्वारा उत्तर दीजिए।

आपका सच्चा हितैषी,
डी सी गिलमन।"

एटलांटा-प्रदर्शनीकी आरम्भिक वक्तृताके निमन्त्रणकी अपेक्षा इस निमन्त्रणसे मुझे बहुत ही अधिक आश्चर्य हुआ। अब मेरा यह कर्तव्य हुआ कि पंचकी हैसियतसे केवल नीग्रो ही नहीं बल्कि गोरोंके विद्यालयोंकी भी वस्तुओं पर मैं अपनी सम्मति दूँ। उत्तरमें मैंने पंच होना स्वीकार कर लिया और अपना काम ठीक तरहसे करनेके लिए मैं एटलांटामें एक मास तक रहा। पंचोंकी कमेटीमें साठ पंच थे। इनमें आधे तो प्राय दक्षिणके गोरे थे और आधे उत्तरके। कमेटीने

कालेजोंके प्रेसिडेंट, मुख्य शास्त्रज्ञ, बड़े बड़े विद्वान् और भिन्न भिन्न विषयोंके अनुभवी जानकार थे। मिस्टर पेज नामक एक पचकी सूचनासे मैं ही शिक्षा-विभागका मंत्री बनाया गया। गोरोंके विद्यालयोंकी प्रदर्शित वस्तुओंका निरीक्षण करते समय मैंने उपस्थित गोरोंको बहुत विनयशील पाया। यह काम समाप्त होने पर जब मैं अपने साथी पचोंसे विदा होकर घर जाने लगा तब मुझे मोह-वश बहुत दुःख हुआ।

मैं अपनी जातिकी राजनीतिक अवस्था और उसके भविष्यके विषयमें अपनी स्पष्ट सम्मति प्रकट करूं, इसके लिए मुझसे अनेक बार कहा गया है। मेरी यह सम्मति है—अब तक मैंने इसे किसी पर प्रकट नहीं किया था—कि दक्षिणी नीग्रो लोगोंको, उनकी योग्यता, उनके चरित्रबल और उनकी सम्पत्तिके अनुसार, सब प्रकारके राजकीय अधिकार शीघ्र ही मिलनेवाले हैं। ये राजकीय अधिकार अस्वाभाविक उपायोंसे अथवा किसी गैरके सहायतासे न मिलेंगे, बल्कि स्वयं दक्षिणी गोरे ही ऐसा सुअवसर लावेंगे और उनके अधिकारोंकी रक्षा भी करेंगे। दक्षिणी गोरोंकी यह पुरानी धारणा है कि बाहरी लोगोंके दबावसे उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध कार्य करने पड़ते हैं। ज्यों ज्यों यह धारणा मिटती जायगी त्यों त्यों नीग्रो जातिको अधिकार मिलने लगेंगे और यह कार्य अब किसी अंशमें आरंभ भी हो गया है।

मैं इस बातको और भी स्पष्ट करके बतलाता हूँ। यह सोचिए कि यदि प्रदर्शनी खुलनेसे कुछ महीने पहले दक्षिणके समाचारपत्रों और सभाओंमें इस बातका आन्दोलन किया जाता कि प्रारंभिक कार्यक्रममें एक नीग्रोको स्थान दिया जाना चाहिए तथा पुरस्कार देनेवाले पचोंमें एक नीग्रो भी होना चाहिए, तो क्या इसमें हमारी जातिका कुछ भी गौरव हो सकता? मैं नहीं समझता कि उससे हम लोग कोई लाभ उठाते। हाँ, प्रदर्शनीके अधिकारियोंने नीग्रो लोगोंकी योग्यता देखकर गुणोंका योग्य गौरव करनेके लिहाजसे स्वयं ही उनका यथेष्ट आदर किया—उन्हें स्वयं ही यह अच्छा मालूम हुआ। मनुष्यके स्वभावकी बनावट ही ऐसी है कि वह अन्तमें जातिद्वेषको भूल कर काले-गोरोंमें कोई अन्तर नहीं देखता और दोनोंकी योग्यता समझ कर उनका यथेष्ट आदर करता है।

मेरी तो यह राय है कि नीग्रो लोग राजकीय अधिकार माँगनेमें अधिक विनयशील रहें तो बहुत अच्छा हो। यह बड़े ही सन्तोषकी बात है कि बहुतसे

सदाचारी होने चाहिए। जिन लोगोंने आरम्भमें मेरे लेखसे असन्तुष्ट होकर मेरी निन्दा की थी पीछे उन्हींने मेरी स्पष्ट सम्मतिके विषयमें मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया और इससे मुझे बहुत सन्तोष हुआ।

इस समय धर्मोपदेशकोंमें मेरे जैसे हार्दिक मित्र हैं वैसे और किसी विभागमें नहीं हैं। नीग्रो-धर्मोपदेशकोंका चरित्र अब बहुत सुधरा हुआ है और यह जातिकी उन्नतिका एक सन्तोषप्रद लक्षण है। धर्मोपदेशकोंके सबधमें और अपने जीवनकी अन्य घटनाओंके विषयमें मुझे जो अनुभव मिला है उससे मेरा यह विश्वास होगया है कि जब अपने किसी उचित कार्यके या कथनके विरुद्ध चारों ओरसे आन्दोलन होता हो तब हमें मौन धारण करके रह जाना चाहिए- उस समय सबसे अच्छा उपाय चुप हो रहना ही है। यदि हमारा कथन या कार्य सत्य है तो समय पाकर वह अवश्य ही सिद्ध होगा।

जिस समय मेरे एटलांटा-प्रदर्शनीवाले व्याख्यानकी चर्चा चारों ओर फैल रही थी उस समय जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटीके अध्यक्ष डाक्टर गिल्मनका एक पत्र मेरे पास आया। वह पत्र नीचे दिया जाता है। डाक्टर गिलमन प्रदर्शनीकी पुरस्कार समितिके प्रधान नियुक्त हुए थे।

"जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटी, बाल्टीमोर,
अध्यक्ष-कार्यालय, ३० सितबर १८९५।

प्रिय वाशिंगटन महाशय,

क्या आप एटलांटा-प्रदर्शनीके शिक्षाविभागकी पुरस्कार-कमेटीके पच होना पसन्द करेंगे? यदि पसन्द करें तो मैं आपका नाम कमेटीके पचोंकी नामावलीमें लिख लूँ। कृपया तार द्वारा उत्तर दीजिए।

आपका सच्चा हितैषी,
डी सी गिलमन।"

एटलांटा-प्रदर्शनीकी आरंभिक वक्तृताके निमन्त्रणकी अपेक्षा इस निमन्त्रणसे मुझे बहुत ही अधिक आश्चर्य हुआ। अब मेरा यह कर्तव्य हुआ कि पचकी हैसियतसे केवल नीग्रो ही नहीं बल्कि गोरोंके विद्यालयोंकी भी वस्तुओं पर मैं अपनी सम्मति दूँ। उत्तरमें मैंने पच होना स्वीकार कर लिया और अपना काम ठीक तरहसे करनेके लिए मैं एटलांटामें एक मास तक रहा। पचोंकी कमेटीमें साठ पच थे। इनमें आधे तो प्राय दक्षिणके गोरे थे और आधे उत्तरके। कमेटीने

पञ्चोंके प्रेसिडेंट, मुख्य शासक, बड़े बड़े विद्वान् और भिन्न भिन्न विषयोंके अनुभवी जानकार थे। मिस्टर पेज नामक एक पञ्चकी सूचनासे मैं ही शिक्षा-विभागका मन्त्री बनाया गया। गोरोंके विद्यालयोंकी प्रदर्शित वस्तुओंका निरीक्षण करते समय मैंने उपस्थित गोरोंको बहुत विनयशील पाया। यह काम समाप्त होने पर जब मैं अपने साथी पञ्चोंसे विदा होकर घर जाने लगा तब मुझे मोह-वश बहुत दुःख हुआ।

मैं अपनी जातिकी राजनीतिक अवस्था और उसके भविष्यके विषयमें अपनी स्पष्ट सम्मति प्रकट करूं, इसके लिए मुझसे अनेक बार कहा गया है। मेरी यह सम्मति है—अब तक मैंने इसे किसी पर प्रकट नहीं किया था—कि दक्षिणी नीग्रो लोगोंको, उनकी योग्यता, उनके चरित्रबल और उनकी सम्पत्तिके अनुसार, सब प्रकारके राजकीय अधिकार शीघ्र ही मिलनेवाले हैं। वे राजकीय अधिकार अस्वाभाविक उपायोंसे अथवा किसी गैरके करतबसे न मिलेंगे, बल्कि स्वयं दक्षिणी गोरे ही ऐसा सुअवसर ले आवेंगे और उनके अधिकारोंकी रक्षा भी करेंगे। दक्षिणी गोरोंकी यह पुरानी धारणा है कि बाहरी लोगोंके दबावसे उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध कार्य करने पड़ते हैं। ज्यों ज्यों यह धारणा मिटती जायगी त्यों त्यों नीग्रो जातिको अधिकार मिलने लगेंगे और यह कार्य अब किसी अंशमें आरम्भ भी हो गया है।

मैं इस बातको और भी स्पष्ट करके बतलाता हूँ। यह सोचिए कि यदि प्रदर्शनी खुलनेसे कुछ महीने पहले दक्षिणके समाचारपत्रों और सभाओंमें इस बातका आन्दोलन किया जाता कि प्रारम्भिक कार्यक्रममें एक नीग्रोको स्थान दिया जाना चाहिए तथा पुरस्कार देनेवाले पञ्चोंमें एक नीग्रो भी होना चाहिए, तो क्या इससे हमारी जातिका कुछ भी गौरव हो सकता? मैं नहीं समझता कि उससे हम लोग कोई लाभ उठाते। हाँ, प्रदर्शनीके अधिकारियोंने नीग्रो लोगोंकी योग्यता देखकर गुणोंका योग्य गौरव करनेके लिहाजसे स्वयं ही उनका यथेष्ट आदर किया—उन्हें स्वयं ही यह अच्छा मालूम हुआ। मनुष्यके स्वभावकी बनावट ही ऐसी है कि वह अन्तमें जातिद्वेषको भूल कर काले-गोरोंमें कोई अन्तर नहीं देखता और दोनोंकी योग्यता समझ कर उनका यथेष्ट आदर करता है।

मेरी तो यह राय है कि नीग्रो लोग राजकीय अधिकार माँगनेमें अधिक विनयशील रहें तो बहुत अच्छा हो। यह बड़े ही सन्तोषकी बात है कि बहुतसे

नीग्रो लोगोंका आचरण ऐसा ही देखनेमें आता है। धन-सम्पत्ति, बुद्धिमत्ता और उत्तम चरित्रबल होने पर ही राजकीय अधिकार सुख देते हैं। उन अधिकारोंसे सुख प्राप्त करनेकी योग्यता पहले होनी चाहिए। यह योग्यता धीरे धीरे अवश्य प्राप्त होगी। यह कोई बाजीगरका खेल नहीं जो 'आओ' कहते ही आ जाय। मेरे कहनेका तात्पर्य यह नहीं है कि नीग्रो लोग सम्मति (वोट) ही न दिया करें। मैं तो यह कहता हूँ कि बिना पानीमें उतरे जैसे कोई बालक तैरना नहीं सीख सकता वैसे ही, वोट दिये बिना स्थानीय स्वराज्यसे भी कोई लाभ नहीं उठा सकता। परन्तु इसके साथ मेरी यह भी सलाह है कि वोट देनेके समय नीग्रो लोग अपने गोरे पडोसियोंसे भी सलाह लिया करें जो उनसे अधिक बुद्धिवान् और चरित्रवान् हैं।

मैं ऐसे नीग्रो सज्जनोंको जानता हूँ जिन्होंने दक्षिणी गोरोंके उत्साह दिलानेसे और उन्हींकी सलाह और मददसे हजारों डालरकी मिलकियत प्राप्त कर ली है, परन्तु जब वोट देनेका मौका आता है तब ये ही नीग्रो लोग उनके पास सलाह लेने तकको नहीं जाते। यह बहुत ही अनुचित बात है और इस लिए मैं चाहता हूँ कि इस विषयमें लोग बहुत जल्द सावधान हो जायँ। मैं यह नहीं चाहता कि नीग्रो लोग हाँमें हाँ मिलाया करें, अथवा बातको खूब सोचे समझे बिना दूसरोंके कहनेसे ही अपनी सम्मति दे दिया करें। कभी नहीं। यदि वे ऐसा करने लगेंगे तो उनके विषयमें दक्षिणी गोरोंका विश्वास और आदर नष्ट हो जायगा।

कोई राज्य ऐसा नियम नहीं बना सकता जिससे अशिक्षित और दरिद्र गोरे तो वोट दे सकें, पर उसी हैसियतका नीग्रो न दे सके। यह नियम अन्यायपूर्ण है और इसमें बहुत बडी हानि होगी। इसका परिणाम यह होगा कि नीग्रो तो शिक्षित और सम्पन्न बननेका प्रयत्न करेंगे और गोरोंको दरिद्र और मूर्ख बने रहनेमें उत्तेजना मिलेगी। इस समय वोट इकट्ठा करनेमें बडे बडे कपट-नाटक होते हैं, पर मैं समझता हूँ कि शिक्षा और दोनों जातियोंके परस्पर मित्रभावसे यह बात बहुत दिन न रहने पावेगी। जो नीग्रोको धोखा देकर उसका वोट छीन लेता है वह आगे चलकर अपने गोरे भाईसे भी ऐसा ही व्यवहार करने लगता है और अन्तमें इसका परिणाम किसी बडे भारी अपराधमें होता है। मुझे आशा है कि वह समय शीघ्र ही आवेगा जब दक्षिणमें सब लोग समान

रूपसे वोट देनेके लिए उत्साहित होंगे। दक्षिणके अधिकारी अब इस बातको जल्द ही जान लेंगे कि स्थानीय स्वराज्यमें सबको समान अधिकार न मिलनेसे अथवा उसमें कुछ लोगोंका कुछ भी स्वार्थ न होनेसे जो त्रिशंकुकी अवस्था उत्पन्न होती है उसकी अपेक्षा यही सब प्रकारसे अच्छा है कि सबको समान अधिकार दिये जायँ और राजकीय व्यवस्थामें जीवन उत्पन्न किया जाय।

मेरी सम्मतिमें, साधारणत सबको सम्मति देनेका समान अधिकार होना चाहिए। परन्तु दक्षिणके कुछ राज्योंकी अवस्था इस समय इतनी बिगड़ी हुई है कि वहाँ कुछ दिनोंतक वोट देनेके लिए विद्या और सम्पत्ति दोनों बातें आवश्यक रक्खी जानी चाहिए। अर्थात् शिक्षाकी या सम्पत्तिकी अथवा दोनोंकी यथेष्ट योग्यता बिना वोट देनेका अधिकार किसीको न दिया जाय। इस विषयमें नियम कैसे ही बनें, यह जरूरी है कि उनका उपयोग दोनों जातियोंके लिए समान रूपसे और समान न्यायसे हो।

पंद्रहवाँ परिच्छेद।



व्याख्यानकी सफलताका रहस्य।

एटलांटा–प्रदर्शनीमें मेरा व्याख्यान लोगोंको किस कदर पसन्द हुआ यह मैं स्वय न बतलाकर सुप्रसिद्ध सामरिक सवाददाता मिस्टर क्रीलमेनके शब्दोंमें बतलाता हूँ। मि० क्रीलमेन मेरे व्याख्यानके समय मौजूद थे। उन्होंने नीचे लिखा हुआ तार न्यूयार्कके 'वर्ल्ड'के पास भेजा था —

"एटलांटा, १८ सितम्बर, १८९५।

प्रदर्शनी खुलनेके अवसर पर गोरे श्रोताओंके सामने एक नीग्रो भूमाने बड़े जोरकी वक्तृता दी। दक्षिणके इतिहासमें इस तरहकी यह पहली घटना है। और एक महत्त्वकी बात यह हुई कि जार्जिया और कैलिफोर्नियाके नागरिकोंके साथ नीग्रो लोगोंका एक जुलूस निकला। इस समय सबत्र इन्हीं बातोंकी चर्चा हो रही है। न्यूयार्ककी न्यू इंग्लैंड सोसायटीके सामने हेनरी ग्रेडीके स्मरणीय भाषणके उपरांत दक्षिणमें इस प्रदर्शनके समान उत्साहदायक और महत्त्वपूर्ण बात और कोई नहीं हुई।

"जिस समय टस्केजी-विद्यालयके प्रिन्सिपल प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए प्लेटफार्म पर खडे हुए उस समय सन्ध्या समयके स्वच्छ सूर्यके सुकोमल किरण उस विशाल भवनकी खिडकियोंसे अंदर प्रवेश कर श्रोताओंके सिरपरसे उनके मुखकमल पर चमकने लगे और इससे उनके चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज झलकने लगा। उस समय हेनरी ग्रेडीके उत्तराधिकारी क्लार्क हावेलने मुझसे कहा,-'इस मनुष्यकी वक्तृता अमेरिकामें नैतिक क्रांति उत्पन्न करनेवाली है।'

"ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके सामने अबतक किसी नीग्रोका भाषण नहीं हुआ था। इस भाषणको सुनकर लोग चकित हो गये और उन्होंने बडा हर्ष प्रकट किया।

"मिसेस टामसनकी वक्तृता समाप्त होते ही सब लोग प्लेटफार्म पर पहली पंक्तिमें बैठे हुए एक ऊँचे पूरे, कपिल वर्णके नीग्रोकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगे। ये टस्केजी-विद्यालयके सर्वस्व बुकर टी वाशिंगटन थे। अबसे अमेरिकाकी नीग्रो जातिमें इन्हींका पद सबसे ऊँचा समझना चाहिए। इस समय बेंड पर राष्ट्रीय गीतोंका मधुर गान हो रहा था जिससे सब लोग शान्त हो रहे थे-किसी तरहका शोर-गुल न था।

"हजारों लोगोंकी दृष्टि उस नीग्रो वक्ता पर गडी हुई थी। बात भी ऐसी ही थी। सब लोग जानते थे कि आज एक काला मनुष्य हम लोगोंके हितार्थ निर्भय होकर भाषण करनेवाला है। ये प्रोफेसर वाशिंगटन ही थे। प्रोफेसर साहब जब अपने स्थानसे व्याख्यान-स्थान पर आये तब अस्ताचल पर आरूढ हुए सूर्यदेवके आरक्त किरण भवनकी खिडकियोंमेंसे आकर उनके चेहरे पर चमकने लगे, और लोगोंने प्रचण्ड करतलध्वनिसे उनका स्वागत किया। सूर्य किरणोंके तापसे अपने नेत्रोंको बचानेके लिए उन्होंने अपना मुँह एक ओर जरा फेर लिया और प्लेटफार्म पर इधर उधर टहलना शुरू कर दिया। इसके बाद अस्ताचल पर विराजमान हुए सूर्यकी ओर ही अपनी दृष्टि स्थिर कर उन्होंने अपनी वक्तृता आरम्भ कर दी।

"उनके देहकी गठन बडी ही सुन्दर थी। शरीर भरपूर ऊँचा और कसा हुआ था, छाती चौडी और उभरी हुई थी, ललाट विशाल, नाक सीधी, चेहरा चौडा और दृढताका सूचक, हाथ बिलकुल साफ और नेत्र तेजोमय थे। चेहरे

पर एक प्रकारका दिव्य तेज था। उनकी कत्थई रंगकी गर्दन पर उठी हुई नसें दिखाई देती थीं। मुट्ठीमें मजबूतीसे पेन्सिल पकड़कर उन्होंने अपना मोहड़ेदार हाथ ऊपर कर रक्खा था। अपने मजबूत पैरोंपर एड़ीसे एड़ी मिलाकर, पर पंजे अलग रखकर, वे गड़से गड़े हुए थे। उनकी आवाज साफ और जोरदार थी। वे एक बातको श्रोताओंके दिलों पर अच्छी तरह जमा कर फिर दूसरी बात उठाते थे। उनकी वक्तृता सुनकर दस मिनिटके भीतर ही सब लोग जोशमें भर गये और रूमाल, बेत और टोपियाँ हिला हिलाकर अपना आनन्द प्रकट करने लगे। जार्जियाकी सुन्दर स्त्रियाँ खड़ी होकर प्रसन्नतासे तालियाँ बजाने लगीं। ऐसा मालूम होता था कि मानों वक्ताने सब पर जादू कर दिया हो। जब वक्ताने हाथकी उँगलियोंको फैलाकर अपना कालासा हाथ सिर पर उठा रक्खा और अपनी जातिकी ओरसे दक्षिणी गोरोंको सम्बोधन कर कहा– 'केवल सामाजिक कार्योंमें हाथकी उँगलियोंकी भाँति हम अलग अलग रहें, पर पारस्परिक उन्नतिके सब कामोंमें हम लोगोंको हाथकी भाँति एक होना चाहिए' और जब उनकी इस आवाजकी लहर चारों दीवारोंसे टकराई तब सबके सब लोग उठ खड़े हुए और मारे आनन्दके बहुत देर तक तालियाँ बजाते रहे।

मैंने अनेक देशोंके वक्ताओंकी वक्तृतायें सुनी हैं, पर इस नीग्रो वक्ताने सूर्यकी अरुण किरणोंमें खड़े होकर उन लोगोंके सामने–कि जिन्होंने नीग्रो जातिको गुलामीमें ही सड़ानेके लिए युद्ध किया था–अपना जातिके पक्षका बड़ी खूबीके साथ जैसा अच्छा समर्थन किया वैसा स्वयं ग्लैडस्टनसे भी न बन पड़ता! लोग मारे आनन्दके तालियाँ बजाते जाते थे, परन्तु वक्ता पर उनका कुछ भी प्रभाव न पड़ता था–उनके उत्सुक चेहरेकी छटा जरा भी नहीं बदलती थी।

" सभा मंडपमें ही एक ओर एक हट्टा कट्टा दरिद्र नीग्रो बैठा हुआ था। वह वक्ताके चेहरेकी ओर एकटक निहार रहा था। अन्तमें वक्ताके भाषणके प्रभावसे उसकी आँखोंसे आँसू टपकने लगे। इस समय प्राय सभी नीग्रो लोगोंकी यही दशा हुई।

" वक्तृता समाप्त होते ही गवर्नर बुलक वक्ताके पास लपक कर आये और उन्होंने ज्यों ही उनसे हाथ मिलाया त्यों ही फिर तालियाँ बजीं। कुछ देरतक ये दोनों महाशय हाथमें हाथ दिये आमने-सामने खड़े हुए देख पड़े।"

इस व्याख्यानके बाद टस्केजी–विद्यालयके आवश्यक कार्योंसे फुरसत पाने पर मैं कभी कभी व्याख्यानोंके निमन्त्रण स्वीकार कर लेता था, परन्तु जहाँतक

मुझसे बनता मैं ऐसे ही स्थानोंमें व्याख्यान देना स्वीकार करता था जहाँसे टस्केजी-विद्यालयको सहायता मिलनेकी आशा होती थी। व्याख्यान देना स्वीकार करनेसे पहले ही मैं यह निश्चय करा लेता था कि मुझे अपने जीवनके मुख्य कार्य और अपनी जातिकी आवश्यकताओंके विषयमें कहनेका पूरा अवसर मिलेगा। मैं यह बात भी पहले ही जतला देता था कि पैसेके खयालसे या केवल स्वार्थके लिए मैं कोई व्याख्यान न दूँगा।

मैं स्वयं अभीतक इस बातको नहीं समझ सका हूँ कि लोग मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं। सभामण्डपके बाहर खडे होकर यदि मैं लोगोंको उत्साहपूर्वक मेरा व्याख्यान सुननेके लिए आते हुए देखता हूँ तो मैं इस बातसे बहुत ही लज्जित होता हूँ कि मेरे कारण इन लोगोंका अमूल्य समय नष्ट हो रहा है। कुछ वर्ष पूर्व माडीसनकी एक साहित्य सभाके सामने मेरा व्याख्यान होनेवाला था। निश्चित समयसे एक घंटा पहले बडे जोरोंसे बर्फ गिरने लगी और कई घंटे गिरती रही। मैंने समझा कि आज न लोग आवेंगे और न मुझे कुछ कहना पडेगा। तो भी कर्तव्य जानकर मैं वहाँ गया। देखा तो, श्रोताओंसे सब हाल भर गया है! उस विराट् जनसमुदायको देखकर मेरी विचित्र दशा हुई जिससे मैं दिनभर बेचैन रहा!

लोग मुझसे प्रायः पूछा करते हैं कि क्या मैं भी व्याख्यान देनेसे पहले घबरा जाता हूँ? और साथ साथ यह भी कहते हैं कि आदत पड जानेसे अब कोई घबराहट न होती होगी। इसके जवाबमें मैं यह कहता हूँ कि व्याख्यान देनेसे पूर्व मैं बहुत ही घबरा जाता हूँ। अनेक अवसरों पर व्याख्यान होनेके पहले मेरी घबराहट इतनी बढ गई है कि मैंने कई बार फिर कभी व्याख्यान न देनेका संकल्प भी कर डाला है। व्याख्यान न देनेसे पहले मैं घबराता हूँ, इतना ही नहीं, बल्कि, बाद भी इस सन्देहसे कि मैं कोई बात कहनेके लिए भूला तो नहीं, बहुत व्याकुल होता हूँ।

परन्तु व्याख्यानके पूर्वकी घबराहटका बदला मुझे अच्छा मिल जाता है। दस मिनिटके कथनसे मुझे यह बोध होने लगता है कि अब श्रोताओंके दिल मेरे काबूमें आरहे हैं और उनसे मेरी पूरी एकता हो चली है। वास्तवमें वक्ताको जब यह मालूम हो जाता है कि श्रोताओंके दिल मेरे दिलसे मिल रहे हैं तब उससे उसे जैसी कुछ प्रसन्नता होती है वैसी और किसी बातसे न होती होगी।

पूर्ण सहानुभूति और एकताका धागा वक्ता और श्रोताओंको मिला देता है और यह धागा किसी दृश्य या मूर्त वस्तुके समान बहुत मजबूत होता है। यदि हजारों श्रोताओंमेंसे एक भी ऐसा हो जिसे मेरे विचारोंके साथ सहानुभूति न हो, अथवा जो उत्साहशून्य, साशंक और दोषदर्शी हो, तो मैं उसे तत्काल पहचान लेता हूँ और उसकी ओर मुड़कर कोई ऐसा चुटकिला छोड़ता हूँ कि वह उसी समय ठीक हो जाता है। यह चुटकिला या मनोरंजक कथा उस पर रामबाणका काम करती है और उस समय उसके मनकी गति देखते ही बनती है। परन्तु चुटकिला मैं इसलिए कभी नहीं छोड़ता कि केवल सुननेवालोंका दिल बहला सकें। ऐसे मन-बहलावके ढंगको मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता हूँ।

जो वक्ता इस विचारसे ही भाषण करता है कि अपने गौरवके लिए मुझे भी कुछ कहना चाहिए, वह अपना और श्रोताओंका अपराध करता है। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि जबतक कोई विशेष बात लोगोंको न बतलानी हो, तबतक कभी भाषण न करना चाहिए। जिसे इस बातका पूरा विश्वास हो कि मेरे शब्दोंसे किसी व्यक्ति या कार्यको कुछ सहायता हो जायगी, उसे ही भाषण करना चाहिए और इस प्रकारके भाषण करनेमें वक्तृत्वके कृत्रिम नियमोंसे मुझे कोई लाभ नहीं दिखाई देता। इसमें सन्देह नहीं कि विराम श्वासोच्छ्वास, स्वरका उतार चढ़ाव आदि बातें जानने और अमल करने योग्य हैं, परन्तु व्याख्यान इनसे जान नहीं आ जाती। जब मुझे कोई व्याख्यान देना होता है तब मैं अंगरेजी भाषाके नियम, अलंकारशास्त्रके नियम आदि सब कुछ भूल जाता हूँ, और अपने श्रोताओंको भी ये बातें भुला देना चाहता हूँ।

मेरे व्याख्यानके समय यदि कोई श्रोता बीचहीमें उठकर चला जाता है तो मेरा चित्त ठिकाने नहीं रहता। इसलिए जहाँतक बनता है मैं अपने व्याख्यानको इतना रोचक और चित्ताकर्षक बनानेका प्रयत्न करता हूँ कि जिससे किसीकी वहाँसे उठनेकी इच्छा ही न हो। प्राय, श्रोतालोग साधारण उपदेशोंकी अपेक्षा तत्त्वकी बातें सुनना अधिक पसन्द करते हैं। यदि उन्हें रोचक पद्धतिसे या कहानियों या चुटकिलोंके साथ तत्त्वकी बात सुनाई जाने तो वे शीघ्र उनका ठीक परिणाम भी निकाल लेते हैं।

शिकागो, बोस्टन, न्यूयार्क, और बुफालो आदि शहरोंके व्यापारी लोग निःसन्देह चतुर, दृढ और व्यवहारदक्ष हैं और मैं ऐसे ही लोगोंमें व्याख्यान देना

सबसे अधिक पसन्द करता हूँ। ये लोग बडे उत्साह और ध्यानसे व्याख्यान सुनते हैं और व्याख्यानगत प्रश्नोंका तत्काल ही उत्तर भी देते हैं। मुझे ऐसे लोगोंके सामने व्याख्यान देनेका कई बार अवसर मिला है। ऐसे व्यवहारदक्ष व्यापारियोंकी संस्थाओंको हस्तगत करनेके लिए—उन्हें अपने विचारोंसे भर देनेके लिए-किसी दावतके उपरान्त बडा ही अच्छा अवसर मिलता है, परन्तु कठिनाई यह आ पडती है कि भोजनमें ही बहुतसा समय नष्ट हो जाता है और तब तक अपने कार्यकी सफलताके विषयमें तरह तरहकी आशकायें करते हुए बैठे रहना पडता है।

मैं ऐसी दावतोंमें बहुत कम शरीक होता हूँ। कारण, जब कभी ऐसा मौका आता है तो मुझे बचपनमें अपने मालिकके यहाँसे सप्ताहमें एक बार मिलनेवाली लपसीकी याद आ जाती है। उन दिनों बाजरेकी रोटी और सूअरका मास ही हमारा भोजन होता था, पर रविवारके दिन हम तीन लडकोंके लिए मालिकके बडे मकानसे थोडीसी लपसी मिला करती थी जिसे पाकर हम लोग बहुत खुश होते थे और यह चाहते थे कि रोज रोज ही रविवार हुआ करे। मैं अपनी टीनकी थाली लपसीके लिए ऊपर उठाये और आँखें बन्द किये बैठा रहता था। अनन्तर आँखें खोलने पर थालीमें बहुत सी लपसी परोसी हुई देखकर मन-ही मन बडा खुश होता था। मैं थालीको इधरसे उधर हिलाकर लपसीको थालीभरमें फैला लेता और मन ही-मन कहता था कि यह बहुत बढ गई है-अब इसे बहुत देर तक खाता रहूँगा। मैं यह नहीं समझ सकता था कि थालीके एक कोनेमें जो लपसी थी वही फैलकर थालीभरमें फैल गई है और इससे वह एक कोनेका लपसीसे अधिक नहीं है। मेरे हिस्सेकी यह लपसी दो बडे चमचे भरसे अधिक नहीं होती थी, पर उसके खानेमें मुझे जो आनन्द मिलता था वह इन पचासों पकवानोंकी दावतोंमें भी नहीं मिलता।

श्रोताओंमें पहला नंबर तो उक्त शहरोंके व्यवहारदक्ष व्यापारियोंका है। इसके बाद मैं दक्षिणकी दोनो जातियोंके सामने एक साथ या अलग अलग व्याख्यान देना पसन्द करता हूँ। उनके उत्साह और प्रत्युत्तरसे मुझे बडा आनन्द होता है। काले लोगोंके 'तथास्तु' और 'साधु, साधु' कहनेसे, कोई भी वक्ता हो अवश्य उत्साहित होगा। इसके बाद कालेजके तरुण विद्यार्थियोंका नंबर है। हारवर्ड, येल, विलियम्स, अमहर्स्ट, पेन्सिलवानिया, मिशिगन, आदि

पि श्वविद्यालयोंम तथा नार्थ कैरोलिनाके ट्रिनिटी कालेजम और ऐसे ही अनेक स्थानोंमें मेरे अनेक व्याख्यान हुए हैं ।

मेरे व्याख्यानके बाद बहुतसे लोग मेरे पास आकर मुझसे हाथ मिलाते हैं और कहते हैं,–"किसी नीग्रोको ' मिस्टर ' कहनेका यह पहला ही अवसर है। यह सब देख सुनकर मुझे बडा कुतूहल होता है ।

टस्केजी विद्यालयके लाभके लिए जब व्याख्यान देने होते हैं तब म खास खास स्थानोंपर सभायें करनेका प्रबंध करता हूँ। ऐसे अवसरोंपर मुझे देवालयों, रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एन्डेवर सोसायटियों और स्त्री पुरुषोंके भिन्न भिन्न क्लबोंम जाना पडता है और कभी कभी तो एक एक दिनमें चार चार व्याख्यान देने पडते हैं ।

तीन वर्ष पूर्व, मिस्टर मारिस के जेसप और डाक्टर करीके अनुरोधसे स्लेटर-फण्डने पचोने,नीग्रो लोगोंकी पुरानी बसतियोंम घूम घूम कर सभायें करनेके लिए मुझे और मेरी स्त्रीको कुछ धन देना निश्चय किया। गत तीन वर्षोंम मने प्रत्येक वर्षके कई सप्ताह इस काममें खर्च किये हैं। कार्यक्रम इस प्रकारका रहा कि सवेरे धर्मोपदेशकों, अध्यापकों तथा पेशेवालोंके सामने मेरा व्याख्यान हुआ, दो पहरको स्त्रियोंमें मिसेस वाशिंगटन वक्तृता देतीं, और सन्ध्या समय सर्व साधारणके सामने फिर मेरा व्याख्यान होता। इन सभाओंमें नीग्रो लोगोंके अतिरिक्त गोरे भी आया करते थे। उदाहरणार्थ, चटनुगाकी सभामें तीन हजार श्रोता थे जिनमें आठ सौ गोरे थे, । इन सभाओंका कार्य मुझे बहुत पसन्द आया और इनसे लाभ भी बहुत हुआ ।

इन सभाओंके कारण हम लोगोंको हर तरहके लोगोंसे मिलकर उनकी असली हालत जाननेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला । इसके अतिरिक्त दोनों जातियोंके पारस्परिक व्यवहार भी हम लोग भली भाँति देख सके। ऐसी सभाओंमें काम करनेके बाद नीग्रो जातिकी उन्नतिके विषयमें मेरा उत्साह बहुत बढ जाता है। मैं यह जानता हूँ कि ऐसे अवसरोंपर लोग प्राय दिखौआ उत्साह प्रकट किया करते हैं, पर बारह घाटका पानी पीकर अब मुझे इतना अनुभव हो गया है कि इसमें म धोखा नहीं खा सकता। इसके सिवाय म हर बातकी तह तक पहुँचकर उसका ठीक ठीक पता लगानेका पूरा पूरा उद्योग किया करता हूँ।

समझ-बूझकर बात करनेका अभिमान रखनेवाले एक मनुष्यके मुँहसे मैंने सुना कि, "नीग्रो जातिमें सैकडा नब्बे स्त्रियाँ दुराचारिणी होती है।" एक सम्पूर्ण जातिके विषयमें इससे बढकर निराधार और मिथ्या विधान और क्या हो सकता है ?

बीस वर्षतक दक्षिणमें रहकर और वहाके निवासियोंकी वास्तविक दशाका पता लगाकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरी जाति सदाचार, सम्पत्ति, शिक्षा आदि सभी बातोंमें दिनोंदिन बराबर तरकी करती जा रही है। किसी खास स्थानके निम्न श्रेणीके लोगोंकी रहन-सहनको प्रमाणस्वरूप लेकर सारी जाति पर कलंक लगाना बुद्धिमानीका काम नहीं है।

सन् १८९७ के आरभमें बोस्टन-निवासियोंने मुझे रावर्ट गोल्ड शाका स्मारक खोलनेके अवसर पर निमंत्रित किया। यह समारंभ बोस्टनके म्यूजिक हालमें बडी धूमधामसे हुआ। बडे बडे विद्वान् और प्रतिष्ठित लोग उपस्थित हुए थे। गुलामीके कई पुराने विरोधी भी आये हुए थे। सभापतिका आसन मैसेच्युसेटस राज्यके गवर्नर आनरेबल रोजर वुलकाट-महाशयने मण्डित किया था और उनके साथ प्लेटफार्म पर अनेक गण्यमान्य लोग बैठे हुए थे। इस सभाके विषयमें 'ट्रून्स क्रिप्ट' नामक पत्रके निम्न लिखित लेखसे बहुत अच्छा प्रकाश पडेगा।

"कल म्यूजिक हालमें विश्व बधुत्वके सन्मानार्थ जो सभा हुई थी उसमें टस्केजी-विद्यालयके प्रिन्सिपलका व्याख्यान बहुत ही अच्छा हुआ। गवर्नर वुलकाटने उनका इस प्रकार परिचय दिया कि–'गत जून मासमें हारवर्ड–यूनिवर्सिटीने आपको एम ए की पदवी प्रदान की है। इस देशके सबसे प्राचीन विश्वविद्यालयकी ओरसे यह आनरेरी डिग्री प्राप्त करनेवाले नीग्रो आप ही हैं। आपको यह माननीय पदवी अपनी जातिके उदार नेतृत्वकी सूचनारूप मिली है।' जिस समय प्रोफेसर वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए खडे हुए उस समय ऐसा जान पडा कि मानों मैसेच्युसेटसके स्वातंत्र्यकी साक्षात प्रतिमा ही खडी हुई हो। उनके चेहरे पर मैसेच्युसेटसकी परम्परागत और अचल श्रद्धा झलक रही थी। उनके शक्तिशाली विचारों और उज्ज्वल भाषणमें पूर्वकालीन घोर संग्रामका वैभव दिखाई देता था। यह सारा दृश्य ऐतिहासिक सौन्दर्यसे भरा हुआ और महत्वसे परिपूर्ण था। निरुत्साही बोस्टन अपने अन्तःकरणके सत्य और सद्भावके अभि-

तेजसे दीप्तिमान हो रहा था। किसी सार्वजनिक अवसर पर न दिखाई देनेवाले लोगोंके झुंडके झुंड, और पर्वके दिन घर छोड़कर बाहर जानेवाले सैकड़ों परिवार आज उस सभाभवनमें ठसाठस भरे हुए थे। नगरके नरनारियोंने उत्तम वस्त्र और आभूषण पहनकर कुछ ऐसी शोभा उपस्थित की थी, मानो यह नगर अपना ही जन्म महोत्सव मना रहा हो।

" सामरिक गीतोंने भवन गूंज रहा था। जब कर्नल शाके मित्र और कर्मचारी शिप्री, सेंट गाउन्स, स्मारक कमेटीके सदस्य, गवर्नर, उनके मन्त्री और मैसेच्युसेटसकी ५४ वीं पल्टनके नीग्रो सैनिक आदि लोग आये और प्लेटफार्मों पर चढ़ने लगे तब चारो ओरसे जयजयकी पुकार और तालियोंकी कड़कड़ाट आरम्भ हुई। कमेटीकी ओरसे गवर्नर एडूके एक पुराने मन्त्रीने भाषण किया। इसके बाद गवर्नर वुल्काटने एक छोटी पर बहुत ही सुन्दर वक्तृता दी। उन्होंने कहा, 'वागनरके दुर्गकी घटनासे इस जातिके इतिहासमें नवीन युग आरम्भ हुआ और अब इस जातिने शैशव काल पार कर यौवन कालमें पदार्पण किया है।' उन्होंने बोस्टनके विजयस्तम्भका तथा कर्नल शा और उनकी काली पल्टनोंके कार्योंका बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें वर्णन किया। तब—

" Mine eyes have seen the glory of
the coming of the Lord "

यह गीत हुआ और इस अच्छे मौके पर बुकर टी वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए उठ खड़े हुए। इस समय श्रोताओंकी शान्ति भंग हो गई और उनमें आवेश और उत्साह भर गया। सारा श्रोतृसमाज उनका जयजयकार करने और उन्हें धन्यवाद देनेके लिए कई बार उठा। जब इस कालेवर्णके सुशिक्षित और बलवान् मनुष्यने गंभीर ध्वनिसे अपना भाषण आरम्भ किया और स्टर्न्स तथा शा एडूका जिक्र छेड़ा तब लोग बड़े ही उत्साह और एकाग्रतासे वक्ताकी ओर देखने लगे। सैनिकों और नागरिकोंकी आँखोंमें आँसू भर आये। प्लेटफार्म पर बैठे हुए काली पल्टनके सिपाहियोंकी ओर, विशेषकर उन सिपाहियोंकी ओर जिन्होंने बहुत घायल हो जाने पर भी हाथसे अपना जातीय झंडा गिरने न दिया था— मुड़कर वाशिंगटन महाशय कहने लगे,—'५४ वीं पल्टनके बचे हुए वीरो, और कटे हुए हाथ पैरोंसे आजके समारम्भकी शोभा बढ़ानेवाले सैनिको, तुम्हारा सेनापति अब भी जीवित है। यदि बोस्टनवाले उसका कोई स्मारक

न बनाते और इतिहासमें उसका कोई उल्लेख न किया जाता, तो भी तुम लोगोंमें और उस नमकहलाल जातिमें जिसके कि तुम लोग प्रतिनिधि हो, रार्बट गोल्ड शाका अक्षय्य स्मारक सदा बना रहता।' इन शब्दोंको सुनते ही श्रोताओंमें उत्साहसागर उमड आया। मैसेच्युसेटसके गवर्नर, रोजर वुलकाटने उठ कर बडे जोरसे कहा,—बुकर टी वाशिंगटनका त्रिवार जयजयकार हो!"

उस समय प्लेटफार्म पर फोर्ट वागनरके झण्डेदार, न्यू बडफर्डके काले आफिसर, सार्जंट विलियम कारने भी उपस्थित थे। यद्यपि उनकी पल्टनके अधिकांश सिपाही मारे जा चुके थे और भाग गये थे तथापि वे अन्त समयतक अमेरिकाकी ध्वजा लिये खडे रहे थे। युद्ध समाप्त होने पर उन्होंने कहा था, 'अमेरिकाके पुराने झंडेने कभी जमीन नहीं देखी।' वही झंडा इस समय भी उनके हाथमें था। मैंने जब काली पल्टनके बचे हुए वीरोंको सम्बोधन करके भाषण किया और सार्जंट कारनेका नाम लिया तो वे आप ही उठ खडे हुए और उन्होंने अपना झंडा ऊपर उठा दिया। मैंने कई बार अपने भाषणसे लोगोंको उत्साहित या उत्तेजित हुए देखा है, पर इस मौके पर जैसा दृश्य दिखाई दिया वैसा पहले न कभी देखा था और न अनुभव ही किया था। कई मिनिटों तक मारे आनन्दके लोग आपेमें न रहे।

स्पेनके साथ अमेरिकाका युद्ध समाप्त हो चुकने पर, शान्तिके उपलक्ष्यमें अमेरिकाके सभी बडे बडे नगरोंमें उत्सव हुए। इसी प्रकारका एक उत्सव शिकागोमें भी हुआ। शिकागो-विश्वविद्यालयके प्रेसिडेंट विलियम हारपर स्वागतकारिणी सभाके सभापति थे। उन्होंने मुझे व्याख्यान देनेके लिए निमन्त्रित किया। मै वहाँ गया और मेरा पहला व्याख्यान १६ अक्टूबर, रविवारके दिन सन्ध्याके समय हुआ। उस दिन श्रोताओंकी बडी भीड थी। ऐसी भीड व्याख्यान सुननेके लिए इससे पहले इस प्रदेशमें कभी न हुई थी। उसी दिन दो स्थानोंपर और भी मैंने व्याख्यान दिये।

पहले व्याख्यानके लिए अनुमान सोलह हजार श्रोता उपस्थित थे और सभामन्दिरके बाहर अनुमान इतने ही लोग अन्दर आनेकी चेष्टा कर रहे थे। उस समय भीडकी यह कैफियत थी कि बिना पुलिसकी मददके कोई अन्दर नहीं जा सकता था। उपस्थित सज्जनोंमें प्रेसिडेंट विलियम मैकिनले, उनके मन्त्री, परराष्ट्रोंके प्रतिनिधि, इसी युद्धमें नाम पाये हुए जलस्थल-सेनाके अनेक

अफसर और अन्य बड़े लोग भी थे। मेरे अतिरिक्त रैबी एमिल जी हर्श, फादर टामस पी हाउनेट और डाक्टर जान एच बरोज आदि वक्ताओंके भी भाषण हुए। इस सभाका हाल लिखते हुए शिकागोके 'टाइम्स हेरल्ड'ने मेरे भाषणके विषयमें इस प्रकार लिखा था —

"उन्होंने (मैंने) कहा कि नीग्रो लोग नष्ट होनेकी अपेक्षा दासत्वको अधिक पसंद करते हैं। उन्होंने यह स्मरण दिलाया कि काले अमेरिकन दास बने रहें और गोरे अमेरिकन स्वतंत्र हों—इसीके लिए राज्यक्रांतिके समय क्रिस-पस अटक्सने अपने प्राण दिये थे। न्यू आरलीन्समें नीग्रो लोगोंने जैक्सनके साथ जैसा व्यवहार किया था, उसका भी उन्होंने उल्लेख किया। जिस समय दक्षिणी गोरे नीग्रो जातिके दासत्वके लिए लड़ रहे थे—उन्हें सदा गुलाम बनाये रखनेके लिए जी-तोड़ प्रयत्न कर रहे थे उस समय नीग्रो लोगोंने जिस स्वामि-भक्तिके साथ उनके परिवारकी रक्षाकी थी, उसका भी उन्होंने बहुत ही हृदय-द्रावक चित्र खींचा। पोर्ट हडसन, फोर्ट वागनर और फोर्ट पिलोंमें उन्होंने जिस वीरताका परिचय दिया था उसका भी उन्होंने वर्णन किया। क्यूबावासियोंको स्वातन्त्र्य दिलानेके लिए नीग्रो लोगोंने अपने ऊपर होनेवाले अन्यायोंको भूलकर एलकाने और सानजियागो पर जिस वीरताके साथ छापा मारा था उसकी भी उन्होंने खूब प्रशंसा की।

"इन सब बातोंमें वक्ताने यही दिखलाया कि उनकी जातिके लोगोंका व्यव-हार बहुत ही उचित और शुद्ध रहा है। इसके बाद उन्होंने अपने वक्तृत्वपूर्ण शब्दोंमें गोरोंसे प्रार्थना की,—'जब आप लोग स्पेनिश अमेरिकन युद्धमें किये हुए नीग्रो लोगोंके सारे पराक्रम सुन लें, दक्षिणके और उत्तरके अफसरोंसे आपको उसका पूरा वृत्तान्त मालूम हो जाय, और दासत्वकी प्रथा उठा देनेवालोंसे तथा पहलेके मालिकोंसे उनके विषयमें आद्यन्त जान लें तब अपने अन्तःकरणमें इस बातको सोचें कि जो जाति इस देशके लिए मरनेको—अपने प्राण न्योछावर कर-नेको तैयार रहती है उसे जीवित रहनेका अवसर देना चाहिए या नहीं।'"

स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें योग देनेका अवसर देकर प्रेसिडेंटने इन लोगोंका जो गौरव किया था उसके लिए भी अपने व्याख्यानमें उन्हें अनेक धन्यवाद दिये। व्याख्यान सुनकर लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। स्टेजके दाहिना ओर प्रेसिडेंटके बैठनेकी जगह खास तौर पर बनाई गई थी। वहां प्रेसिडेंट उपस्थित भी थे। जिस समय उनकी ओर मुड़कर मैंने उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की, उस

समय सब लोग उठ खड़े हुए और रूमाल, टोपियाँ और बेत हिलाने लग गये। स्वयं प्रेसिडेंटने भी खड़े होकर सिर झुकाया। तब तो श्रोताओंके उत्साहका पारावार ही न रहा। उस समय जिस प्रकारसे उन्होंने इस उत्साहको प्रकट किया उसका वर्णन करना असंभव है।

शिकागोके इस व्याख्यानका एक अंश दक्षिणी गोरोंकी समझमें भली भाँति नहीं आया और इसलिए वहाँके समाचारपत्र मुझ पर तरहतरहके आक्षेप करने लगे, यहाँ तक कि, 'एज-हेरल्ड' के सम्पादकने मुझसे उसका खुलासा भी लिख भेजनेकी प्रार्थना की। मैंने उत्तरमें लिख भेजा कि "उत्तरी श्रोताओंके सामने मैं उन बातोंको कभी नहीं कहता, जिन बातोंको मैं दक्षिणी श्रोताओंके सामने कहना अनुचित समझता हूँ। इससे अधिक खुलासेकी मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता। यदि मेरी सत्रह वर्षकी सेवाओंसे दक्षिणके निवासी मेरा ठीक ठीक अभिप्राय नहीं समझ सके तो अब मेरे शब्दोंसे क्या खाक समझेंगे? व्यावहारिक और नागरिक वर्णद्वेष नष्ट करनेके सबबमें एटलांटामें मैंने जो कुछ कहा था उसीकी पुनरावृत्ति मैंने यहाँ शिकागोमें की थी। अपनी जातिकी सामाजिक अवस्थाके सम्बन्धमें मैं कभी चर्चा नहीं करता।" इसके साथ ही मैंने एटलांटावाले अपने व्याख्यानके कुछ अंश उद्धृत भी कर दिये। इस उत्तरसे सम्पादक महाशयकी दिलजमई हो गई और दूसरे समाचारपत्र भी चुप हो रहे।

सार्वजनिक सम्मेलनोंमें तरह तरहके लोग मिलते हैं। साधरणतः लम्बी दाढ़ी, बिखरे हुए बाल, लंबा और छोटासा चेहरा, काला कोट और कोट तथा फतुही पर तेलकी चिकनाहट-इतने लक्षणोंसे युक्त मनुष्यको देखते ही मैं समझ जाता हूँ कि यह कोई विक्षिप्त है। शिकागोमें व्याख्यानके बाद मुझे एक ऐसा ही मनुष्य मिला। उसकी एक एक बात नौ नौ हाथकी थी। वह कहता था कि मैं एक ऐसी तरकीब जानता हूँ जिससे मकई तीन चार साल तक बिना बिगड़े रक्खी जा सकती है और इस तरकीबको दक्षिणी लोग अमलमें ले आवें तो जात-पाँतका प्रश्न बातकी बातमें हल हो जाय। मैंने उसे यह समझानेका प्रयत्न किया कि ... वर्षका काम चल जाने लायक धान पैदा कर लेना कैसे सिखलाया जावे, पर उसे सन्तोष न हुआ। एक और महात्मा ऐसे ही मिले जो इस उद्योगमें लगे थे कि सब महाजनी कोठियाँ और बैंक बन्द हो जायँ। वे मुझे भी इस उद्योगमें मिलाना चाहते थे और कहते थे कि जब ऐसा हो जायगा तब ही नीग्रो लोग अपने बल पर खड़े हो सकेंगे।

किसी किसी मनुष्यको यह आदत हुआ करती है कि वह दूसरोंका समय व्यर्थ नष्ट किया करता है। एक दिन बोस्टनके एक होटलमें मुझे खबर मिली कि कोई आदमी मुझसे मिलने आया है। मैं जल्दी जल्दी अपने कपड़े पहनकर नीचे उतरा तो देखा कि एक निकम्मा आदमी खड़ा है। उसने बड़े अच्छे भावसे कहा,—"कल मैंने आपका व्याख्यान सुना और बड़ी प्रसन्नता हुई थी। आज फिर इसी लिए आया हूँ कि और भी कुछ सुनकर प्रसन्न होऊँ।"

लोग मुझसे प्रायः पूछते हैं कि आप टस्केजीमें इतना बड़ा काम रहते भी [illegible]-स्यका प्रबन्ध कैसे करते हैं। बात यह है कि मैं 'जो काम तुम स्वयं कर सकते हो उसे दूसरोंसे मत कराओ' इस सिद्धान्तको नहीं मानता। मेरा तो यह सिद्धान्त रहता है कि 'जो काम दूसरे लोग अच्छी भाँति कर सकते हों उसे तुम स्वयं मत करो।'

टस्केजी विद्यालयमें एक बड़ा गुण यह है कि कोई काम किसी मनुष्यके उपस्थित न रहनेसे रुक नहीं जाता। उसकी व्यवस्था ऐसी अच्छी और परिपूर्ण है। इस समय वहाँ सब मिलाकर ८६ कार्यकर्ता लोग हैं। इन सबके कामोंका ऐसा हिसाब लगा रहता है कि प्रत्येक काम समय पर और ठीक ठीक होता रहता है। कई शिक्षक बहुत पुराने हैं और विद्यालय पर वैसा ही प्रेम रखते हैं जैसा मैं रखता हूँ। मैं जब विद्यालयमें नहीं रहता तब [illegible] कोषाध्यक्षका काम करनेवाले मि० वारन लोगन मेरा काम देखते रहते हैं। इस काममें मिसेस वाशिंगटन और मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी मि० स्काट, उनकी यथेष्ट सहायता करते हैं। मि० स्काट मेरी चिट्ठियोंके उत्तर देते हैं और विद्यालय तथा दक्षिणी नीग्रो भाइयोंके विषयमें आवश्यक बातोंकी सूचना मुझे दे दिया करते हैं। उनके उद्यम, उनकी चातुर्य और उनका काम करनेकी सुरीतिके लिए मैं उनका बहुत ऋणी हूँ। विद्यालयका प्रबन्ध करनेके लिए एक कार्यकारिणी सभा भी है, जिसका अधिवेशन सप्ताहमें दो बार होता है। इस सभामें विद्यालयके नौ विभागोंके नौ प्रधान रहते हैं। इसके सिवाय एक और सभा है, जो प्रति सप्ताह आय व्ययके विषयमें विचार करती है। इसमें छः सदस्य हैं। महीनेमें एक बार, अथवा आवश्यकता पड़नेपर अनेक बार शिक्षकोंकी एक साधारण सभा हुआ करती है। इन सबके अतिरिक्त धार्मिक और कृषि विभागके शिक्षकोंकी भी कई छोटी मोटी सभायें होती रहती हैं।

समय सब लोग उठ खड़े हुए और रूमाल, टोपियाँ और बेत हिलाने लग गये। स्वयं प्रेसिडेंटने भी खड़े होकर सिर झुकाया। तब तो श्रोताओंके उत्साहका पारावार ही न रहा। उस समय जिस प्रकारसे उन्होंने इस उत्साहको प्रकट किया उसका वर्णन करना असंभव है।

शिकागोके इस व्याख्यानका एक अंश दक्षिणी गोरोंकी समझमें भली भाँति नहीं आया और इसलिए वहाँके समाचारपत्र मुझ पर तरहतरहके आक्षेप करने लगे, यहाँ तक कि, 'एज-हेरल्ड' के सम्पादकने मुझसे उसका खुलासा भी लिख भेजनेकी प्रार्थना की। मैंने उत्तरमें लिख भेजा कि "उत्तरी श्रोताओंके सामने मैं उन बातोंको कभी नहीं कहता, जिन बातोंको मैं दक्षिणी श्रोताओंके सामने कहना अनुचित समझता हूँ। इससे अधिक खुलासेकी मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता। यदि मेरी सत्रह वर्षकी सेवाओंसे दक्षिणके निवासी मेरा ठीक ठीक अभिप्राय नहीं समझ सके तो अब मेरे शब्दोंसे क्या खाक समझेंगे? व्यावहारिक और नागरिक वर्णद्वेष नष्ट करनेके सबंधमें एटलाटामें मैंने जो कुछ कहा था उसीकी पुनरावृत्ति मैंने यहाँ शिकागोमें की थी। अपनी जातिकी सामाजिक अवस्थाके सम्बन्धमें मैं कभी चर्चा नहीं करता।" इसके साथ ही मैंने एटलाटावाले अपने व्याख्यानके कुछ अंश उद्धृत भी कर दिये। इस उत्तरसे सम्पादक महाशयकी दिलजमई हो गई और दूसरे समाचारपत्र भी चुप हो रहे।

सार्वजनिक सम्मेलनोंमें तरह तरहके लोग मिलते हैं। साधारणतः लम्बी दाढ़ी, बिखरे हुए बाल, रूखा और छोटासा चेहरा, काला कोट और कोट तथा फतूही पर तेलकी चिकनाहट-इतने लक्षणोंसे युक्त मनुष्यको देखते ही मैं समझ जाता हूँ कि यह कोई विक्षिप्त है। शिकागोमें व्याख्यानके बाद मुझे एक ऐसा ही मनुष्य मिला। उसकी एक एक बात ना नौ हाथकी थी। वह कहता था कि मैं एक ऐसी तरकीब जानता हूँ जिससे मकई तीन चार साल तक बिना बिगड़े रक्खी रह सकती है और इस तरकीबको दक्षिणी लोग अमलमें ले आवें तो जात पाँतका प्रश्न बातकी बातमें हल हो जाय। मैंने उसे यह समझानेका प्रयत्न किया कि एक वर्षका काम चल जाने लायक धान पैदा कर लेना कैसे सिखलाया जावे, पर उसे सन्तोष न हुआ। एक और महात्मा ऐसे ही मिले जो इस उद्योगमें लगे थे कि सब महाजनी कोठियाँ और बैंक बन्द हो जायँ। वे मुझे भी इस उद्योगमें मिलाना चाहते थे और कहते थे कि जब ऐसा हो जायगा तब ही नीग्रो लोग अपने बल पर खड़े हो सकेंगे।

किसी किसी मनुष्यकी यह आदत हुआ करती है कि वह दूसरोंका समय ही नष्ट किया करता है। एक दिन बोस्टनके एक होटलमें मुझे खबर मिली कि कोई आदमी मुझसे मिलने आया है। मैं जल्दी जल्दी अपने कपड़े पहनकर नीचे उतरा तो देखा कि एक निकम्मा आदमी खड़ा है। उसने बड़े शान्त भावसे कहा,—"कल मैंने आपका व्याख्यान सुना और बड़ी प्रसन्नता लाभ की। आज फिर इसी लिए आया हूँ कि और भी कुछ सुनकर कृतार्थ होऊँ।"

लोग मुझसे प्रायः पूछते हैं कि आप टस्केजीसे इतनी दूर रहकर भी विद्यालयका प्रबन्ध कैसे करते हैं। बात यह है कि मैं 'जो काम तुम स्वयं कर सकते हो उसे दूसरोंसे मत कराओ' इस सिद्धान्तको नहीं मानता। मेरा तो यह सिद्धान्त रहता है कि 'जो काम दूसरे लोग भली भाँति कर सकते हों उसे तुम स्वयं मत करो।'

टस्केजी विद्यालयमें एक बड़ा सुभीता यह है कि कोई काम किसी मनुष्यके उपस्थित न रहनेसे रुक नहीं जाता। उसकी व्यवस्था ही ऐसी अच्छी और परिपूर्ण है। इस समय वहाँ सब मिलाकर ८६ कार्यकर्ता लोग हैं। इन सबके कामोंका ऐसा हिसाब लगा रक्खा है कि हरेक काम समय पर और भली भाँति होता रहता है। ये शिक्षक बहुत पुराने हैं और विद्यालय पर वैसा ही प्रेम करते हैं जैसा मैं करता हूँ। मैं जब विद्यालयमें नहीं रहता तब सन्द कोषाध्यक्षका काम करनेवाले मि० वारन लोगन मेरा काम देख लेते हैं। इस काममें मिसेस वाशिंगटन और मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी मि० स्काट उनकी यथेष्ट सहायता करते हैं। मि० स्काट मेरी चिट्ठियोंको देख लेते हैं और विद्यालय तथा दक्षिणी नीग्रोभाइयोंके विषयमें आवश्यक बातोंकी सूचना मुझे दिया करते हैं। इनके उद्यम, इनका चातुर्य और इनकी काम करनेकी नीतिके लिए मैं इनका बहुत कृतज्ञ हूँ। विद्यालयका प्रबन्ध करनेके लिए एक कार्यकारिणी सभा भी है, जिसका अधिवेशन सप्ताहमें दो बार होता है। इस सभामें विद्यालयके नौ विभागोंके नौ प्रधान रहते हैं। इसके सिवाय एक और सभा है, जो प्रति सप्ताह आय व्ययके विषयमें विचार करती है। इसमें छः सदस्य हैं। महीनेमें एक बार, अथवा आवश्यकता पड़नेपर अधिक बार शिक्षकोंकी एक साधारण सभा हुआ करती है। इन सबके अतिरिक्त धार्मिक और कृषि विभागके शिक्षकोंकी भी कई छोटी मोटी सभाएँ होती रहती हैं।

मैंने अपने जानने समझनेके लिए ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा है कि मैं कहीं भी रहूँ, मेरे पास विद्यालयके कार्योंकी डेली रिपोर्ट आया करे। इससे मुझे विद्यालयके सबधमें सब विवरण हरवक्त मालूम रहता है, यहाँतक कि किन किन विद्यार्थियोंने छुट्टी ली है और किस कारणसे ली है, इसका भी मुझे पता रहता है। विद्यालयकी दैनिक आय, गोशालासे आये हुए दूध और मक्खन, विद्यार्थियो और शिक्षकोंको मिलनेवाला भोजन, बाजारसे अथवा अपने खेतोंसे लाई हुई तरकारियाँ, आदिका पूरा पूरा ब्योरा इन रिपोर्टोंमें होता है। इस तरहका प्रबन्ध होनेसे सब काम विद्यालयके उद्देशके अनुकूल बराबर होते रहते हैं।

इन सब कामोंको करते हुए भी मुझे विश्राम और विहारके लिए समय मिल जाता है। लोग मुझसे पूछते हैं कि तुम यह सब कैसे कर लेते हो। इसका उत्तर देना कठिन है। मेरी यह धारणा हो गई है कि दृढताके साथ प्रयत्न करनेके लिए और निराश कर देनेवाली बडीसे बडी कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए जैसे बलयुक्त शरीरकी और सुदृढ मज्जातन्तुओंकी आवश्यकता होती है उनकी प्राप्ति अपने ऊपर और अपने कार्यके ही ऊपर अवलम्बित है। मैंने अपना जीवन ऐसा नियमित कर लिया है कि मुझे सब काम और यथेष्ट विश्राम करनेका पूरा अवकाश मिल जाता है। मैं अपने प्रत्येक दिनका कार्यक्रम बना रखता हूँ। जहाँतक शीघ्र हो सकता है, अपने नित्यके कामसे निपटकर म कोई नया काम ढूँढता हू और दूसरे दिन उसमें हाथ लगा देता हूँ। कामके अधीन रहकर उसके गुलाम बननेकी अपेक्षा मै कामको अपने अधीन रखकर उसे ही गुलाम बनाये रहता हूँ। कामको पूर्णतया अपने अधीन रखनेसे शरीर नीरोग रहता, मन प्रफुल्लित होता, हृदयमें बल आता और आत्माको शान्ति मिलती है। मैं यह अपने अनुभवकी बात कहता हूँ। अपना काम प्यारा हो जानेसे एक प्रकारकी अपूर्व शक्ति होती है।

तडके अपने काममें लग जानेसे म समझ लेता हूँ कि आजका दिन अच्छा बीतेगा और खूब काम होगा, पर इसके साथ ही, न जानी हुई विपत्तियोंके लिए भी मैं तैयार रहता हूँ। म यह सुननेके लिए तैयार रहता हूँ कि विद्यालयका कोई भवन गिर पडा, या जल गया, या और कोई वारदात हो गई, अथवा किसी समाचारपत्र या सार्वजनिक सभामें मेरे कामोंकी कडी आलोचना हुई, इत्यादि।

गत उन्नीस वर्षोंके लगातार कामसे मैंने केवल एक बार छुट्टी ली है। इसका कारण यह हुआ कि दो वर्ष पूर्व मेरे कुछ मित्रोंने मुझे धन देकर सपत्नीक यूरोप जाकर वहाँ तीन महीने विश्राम करनेके लिए विवश किया था। मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यको अपना शरीर सुदृढ रखना चाहिए। मेरी तबियत जरा भी खराब हो जाती है तो मैं शीघ्र ही उसका इलाज करता हूँ। मुझे यदि कभी मीठी नींद न आई तो मैं समझता हूँ कि कुछ गडबड है। यदि शरीरके किसी अंगमें कुछ शिथिलता मालूम होती है तो मैं किसी अच्छे डाक्टरके पास जाकर उसकी चिकित्सा कराता हूँ। मैं यह समझता हूँ कि हर समय और हर स्थान पर नींद ले सकनेकी शक्तिसे बहुत लाभ होते हैं। मुझे इतना अभ्यास हो गया है कि जब मैं चाहता हूँ, पन्द्रह बीस मिनिट झपकी लेकर शरीरकी सब थकावट दूर कर देता हूँ।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि दिन खतम होनेसे पहले ही मैं अपने कामोंसे निपट लेता हूँ, परन्तु यदि कभी कोई ऐसा विकट प्रश्न आ पड़ता है कि उसका एकाएक निर्णय करना मैं उचित नहीं समझता, तो उसे दूसरे दिनके लिए छोड देता हूँ, अथवा, अपनी स्त्री और अपने मित्रोंसे उसके विषयमें परामर्श करता हूँ।

मुझे अच्छे अच्छे ग्रन्थ पढनेके लिए रेलकी सफरमें मौका मिलता है। समाचारपत्र पढनेका मुझे बडा शौक है, पर शोक इस बातका है कि मैं बहुतसे समाचारपत्र पढ डालता हूँ। उपन्यासोंमें मुझे कुछ लज्जत नहीं आती। जिस उपन्यासकी बडी तारीफ सुननेमें आती है–जिसके बाँचनेके लिए बीसों मित्र सिफारिश करते हैं उसे भी मैं बडी कठिनाईसे पढता हूँ। जीवनचरितोंपर मुझे बडा प्रेम है, पर कोई जीवनचरित हाथमें लेनेसे पहले मैं यह अच्छी तरह देख लेता हूँ कि वह चरित किसी सत्पुरुष या सुधारकका है या नहीं। यदि नहीं, तो मैं उसे नहीं पढता। अब्राहम लिंकनके विषयमें जितनी पुस्तकें छपी हैं अथवा मासिकोंमें जो जो लेख निकले हैं उन सबको मैंने पढ डाला है। साहित्यमें लिंकन ही मेरे प्रधान गुरु हैं।

साल में छह महीने मुझे टस्केजीसे बाहर रहना पडता है। विद्यालयसे दूर रहनेमें हानि तो है ही, पर इसके बदलेमें कुछ लाभ भी अवश्य होजाता है। कार्यमें परिवर्तन होनेसे एक प्रकारका विश्राम मिलता है। रेलगाडीमें बैठकर बहुत दूरकी यात्रा करनेसे मेरी तबियत हरी हो जाती है और आराम भी मिलता

मैंने अपने जानने समझनेके लिए ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा है कि मैं कहीं भी रहूँ, मेरे पास विद्यालयके कार्योंकी डेली रिपोर्ट आया करे। इससे मुझे विद्यालयके सबधमें सब विवरण हरवक्त मालूम रहता है, यहाँतक कि किन किन विद्यार्थियोंने छुट्टी ली है और किस कारणसे ली है, इसका भी मुझे पता रहता है। विद्यालयकी दैनिक आय, गोशालासे आये हुए दूध और मक्खन, विद्यार्थियो और शिक्षकोंको मिलनेवाला भोजन, बाजारसे अथवा अपने खेतोंसे लाई हुई तरकारियों, आदिका पूरा पूरा ब्योरा इन रिपोर्टोंमें होता है। इस तरहका प्रबन्ध होनेसे सब काम विद्यालयके उद्देशके अनुकूल बराबर होते रहते है।

इन सब कामोंको करते हुए भी मुझे विश्राम और विहारके लिए समय मिल जाता है। लोग मुझसे पूछते है कि तुम यह सब कैसे कर लेते हो। इसका उत्तर देना कठिन है। मेरी यह धारणा हो गई है कि दृढताके साथ प्रयत्न करनेके लिए और निराश कर देनेवाली बडीसे बडी कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए जैसे बलयुक्त शरीरकी और सुदृढ मज्जातन्तुओंकी आवश्यकता होती है उनकी प्राप्ति अपने ऊपर और अपने कार्यके ही ऊपर अवलम्बित है। मैंने अपना जीवन ऐसा नियमित कर लिया है कि मुझे सब काम और यथेष्ट विश्राम करनेका पूरा अवकाश मिल जाता है। मैं अपने प्रत्येक दिनका कार्यक्रम बना रखता हूँ। जहाँतक शीघ्र हो सकता है, अपने नित्यके कामसे निपटकर मै कोई नया काम ढूँढता हूँ और दूसरे दिन उसमें हाथ लगा देता हूँ। कामके अधीन रहकर उसके गुलाम बननेकी अपेक्षा मैं कामको अपने अधीन रखकर उसे ही गुलाम बनाये रहता हूँ। कामको पूर्णतया अपने अधीन रखनेसे शरीर नीरोग रहता, मन प्रफुल्लित होता, हृदयमें बल आता और आत्माको शान्ति मिलती है। मै यह अपने अनुभवकी बात कहता हूँ। अपना काम प्यारा हो जानेसे एक प्रकारकी अपूर्व शक्ति होती है।

तडके अपने काममें लग जानेसे मैं समझ लेता हूँ कि आजका दिन अच्छा बीतेगा और खूब काम होगा, पर इसके साथ ही, न जानी हुई विपत्तियोंके लिए भी मै तैयार रहता हूँ। मैं यह सुननेके लिए तैयार रहता हूँ कि विद्यालयका कोई भवन गिर पडा, या जल गया, या और कोई वारदात हो गई, अथवा किसी समाचारपत्र या सार्वजनिक सभामें मेरे कामोंकी कडी आलोचना हुई, इत्यादि।

गत उन्नीस वर्षोंके लगातार कामसे मैंने केवल एक बार छुट्टी ली है। इसका कारण यह हुआ कि दो वर्ष पूर्व मेरे कुछ मित्रोंने मुझे धन देकर सपत्नीक यूरोप जाकर वहाँ तीन महीने विश्राम करनेके लिए विवश किया था। मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यको अपना शरीर सुदृढ़ रखना चाहिए। मेरी तबियत जरा भी खराब हो जाती है तो मैं शीघ्र ही उसका इलाज करता हूँ। मुझे यदि कभी मीठी नींद न आई तो मैं समझता हूँ कि कुछ गड़बड़ है। यदि शरीरके किसी अगमें कुछ शिथिलता मालूम होती है तो [illegible] किसी अच्छे डाक्टरके पास जाकर उसकी चिकित्सा कराता हूँ। मैं यह समझता हूँ कि हर समय और हर स्थान पर नींद ले सकनेकी शक्तिसे बहुत लाभ होते हैं। मुझे इतना अभ्यास हो गया है कि जब मैं चाहता हूँ, पंद्रह बीस मिनिट झपकी लेकर शरीरकी सब थकावट दूर कर देता हूँ।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि दिन खतम होनेसे पहले ही मैं अपने कामोंसे निपट लेता हूँ, परन्तु यदि कभी कोई ऐसा विकट प्रश्न आ पड़ता है कि उसका एकाएक निर्णय करना मैं उचित नहीं समझता, तो उसे दूसरे दिनके लिए छोड़ देता हूँ, अथवा, अपनी स्त्री और अपने मित्रोंसे उसके विषयमें परामर्श करता हूँ।

मुझे अच्छे अच्छे ग्रन्थ पढ़नेके लिए रेलकी सफरमें मौका मिलता है। समाचारपत्र पढ़नेका मुझे बड़ा शौक है, पर शोक इस बातका है कि मैं बहुतसे समाचारपत्र पढ़ डालता हूँ। उपन्यासोंमें मुझे कुछ लज्जत नहीं आती। जिस उपन्यासकी बड़ी तारीफ सुननेमें आती है–जिसके बाँचनेके लिए बीसों मित्र सिफारिश करते हैं उसे भी मैं बड़ी कठिनाईसे पढ़ता हूँ। जीवनचरितोंपर मुझे बड़ा प्रेम है, पर कोई जीवनचरित हाथमें लेनेसे पहले मैं यह अच्छी तरह देख लेता हूँ कि वह चरित किसी सत्पुरुष या सभारीका है या नहीं। यदि नहीं, तो मैं उसे नहीं पढ़ता। अब्राहम लिंकनके विषयमें जितनी पुस्तकें छपी हैं अथवा मासिकोंमें जो जो लेख निकले हैं उन सबको मैंने पढ़ डाला है। साहित्यमें लिंकन ही मेरे प्रधान गुरु हैं।

सालमें [illegible] महीने मुझे टस्केजीसे बाहर रहना पड़ता है। विद्यालयसे दूर रहनेमें हानि तो है ही, पर इसके बदलेमें कुछ लाभ भी अवश्य होजाता है। कार्यमें परिवर्तन होनेसे एक प्रकारका विश्राम मिलता है। रेलगाड़ीमें बैठकर बहुत दूरकी यात्रा करनेसे मेरी तबियत हरी हो जाती है और आराम भी मिलता

है। हाँ, कभी कभी वहाँ भी लोग मिलनेके लिए आ जाते हैं और उसी सदाकी रीतिसे कहा करते हैं–" क्या आप ही बुकर टी० वाशिंगटन हैं ? मैं आपसे मिलना चाहता था।" विद्यालयसे दूर रहने पर मुझे छोटी मोटी बातें भूल जाती हैं और मुख्य मुख्य बातों पर विचार करनेका अवसर मिलता है। यह विद्यालयमें रहते हुए हो नहीं सकता। इसके सिवाय मुझे अन्य स्थानोंके शिक्षा-प्रबन्ध देखने और अच्छे अच्छे अध्यापकोंसे मिलनेका भी अवसर मिलता है।

सबसे आनन्ददायक विश्राम मुझे उस समय मिलता है, जब टस्केगीमें रातके भोजनके उपरान्त मैं अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ बैठकर कहानियाँ कहता और सुनता हूँ। इसी प्रकार रविवारके दिन उनके साथ जंगलोंमें सैर करनेके लिए निकल जाना मुझे बहुत ही प्रिय है। वहाँ प्रकृतिकी शोभा देखनेमें हम लोग मगन हो जाते हैं। वहाँ किसी प्रकारका कष्ट नहीं। स्वच्छ वायु, सुन्दर वृक्ष, घनी झाडियाँ, नाना प्रकारके फूल, और पुष्पवृक्षोंसे सर्वत्र फैलनेवाली सुगन्धि इन सबसे मोहित होकर हम लोग झिल्लियोंकी तानारीरी और पक्षियोंका मधुर गान सुनकर अपूर्व आनन्द प्राप्त करते हैं। वास्तवमें, यही तो विश्राम है!

मुझे अपने बागमें भी बड़ा आनन्द मिलता है। कृत्रिम वस्तुओंकी अपेक्षा साक्षात् निसर्गसे ही सलग्न होनेमें मुझे प्रसन्नता होती है। दफ्तरके कामसे निपट कर मैं घंटे आध घंटेके लिए जमीन खोदने, बीज बोने और पौधे रोपनेमें लग जाता हूँ। यह काम करते हुए मेरे अन्तःकरणमें यह भाव उठता है कि प्रकृतिके महाप्राणमें मेरा प्राण मिल रहा है और इससे मुझमें हृदय संसारके संकटोंसे सामना करनेकी शक्ति आ रही है। मुझे ऐसे मनुष्य पर दया आती है जिसने स्वयं प्रकृतिसे ही आनन्द, बल और स्फूर्ति प्राप्त करनेकी विद्या नहीं सीखी।

विद्यालयमें बहुतसे बतख और चौपाये जानवर पाले जाते हैं, पर उनके सिवाय मैं स्वयं भी बढ़िया बढ़िया सूअर और बतख रखता हूँ। सूअर पालनेका मुझे बड़ा शौक है। खेल आदिकी मुझे अधिक परवा नहीं रहती। फुटबालका खेल तो मैंने कभी देखा ही नहीं। ताशके पत्ते भी मैं नहीं पहचान सकता। हाँ अपने लड़कोंके साथ कभी कभी गोटियोंका खेल खेल लेता हूँ। बचपनमें यदि मुझे खेलनेके लिए अवकाश मिलता तो इस समय भी मुझे उससे आनन्द मिलता, पर यह असंभव था।

सोलहवाँ परिच्छेद।



यूरोप।

सन् १८९३ में मिसिसिपी निवासिनी और फिस्क युनिवार्सिटीकी ग्रेज्युएट मिस मारगरेट जेम्स मरेके साथ मेरा विवाह हुआ। ये कुछ वर्ष पूर्व यहां अध्यापिका होकर आई थीं और विवाहके समय विद्यालयकी 'लेडी प्रिंसि-पल' थीं। विद्यालयके कामोंमें मुझे इनसे बडी मदद मिलती है। इन्होंने एक मातृसभा स्थापित की है। इसके अतिरिक्त ये टस्केजीसे आठ मील दूरकी एक बड़ी वस्तीके बालकों स्त्रियों और पुरुषोंको वहाँ जाकर खेतीके विषयमें शिक्षा देती हैं।

इन दो कामोंके अतिरिक्त हमारे विद्यालयमें स्त्रियोंका एक क्लब है। उसकी देखरेख भी मिसेस वाशिंगटन पर ही है। इस क्लबमें विद्यालय तथा आसपास-की स्त्रियां महीनेमें दो बार एकत्रित होकर कुछ महत्त्वके विषयों पर विचार करती हैं। इन सबके अतिरिक्त, मिसेस वाशिंगटन दक्षिणकी नीग्रो स्त्रियोंके क्लबकी तथा उनके राष्ट्रीय क्लबके कार्यकारी मंडलकी चेअरमेन हैं।

मेरी सबसे बडी लडकी पोर्शियाने कपडे सीनेका काम भली भाँति सीख लिया है। बाजा बजानेमें तो वह बहुत ही प्रवीण है। वह टस्केजी विद्यालयमें पढती है और अपना कुछ समय पढानेके काममें भी खर्च करती है।

मेरे मझले लडके बेकर टेलिफेरोने बाल्यावस्थासे ही ईंटें बनानेका काम सी-खा है और अब वह उस काममें बहुत निपुण हो गया है। इस कामसे उसे बहुत ही प्रेम है। वह कहा करता है कि मैं इष्टिकाकार (कुँभार) बनूँगा। गत वर्षकी गरमीमें उसने मुझे एक पत्र लिखा था जिसको पढकर मुझे बहुत सन्तोष हुआ। घरसे विदा होते समय मैं उससे कह आया था कि प्रतिदिन तुम अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो और आधा जिस तरह चाहो, विताओ। दो सप्ताह उपरान्त मुझे उसका वह पत्र मिला जिसकी नक्ल मैं नीचे देता हूँ —

"टस्केजी, अलबामा।

प्रिय पिताजी,

आपने यहाँसे चलते समय कहा था कि तुम प्रतिदिन अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो, पर मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मैं अपना

सारा समय उसीमें लगाना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं धन एकत्र करनेका उद्योग कर रहा हूँ, क्योंकि आगे चलकर जब मैं दूसरे विद्यालयमें पढ़ने जाऊँगा तब वहाँ मुझे अपना खर्च चलानेके लिए धनकी आवश्यकता होगी।

आपका पुत्र—
बेकर।"

मेरा सबसे छोटा लड़का अर्नेस्ट डेविड्सन वाशिंगटन वैद्य बननेकी इच्छा प्रकट करता है। विद्यालयमें पढने और काम करनेके अतिरिक्त वह वहाँके वैद्यक-कार्यालयका भी कुछ कुछ काम कर लेता है।

मुझे अपना घर बड़ा प्यारा है। पर मेरा अधिकांश समय सार्वजनिक कामोंमें उसके बाहर ही खर्च हो जाता है। इससे मुझे बहुत बुरा मालूम होता है। संसारके अच्छेसे अच्छे स्थानकी अपेक्षा मुझे अपने कुटुम्बमें रहना बहुत पसन्द है। जिन लोगोंको नित्य अपने घर आकर विश्राम करनेका अवसर मिलता है उनसे मैं हसद करता हूँ। परन्तु कभी कभी मुझे वह भी ख्याल होता है कि ऐसे लोग शायद इस सुखको कोई सुख नहीं समझते। लोगोंकी भीडभाड, उनसे हाथ मिलाना, सफर करना आदि बातोंसे, थोडे ही समयके लिए क्यों न हो, फुरसत मिलने पर मुझे घर आनेमें बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है। मैं समझता हूँ कि थकावट दूर करनेके लिए सबसे अच्छी ओषधि यही है।

मेरी प्रसन्नताका दूसरा स्थान प्रार्थनामन्दिर है, जहाँ नित्य रातको साढे आठ बजे सब विद्यार्थी और अध्यापक सपरिवार एकत्र होते हैं। इन ग्यारह बारह सौ स्त्रियों और पुरुषोंको अपने सामने परमेश्वरकी प्रार्थना करते हुए देखनेसे मेरे मनमें बड़े ही उच्च भाव उठते हैं। उस समय पर यह विचार उठता है कि इन सब स्त्री-पुरुषोंके जीवनको अधिक श्रेष्ठ और उपयोगी बनानेमें हमारे हाथसे कुछ सहायता हो रही है। क्या इससे भी बढकर अभिमानका और गौरवका और कोई काम हो सकता है?

१८९९ के वसन्त ऋतुमें एक बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना हुई। बोस्टन नगरकी कुछ भद्र महिलाओंने टस्केजी विद्यालयकी सहायताके लिए एक सभा की जिसमें दोनों जातियोंके मुख्य मुख्य लोग सम्मिलित हुए थे। बिशप लारेन्स सभापति थे। मेरा भी व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त मि० डबारने कुछ कवितायें और मि० डुबाइसने कुछ वर्णनात्मक लेख पढ सुनाये। सभामें आये हुए कुछ लोगोंको मालूम हुआ कि मेरा शरीर बहुत शिथिल होता

जाता है। इससे सभा विसर्जित होने पर एक महिलाने मुझसे पूछा कि आप कभी यूरोप गये हैं? मैंने कहा—नहीं। उसने पूछा—क्या आप वहाँ जाना चाहते हैं? मैंने कहा—नहीं, यह बात मेरी शक्तिसे बाहर है। इस सवाल-दको मैं थोड़ी देर बाद बिलकुल भूल गया। पीछे मुझे यह खबर मिली कि मि० गारिसन आदि मेरे मित्रोंने मुझे और मेरी स्त्रीको तीन चार मासके लिए यूरोप भेजनेके विचारसे कुछ धनसंग्रह किया है। उन्होंने बहुत जोर देकर मुझे वहाँ जानेके लिए आग्रह किया। एक वर्ष पूर्व ही मि० गारिसनने मुझसे गर्मीके दिनोंमें यूरोप जानेका वचन लेना चाहा था। उस समय मुझे यह बात इतनी असम्भव मालूम होती थी कि मैंने उसकी तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया था, पर अबकी बार मि० गारिसनने कुछ महिलाओंको इस 'साजिश'में शामिल करके मेरे जानेका पूरा प्रबन्ध कर रक्खा था, यहाँतक कि मेरे जानेका मार्ग और मैं किस स्टीमरसे जाऊँगा यह भी निश्चित हो चुका था।

ये सब बातें ऐसी कार्रवाई, सफाई और फुरतीसे हुईं कि मैं जानेके लिए विवश हो गया। मैं अठारह वर्षसे लगातार टस्केजी विद्यालयकी सेवामें लग रहा था। इसी सेवाकार्यमें मेरा जीवन समाप्त हो जाय, इसके अतिरिक्त मेरे मनमें और कोई विचार ही न आया था। दिनोंदिन विद्यालयके खर्चका बोझ मुझ ही पर बढ़ता जाता था, इसलिए मैंने अपने बोस्टनके मित्रोंसे निवेदन किया कि—"आपकी उदारता और दूरदर्शिताके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, पर मेरी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी आर्थिक दशा बिगड़ जायगी, इसलिए मैं यूरोप न जा सकूँगा।" इस पर उन्होंने लिख भेजा कि "मि० हिगिनसन तथा अन्य कई सज्जन, जो अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहते, आपकी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी यथेष्ट सहायता करनेके लिए बहुत बड़ी रकम एकत्र कर रहे हैं।" यह उत्तर पढ़कर मुझे चुप हो जाना पड़ा। अब मेरे बचनेकी और कोई सूरत न रही।

इतना सब कुछ होनेपर भी यूरोप यात्राका विचार मुझे स्वप्नवत् ही मालूम होता था। मैं जन्मसे ही घोर दासत्वमें पला था। बचपनमें मुझे सोनेकी जगह नहीं थी, खानेको पूरा भोजन नहीं मिलता था, वस्त्र वगैरहकी भी ऐसी ही दुर्दशा थी। भोजनके लिए मेज तो अब मिलने लगी है। मैं समझता था कि संसारके सुख केवल गोरोंके लिए हैं—हम लोगोंके लिए नहीं! यूरोप, लन्दन

और पेरिसको मैं स्वर्ग ही समझता था। ऐसी अवस्थामें मुझे यूरोपकी यात्राके सौभाग्यको स्वप्न जैसा समझना स्वाभाविक ही था।

इसके अतिरिक्त और दो विचार मुझे विकल कर रहे थे। मैं समझता था कि लोग जब मेरी इस यात्राका समाचार सुनेंगे तब बिना कुछ जाने-बूझे कहने लगेंगे कि वाशिंगटनको अभिमान हो गया है और अब वह बनने लगा है। बचपनमें मैं अपने जातिभाइयोंके विषयमें सुना करता था कि यदि उन्हें कुछ सफलता होगी तो वे अपनेको बहुत श्रेष्ठ समझने लगेंगे और धनाढ्योंका अनुकरण करनेसे उनका मस्तक फिर जायगा। अब मुझे उन बातोंका स्मरण हुआ। इसके अतिरिक्त मैं यह भी समझता था कि अपना काम छोड़कर मैं यूरोपमें सुखसे न रह सकूँगा। बहुत सा काम अभी करना था और, और और लोग उसमें लगे हुए थे। ऐसी अवस्थामें सिर्फ मैं ही काम छोड़कर चला जाऊँ, यह मुझे अच्छा न मालूम होता था। बचपनसे मेरा सारा समय काम ही करते बीता था और इसलिए मैं यह नहीं समझ सकता था कि अब मैं तीन चार महीने बिना कामके कैसे बिता सकूँगा।

यही कठिनाई मिसेस वाशिंगटनके सामने भी थी, परन्तु मुझे विश्रामकी बहुत जरूरत है, इस खयालसे उन्होंने यूरोप चलना स्वीकार कर लिया। उस वक्त नीग्रोजातिके जीवनसम्बन्धी कुछ प्रश्नों पर बड़ा आन्दोलन हो रहा था। उसे भी हम दोनोंने छोड़ दिया और बोस्टनमें अपने मित्रोंसे कहला भेजा कि हम लोग जानेके लिए तैयार हैं। उन्होंने भी शीघ्र ही प्रस्थान करनेके लिए आग्रह किया और तब यह तै हो गया कि १० मईके दिन हम दोनों यूरोपके लिए प्रस्थान करेंगे। मेरे परम मित्र मि० गारिसनने मेरी यात्राका बहुत ही अच्छा प्रबंध कर दिया और उन्होंने तथा उनके मित्रोंने मुझे इग्लैण्ड और फ्रान्सके अनेक सज्जनोंके नाम परिचय पत्र भी दे दिये। टस्केजीमें सब लोगोंसे मिल कर ता० ९ को हम दोनों न्यूयार्क नगरमें आये। यहाँ मेरी कन्या पोर्शिया जो उस समय फ्रामिंगहममें विद्याभ्यास करती थी, हम दोनोंसे मिलने आई। मेरे सेक्रेटरी मि० स्काट और अन्य कई मित्र न्यूयार्क चले आये थे। जहाज पर सवार होनेसे कुछ ही पहले एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना हुई। दो महिलाओंका एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने टस्केजीमें बालिकाओंकी शिल्पशालाके लिए भवन बनवानेके निमित्त यथेष्ट धन देना स्वीकार किया था।

रेड स्टार लाइन कंपनीके फ्रीसलैण्ड नामक जहाज पर हम लोग सवार हुए। यह जहाज बहुत ही सुन्दर और सुडौल था। मैंने अब तक महासागरमें चलनेवाला कोई भी जहाज न देखा था। जहाज पर सवार होते ही मेरे मनमें जो विचार उठे उनका वर्णन करना असभव है। मुझे उस समय बड़ी प्रसन्नता हुई और कुछ भय भी हुआ। जहाजके कप्तान और अन्य कर्मचारी हम दोनोंको केवल जानते ही न थे, बल्कि हमारी राह देख रहे थे। उन्होंने हम दोनोंका स्वागत किया। इससे हमें आश्चर्य हुआ। जहाज पर और भी कई जान-पहचानके सज्जन बैठे हुए थे। मुझे यह सन्देह हो रहा था कि जहाजके कुछ यात्री हमारे साथ अच्छा व्यवहार न करेंगे। मैंने सुन रक्खा था कि अमेरिकन जहाजों पर हमारे जातिभाइयोंके साथ अनेक बार बड़े बुरे व्यवहार किये गये हैं, परन्तु हम दोनोंके साथ कप्तान और अदनेसे अदने नौकरने भी बड़ा ही अच्छा सुलूक किया। वहाँ कुछ दक्षिणी गोरे भी थे, वे भी बड़ी सुजनताके साथ हम दोनोंसे पेश आये।

जब जहाजका लंगर उठा तब, लगातार अठारह वर्षसे मेरे ऊपर जि चिन्ता और जिम्मेदारीका बोझा था, वह हर मिनिट हलका होने लगा। अठ रह वर्षोंके बाद यह पहला ही अवसर था जब मेरी चिन्ता किसी कदर घ हुई मालूम हुई। मुझे इस समय जो प्रसन्नता हुई उसका म वर्णन नहीं क सकता। अब मेरा यूरोप देखनेका हौसला भी बढ़ा, पर इस समय भी मुझे य विश्वास न होता था कि मैं यूरोपकी यात्रा करने जा रहा हूँ।

मिस्टर गारिसनने हम दोनोंके लिए जहाजमें एक बहुत ही अच्छे कमरेक प्रबन्ध कर दिया था। जब दो तीन दिन जहाज पर बीत गये तब मुझे नींद खूब आने लगी। यहाँ तक नींद बढ़ी कि मैं दिनरातके चौबीस घंटोंमें पन्द्रह घंटे सोने लगा। उस वक्त मुझे विश्वास हुआ कि सचमुच काम करते करते मैं बहुत थक गया हूँ। यूरोप पहुँचनेके एक मास बाद तक मैं इसी प्रकार प्रति दिन पन्द्रह घंटे सोता रहा। अब प्रातःकाल उठकर मुझे इस बातकी कोई चिन्ता नहीं रहती थी कि आज किसीसे भेंट करनी है, या रेल पर जाना है, अथवा कहीं कोई व्याख्यान देना है। इससे मेरी तबियतको बड़ा आराम मिलता था। अमेरिकामें प्रवास करते समय मुझे कई बार एक ही रातमें तीन भिन्न भिन्न स्थानों पर सोना पड़ता था। कहाँ वह दौड़धूप, और कहाँ यह आराम!

रविवारके दिन कप्तानने मुझसे धर्मोपदेश करनेकी प्रार्थना की, पर मैं धर्मोपदेशक नहीं था, इस लिए उसकी यह प्रार्थना मैंने स्वीकार नहीं की। तथापि कई यात्रियोंके आग्रह करने पर मैंने एक दिन भोजनोत्तर एक व्याख्यान दिया। दस दिनकी सुखयात्राके बाद हम लोग बेलजियमके सुप्रसिद्ध एंटवर्प नगरमें उतरे।

जिस होटलमें हम दोनों ठहरे वह शहरके चौकके बिलकुल सामने था। दूसरे दिन इस नगरमें एक बडा उत्सव हुआ। इस अवसर पर नगरका दृश्य देखकर हमें बडी प्रसन्नता हुई। यहाँ कुछ दिन रहनेके पश्चात् मुझे कुछ सज्जनोंने हालैण्डमें सैर करनेके लिए निमन्त्रित किया। इस सैरसे हम दोनोंको बडी प्रसनता हुई। इस अवसर पर देहातमें रहनेवाले लोगोंकी वास्तविक दशा भी हम दोनोंने देखी। सैर करते करते हम दोनों राटरडाम तक चले गये और फिर वहाँसे लौट कर हेगमें आये जहाँ उस समय शान्तिमहासभाका (Peace Conference) अधिवेशन हो रहा था। वहाँ उपस्थित अमेरिकन प्रतिनिधियोंने हम दोनोंका अच्छा स्वागत किया।

हालैण्डकी कृषिविषयक उन्नतिका और पशुओंकी उत्कृष्टताका मुझ पर बडा अच्छा संस्कार हुआ। जमीनके एक जरासे टुकडेमें कितना अनाज पैदा किया जा सकता है, इसका अन्दाज मुझे इसी देशमें आकर हुआ। मैंने यहाँ यह देखा कि लोग जमीनका एक तिनकेके बराबर हिस्सा भी बेकाम नहीं रहने देते। हरे भरे घासके मैदानोंमें एक साथ तीन तीन चार चार सौ गौओंको चरते हुए देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई।

हालैण्डसे हम दोनों बेलजियम गये। वहाँ ब्रसेल्समें ठहरे और फिर वाटरलूका युद्धक्षेत्र देखकर बेलजियमसे सीधे पेरिसको गये। वहाँ मि० थिओडर स्टनटनने हमारे रहनेका प्रबन्ध कर दिया। शीघ्र ही युनिवर्सिटी क्लबने हम दोनोंको भोजनके लिए निमन्त्रित किया। भोजमें भूतपूर्व प्रेसिडेंट बेंजामिन हेरिसन और आर्कबिशप आयर्लैण्ड भी सम्मिलित हुए थे। अमेरिकाके प्रतिनिधि जनरल होरेस पोर्टर उस अवसर पर अध्यक्ष थे। वहाँ मैंने एक छोटीसी वक्तृता दी जिससे लोग बडे प्रसन्न हुए। जनरल साहबने टस्केजी विद्यालयकी और मेरी बहुत प्रशंसा की। भोज वक्तृताके बाद मेरे पास व्याख्यान देनेके लिए कई निमन्त्रण आये, पर अपने शरीररक्षाके उद्देश्यमें बाधा पडनेकी संभावना जानकर मैंने उन निमन्त्रणोंको अस्वीकार कर दिया। तो भी रविवारके दिन अमेरिकन

गिरजेमें मेने व्याख्यान देना स्वीकार कर लिया। उस अवसर पर जनरल हैरिमन, जनरल पोर्टर तथा अन्य कई बड़े बड़े लोग उपस्थित थे। इसके अनन्तर जनरल पोर्टरके यहाँ एक स्वागत समारंभमें भी मे समिलित हुआ। यहाँ अमेरिकाके सुप्रीम कोर्टके दो जज्जोंसे मेरी भेंट हुई। पेरिसमें रहते समय अमेरिका प्रतिनिधि, उनकी पत्नी और अन्य अमेरिकन सज्जनोंने हम दोनोंसे बड़े स्नेहका व्यवहार रक्खा।

पेरिसमें ही मेरा सुप्रसिद्ध अमेरिकन नीग्रो चित्रकार मि० टैनरसे विशेष परिचय हुआ। अमेरिकामें इनसे भेंट हुई थी, पर इतना परिचय नहीं था। पेरिसमें इनके चित्रोंको लोग बड़े आदर और उत्सुकतासे देखते हैं। इनका बनाया हुआ एक चित्र देखनेके लिए हम दोनों लक्ष्मवर्गके राजप्रासादमें गये। वहाँके अमेरिकनोंको यह विश्वास न होता था कि किसी नीग्रोकी यहातक कदर हो सकती है! जब उन्होने खुद जाकर उस चित्रको देखा तब उन्हें विश्वास हुआ। मैं अब तक पुकार पुकार कर अपनी जातिको और अपने विद्यार्थियोंको जो तत्त्व बतला रहा था उस तत्त्वकी, मि० टैनरके परिचयसे यथेष्ट पुष्टि हुई। वह तत्त्व यही था कि काम कोई हो और कितना ही मामूली न हो—उसमें जो मनुष्य कौशल्य लाभ करता है—औरोंसे अधिक अच्छा करके दिखाता है वह फिर किसी वर्णका ही क्यों न हो उसकी परख और कदर होती है। मेरी जातिके लोग एक मामूली कामको भी जितने ही अच्छे ढगसे करना सीख लेंगे, उतनी ही उनकी कीर्ति होगी। मुझे जब हैम्पटनमें पहले पहल कमरा साफ करनेका काम दिया गया था तब मैंने इसी तत्त्वसे प्रेरित होकर उसमें सफलता लाभ की थी। मैंने किसी कदर यह भी समझ लिया था कि मेरा भावी जीवन इसी झाड़ देने पर ही निर्भर है, और इस लिए मैंने उस कामको इस खूबीके साथ करना निश्चय किया था कि उसमें कोई दोष न रह जाय। अस्तु। राजप्रासादके चित्रकी ओर देखते हुए मि० टैनरके विषयम किसीने यह पूछताँछ नहीं कि यह मनुष्य जर्मन है या फ्रेंच है, या काला नीग्रो है! उनके विषयमें लोग इतना ही जानतें थे कि वे एक कुशल चित्रकार हैं, किसीके मनमें उनके रूपरंगका प्रश्न ही नहीं उठता था। बात यह है कि ससार अच्छी वस्तुओंको देखता है, उन वस्तुओंके बनानेवालोंकी जाति, रंग या इतिहास नहीं पूछता।

मै समझता हूँ कि मेरी जातिका भविष्य केवल इसी प्रश्न पर निर्भर है कि वह अपने स्थानके तथा प्रान्तके समाजका सुख और वैभव बढ़ाती है या नहीं।

जिस स्थान पर हम लोग निवास करते हे, उस स्थानके लोगोंकी साम्पत्ति मानसिक और नैतिक उन्नतिमें यदि हम सहायता करते हैं तो उसका योग्य पु स्कार हमें अवश्य मिलेगा। मानवी सृष्टिका यह अटल सिद्धान्त है।

फ्रेंच लोग कार्य करना और सुख लाभ करना बहुत पसन्द करते ह। मे जातिभाई इस विषयमें अभी फ्रेंचोंसे पीछे हे, परन्तु नीतिमत्तामें फ्रेंच मेरे जा भाईयोंसे श्रेष्ठ नहीं। उन्होंने तीव्र जीवनसग्राम और स्पर्धाके कारण निश्च अध्यवसायके साथ काम करना और हिसाबसे रहना सीख लिया है। कु कालमें मेरी जाति भी इतना कर लेगी। सचाई और उदारता नीग्रो जाति फ्रेंच जातिमें अधिक नहीं दिखाई दी। गूँगे जानवरोंसे स्नेह और ममता क नेमें मेरी जाति उनसे बहुत आगे बढी हुई है। फ्रान्सके प्रवाससे नीग्रो जाति अच्छे भविष्यके विषयमें मेरा विश्वास और भी दृढ हो गया।

पेरिससे चलकर जुलाईके आरभमें हम दोनों लन्दन पहुँचे। उस सम पार्लियामेंटके अधिवेशन हो रहे थे। वहाँ पहुँचते ही मेरे पास जगह जगह आमन्त्रण आने लगे, पर मुझे विश्राम करना था, इस लिए मैंने बहुतोंको अस्वी कार कर दिया, किन्तु अपने दो एक मित्रोंके अनुरोध करने पर मैंने ऐसेक्स हालमें एक दिन व्याख्यान दिया। आनरेबल जोसेफ शोट सभापति थे। सभा मि० ब्राइस तथा पार्लियामेंटके अन्य कई सदस्य सम्मिलित हुए थे। यहाँ मैं जो व्याख्यान दिया वह इग्लैण्ड तथा अमेरिकाके कई पत्रोंमें प्रकाशित हुआ इस अवसर पर इग्लैण्डके कई सुविख्यात पुरुषोंसे मेरा परिचय हुआ। मा ड्वेनसे भी मेरी पहली भेंट यहीं हुई।

रिचर्ड कावडेन नामक अँगरेज राजनीतिज्ञकी पुत्री मिसेस टी० फिशर अन विनके यहाँ हम दोनों कई बार मेहमान रहे। मिस्टर और मिसेस अनविन हमें सुखी करनेमें कोई बात उठा न रक्खी। इसके बाद एक सप्ताह तक जा ब्राइटकी पुत्री मिसेस क्लार्कने हमारा अतिथि सत्कार किया। मिस्टर और मिसेस क्लार्कने एक वर्ष बाद हम लोगोंको टस्केजीमें आकर दर्शन दिये। बरमिंगहममें हम दोनों मि० जोसेफ स्टर्जके यहाँ ठहरे थे। इनके पिता गुलामीको मेटनेवा लोंमें अगुए थे। और भी ऐसे कई सज्जनोंसे भेंट हुई जो गुलामीके शत्रु थे इन लोगोंने जिस सहानुभूतिके साथ गुलामोंको स्वतन्त्रता दिलानेमें सहायता क

निस्टल नगरके लिवरल क्लबमें हम दोनोंने व्याख्यान दिये। अन्योंके रायल कालेजमें उपाधि-दानके अवसरपर मेरा मुख्य व्याख्यान हुआ। यह उत्सव किस्टल पेलेसमें (शीश-महलम) हुआ था और वेस्टमिनिस्टरके स्वर्गीय ड्यूकने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। इंग्लैण्डमें ये सबसे धनी माने जाते थे। ड्यूक, उनकी पत्नी और कन्याको मेरा भाषण बहुत ही प्रिय हुआ और उन्होंने मुझे हार्दिक धन्यवाद दिये। लेडी अवरडानकी कृपासे हम दोनोंको अनेक त्री पुरुषोंके साथ महारानी विक्टोरियासे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और इसके बाद हमें महारानीकी ओरसे चाय पीनेके लिए निमत्रण भी मिला। इस समय मिस सुसान बी एण्टनीसे भी भेंट हुई। एक ही समयमें दो अद्वितीय स्त्रियोंसे भेंट करके मैंने अपना बडा सौभाग्य समझा।

हम दोनों पार्लियामेंटकी कामन्स सभामें कई बार गये। वहाँ सर हेनरी एम स्टानलेसे भेंट हुई और उनसे बहुत देरतक आफ्रिका और आफ्रिकाका अमेरिकन नीग्रो लोगोंसे क्या सम्बन्ध है, इस विषयमें बातचीत होती रही। इस बातचीतसे मेरा यह विश्वास हुआ कि यदि अमेरिकन नीग्रो आफ्रिकामें जाकर रहें तो वहाँ-उनकी कोई उनति न होगी।

हम दोनों अनेक बार देहातोंमें जाकर अँगरेजोंके यहाँ मेहमान रहे हैं। अँगरेजोंकी रहन-सहनका ठीक पता यहीं लगता है। मैंने यहाँ देखा कि कमसे कम एक बातमें अँगरेज लोग अमेरिकनोंसे बढे हुए हैं। अँगरेज लोग अपने जीवनको सुखी बनानेका ढग बहुत अच्छी तरहसे जानते हैं। उनकी रहन सहन और चाल ढालमें पूर्ण उनति हो चुकी है। उनका प्रत्येक कार्य ठीक समय पर होता है। नौकर अपने मालिक और मालकिनकी बडी इज्जत करते हैं। अँगरेज नौकर नौकर ही बना रहनेकी इच्छा करता है और इस लिए वह अपने काममें इतना पटु होता है कि कोई अमेरिकन नौकर उसकी बराबरी नहीं कर सकता, परन्तु अमेरिकामें नौकर खुद मालिक बननेकी इच्छा रखता है। इन दोनोंमें कौन अच्छा है सो कहनेका साहस मैं नहीं करना चाहता।

इंग्लैण्डमें एक और बात बहुत अच्छी देखी। वहाँ लोग कानूनके बडे पाबन्द हैं। हर कामको कायदेके साथ और पूरी तौरसे करते हैं। अँगरेज लोग भोजनमें बहुत अधिक समय लगाते हैं। परन्तु दौड धूप करनेवाले सुदृढ अमेरिकन जितना काम करते हैं उतना ये कर सकते हैं या नहीं, इस विषयमें मुझे सन्देह है।

इग्लैण्डके अमीर उमराओंके विषयमे मेरा खयाल पहलेकी अपेक्षा बहुत अच्छा हो गया। इससे पहले मैं यह नहीं जानता था कि सर्वसाधारण उन्हें किस उदार और प्रेमकी दृष्टिसे देखते हैं और परोपकारके तथा दूसरे अच्छे कामोंमें वे अपना कितना समय और धन खर्च करते हैं। पहले इस बातकी मुझे कल्पना भी न थी कि वे इन कामोंको बहुत ही जी लगाकर करते हैं। मैं यह समझता था कि वे लोग मौज उडाते है और धन बरबाद करते हैं।

अँगरेज श्रोताओंके सामने व्याख्यान देकर उन पर प्रभाव डालनेमें मुझे बडी कठिनाई हुई। साधारणत अँगरेज लोग इतने गभीर और विचारशील होते हैं कि मेरे मुँहसे जिस बातको या चुटकिलेको सुनकर अमेरिकन लोग हँस पडते हैं उसको सुनकर अँगरेजोंके चेहरोंपर मुस्कराहट भी नहीं आती।

अँगरेज लोग जिनसे एक बार मित्रता कर लेते है उन्हें वे अपने हृदयसे दूर नहीं करते। ऐसे मित्र अन्यत्र कहीं न होंगे। लदनके स्टैफर्ड-हाउसमें सदरलैण्डके ड्यूक और डचेसने हम दोनोंको एक स्वागत समारम्भमें बुलाया था। सदरलडकी डचेस इग्लैंडकी स्त्रियोंमे सबसे सुन्दर है। इस समारभमें अनुमान तीन सौ लोग उपस्थित थे। सन्ध्याके समय इतने बडे समूहमें डचेसने हम दोनोको दो बार ढूँढ निकाला, अच्छी तरह बातचीत की, और टस्केजी जाने पर वहाँका पूरा पूरा हाल लिख भेजनेके लिए कहा। मैने भी उनके कथनानुसार वहाँसे पूरा हाल लिख भेजा। बडे दिनों पर उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ अपना एक फोटो भेज दिया। अब बराबर चिट्ठी पत्री हुआ करती है। मैं डचेसको अपने सच्चे मित्रोंमेंसे ही एक समझता हूँ।

तीन महीने यूरोपमे भ्रमणकर हम दोनों सेंट लुई नामक जहाज पर सवार होकर साउथम्पटनसे रवाना हुए। इस जहाज पर लुई नगरके अधिवासियोंका दिया हुआ एक सुन्दर पुस्तकालय था। इस पुस्तकालयमें मुझे फ्रेडरिक डगलसका जीवनचरित मिला। उसे मैने पढना आरभ कर दिया। इस पुस्तकमें मि० डगलसने अपनी पहली और दूसरी इग्लैण्ड-यात्राके समय जहाज पर उनके साथ जैसा सुलूक हुआ था उसका वर्णन किया था। यह वर्णन मैंने ध्यान देकर पढा। उन्होंने लिखा था कि जहाजके कमरेमें आनेकी मुझे मनाई की गई थी और इसलिए मुझे डेक पर ही रहना पडता था। जिस समय यह वर्णन मैं पढ चुका उसी समय जहाजके कुछ यात्री (स्त्री पुरुष दोनों) मेरे पास आये और सन्ध्यासमय होनेवाले उत्सव पर भाषण करनेके लिए

रहने लगे। यह दशा होते हुए भी कुछ लोग यह कहते ही जा रहे हैं कि अमेरिकामें वर्णद्वेषकी मात्रा घट नहीं रही है। इस उत्सवमें न्यूयार्कके वर्तमान गवर्नर थानरेबल बेंजामिन बी ओडेल सभापति हुए थे। सब लोगोंने बड़े ध्यानसे मेरा व्याख्यान सुना। कुछ यात्रियोंने टस्केजी विद्यालयके विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियाँ दिलानेके लिए चन्दा भी इकट्ठा किया।

जब मैं पेरिसमें था तब वेस्ट वर्जीनियाके निवासियोंकी ओरसे तथा जिस नगरमें मेरा बचपन बीता है उस नगरके निवासियोंकी ओरसे निम्नलिखित आमन्त्रण पत्र पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ —

"चार्लस्टन, १६ मई १८९९।

प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटन, पेरिस (फ्रान्स)।
प्रिय महाशय,

पश्चिम वर्जीनियाके अनेक सुयोग्य निवासियोंने आपके कार्योंकी ओर योग्यताकी बहुत प्रशंसा की है, और उनकी यह इच्छा है कि युरोपसे लौटने पर आप यहाँ पधारकर अपने वचनामृतसे उन्हें तृप्त करनेकी कृपा करें। हम लोग इस विचारसे पूर्ण सहमत हैं और चार्लस्टन निवासियोंकी ओरसे आपको यहाँ आनेकी प्रार्थना करते हैं। आपने अपने कार्योंसे हम लोगोंका गौरव बढ़ाया है और हमें आशा है कि आप यहाँ पधारकर हम लोगोंको आपका सम्मान करनेका अवसर दे कृतार्थ करेंगे।

भवदीय—

डब्ल्यू हरमन स्मिथ।"

इस पत्रके साथ एक और भी आमन्त्रणपत्र था जिस पर चार्लस्टनके डेली गजट, डेली मेल ट्रिब्यून, जी डब्ल्यू एटकिनसन गवर्नर तथा कई बैंकोंके डायरेक्टरों तथा बड़े बड़े अधिकारियोंके हस्ताक्षर थे।

जिस शहरमें मेरा बचपन बीता और जिस शहरसे मैं अज्ञान और अनाथ अवस्थामें विद्यार्जनके लिए बाहर निकला उस शहरकी सिटीकाँसिल, सरकारी अधिकारियों और दोनों जातियोंके अगुओंसे यह न्योता पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ और मेरी बुद्धि चकरा गई।

मैंने दोनों आमन्त्रण स्वीकार कर लिये और निश्चित समय पर मैं चार्लस्टन जा पहुँचा। रेलवे स्टेशन पर भूतपूर्व गवर्नर मि० मैक कारकल तथा अन्य बड़े बड़े लोगोंने मेरा स्वागत किया। सभा हुई और उसमें गवर्नर आनरे-

बल मि० एटकिनसनने सभापतिका आसन ग्रहण किया। स्वागतकी वक्तृता मि० मैक कारकलने दी। नीग्रो लोग भी इस स्वागतसमारंभमें सम्मिलित थे। सभास्थान दोनों जातियोंके लोगोंसे ठसाठस भर गया था। इस समय वे गोरे लोग भी उपस्थित थे जिनके यहाँ बचपनमें मैं काम कर चुका था। दूसरे दिन गवर्नर और उनकी पत्नी मिसेस एटकिनसनने राजप्रासादमें मेरा स्वागत किया।

इसके कुछ दिन उपरान्त, जार्जिया-राज्यान्तर्गत एटलांटाके नीग्रो लोगोंने मेरा स्वागत किया, जिस समय उस राज्यके गवर्नर सभापति थे। न्यू आरलीन्समें भी मेरा स्वागत हुआ और उस अवसर पर वहाँके मेयर सभापति थे। और भी कितने ही स्थानोंसे मेरे पास निमन्त्रण आये, पर मैं उन्हें स्वीकार न कर सका।

सत्रहवाँ परिच्छेद।



अन्तिम शब्द।

यूरोप जानेसे पहले मेरे जीवनमें कई आश्चर्यकारक घटनायें हुईं। यदि सच पूछिए तो मेरा जीवन आश्चर्यपूर्ण घटनाओंका भंडार है। मेरा विश्वास है कि जो मनुष्य अपने जीवनको शुद्ध, निःस्वार्थ और उपयोगी बनानेकी चेष्टामें लगा देगा उसका जीवन ऐसी ही अकल्पित और उत्साह बढानेवाली घटनाओंसे पूर्ण हो जायगा। दूसरे प्राणियोंको अधिक सुखी और अधिक उपयोगी बनानेका प्रयत्न करनेसे जो आनन्द प्राप्त होता है, उसका अनुभव जिस मनुष्यको नहीं उसकी दशा पर मुझे बडी दया आती है।

लकवेकी बीमारीसे एक वर्ष तक पीडित रहनेके बाद और अपनी मृत्युसे छ महीने पहले, जनरल आर्मस्ट्रांगने एक बार फिर टस्केजी-विद्यालय देखनेकी इच्छा प्रकट की। इस समय उनसे चला तक नहीं जाता था, पर उनकी इच्छा पूर्ण करनेके लिए वे टस्केजीमें लाये गये। वहाँकी रेलवेके गोरे मालिकोंने बिना कुछ लिए ही, पाँच मीलकी दूरीसे एक स्पेशल पर उन्हें ले आनेका प्रबन्ध कर दिया था। रातके नौ बजे जनरल आर्मस्ट्राँग विद्यालयमें आये। विद्यालयके फाटकसे उनके ठहरनेके स्थान तक एक हजार विद्यार्थी और शिक्षक हाथोंमें

रोशनी लिये खड़े थे। उस अपूर्व दृश्यको देखकर जनरल आर्मस्ट्राग बहुत ही प्रसन्न हुए। इसके बाद दो महीनेतक वे मेरे यहाँ मेहमानके तौर पर रहे। इस बीचमें वे बोलने-चालने और उठने बैठनेमें असमर्थ होने पर भी सदा दक्षिणके लोगोंकी चिन्ता किया करते थे। उन्होंने मुझसे यह भी कई बार कहा कि नीग्रो लोगोंके साथ साथ गरीब और निर्धन गोरोंकी भी उन्नतिका प्रयत्न करना देशका कर्तव्य है। इस पंगु अवस्थामें भी जनरल आर्मस्ट्रागको देशकी चिन्ता और कार्य करते देखकर मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और मैंने यह निश्चय किया कि मैं उनके प्रिय कार्यमें जरूर हाथ बटाऊँगा।

कुछ ही सप्ताह पीछे जनरल आर्मस्ट्राग इहलोकसे कूच कर गये। तब मुझे एक और ऐसे ही महात्मा मिले। ये थे ही डाक्टर हालीस बी फ्रिसेल हैं जो जनरल आर्मस्ट्रांगके स्थान पर हैम्पटन विद्यालयके प्रिंसिपल हैं। ये भी साधुता और परोपकारमें जनरल आर्मस्ट्रागके समान हैं। जनरल महाशयकी इच्छाके अनुसार इन्होंने विद्यालयको परमोन्नत बनानेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इतने पर भी ये अपनी प्रसिद्धि नहीं चाहते और विद्यालयकी उन्नतिका सारा यश जनरल आर्मस्ट्रागको ही देते हैं।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि तुम्हारे जीवनमें सबसे अधिक आश्चर्य जनक घटना कौनसी हुई। इसका उत्तर देनेमें मुझे कोई संकोच नहीं। वह घटना यों है कि रविवारके दिन सबेरे मैं अपनी पत्नी और बालबच्चोंके साथ अपने मकान पर बैठा हुआ था कि इतनेमें मुझे निम्न लिखित पत्र मिला —

" हारवर्ड, युनिवर्सिटी कैम्ब्रिज।
ता० २८ मई, १८९६।

प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटनकी सेवामें।

प्रिय महाशय, आगामी उपाधिदानके अवसर पर हारवर्ड-विश्वविद्यालय आपके प्रति अपना आदरभाव प्रकट करनेके लिए आपको एक उच्च उपाधि देना चाहता है। पर हम लोगोंका यह नियम है कि उपस्थित महाशयोंको ही उपाधि दी जाती है। उपाधिदान-समारंभ २४ जूनके दिन होगा। उस दिन दो पहरके बारह बजेसे सन्ध्याके पाँच बजेतक आप उपस्थित रहें। क्या आप २४ जूनको कैम्ब्रिजमें आजानेकी कृपा करेंगे? आपका—

चार्ल्स, डब्ल्यू, इलियट,
प्रेसिडेंट, हारवर्ड-यूनिवर्सिटी।"

विश्वविद्यालय आज, अपने आपको नीचे गिराकर नहीं, बल्कि निम्नश्रेणीको ऊपर लाकर—उनको उन्नत करके—इस प्रश्नका निर्णय कर रहा है।

" यदि मैंने अपने अतीत जीवनमें अपने जातिभाइयोंको उन्नत करने और अपनी और आपकी जातिका सबंध दृढ करनेके लिए, आपके विचारमें, कोई उद्योग किया हो तो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आजसे मैं इस उद्योगको दूने परिश्रमके साथ करूँगा। ईश्वरके यहाँ प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जातिकी सफलताका एक ही माप है। इस देशकी ऐसी स्थिति है कि यहाँ चाहे जो जाति हो उसे अपनी उन्नति अमेरिकन मापसे—कसौटीसे मापना चाहिए। केवल इच्छा या उद्देश्यका कोई अच्छा परिणाम नहीं होता। इसलिए आगामी पचास वर्ष या इससे भी अधिक समयतक हमारी जाति भी इसी अमेरिकन कसौटी पर किसी जायगी। यहीं हमारी सहनशीलता, अध्यवसाय, लगन, धैर्य और मितव्ययताकी परीक्षा हो जायगी और यह भी मालूम हो जायगा कि हम लोग ऊपरी चमक-दमकमें फँस जाते हैं या वास्तविक तत्त्वको स्वीकार करते हैं, विद्वान् होकर सादगी और विनयशीलतासे रहना सीखते हैं तथा प्रतिष्ठा पाकर देश और समाजकी सेवा स्वीकार करते हैं, या अपनी जातिको कलंकित करते हैं।"

यह बिलकुल पहला ही अवसर था जब किसी नीग्रोको ऐसी सम्मानसूचक उपाधि मिली हो, और इसलिए समाचार-पत्रोंने इस विषयकी बडी चर्चा की। न्यूयार्कके एक समाचारपत्रके संवाददाताने लिखा कि,—

"जिस समय बुकर टी वाशिंगटनका नाम पुकारा गया और जब वे इस सम्मानको स्वीकार करनेके लिए खडे हुए, उस समय जितनी अधिक तालियाँ बजीं उतनी देशभक्त जनरल माइल्सके अतिरिक्त और किसीके नाम पर नहीं बजीं। केवल सहानुभूति दिखलानेके लिए, अथवा पहलेसे लोगोंको इस प्रकार पढा दिया गया था इस लिए तालियाँ नहीं बजीं, बल्कि लोगोंके आन्तरिक उत्साह और उल्लासका यह फल था। नीचेसे लेकर सबसे ऊपरकी गैलरीतकके सब लोग इस जयध्वनिमें सम्मिलित थे और उन पर आश्चर्य तथा आनन्दकी आरक्त प्रभा प्रकट हो रही थी। इससे यह प्रमाणित होता है कि लोगोंने पहलेके गुलाम और अबके एक महान् कार्यकर्ताके कार्योंके लाभ और महत्त्वको भली भाँति समझ लिया है।"

बोस्टनके एक समाचारपत्रमें निम्नलिखित सम्पादकीय लेख निकला था —

टस्केजी-विद्यालयके प्रिन्सिपलको 'मास्टर आफ आर्ट्स' की उपाधि देकर हारवर्ड-विश्वविद्यालयने उनकी और अपनी दोनोंकी प्रतिष्ठा बढाई है। प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटनने दक्षिणमें अपने जातिभाइयोंको शिक्षित, सुयोग्य और उत्तम नागरिक बनानेमें जो परिश्रम किया है उसके कारण उन्हें हमारे राष्ट्रके महान् कार्यकर्ताओंमें स्थान मिलना चाहिए। जिस विश्वविद्यालयके मुखमें ऐसे योग्य पुरुषका नाम हो, उसे सचमुच ही अपने गौरवका अभिमान होना चाहिए।

"नीग्रो जातिमें पहले पहल मि॰ वाशिंगटनने ही एक अमेरिकन विश्वविद्यालयसे ऐसी सम्मानसूचक उपाधि पाई है। यह एक प्रतिष्ठाकी बात है। मि॰ वाशिंगटनको नीग्रो होने अथवा गुलामीमें पैदा होनेके कारण यह उपाधि नहीं मिली है, बल्कि उन्होंने जिस महान् बुद्धिबल और दीनवत्सलतासे अपने जातिभाइयोंकी उन्नति की है उसके बदलेमें ही उनका यह सम्मान किया गया है। जिस किसीमें ये दो बातें होंगी—वह चाहे किसी वर्णका हो—अवश्य उन्नत होगा।"

बोस्टनके एक दूसरे पत्रने यों लिखा —

"अमेरिकामें हारवर्ड-विश्वविद्यालयने ही सर्व प्रथम एक काले आदमीको उपाधि दी। जिस मनुष्यने टस्केजी-विद्यालयके कार्य और इतिहासको देखा है वह बुकर टी वाशिंगटनके धैर्य, दृढ उद्योग और उत्तम व्यावहारिक ज्ञानकी प्रशंसा किये बिना न रहेगा। हारवर्ड विश्वविद्यालयने एक ऐसे मनुष्यको —जो पहले गुलाम था—उपाधि दी, यह ठीक ही हुआ, परन्तु जातिसेवा और देशसेवाका पूरा महत्त्व तो भविष्यकाल ही बतलावेगा।"

'न्यूयार्क-टाइम्स' के संवाददाताने इस प्रकार लिखा —

"सभी भाषण अच्छे हुए, पर उस काले मनुष्यके भाषणका भी बड़ा आदर हुआ। उसका भाषण समाप्त होने पर लगातार बहुत देरतक जोर जोरसे तालियाँ बजती रहीं।"

टस्केजी विद्यालय खोलते समय मैंने मन-ही-मन यह सङ्कल्प किया था कि मैं इसकी इतनी उन्नति करूँगा और इसे इतना उपयोगी बनाऊँगा कि किसी रोज संयुक्तराज्यके अधिपति (President) भी इसे देखने आवेंगे। यह मैं स्वीकार करता हूँ कि यह बड़े साहसका विचार था और इसमें अविचारकी मात्रा

भी अधिक थी। इसी कारण मैंने इस विचारको अपने हृदयमें छुपा रक्खा था; परतु सौभाग्यसे मेरा सकल्प व्यर्थ नहीं गया।

१८९७ के नववर महीनेमे मैंने इस विषयमे पहला यत्न किया और प्रेसिडेंट मैक् किनलेके मन्त्रियोंमेंसे कृषिविभागके मन्त्री आनरेबल जेम्स विसलनको मैं विद्यालय दिखलानेके लिए ले आया। उस समय विद्यालयमें कृषि तथा ऐसे ही दूसरे विषयोंकी शिक्षा देनेके लिए 'स्लेटर आर्मस्ट्राग' नामक एक भवन बनवाया गया था और उसीके उद्घाटनके अवसर पर भाषण करनेके लिए विलसन महाशय निमन्त्रित किये गये थे।

स्पेनिश—अमेरिकन युद्धमें अमेरिकनोंकी विजय हुई और इस विजय-सन्धिके उपलक्ष्यमें सर्वत्र आनन्दोत्सव मनाये जाने लगे। इसी अवसर पर, मैंने सुना कि प्रेसिडेंट मैक् किनले एटलाटाके उत्सवमें सम्मिलित होनेवाले है। गत अठारह वर्षोंसे मैं अपने सहयोगी अध्यापकोंके साथ एक ऐसी सस्था चला रहा था जिससे राष्ट्रकी बडी सहायता होनेवाली थी। मैंने यह निश्चय कर लिया कि जिस प्रकार होगा, मैं प्रेसिडेंट और उनके मन्त्रि-मण्डलको अपना विद्यालय दिखलानेके लिए ले आऊँगा। इस लिए सबसे पहले मैं वाशिंगटन नगरमें गया और वहाँ प्रेसिडेंटसे मिलनेके लिए 'श्वेतभवन (White house)' पहुँचा। उस समय वहाँ बहुतसे मनुष्योंकी भीड लगी हुई थी और इसलिए मुझे भय हुआ कि कदाचित् आज प्रेसिडेट महाशयसे भेंट न हो सकेगी। तो भी मैं किसी प्रकार उनके सेक्रेटरी मि० पोर्टरसे मिला और मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बतलाया। मि० पोर्टरने कृपाकर तत्काल ही मेरे नामका कार्ड प्रेसिडेंटके पास भेज दिया और शीघ्र ही मुझे उनके पास जानेकी आज्ञा मिल गई।

प्रेसिडेंट मैक् किनलेके पास नित्य कितने ही लोग मिलने आते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें सैकडों सरकारी काम करने पडते थे। इसलिए मेरी समझमें यह बात न आती थी कि इतने सारे काम करके भी प्रेसिडेंट मैक् किनले क्योंकर इतने शान्त, स्थिर और प्रसन्न रहते हैं। मुझसे वे बडी प्रसन्नताके साथ मिले और सबसे पहले उन्होंने मेरे टस्केजीसम्बन्धी कार्य पर हर्ष प्रकट कर मुझे धन्यवाद दिया। इसके उपरान्त मैंने उन्हें अपने आनेका उद्देश्य बतलाया। मैंने उन्हें यह भली भाँति जता दिया कि आप राष्ट्रके सर्व प्रधान अधिकारी हैं और इस लिए आपके शुभागमनसे केवल हमारे विद्यार्थी ही उत्साहित न होंगे, बल्कि

समस्त जातिकी बड़ी भारी सहायता होगी। यह बात उन्हें जँच तो गई, पर टस्केजी आनेका वादा उन्होंने न किया, क्यों कि उस समय एटलांटा जानेकी ही बात पक्की नहीं हुई थी और इसलिए उन्होंने मुझसे फिर किसी समय इस बातका स्मरण दिलानेके लिए कहा।

दूसरे महीनेके तीसरे सप्ताहके आरभमें उनका उत्सवम सम्मिलित होनेका विचार दृढ हो गया। मैं फिर वाशिंगटनम जाकर उनसे मिला। इस समय मेरे साथ टस्केजीके मि० हेअर नामक प्रधान गोरे अधिवासी भी गोरोंकी तरफसे प्रेसिडेंट महाशयको निमन्त्रित करनेके लिए मेरे साथ हो लिये थे।

इससे कुछ ही पहले दक्षिणके भिन्न भिन्न स्थानोंमें कई भारी दगे हो गये थे जिसके कारण देशमें बड़ी अशान्ति फैल गई थी ओर नीग्रो लोग बहुत दुखी हो रहे थे। प्रेसिडेट महाशयसे मिलने पर मने देखा कि वे इन झगड़ोंके कारण बहुत चिन्तित हैं। अन्य अनेक सज्जन उस समय उनसे मिलने आये थे, ता भी उन्होंने मुझे ठहरा लिया और मेरे साथ नीग्रो जातिके प्रश्नोंपर बहुत देर तक बातें कीं। इस बीचम उन्होंने कई बार यह भी कहा कि मैं आपकी जातिके विषयमें केवल मौखिक बातोंसे ही सन्तुष्ट नहीं हूँ—वास्तवमें भी कुछ करना चाहता हूँ। मैंने भी मौका पाकर उनसे कहा कि यदि इस समय आप अपने रास्तेसे १४० मील हटकर टस्केजीकी नीग्रो सस्थामें पदार्पण करें, तो इसी एक बातसे जैसा उत्साह नीग्रो जातिमें फैल जायगा वैसा और किसी बातसे नहीं फैलसकता। मैंने ताड़ लिया कि यह बात उनके मनमें बैठ गई।

इसी समय एटलांटा निवासी एक सज्जन भी—जो पहले गुलाम रक्खा करते थे—वहाँ पहुँच गये। टस्केजी जानेके विषयम प्रेसिडेंट महाशयने उनसे भी राय ली। उन्होंने कहा, 'आप टस्केजी-विद्यालयमें अवश्य जायें।' नीग्रो जातिके परम हितैषी डाक्टर करीने भी इस बात पर बड़ा जोर दिया। बस, मेरा काम बन गया। प्रेसिडेंट महाशयने वादा किया कि 'मैं १६ दिसम्बरके दिन आपका विद्यालय देखने आऊँगा।'

जब लोगोंको यह समाचार मिला तब विद्यालयके विद्यार्थी, अध्यापक और टस्केजीके समस्त अधिवासी बहुत ही प्रसन्न हुए। नगरके गोरे निवासी नगरको सिंगारनेमें लग गये और विद्यालयके कर्मचारियोंसे मिलकर प्रेसिडेंटका यथायोग्य स्वागत करनेके लिए समितियाँ भी बनाने लगे। इससे पहले मुझे यह न मालूम था कि हमारे विद्यालयके विषयमें टस्केजी तथा आसपासके

गोरे निवासियोंकी क्या राय है । प्रेसिडेंटके स्वागतकी तैयारियाँ करते समय कितने ही गोरे लोग मुझसे मिलकर कहते थे कि 'यदि हम लोगोंसे भी कुछ काम लिया जा सकता हो तो हम करनेके लिए तैयार हैं ।' उस समय उनके भावसे यह मालूम होता था कि कहने भरकी देरी है कि ये लोग चाहे जो काम करनेके लिए मुस्तैद हो जायँगे । प्रेसिडेंटके आगमनसे और अलबामाके गोरे काले समस्त लोगोंने हम लोगोंके कार्यके प्रति जो स्नेह व्यक्त किया उससे, मेरा अन्त करण द्रवित हो गया ।

१६ दिसम्बरको सवेरे टस्केजीके छोटेसे गाँवमें इतनी भीड हुई जितनी पहले कभी न हुई थी । प्रेसिडेंटके साथ मि० मैक् किनले तथा प्राय सभी मन्त्री आये थे, बहुतोंके साथ उनके परिवारके लोग और रिश्तेदार भी थे । स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें विजय पाकर आये हुए जनरल शैप्टर और जनरल जोसेफ वीलर आदि मुख्य मुख्य सेनापतियोंने इस समारम्भमें योग दिया था । समाचारपत्रोंके सवाददाताओंकी भी कमी न थी । इन्ही दिनों माटगोमरीमें अलबामा राज्यकी व्यवस्थापक सभाके अधिवेशन होनेवाले थे, पर इस अवसरपर टस्केजीमें उपस्थित रहनेके लिए कार्यकर्त्ताओंने उनका समय बदल दिया था और वहाँके गवर्नर तथा अन्य अधिकारी प्रेसिडेंटके आनेसे पहले ही टस्केजीमें उपस्थित हो गये थे ।

टस्केजीके अधिवासियोंने रेलस्टेशनसे विद्यालय तक सब मार्ग सिगार रक्खे थे । हम लोगोंने ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा था कि थोडे ही समयमें विद्यालयके सब काम प्रेसिडेंट महाशयको दिखला दिये जाय। प्रत्येक विद्यार्थीके हाथमें एक एक ऊख दिया गया था जिसके सिरे पर कपासकी ढोडियाँ लगा रक्खी थीं । विद्यार्थियोंके पीछे विद्यालयके भिन्नभिन्न भागोंके पुराने और नये काम घोडों खच्चरों और बैलों पर लदे हुए थे । मक्खन निकालने, जमीन जोतने और रसोई बनानेके तथा ऐसे ही अन्य सब कामोंके नये पुराने दोनों ढग दिखलाये गये थे। इन सब कामोंको देखनेमें प्रेसिडेंटको डेढ़ घटा खर्च करना पडा ।

विद्यार्थियोंने हालहीमें एक नया प्रार्थनामन्दिर (गिरजा) बनाया था । उसीमें प्रेसिडेंट महाशयका व्याख्यान हुआ। उसका कुछ अश इस प्रकार है –

" ऐसे आनन्ददायक अवसर पर आप सब लोगोंसे मिलने और आपके कार्योंको देखनेसे मुझे बडी ही प्रसन्नता हुई है । ' टस्केजी नार्मल और इण्डस्ट्रियल इन्स्टिटयूट ' की स्थापना जिस उद्देश्यसे हुई है, वह अत्यत अनुकर-

नीय है। केवल इसी देशमें नहीं, विदेशोंमें भी इस विद्यालयकी कीर्ति फैलती जाती है।

"जिन्होंने इन विद्यार्थियोंको शिक्षा देकर इन्हें प्रतिष्ठित और समाजके लिए उपकारी बनानेका भार अपने ऊपर उठाया है, जिन्होंने इस विद्यालयको स्थापित कर अपनी जातिका कल्याण किया है, और जिन्होंने इस पवित्र काममें हाथ बँटाया है उन सबको मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

"इस अनुपम शिक्षाकी प्रयोगशालाके लिए स्थान भी ऐसा अच्छा मिला है कि और कहीं शायद ही मिलता। इस विद्यालयने देशके ऐसे ऐसे दाताओंसे भी सहायता पाई है कि जो किसी नये काममें योग देना नहीं जानते।

"टस्केजी विद्यालयकी चर्चा करते समय प्रो० बुकर टी वाशिंगटनकी असाधारण बुद्धिमत्ता और उद्योगप्रियता स्वयं ही नेत्रोंके सामने आ जाती है। इस महान् कार्यको इन्होंने ही प्रारंभ किया है। इसके लिए हम सब लोग इनके कृतज्ञताभाजन हैं। इन्हींके उत्साह और साहससे विद्यालयकी इतनी उन्नति हुई है और उसकी पात्रता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ये अपनी जातिके एक नेता समझे जाते हैं। देशदेशान्तरके लोग इन्हें एक उत्तम अध्यापक, वक्ता और महात्मा समझते हैं, और इनके इन्हीं गुणोंके कारण ही सब लोग इन्हें मानते हैं।"

इसके उपरान्त नौ-सेनाविभागके मंत्री आनरेबल जान डी लॉंगने भाषण किया। उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है —

"आज मुझसे व्याख्यान नहीं दिया जाता। अपनी दोनों जातियोंके देशभाइयोंके सर्वथम आशा, आदर और अभिमानसे मेरा अन्तःकरण भर गया है। आपके कार्य देखकर मुझे कृतज्ञताके साथ बड़ा ही आश्चर्य और आनन्द प्राप्त हो रहा है। मुझे विश्वास है कि दिनोंदिन आपकी उन्नति होती जायगी और इस समय आपके सम्मुख जो प्रश्न उपस्थित है उसे हल कर डालनेमें आप समर्थ होंगे।

"नहीं नहीं, उस प्रश्नको आप हल कर चुके हैं। आज हम लोगोंके सामने जो चित्र उपस्थित है, वह वाशिंगटन (जार्ज) और लिंकनके चित्रोंकी पंक्तिमें रखने योग्य है। इस चित्रसे भावी सन्ततिको बड़ी भारी शिक्षा मिलनेवाली है। यह चित्र समाचारपत्रों द्वारा सर्वत्र प्रसिद्ध होना चाहिए। इस चित्रमें क्या क्या दिखलाया गया है?—संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट प्लेटफार्म पर खड़े हैं, उनके

सब तरहसे भलाई है। बालकोंको खेती और बालिकाओंको गृहस्थीके काम सिखलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष बहुतसी बालिकाओंको कृषिविद्या भी सिखलाई जाती है। बाग लगाना, फल उपजाना, दही मक्खन आदि तयार करना, शहदकी मक्खियोंको पालना, बढिया बछड़ा पैदा करना आदि काम बालिकाओंको सिखलाये जाते हैं।

हमारा विद्यालय किसी खास धर्म या सम्प्रदायका अनुयायी नहीं है, तो भी उसने साथ 'फेल्प्स हाल बाइबल ट्रेनिंग स्कूल' नाम की एक शाखा खोली गई है। इसमें विद्यार्थियोंको धर्म्मोपदेशकके तथा गाँव-देहातोंमें जाकर करने योग्य अन्य धार्म्मिक काम सिखलाये जाते हैं। इन विद्यार्थियोंको भी नित्य आधे दिन किसी न किसी शिल्पशालामें अवश्य काम करना पडता है। जब ये विद्यार्थी विद्यालयसे उत्तीर्ण होकर धर्मोपदेशके लिए बाहर निकलते हैं तब लोगोंको शिल्पवाणिज्यका भी ढग सिखला देते हैं।

विद्यालयमें इस समय तीन लाख डालरकी सम्पत्ति है। इसके अतिरिक्त स्थायी फंडके हिसाबमें दो लाख पद्रह हजार डालरकी सम्पत्ति है। इस समय हमें और कई भवन बनवाने हैं और नित्यव्ययके लिए भी धनकी आवश्यकता है। पर स्थायी फडसे रुपया निकालना दूर रहा, हम उसे पाँच लाख डालर तक पहुचानेकी चिन्तामें हैं। इस समय वार्षिक खर्च अस्सी हजार डालर है, इसका अधिकांश मै घर घर घूमकर संग्रह करता हूँ। विद्यालयकी सम्पत्ति रेहन-बै करनेका किसीको हक नहीं है। सब कागजपत्र पचोंके नाम हैं। इन पचोंमें कोई किसी धर्मविशेष या सम्प्रदायका अनुयायी नहीं। विद्यालय इन्हीं पचोंके अधीन है।

विद्यार्थियोंकी संख्या तौससे ग्यारहसौ तक पहुँच गई है। अमेरिकाके २५ राज्य, आफ्रिका, क्यूबा, पोर्टोरिको, जमैका और अन्य दूर दूर देशोंसे विद्यार्थी आते हैं। अध्यापकोंकी संख्या ८६ है, और यदि उनके परिवारोंकी भी गिनती की जाय तो, विद्यालयमें हर समय १४०० लोग उपस्थित रहते हैं।

कई लोगोंने मुझसे पूछा कि इतने आदमियोंके रहते हुए भी, तुम्हारी संस्थामें कोई दगा-फसाद नहीं होता इसका क्या कारण है। इसके उत्तरमें मुझे दो बातें कहनी हैं —(१) यहाँ विद्याप्राप्तिके लिए जो स्त्रियाँ या पुरुष आते हैं वे बड़े श्रद्धालु होते हैं, और (२) वे सदा ही अपने काममें लगे रहते हैं। नीचे दिये हुए कार्यक्रमसे यह बात स्पष्ट हो जायगी।

कार्यक्रम।

प्रातःकाल ५ बजे भोरका उठनेकी घंटी। ५ बजकर ३० मिनिट पर जल-पानकी तैयारी। ६ बजे जलपान। ६-२० पर जलपानसे निवृत्ति। ६-२० से ६-५० तक सब कमरोंमें झाड़ देकर साफ करना। ६-५० पर काम। ७-३० पर प्रातःकालकी पढ़ाई। ८-२० पर स्कूलकी घंटी। ८-२५ पर सब विद्या-र्थियोंका एक स्थानमें खड़े होना और उनके वस्त्रोंकी परीक्षा। ८-४० पर गिरजेमें प्रार्थना। ८-५५ पर पांच मिनिटतक दैनिक पत्रोंका पढ़ना। ९ बजे स्कूलकी पढ़ाईका आरंभ। १२ बजे पढ़ाई बंद। १२-१५ पर भोजन। दो-पहर १ बजे कामकी घंटी। १-३० पर पढ़ाई शुरू। ३-३० पर पढ़ाई बन्द। ५-३० पर सब कामोंके समाप्त होनेकी घंटी। ६ बजे सन्ध्याका भोजन। ७-१० पर सायंकालकी प्रार्थना। ७-३० पर रातकी पढ़ाई। ८-४५ पर पढ़ाई बन्द। ९-२० पर विश्रामकी घंटी। ९-३० पर सोनेकी घंटी।

हम लोग सदा इस बातका ध्यान रखते हैं कि विद्यालयकी योग्यता उसके ग्रेज्युएटोंसे जानी जाती है। इस समय टस्केजी-विद्यालयमें शिक्षा पाये हुए तीन हजार स्त्री-पुरुष दक्षिणके भिन्न भिन्न भागोंमें काम कर रहे हैं। ये लोग अपने जीवनसे लोगोंको सब प्रकारकी उन्नतिका मार्ग दिखला रहे हैं। इनके व्यावहारिक ज्ञान और आत्मसंयमनके प्रभावसे दोनों जातियोंमें परस्पर मेल मिलाप बढ़ता जा रहा है और गोरोंमें यह विश्वास होने लगा है कि नीग्रो जाति-में विद्याका प्रचार होनेसे अनेक लाभ होंगे।

जहां जहां हमारे ग्रेज्युएट पहुंचते हैं, वहां वहां जमीन खरीदने, इमारतें बनाने, हिसाबसे रहने, लिखने पढ़ने और शुद्ध आचरण रखनेके सम्बन्धमें विलक्षण परिवर्तन हो जाते हैं। हमारे ग्रेज्युएटोंके कारण समाजका रूपरंग बिलकुल बदलता जा रहा है।

दस वर्ष पूर्व मैंने टस्केजीमें नीग्रो महासभा स्थापित की थी। अब प्रत्येक वर्ष इसका विराट अधिवेशन होता है और आठ नौ सौ नीग्रो-प्रतिनिधि टस्केजीमें जाकर नीग्रो-जातिके आर्थिक नैतिक और मानसिक प्रश्नोंका विचार करते और उन्नतिके उपाय सोचते हैं। टस्केजीकी इस महासभाकी अब कितनी ही शाखायें भिन्न भिन्न राज्योंमें हो गई हैं और उनका भी यही काम है। गतवर्षकी सभामें एक नीग्रो प्रतिनिधिने इन सभाओंका परिणाम बतलाते हुए कहा था कि दस परिवारोंने धन देकर नये मकान खरीदे। नीग्रो महास--

सब तरहसे भलाई है। बालकोंको खेती और बालिकाओंको गृहस्थीके काम सिखलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष बहुतसी बालिकाओंको कृषिविद्या भी सिखलाई जाती है। बाग लगाना, फल उपजाना, दही मक्खन आदि तयार करना, शहदकी मक्खियोंको पालना, बढ़िया बत्तख पैदा करना आदि काम बालिकाओंको सिखलाये जाते हैं।

हमारा विद्यालय किसी खास धर्म या सम्प्रदायका अनुयायी नहीं है, तो भी उसके साथ 'फेल्प्स हाल बाइबल ट्रेनिंग स्कूल' नाम की एक शाखा खोली गई है। इसमें विद्यार्थियोंको धर्म्मोपदेशकके तथा गाँव-देहातोंमें जाकर करने योग्य अन्य धार्म्मिक काम सिखलाये जाते हैं। इन विद्यार्थियोंको भी नित्य आधे दिन किसी न किसी शिल्पशालामें अवश्य काम करना पड़ता है। जब ये विद्यार्थी विद्यालयसे उत्तीर्ण होकर धर्मोपदेशके लिए बाहर निकलते हैं तब लोगोंको शिल्पवाणिज्यका भी ढंग सिखला देते हैं।

विद्यालयमें इस समय तीन लाख डालरकी सम्पत्ति है। इसके अतिरिक्त स्थायी फंडके हिसाबमें दो लाख पंद्रह हजार डालरकी सम्पत्ति है। इस समय हमें और कई भवन बनवाने हैं और नित्यव्ययके लिए भी धनकी आवश्यकता है। पर स्थायी फंडसे रुपया निकालना दूर रहा, हम उसे पाँच लाख डालर तक पहुँचानेकी चिन्तामें हैं। इस समय वार्षिक खर्च अस्सी हजार डालर है। इसका अधिकांश मैं घर घर घूमकर संग्रह करता हूँ। विद्यालयकी सम्पत्ति रेहन-बै करनेका किसीको हक नहीं है। सब कागजपत्र पंचोंके नाम हैं। इन पंचोंमें कोई किसी धर्मविशेष या सम्प्रदायका अनुयायी नहीं। विद्यालय इन्हीं पंचोंके अधीन है।

विद्यार्थियोंकी संख्या तीससे ग्यारहसौ तक पहुँच गई है। अमेरिकाके २७ राज्य, आफ्रिका, क्यूबा, पोर्टोरिको, जमैका और अन्य दूर दूर देशोंसे विद्यार्थी आते हैं। अध्यापकोंकी संख्या ८६ है, और यदि उनके परिवारोंकी भी गिनती की जाय तो, विद्यालयमें हर समय १४०० लोग उपस्थित रहते हैं।

कई लोगोंने मुझसे पूछा कि इतने आदमियोंके रहते हुए भी, तुम्हारी संस्थामें कभी कोई दगा-फसाद नहीं होता इसका क्या कारण है। इसके उत्तरमें मुझे दो बातें कहनी हैं —(१) यहाँ विद्याप्राप्तिके लिए जो स्त्रियाँ या पुरुष आते हैं वे बड़े श्रद्धालु होते हैं, और (२) वे सदा ही अपने काममें लगे रहते हैं। नीचे दिये हुए कार्यक्रममें यह बात स्पष्ट हो जायगी।

कार्यक्रम।

प्रातःकाल ५ बजे सोकर उठनेकी घटी। ५ बजकर ३० मिनिट पर जलपानकी तैयारी। ६ बजे जलपान। ६–२० पर जलपानसे निवृत्ति। ६–२० से ६–५० तक सब कमरोंको झाडू देकर साफ करना। ६–५० पर काम। ७–३० पर प्रातःकालकी पढाई। ८–२० पर स्कूलकी घटी। ८–२५ पर सब विद्यार्थियोंका एक कतारमें खडे होना और उनके वस्त्रोंकी परीक्षा। ८–४० पर गिरजेमें प्रार्थना। ८–५५ पर पाच मिनिटतक दैनिक पत्रोंका पढना। ९ बजे स्कूलकी पढाईका आरम। १२ बजे पढाई बद। १२–१५ पर भोजन। दोपहर १ बजे कामकी घटी। १–३० पर पढाई शुरु। ३–३० पर पढाई बन्द। ५–३० पर सब कामोंके समाप्त होनेकी घटी। ६ बजे सध्याका भोजन। ७–१० पर सायकालकी प्रार्थना। ७–३० पर रातकी पढाई। ८–४५ पर पढाई बन्द। ९–२० पर विश्रामकी घटी। ९–३० पर सोनेकी घटी।

हम लोग सदा इस बातका ध्यान रखते ह कि विद्यालयकी योग्यता उसके ग्रेज्युएटोंसे जानी जाती है। इस समय टस्केजी–विद्यालयम शिक्षा पाये हुए तान हजार स्त्री-पुरुप दक्षिणके भिन भिन भागोंमे काम कर रहे है। ये लोग अपने जीवनसे लोगोंको सब प्रकारकी उन्नतिका मार्ग दिखला रहे है। इनके व्यावहारिक ज्ञान और आत्मसयमनके प्रभावसे दोनों जातियोंमे परस्पर मेल मिलाप बढता जा रहा है और गोरोंको यह विश्वास होने लगा है कि नीग्रो जातिम विद्याका प्रचार होनेसे अनेक लाभ होंगे।

१ जहाँ जहाँ हमारे ग्रेज्युएट पहुँचते है, वहाँ वहाँ जमीन खरीदने, इमारते बनाने, हिसाबसे रहने, लिखने पढने और शुद्ध आचरण रखनेके सबधमें विलक्षण परिवर्तन हो जाते है। हमारे ग्रेज्युएटोंके कारण समाजका रूपरंग बिलकुल बदलता जा रहा है।

दस वर्ष पूर्व मैंने टस्केजीमें नीग्रो महासभा स्थापित की थी। अब प्रत्येक वर्ष इसका विराट अधिवेशन होता है और आठ सौ सौ नीग्रो-प्रतिनिधि टस्केजीमें जाकर नीग्रो जातिके आर्थिक नैतिक और मानसिक प्रश्नोंका विचार करते और उन्नतिके उपाय सोचते हैं। टस्केजीकी इस महासभाकी अब कितनी ही शाखायें भिन्न भिन्न राज्योंमें हो गई हैं और उनका भी यही काम है। गतवर्षकी सभामें एक नीग्रो प्रतिनिधिने इन सभाओंका परिणाम कहते हुए कहा था कि दस परिवारोंने धन देकर नये मकान खरीदे।

भाके दूसरे दिन 'कामकाजियोंकी सभा-Workers' Conference—' होती है। दक्षिणके बडे बडे राज्योंमें काम करनेवाले राजकर्मचारी और अध्यापक इस सभामें एकत्र होते हैं। नीग्रो-महासभामें लोगोंकी वास्तविक दशा देखनेका इन्हें बहुत अच्छा अवसर मिलता है।

हर काममें मेरी मदद करनेवाले मि० टी टामस फार्च्यून सरीखे कुछ नीग्रो सज्जनोंकी सहायतासे मैंने सन् १९०० के ग्रीष्ममें 'दि नेशनल नीग्रो बिजिनेस लीग' नामकी एक सभा स्थापित की है। इसका पहला अधिवेशन बोस्टनमें हुआ और उस अवसर पर संयुक्त राज्यके भिन्न भिन्न भागोंसे व्यापारी और कामकाजी लोग आये थे। कोई ३० राज्योंने अपने प्रतिनिधि भेजे थे। अब इस लीगकी अनेक स्थानोंमें शाखायें भी खुल गई हैं।

व्याख्यान देनेके लिए मेरे पास अनेक निमन्त्रण आते हैं और यदि विद्यालयकी देखरेख तथा धनसंग्रहके कार्यसे मुझे अवकाश मिलता है तो मैं व्याख्यान देने जाता भी हूँ। इन व्याख्यानोंमें मेरा कितना समय चला जाता है, यह आपको एक समाचारपत्रके निम्नलिखित अवतरणसे मालूम हो जायगा। न्यूयार्क बफालोके नेशनल एजुकेशनल एसोसिएशनके सामने मैंने जो व्याख्यान दिया उसके संबंधमें यह लिखा गया था —

"सुप्रसिद्ध नीग्रो अध्यापक बुकर टी वाशिंगटन कल सन्ध्याको, पश्चिम ओरसे यहाँ आ पहुँचे। जबसे वे यहाँ आये हैं, तबसे बराबर काममें लगे हुए हैं। यात्राकी थकावट भी दूर न होने पाई थी कि उन्हें कल साय-भोजमें सम्मिलित होना पडा। इसके बाद इराक्विसके सभामण्डपमें आठ बजे तक उन्होंने अपने मिलनेके लिए आये हुए लोगोंकी एक सभा की। उस समय संयुक्त राज्यके दो सौसे अधिक अध्यापकोंने उनका स्वागत किया। इसके बाद गाडी पर सवार कराके वे म्यूजिक हालमें लाये गये और वहाँ उन्होंने डेढ घंटेतक 'नीग्रो शिक्षा' पर पाँच हजार श्रोताओंके सामने दो व्याख्यान दिये। यहाँसे रेवरेंड मि० वाटकिन्स आदि लोगोंकी मंडली उन्हें स्वागतके लिए दूसरे स्थान पर लिवा ले गई।"

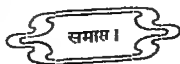
इस व्याख्यान देनेके कामके अतिरिक्त एक और काम मुझे करना पडता है। दोनों जातियोंके स्वार्थसे संबंध रखनेवाली कुछ बातोंकी ओर दक्षिणके और साधारणतः सब देशके लोगोंका ध्यान दिलानेके लिए विना समाचारपत्रोंमें

लेख लिखे मुझसे नहीं रहा जाता । पत्र-सपादकोंने इस काममें सहानुभूतिके साथ मेरी सहायता भी की है ।

ऊपरी और आकस्मिक बातोंसे किसीकी कैसी ही राय हो, मैं अब अपनी जातिके विषयमें पहलेकी अपेक्षा अधिक आशावान् हूँ । गुणोंकी परीक्षा और प्रतिष्ठा करनेवाला मानवी सृष्टिका श्रेष्ठ नियम सार्वत्रिक और सनातन है । दक्षिणके गोरे और उनके पहलेके गुलाम दोनों ही अपने अन्त करणमें वर्णद्वेषसे मुक्त होनेके लिए जो यत्न कर रहे हैं उसे बाहरके लोग न तो जानते हैं और न जानकर उसका मर्म ही समझ सकते हैं । परतु इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकारके प्रयत्न हो रहे हे और इसीलिए मैं कहता हूँ कि सब लोग इनके साथ दया और सहानुभूतिका व्यवहार रखकर इनकी सहायता करें ।

इस समय जब कि इस आत्मचरितके ये अन्तिम शब्द लिखे जा रहे हे मैं वर्जीनियाके रिचमण्ड शहरमें उपस्थित हूँ । यहाँ कुछ वर्ष पूर्व राजधानी थी और पचीस वर्ष पहले दरिद्रताका मारा हुआ मैं इसी शहरमें सडककी पटरीके एक चबूतरेके नीचे सोया था ।

इस समय म यहीं नीग्रो लोगोंका मेहमान हूँ और उनके अनुरोधसे 'एकेडेमी आफ म्यूजिक' नामक अत्यन्त विशाल और वैभवशाली भवनमें दोनों जातियोंके सामने व्याख्यान देने आया हूँ । इस भवनमे नीग्रो-लोग आज पहले ही पहल आ सके हैं । मेरे आनेसे एक दिन पहले सिटीकौंन्सिलने यह प्रस्ताव पास किया है कि मेरा व्याख्यान सुननेके लिए सब लोग मिलकर एक साथ जाय । व्यवस्थापक सभाने (हाउस आफ डेलिगेट्स और सिनेट्स भी इसी सभाम शामिल हैं) भी एक रायसे यह निश्चय किया है कि सब सदस्य व्याख्यानके समय उपस्थित होंगे । सैकडों नीग्रो, कितने ही नामी गोरे रईस, सिटीकौंसिलके सदस्य, व्यवस्थापक सभाके सभासद और राज्यके सरकारी अधिकारी इस सभामें बडे उत्साहके साथ एकत्र हुए थे । इन सबोंको मैंने आशा और धैर्यसे भरा हुआ अपना सन्देशा सुनाया, और जिस राज्यमें मेरा जन्म हुआ था वहीं मेरा इस प्रकार स्वागत हुआ, इसलिए मैंने दोनों जातियोंको हार्दिक धन्यवाद दिया ।



परिशिष्ट।



जनरल आर्मस्ट्रांगका मृत्युपत्र।*

अभी समय अच्छा और अनुकूल है। परिवार और विद्यालयका सब ठीक ठीक प्रबन्ध हो चुका है। भयकी कोई बात नहीं रही है। यह ईश्वरको धन्यवाद देनेका समय है। मेरा अन्तकाल समीप है। कब मृत्यु होगी, इसका कोई ठिकाना नहीं। इस लिए भावीकी ओर ध्यान देकर मैं जो कुछ उचित समझता हूँ, बतला देता हूँ।

जब किसी विद्यार्थीकी मृत्यु होती है तब उसे जहाँ ले जाकर गाड़ते हैं, वहीं-विद्यालयके कब्रस्तानमें-मेरी भी लाश गाडी जाय। मेरी कब्र पर छतरी स्मारक अथवा और कोई आडम्बर न खड़ा किया जाय। केवल एक सादा पत्थर रहे। उस पर कोई अवतरण या विचार न खोदा जाय। केवल मेरा नाम और जन्ममृत्युकी तिथि लिखी रहे। मेरी उत्तरक्रियाके समय कोई उपदेश या वक्तृता न दे। युद्धमें मरनेवाले वीर सैनिकके समान मेरी उत्तरक्रिया हो।

मुझे आशा है कि मेरे मित्र विद्यालयके प्रबन्धमें कोई त्रुटि न होने देंगे। कुछ लोग जबतक स्वार्थत्याग करनेके लिए तैयार न हों, तबतक विद्यालयका काम ठीक नहीं चल सकेगा।

जिस कार्यमें स्वार्थत्यागकी आवश्यकता नहीं होती उस कार्यकी ईश्वरके यहाँ कोई प्रतिष्ठा नहीं। परन्तु लोग जिसे स्वार्थत्याग कहते हैं वह, अपना और अपने साधनोंका उत्तम और शुभ उपयोग है-अपने समय, शक्ति और सामग्रीका सदुपयोग है।

जो मनुष्य इस प्रकारका स्वार्थत्याग नहीं करता, उसकी दशा बहुत ही शोचनीय है। वह अधर्मी या नास्तिक है। ईश्वरके विषयमें उसे कुछ भी ज्ञान नहीं।

* यह पत्र आर्मस्ट्रांगके अन्य कागजोंके साथ हैम्पटनमें उनकी मृत्युके पश्चात् मिला है। आर्मस्ट्रांगके जिन जिन मित्रोंने इसे देखा वे इसे उनके भाव और अन्त स्वरूपका परिचायक समझते हैं। ऐसे अमूल्य पत्रको प्रकाशित करना बहुत उचित मालूम होता है। —एच बी फ्रिसेल।

प्रिन्सिपल, हैम्पटन-विद्यालय।

विद्यालयके विषयमें इन बातोंको सदा ध्यानमें रखना चाहिए ---कोई किसीसे न झगडे। सब लोग मिलकर काम करें। अधीर होकर अट्सट्ट बातें या 'मन-माना घरजाना' कोई न करे। सब लोग बुद्धिमानी और उदारतासे सबका कल्याण करनेका यत्न करें। चतुर और विद्वान् होने पर भी, जो मनुष्य अपने दिमागको ठिकाने नहीं रख सकता और संयमी नहीं है, उसे विद्यालयसे निकाल देना चाहिए। दांभिक लोगोंकी अपेक्षा झगडालू लोग खराब होते हैं।

मेरा चरित कोई न लिखे। अच्छे मित्र मेरा सुन्दर चरित लिख डालेंगे, पर उसमें पूर्ण सत्य न रहेगा। जीवनका महत्त्व बहुत गहरे पानीमें रहता है। हम मनुष्योंको उसका बहुत ही कम ज्ञान होता है। केवल एक ईश्वर ही जानता है। ईश्वरकी दयालुता पर मुझे पूरा विश्वास है। जिसका धर्म या सम्प्रदाय जितना ही छोटा हो उतना ही अच्छा है। 'हे ईश्वर में अनन्य भक्तिसे तेरी शरण लेता हूँ।' बस, यह एक ही सिद्धान्त मेरे लिए बस है।

अपने मा-बाप, घरबार, युद्धका अनुभव, विलियम्स कालेजके दिन, और हैम्पटनका कार्य, इन सबके लिए में ईश्वरको धन्यवाद देता हूँ। हैम्पटनने मुझे अनेक प्रकारसे धन्य किया है। कारण, हैम्पटनके ही कार्यसे इस देशके सबसे अच्छे लोग मेरे मित्र और सहायक हुए हैं, और युद्धके कारण मुक्त हुए लोगों का---नीग्रो लोगोंका---प्रत्यक्ष और जित लोगोंका---दक्षिणी गोरोंका---अप्रत्यक्ष कल्याण करनेका अवसर मुझे मिला है। लाल इंडियनोंकी सेवाका भी सुयोग मुझे मिला है। बहुत थोडे लोगोंको मेरा सा सुयोग प्राप्त होता होगा। सचमुच, मैंने अपने जीवनमें कोई बात नहीं छोडी। प्रत्येक कार्यमें मुझे उचित परामर्श मिलता रहा।

प्रार्थना---उपासना-भक्ति भी संसारमें एक अद्भुत वस्तु है। वह हम ईश्वर-के समीप ले जाती है। मेरी प्रार्थना बहुत ही निर्बल और चंचल हुआ करती थी, पर मैंने यदि कोई कार्य किया है तो, वह प्रार्थना ही की है। मैं इसे सनातन तत्त्व समझता हूँ। सनातन और अनन्त तत्त्वके अतिरिक्त और किस बातसे आनन्द मिल सकता है?

परलोक देखनेके लिए मैं बहुत ही उत्सुक हुआ हूँ। परलोक कैसा होगा? मेरे विचारसे, वह बहुत सुन्दर और स्वाभाविक होगा। मृत्युसे डरनेका कोई प्रयोजन नहीं, वह तो हमारा मित्र है!

मृत्युका विचार आने पर मुझे जो कुछ दु:ख होता है, वह अपनी प्रिय पतिव्रता स्त्री और उसकी दोनों सन्तानके लिए होता है! पर उन्हें भी धैर्यसे यह वियोग सहकर दृढ होना चाहिए। उन सबोंने मुझे बड़ा सुख दिया है।

हैम्पटन-विद्यालयकी किसी प्रकार अवनति न हो। इस देशके काले लाल बच्चोंके साथ सचाईका व्यवहार करनेवाले विद्यालयको नीचे न गिरने देना।

मेरे पुराने सिपाहियों और विद्यार्थियोंसे मुझे अकथनीय सुख मिला है।

अपनी अन्त:स्फूर्तिके अनुसार काम करने, निजको भूलकर देव और देशका विचार करने और देव और देशकी भक्ति करनेसे हमारा कल्याण होता है।

इसी समय अन्तकालकी घंटी बजी!

हैम्पटन, वर्जीनिया,
ता० १ जनवरी १८९० ई० } एस. सी आर्मस्ट्रांग।